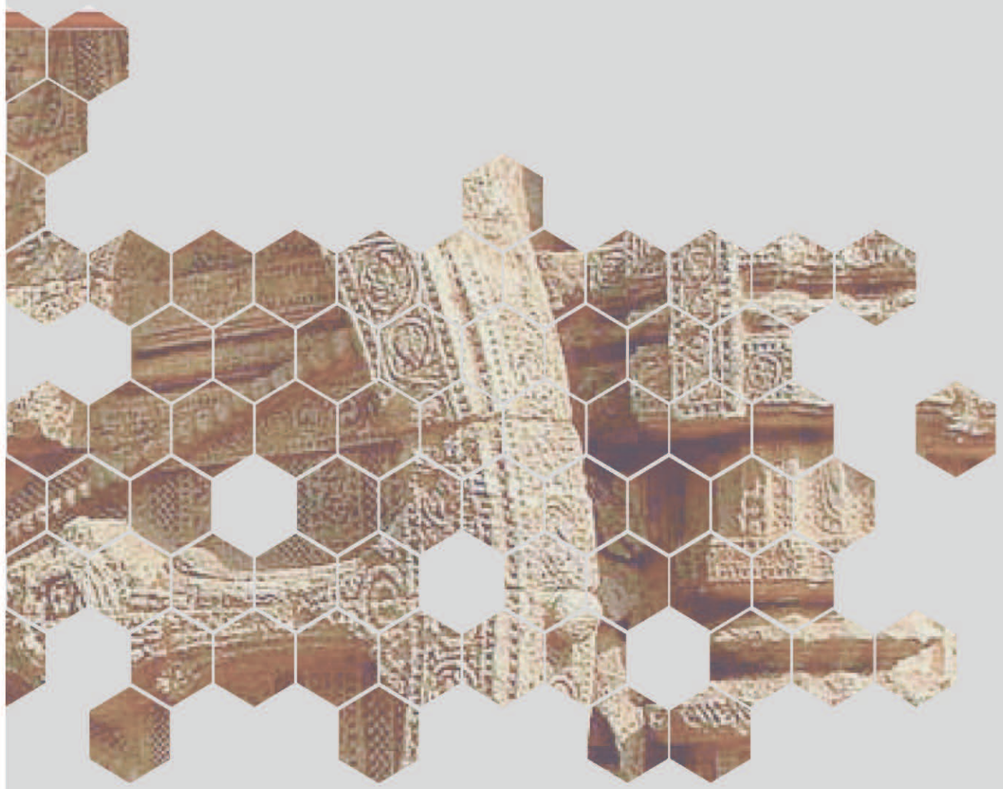

Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

Library Classification Practice

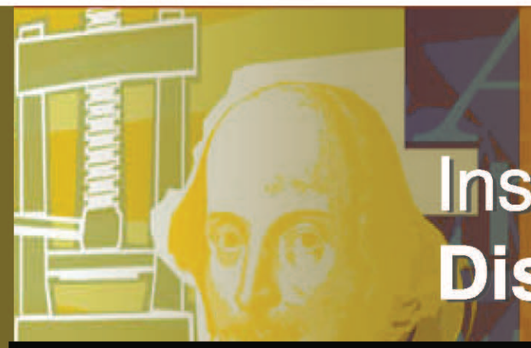

Institute of Open and Distance Education

Faculty of Arts

Library Classification Practice

1BLIB4

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur
A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

1BLIB4
पुस्तकालय वर्गीकरण अभ्यास

1BLIB4, Library Classification and Practice

Edition: March 2024

Compiled, reviewed and edited by Subject Expert team of University

1. Dr. Sarita Mishra

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Manish Bhardwaj

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Dr. Payal Chakravarti

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

Warning:

All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by:

Dr. C.V. Raman University

Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.),

Ph. +07753-253801, 07753-253872

E-mail: info@cvru.ac.in

Website: www.cvru.ac.in

अनुक्रमणिका

अध्याय– 1 प्रस्तावना, संरचना और व्यवस्था 9–24

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. डी.डी.सी. का 19वाँ संस्करण
4. अंकन
5. दशमलव भिन्न के गुणधर्म
6. मूल योजना एवं न्यूनतम तीन अंकों की परिपाटी
7. ग्रंथखंड 1 : प्रस्तावना एवं सारणी
8. ग्रंथखंड 2 : अनुसूचियाँ
9. ग्रंथखंड 3 : अनुक्रमणिका
10. वर्ग संख्या लेखन—विधि
11. दीर्घ कोष्ठकों में संख्याएँ, अप्रयुक्त प्रविष्टियाँ
12. सार संक्षेप ,
13. स्व—प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
14. मुख्य शब्द
15. अभ्यास प्रश्न
16. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 2 परिभाषाएँ, टिप्पणियाँ एवं निर्देश..... 25–36

1. उद्देश्य
2. परिचय
3. परिभाषाएँ, व्याख्या एवं विस्तार-क्षेत्र
4. विभिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ
5. मध्यवर्ती शीर्षक/मध्यवर्ती प्रविष्टि
6. वर्ग संख्या निर्माण से संबंधित टिप्पणियाँ
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रशनों
9. मुख्य शब्द

10. अभ्यास-प्रश्न
11. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 3 तीन सरांश-तालिकाओं का परिचय तथा प्रलेख वर्गीकरण के चरण 37–50

1. उद्देश्य
2. परिचय
3. दस मुख वर्ग
4. 100 विभागों की द्वितीय सारांश-तालिका
5. 1000 अनुभागों की तृतीय सारांश-तालिका
6. बहुस्तरीय सारांश-तालिकाएँ
7. प्रलेख वर्गीकरण के चरण
8. विषय विश्लेषण
9. प्रयोगिक वर्गीकरण के चरण
10. सार-संक्षेप
11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द
13. अभ्यास-प्रश्न
14. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 4 सापेक्ष अनुक्रमणिका और उसका उपयोग 51–62

1. अध्यय के उद्देश्य
2. परिचय
3. आवश्यकता और महत्त्व
4. सापेक्ष अनुक्रमणिका का औचित्य
5. अनुक्रमणिका का विस्तार-क्षेत्र
6. अनुक्रमणिका का गठन
7. प्रविष्टियों सम्मुख प्रदत्त संख्याएँ
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. संदर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 5 सारणियों एवं अनुसूचियों का अध्ययन 63–90

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सारणियाँ
4. अनुसूचियाँ
5. सार-संक्षेप
6. प्रगति परीक्षण प्रश्नों
7. अभ्यास-प्रश्न
8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 6 सहायक सारणियाँ एवं युक्तियाँ 91–124

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सारणियों की सहायता से वर्ग संख्या निर्माण
4. सारणी 1 का प्रयोग : मानक उपविभाजन
5. सारणी 2 का प्रयोग : भौगोलिक क्षेत्र
6. सारणी 3 का प्रयोग : साहित्य-विशेष के उपविभाजन
7. सारणी 4 का प्रयोग : भाषा-विशेष के उपविभाजन
8. सारणी 6 का प्रयोग : भाषाएँ
9. सारणी 5 का प्रयोग : जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रजन समूह
10. सारणी 7 का प्रयोग : जन
11. सार-संक्षेप
12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
13. मुख्य शब्द
14. अभ्यास-प्रश्न
15. ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 7 प्रायोगिक वर्गीकरण 125–142

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सरल संश्लेषण
4. बहुसंश्लेषण

5. अग्रता-क्रम
6. संख्याओं की प्राथमिकता निर्धारित करने हेतु अन्य उपाय
7. मानक उपविभाजनों (सारणी 1) के लिए अग्रता-सारणी
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 8 प्रस्तावना, संरचना तथा व्यवस्था..... 143–152

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन की पृष्ठभूमि
4. वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति
5. कोलन क्लैसिफिकेशन में अंकन
6. संरचना तथा रूपरेखा
7. कोलन क्लैसिफिकेशन में अनुक्रमणिका
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 9 अनुसूचियाँ एवं तकनीकें..... 153–178

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी. सी.) में विषयों का मानचित्रण
4. मूलभूत श्रेणियाँ
5. आवर्तन एवं स्तर
6. प्रणाली एवं विशेष
7. सामान्य स्कल
8. दशा सम्बन्ध

9. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी.सी.) में युक्तियाँ
10. सार-संक्षेप
11. प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द
13. अभ्यास-प्रश्न
14. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अध्याय– 10 वर्गीकरण के सोपान 179–188

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कार्य के तीन धरातल
4. अष्ट-सोपान विधि
5. हल किये हुये उदाहरण
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 11 मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान 189–210

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. साहित्य
4. इतिहास एवं राजनीति विज्ञान
5. मनोविज्ञान एवं शिक्षा
6. धर्म एवं दर्शनशास्त्र
7. अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र
8. विधि
9. भाषा विज्ञान
10. सार-संक्षेप
11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द

13. अभ्यास-प्रश्न

14. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 12 जीव-विज्ञान 211–226

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान एवं प्राणि-विज्ञान
4. भूगर्भ-विज्ञान एवं उत्खनन
5. कृषि
6. आयुर्विज्ञान
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास-प्रश्न
11. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

अध्याय– 13 भौतिक विज्ञान एवं जेनरेलिया 227–246

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. गणित
4. भौतिकी
5. अभियांत्रिकी
6. रसायन विज्ञान
7. जेनरेलिया
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. अभ्यास-प्रश्न
11. सन्दर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना, संरचना और व्यवस्था

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. डी.डी.सी. का 19वाँ संस्करण
4. अंकन
5. दशमलव भिन्न के गुणधर्म
   - 5.1 अंकों का अचर सीमिक मान
   - 5.2 दाहिने छोर के शून्य की अर्थहीनता
   - 5.3 अंकों का क्रमबोध मान
   - 5.4 अंकन द्वारा पदानुक्रम दर्शाना
6. मूल योजना एवं न्यूनतम तीन अंकों की परिपाटी
7. ग्रंथखंड 1 : प्रस्तावना एवं सारणी
   - 7.1 सहायक सारणियाँ
   - 7.2 सारांश—तालिकाए
8. ग्रंथखंड 2 : अनुसूचियाँ
   - 8.1 पदानुक्रम
   - 8.2 संख्याओं का क्रम
   - 8.3 अनुसूचियों से भिन्नता
9. ग्रंथखंड 3 : अनुक्रमणिका
10. वर्ग संख्या लेखन—विधि
    - 10.1 बिन्दु,
    - 10.2 रिक्त स्थान
11. दीर्घ कोष्ठकों में संख्याएँ, अप्रयुक्त प्रविष्टियाँ
    - 11.1 प्रारंभ से अनाबंटित संख्याएँ
    - 11.2 संप्रति अनाबटित संख्याएँ
    - 11.3 रिक्त छोड़ी गई संख्याएँ
    - 11.4 वैकल्पिक वर्ग संख्याएँ
    - 11.5 'पहले' टिप्पणियाँ
12. सार संक्षेप ,
13. स्व—प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
14. मुख्य शब्द
15. अभ्यास प्रश्न
16. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन में हम आपको डयुई डेसमिल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी) के 19वें संस्करण की मूल योजना, इसे अंकन के लक्षण तथा तीनों ग्रंथ खंडों, 1 : सारणियाँ, 2 : अनुसूचियाँ, तथा 3 : सापेक्षिक अनुक्रमणिका की व्यवस्था से परिचित कराएँगे।

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :

- इस प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करने में समर्थ होंगे;
- इस प्रणाली में प्रयुक्त दशमलव भिन्न अंकन व्यवस्था के गुण धर्म की व्याख्या कर पाएँगें;
- इस प्रणाली की मूल योजना की चर्चा कर पाएँगे;
- डी डी सी के 19वें संस्करण के तीनों ग्रंथ खंडों में प्रस्तुत पाठ्य सामग्री का विवरण जान सकेंगे; तथा
- अनुसूचियों को देखने, पढ़ने तथा उनकी व्याख्या करने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

आधुनिक पुस्तकालय में प्रलेखों, अर्थात् पुस्तकों और अन्य पाठ्य सामग्री, को स्थान निर्धारण एवं अवलोकन के लिए, उनके विषय के अनुसार व्यवस्थिता किया जाता है। पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए आप एक स्व–निर्मित प्रणाली को उपयोग भी कर सकते हैं परंतु यह बहुत कठिन एवं समयसाध्य प्रक्रिया है। इसका एक अन्य उपाय किसी उपलब्ध प्रणाली का उपयोग करना है। इस कार्य के लिए अनेक विश्वप्रसिइद्ध एवं मानक वर्गीकरण प्रणालियाँ उपलब्ध हैं। ऐसी प्रणालियों में ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC : Dewey Decimal Classification), लाइब्रेरी ऑफ क्लैसिफिकेशन (LCC : Library of Congress Classification), यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन सामान्य वर्गीकरण की सारी प्रसिद्ध प्रणालियों में सर्वाधि प्रसिद्ध हैं। पूरे विश्व में इसका प्रयोग किया जा रहा है। यह प्रणाली 1873 में यू एस ए के मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) (1851–1931) द्बारा प्रतिपादित तथा 1876 में प्रथम बार प्रकाशित की गई थी। प्रथम (1876) से 15वें संस्करण (1952) तक डी. डी. सी. एक चांड में विभिन्न आकारों में प्रकाशित किया गया। 16वाँ संस्करण (1958) जो बहुत प्रसिद्ध संस्करण था, प्रथम बार दो खंडों में प्रकाशित किया गया। पुस्तकालयों में पुस्तकों की बढ़ती संख्या को व्यवस्थित करने के कार्य को इसने सरल बना दिया । दूसरा खंड प्राय: अनुक्रमणिका से संबधित था, जिसे सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया।

18वाँ संस्करण (1971) तीन खंडों में जारी किया गया। 19वाँ संस्करण (1979) भी निम्नलिखित तीन खंडों में प्रकाशित किया गया:

खंड 1 प्रस्तावना, सारणियाँ (Introduction, Tables)

खंड 2 अनुसूचियाँ (Schedules)

खंड 3 सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

20वें एवं 21वें संस्करणों को चार खंडो में प्रकाशि किया गया। इस इकाई में हम इस प्रणाली के 19वें संस्करण की चर्चा करेंगे।

3. डी. डी. सी. का 19वाँ संस्करण

विश्व में विभिन्न पुस्तकालय अपनी स्थापना वर्ष के आधार पर अथवा पुस्तकों को वर्गीकृत करने के प्रथम वर्ष के अधार पर डी डी सी के विभिन्न संस्करणें का उपयोग करते रहे हैं। 19वें संस्करण (1979) के तीनों खंडो में कुल 3361 पृष्ठ हैं। इन खंडों, जिन्हें हल्के स्लेटी रंग में जिल्दबद्ध किया गया है, का ग्रंथात्मक विवरण इस प्रकार है:

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन में हम आपको डयुई डेसमिल क्लैसिफिकेशन (डी डी सी) के 19वें संस्करण की मूल योजना, इसे अंकन के लक्षण तथा तीनों ग्रंथ खंडों, 1 : सारणियाँ, 2 : अनुसूचियाँ, तथा 3 : सापेक्षिक अनुक्रमणिका की व्यवस्था से परिचित कराएँगे।

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप :

- इस प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करने में समर्थ होंगे;
- इस प्रणाली में प्रयुक्त दशमलव भिन्न अंकन व्यवस्था के गुण धर्म की व्याख्या कर पाएँगें;
- इस प्रणाली की मूल योजना की चर्चा कर पाएँगे;
- डी डी सी के 19वें संस्करण के तीनों ग्रंथ खंडों में प्रस्तुत पाठ्य सामग्री का विवरण जान सकेंगे; तथा
- अनुसूचियों को देखने, पढ़ने तथा उनकी व्याख्या करने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

आधुनिक पुस्तकालय में प्रलेखों, अर्थात् पुस्तकों और अन्य पाठ्य सामग्री, को स्थान निर्धारण एवं अवलोकन के लिए, उनके विषय के अनुसार व्यवस्थिता किया जाता है। पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए आप एक स्व–निर्मित प्रणाली को उपयोग भी कर सकते हैं परंतु यह बहुत कठिन एवं समयसाध्य प्रक्रिया है। इसका एक अन्य उपाय किसी उपलब्ध प्रणाली का उपयोग करना है। इस कार्य के लिए अनेक विश्वप्रसिद्ध एवं मानक वर्गीकरण प्रणालियाँ उपलब्ध हैं। ऐसी प्रणालियों में ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC : Dewey Decimal Classification), लाइब्रेरी ऑफ क्लैसिफिकेशन (LCC : Library of Congress Classification), यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन सामान्य वर्गीकरण की सारी प्रसिद्ध प्रणालियों में सर्वाधि प्रसिद्ध हैं। पूरे विश्व में इसका प्रयोग किया जा रहा है। यह प्रणाली 1873 में यू एस ए के मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) (1851–1931) द्बारा प्रतिपादित तथा 1876 में प्रथम बार प्रकाशित की गई थी। प्रथम (1876) से 15वें संस्करण (1952) तक डी. डी. सी. एक चांड में विभिन्न आकारों में प्रकाशित किया गया। 16वाँ संस्करण (1958) जो बहुत प्रसिद्ध संस्करण था, प्रथम बार दो खंडों में प्रकाशित किया गया। पुस्तकालयों में पुस्तकों की बढ़ती संख्या को व्यवस्थित करने के कार्य को इसने सरल बना दिया । दूसरा खंड प्राय: अनुक्रमणिका से संबधित था, जिसे सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया।

18वाँ संस्करण (1971) तीन खंडों में जारी किया गया। 19वाँ संस्करण (1979) भी निम्नलिखित तीन खंडों में प्रकाशित किया गया:

खंड 1 प्रस्तावना, सारणियाँ (Introduction, Tables)

खंड 2 अनुसूचियाँ (Schedules)

खंड 3 सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

20वें एवं 21वें संस्करणों को चार खंडो में प्रकाशि किया गया। इस इकाई में हम इस प्रणाली के 19वें संस्करण की चर्चा करेंगे।

3. डी. डी. सी. का 19वाँ संस्करण

विश्व में विभिन्न पुस्तकालय अपनी स्थापना वर्ष के आधार पर अथवा पुस्तकों को वर्गीकृत करने के प्रथम वर्ष के अधार पर डी डी सी के विभिन्न संस्करणें का उपयोग करते रहे हैं। 19वें संस्करण (1979) के तीनों खंडो में कुल 3361 पृष्ठ हैं। इन खंडों, जिन्हें हल्के स्लेटी रंग में जिल्दबद्ध किया गया है, का ग्रंथात्मक विवरण इस प्रकार है:

Dewey, Melvil : Dewey Decimal Classification and Relative Index/Devised by Melvil Dewey, Edition 19, etdited under the direction of Benjamin A. custer. Albany, N.Y. : Forest Press, 1979.3

यह संपूर्ण सेट आपकी मेज पर होना चाहिए है या फिर आप अपने समीपस्थ अध्ययन केंद्र में जाकर इसे देख सकते हैं। इसके बड़े आकार के भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। एक संदर्भ ग्रंथ की भाँति इसका अवलोकरन तथा अपयोग किया जा सकता है। तीन खंडों में प्रस्तुत डी डी सी वर्ग संचया निर्यात्री मशीन की भाँति है, जिसका उपयोग करना आपको सीखना है।

4. अंकन

जिस प्रकार किसी फिल्म की कथा और उसके मूल-विषय को अभिनेताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, उसी प्रकार पुस्तकालय वर्गीकरण में विषयों को वर्गों और उपवर्गों में द्योति करने के लिए अंकन (Notation) का प्रयोग किया जाता है। अंकन को वर्गों एवं उसके उपवर्गों को द्योतित करने वाले संक्षिप्त प्रतीकों की सुनियोजित श्रृंखला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह पुस्तकालय में पुस्ताकों के व्यवस्थापन का यंत्रीकरण करता है। संक्षिप्तता का भाव अंकन में सन्निहित है, परंतु संक्षिप्तता इसकी अकेली/प्रमुख वरीयता नहीं है। वर्गीकरण प्रणाली का यंत्रीकरण अंकन का प्रथम गुण है।

5. दशमलव भिन्न के गुणधर्म

सारे दशमलव भिन्न (Decimal fraction) किसी पूर्ण संख्या का अनुसरण करते हैं और इन्हें एक दशमलव बिंदु के बाद लिखा जाता है। दशमलव या दशमलव बिंदु एक संके-चिह्न का कार्य करता है जो इस बात का संकेत करता है कि उसके बाद लिखा गया अंक दशमलव भिन्न है, पूर्ण संख्या नहीं। उदाहरणार्थ, 10.5, जिसे दस दशमलव (या प्वायंट) पाँच पढ़ा जाता है, में 5 एक दशमलव भिन्न है जिसे दशमलव बिंदु के बाद लिखा गया है। इसी प्रकार 0.92 को दशमलव नौ दो या केवल, दशमलव नौ दो पढ़ा जाता है। दशमलव भिन्नों में कुछ गणितीय गुणधर्म होते हैं, जो पूर्ण संख्याओं (Integral Numbers) में पहरं हसते जिपकस हम अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों में प्रयोग करते हैं। दशमलव भिन्नों के गुणधर्म का विवरण नीचे दिया गया है। इसका कारण यह है कि किसी भी दशमलव भिन्न में प्रत्येक अंका का निश्चित, अचर एवं निरपेक्ष मान होता है, चाहे उस दशमलव समूह में कितने भी अंक क्यो न हों। पूर्ण संख्याओं तथा दशमलव भिन्नों के अंको के गुणधर्म के बीच यह अंतर ध्यातव्य है।

5.1 अंकों आ अचर स्थानिक मान

यदि हम किसी दशमलव भिन्न के दाहिने छोर पर अन्य अंक लिखें तो भी पूर्व उपस्थि संख्याओं का स्थानिक मान नहीं बदलता है। उदाहरणार्थ, यदि एक दशमलव भिन्न 52 में 5 को जोड़ा जाए तो संख्या 525 बनेगी, किन्तु फिर भी प्रथम दो अंकों (52) का मूल स्थानिक मान पूर्ववत् रहेगा। इसका कारण यह है कि किसी भी दशमलव भिनन में प्रत्येक अंक का निश्चित, अचर एवं निरपेक्ष मान होता है, चाहे उस मदशमलव समूह में कितने भी अंक क्यों न हों। पूर्ण संख्याओं तथा दशमलव भिन्नों के अंकों के गुणधर्म के बीच यह अंतर ध्यातव्य है।

5.2. दाहिन छोर के शून्य की अर्थहीनता

यदि किसी दशमलव-भिन्न के दिाहिन छोर पर कोई शून्य जोड़ दिया जाए तो, इस गुणधर्म के अनुसार, उसका पूर्ववत अर्थात् शून्य ही रहेगा। उदाहरणार्थ, 9.5, 9.50, 9.500 सभी का मान समान है।

अत: दशमलव भिन्नों उनके मान के अनुसार व्यवस्थित करने में थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। उदाहरणार्थ, 23 और 1125 दो दशमलव-भिन्नों में पहल का मान दूसरे से अधिक है। इसका सरल सूत्र यह है कि दो या दो से अधिक दशमलव भिन्नों में उस दशमलव-भिन्न का मान अन्य भिन्नों की तुलना में अधिक होगा जिसका प्रारंभिक अंक (Initial Digit) उच्च होगा, चाहे अन्य दशमलव भिन्नों में कुल अंकों की संख्या कितनी भी अधिक क्यों न हो। उदाहरणार्थ, दशमलव 3 का मान दशमलव 1559 की तुलना में अधिक उच्च है।

NOTES

5.3. अंकों का क्रमबोध मान

अन्य वर्गीकरण प्रणालियों की भांति, डी डी सी में प्रयुक्त संख्याओं/चिह्नों/प्रतीकों का उपयोग *क्रमबोध* (Ordinal Value) युक्त अंकों के रूप में किया जाता है। उनका कोई गणन मान (Cardinal Value) नहीं होता। इनमं संख्याओं को मात्रा तथ मापने की उनकी शक्ति से रहित या वंचित रखा गया है और वे केवल अपने अनुक्रम मान को ही द्योतित करती है, अर्थात् कि कौन सी संख्या पहले आएगी और कौन सी बाद में। डी डी सी में, 953 एवं 954 द्वारा द्योतित दो विषयों में से 954 द्वारा द्योतित विषय का महत्त्व या मूल्य 953 द्वारा द्योतिति विषय से अधिक है, यह कहना समीचीन नहीं। इसका अर्थ केवल यही है कि पुस्तकालय के फलकों में 954 वर्ग संख्या वाले प्रलेखों को 953 वर्ग संख्या वाले प्रलेखों के पश्चात रखा जाएगा। इसी प्रकार संख्या 511 को फलकों पर 512 से पहले स्थान दिया जाएगा, और 45 को 5 से पूर्व तथा 301 को 92 से पूर्व रखा जाएगा।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. पुस्तकों को व्यवस्थित करने हेतु कौन-कौन सी प्रणालियाँ प्रचलित हैं?

.....

.....

.....

.....

5.4. अंकान द्वारा पदानुक्रम दर्शाना

केवल अंकन द्वारा हम विषय की महत्ता या गुण नहीं जान सकते, लेकिन यह ज्ञानजगत् के विषयों के मध्य उसकी सापेक्षिक स्थिति निश्चित करने में सहायक है। अंकन किसी विषय की सापेक्षिक गहनता तथा अन्य विषयों से उसके संबंध को भी प्रदर्शित करता है। डी डी सी एक पदानुक्रमिक वर्गीकरण (Hierarchical Classification) प्रणाली है। इसका अर्थ है कि विषयों की समकक्षता (Corrdinatiion) और अधीनस्थता (Subordination) का प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शन अंकन के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, क्रमशः 5 और 51 द्वारा द्योतित दो विषयों के संदर्भ में हम कहते हैं कि 51 द्वारा द्योतित विषय 5 द्वारा द्योतित विषय का अधीनसी विषय हे तथा 515 द्वारा द्योतित विषय का अधीनस्थ विषय है। दूसरे शब्दों में, 515 अंक 51 का एक अंश है तथा 51 अंक 5 का भाग या अंश है।

इस प्रकार, इनका पदानुक्रमिक क्रम होगा:

5
51
515

यह तभी संभव है जब अंकन में दशमलव भिन्न (Decimal fraction) हों।

6. मूल योजना एवं न्यूनतम तीन अंकों की परिपाटी

डी डी सी एक सार्विक प्रणाली है तथा ज्ञान की सभी शाखाओं के पुस्तकों का वर्गीकरण करने में सक्षम है। यह प्रणाली संपूर्ण ज्ञान को एक इर्का के रूप में मानकर उसे पारस्परि रूप से अनन्य (Mutually Exclusive) दस मुख्य वर्गों में बाँटती है और इन मुख्य वर्गों को दशमलव संख्या 0 से 9 द्वारा द्यातित करती है। ये दस मुख्य वर्ग निम्नलिखित हैं:

0 Generalities

1 Philosophy and erlated disciplines

2 Religion

3 Social sciences

4 Language

5 Pure sciences

6 Technology (Applied sciences)

7 The arts

8 Literature (Belles–letters)

9 General geography and history uxiliareis

यदि दशमलव भिन्नों के गुणधर्म का कठोरता से पालन किया जाए तो उपरिलिखित मुख्य वर्गों को द्योतित करने वाली संख्याओं को 0.0 Generalities, 0.1 Philosophy and related disciplines, 0.2 Religion इतयादि के रूप में लिखना चाहिए था किन्तु अंकन में सरलता और संक्षिप्तता को बनाए रखने के लिए, प्रारभिक शुन्य और दशमलव बिन्दु को हटा दिया गया है यद्यपि इनकी उपस्थित वहाँ मानी जाती है। *अतः* डी डी सी मेमं संख्या 512 को हम पांच एक दो पढ़ेगें न कि पाँच सौ बारह। इसी प्रकार 91 को नौ एक पढ़ेगें न कि इक्यानवे और 025.4 को शून्य दो पाँच दशमलव चार पढ़ेगें।

इन दशमलव भिन्नों के क्रमबोध मान को सरल बनाने, तथा उनको व्यवसित करने के लिए डी डी सी में यह नियम किया गया है कि सभी संख्याओं में कम से कम तीन अंक होंगे। यदि किसी संख्या में तीन से कम अंक हो, तब हम उसे तीन अंक की संख्या बनाने के लिए आवश्यक संख्या से शून्य जोड़ देंगे। इसीलिए व्यवहार में दस मुख्य वर्गों को इस प्रकार द्योतित किया या लिखा जाता है :

000 Generalities

100 Philosophpy and related disciplines

200 Religion

300 Social sciences

400 Language

500 Pure sciences

600 Technology (Applied sciences)

700 The arts

800 Literature

900 General geography history

ऊपर दिए दस विभाजनों को डी डी सी अनुसूचियों की प्रथम सारांश–तालिका (First Summary) भी कहते हैं। डी डी सी सीखने वालो के लिए यह प्रथम व्यावहारिक चरण है।

स्व–प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. अंकन क्या है? इसका प्रयोग क्यों किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

NOTES

7. ग्रंथखंड 1 : प्रस्तावना एवं सारणी

यह अपेक्षाकृत कम पृष्ठों का ग्रंथखंड है जिसमें परिचयात्मक सामग्री तथा सात सहायक सारणियाँ हैं। इसके "Publisher's Foreward" (pp.xi–xiii) में डी डी सी का संक्षिप्त इतिहास दिया गया है तथा (pp.vx–xviii) में प्रस्तावना (Preface) DCEPC : Decimal Classifiaction Editorial Policy Commitee (डी डी ई पी सी) के चेयरमैन द्वारा दी गई है। इस प्रस्तावना में 19वें संस्करण में विशेष लक्षणों और नीतियों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् बेंजामि ए. कस्टर (Benjamin A. Custer) द्वारा संपादकीय भूमिका (Editor's Introduction) दी गई है। यह (प्रथम) ग्रंथखंड इस प्रणाली का बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी भाग है। संपादकीय भूमिका में प्रणाली की संरचना, उसकी विविध योजनाओं, लक्षणों तथा इसके उपयोग से संबधित सारे निर्देशों का विस्तार से वर्णन किया गया है। यह ग्रंथखंड पुस्तक के विषय को निर्धारित करने (विषय विश्लेषण द्वारा) में दिशा–निर्देश प्रदान करता है (Sec. 9,pp. 1vi, ix) तथा अपयुक्त वर्ग संख्या को खोजने में मदद करता है। अनुसूचियों या सहायक सारणियों या दोनों का उपयोग कर वर्ग संख्या को संश्लेषित करने (विस्तार करने) से संबधित नियम भी इस ग्रंथखंड में दिए गय हैं।

7.1 सहायक सारणियाँ

खंड 1 द्वितीय भाग में सहायक सारणियाँ (Seven Auxiliary Tables) दी गई है जो निम्नलिखित है:

1. Standard Subdivisions, 2. Areas, 3. Subdivisions fo Individual Literatures, 4. Subdivisions of Individual Languages, 5. Racial Ethnic. National Groups, 6. Languages, तथा 7 Persons.

इस पाठ्यक्रम के खंड 2 की इकाई 5 में इन सारणियों की व्याख्या की गई है।

7.2 सारांश–तालिकाएँ

डी डी सी में दी गई तीन सारांश–तालिकाएँ (प्रथम खंड, पृष्ठ 471–482) अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। ये इस प्रणाली की तीन रूपरेखाएँ हैं और बढ़ते विविरण के कम में दी गई है। पहली सारांश–तालिका जिसे दस मुख्य वर्ग (Ten Main Classes) (p.r471) भी कहते हैं, इस प्रणाली में दिए गए संपूर्ण ज्ञान जगत् के विभाजन की सर्वाधिक स्थूल एवं पहली रूपरेखा है। इस सारांश–तालिका को एक बार पढ़कार याद रखा जा सकता है। पृष्ठ 472 पर इस दस मुख्य वर्गों को पुन: दस शाखाओं में विभाजित किया गया है जिन्हें **विभाग (Division)** कहा गया है। इसमें $10 \times 10 = 100$ विभाग है। इसे द्वितीय सारांश–तालिका या डी डी सी के 100 विभोग (The 100 Divisions) कहते हैं। उदाहरणस्वरूप मुख्य वर्ग 300 Social Sciences की द्वितीय सारांश–तालिका इस प्रकार है :

310 Statistics

320 Political science

330 Economics

340 Law

350 Public administration

360 Social problems and services

370 Education

380 Commerce (Trade)

390 Customs, etiquets folliore

विभाग 330 Economics की तृतीय सारांश-तालिका इस प्रकार है :

330 Economics

331 Labour economics

332 Financial economics

333 Land ecnomics

334 Cooperatives

335 Socialism and related systems

336 Public finance

337 International economics

338 Production

339 Macroeconomics and related topics

तृतीय सारांश-तालिका (473–482) इन 100 विभागों में से प्रत्येक को दस भागों में बाँटती है। इन्हें अनुभाग (Section) कहा गया है। इसमें कुल 100 × 10 = 100 अनुभाग हैं इन 1000 अनुभागों को तृतीय सारांश-तालिका कहा जाता है। ये 1000 अनुभाग उपर्युक्त (द्वितीय सारांश-तालिका) के 100 विभागों के विषय क्षेत्र की विस्तारित पिगणना करहे हैं। इस अनुभागों को कंठस्थ करने की आवश्यकता तब तक नहीं होती, जब तक आप अति विशेषता प्राप्त करना नहीं चाहते।

8. ग्रंथखंड 2. अनुसूचियाँ

अनुसूचियों डी डी सी की समस्त संख्याओं की सुदीर्घ सारणी हैं। ये संख्यानुक्रम में व्यवस्थित हैं तथा विषयों के पदानुक्रम संबंधों (Hierarchical Relations) को दर्शाती हे। दूसरे शब्दों में, ये संख्याओं के बढ़ते क्रमबोध मान के रूप में व्यवस्थित श्रृंखलाएँ हैं। ये डी डी सी प्रणाली का हृदय एवं केंद्रीय भाग हैं। अनुसूचियों और कुशल अपयोग के लिए यह आवश्यक है कि स्थान-स्थान पर दी गई विभिन्न टिप्पणियों और निर्देशों को भली-भाँति समझ लिया जाए।

8.1 पदानुक्रम

पदानुक्रम (Hierarchy) का अर्थ है, उत्तरोत्तर अधीनस्थता के क्रम में आने वाले विषय। पदानुक्रम का अर्थ है, श्रृंखला में नीचे उतरते हुए विषयों को बढ़ती विशिष्टता के आधार पर व्यवसिति करना भी हैं विषय की बढ़ती विशिष्टता या पूर्ण-अंश संबंध (whole-per relationship) को संख्या में बांई और एक अंक जोड़कर तथा शाब्दिक शीर्षक को दा.ई ओर स्थानांतरित कर दर्शाया जाता है।

उदाहरणार्थ :

300	Social sciences
330	Economics
332	Financial economics
332.4	Money
332.41	Value of money
332.414	Factors affecting fluctuations in value

उपर्युक्त उदाहरण में प्रत्येक शीर्षक अपने से ऊपर क शीप्रक का अधीनस्थ है। प्रत्येक चरण में बाँइ और अर्थत् वर्ग संख्या के कॉलम में एक अंक की वृद्धि, एवं संबंधित शीर्षक के शीर्ष के दाँई आरे विस्थापत होने से श्रृंखला की लम्बाई में वृद्धि पर ध्यान दें।

NOTES

8.2 संख्याओं का क्रम

संपूर्ण अनुसूची एक संख्यात्मक क्रम में 001–999 तक व्यवस्थित है। दशमलव भिन्नों के आरोही क्रत और उनके मान का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। अत: इच्छित संख्या को आसानी से खोजा सा सकता है। किसी संख्या तक पहुँचने के लिए पृष्ठ संख्या सहायता नहीं करती। इसके लिए संख्यात्मक क्रम (Numerical Order) एवं दशमलव भिन्नों से होकर आगे गुजरना होता है। उपयोक्ता की सुविधा के लिए प्रत्येक पृष्ठ के दोनों ऊपरी कोनों पर तीन अंकों की नुभाग संख्या आंकित होती है। इसका अवस्थिति सूचक मान (Location value) अत्यधिक है।

उदाहरणार्थ, यदि हमें वर्ग संख्या 333 तक पहुँचना है तो हमारा मार्ग निम्नवत होगा :

330 – 330 – 333 – via 331, – 332 – 332.1 – 332.9 (Vol.2, p.275)

उसी प्रकार 333.915 तक पहुँचने के लिए :

300 – 330 – 333 – 333.0 – 333.91 – 333.915 (vol 2, p.283)

8.3 अनुसूचियों से भिज्ञता

पदानुक्रम सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक संख्या के सामने प्रदत्त शीर्षक संपूर्ण विषय को वर्णित नहीं करता अपितु श्रृंखला में उपस्थित उस अंक से संबंधित अति विशिष्ट पद को निरूपित करता है। अनुसूची में प्रत्येक शीर्ष का पूरा अर्थ समझने के लिए उसके ऊपर दिए गय शीर्षक को पढ़ा जाना चाहिए। उदाहरणार्थ :

342.052 Powers, functions and duties

यदि इस प्रविष्टि को स्वतंत्र रूप में देखा जाए तो यह नहीं समझा जा सकता कि "Powers, functions and duties" किससे संबंधित है है किन्तु यदि हम पदानुम के इसके तुरन्त ऊपर दी गई संख्या के शीर्षक के संदर्भ में इस पढ़ेगें तो इस वर्ग संख्या का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट अर्थात "Powers, functions and duties of the legislative branch of the government"। इसे पुन: इसके भी ऊपर दी गई संख्या अर्थात् 342 के संदर्भ में भी पढ़ा जा सकता है। तब अर्थ होगा "Powers functions and duties of the legislative branch of the government in cojnstitutional and administrative law"।

एक अन्य उदाहरण देखें।

546.342 Simple

यहाँ विशेषण "Simple" का प्रयोगा किसके लिए हुआ है यह समझना कठिन है किन्तु इसके ऊपर डी गई संख्या 548.34 के संदर्भ में इसके अर्थ "Simple salt" होगा, जो कुछ स्पष्ट है। लेकिन जब हम इसे पुन: इसके ऊपर दिए गए 546 Inorganic chemistry के संदर्भ में पढ़ेगें तब वर्ग संख्या का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट होगा Inorganic simple salts।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. डी डी सी की सारांश तालिका का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

9. ग्रंथखंड 3 : सापेक्ष अनुक्रमणिका

डी डी सी मा तीसरा ग्रंथखंड सापेक्ष अनुक्रमणिका (relative Index) का है जिसमें 1217 पृष्ठ हैं। अनुक्रणिका किसी भी वर्गीकरण प्रणाली का महत्त्वपूर्ण भाग होती है। डी डी सी में इसे सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया है, जो अन्य प्रकार की वर्णनुक्रमिक अनुक्रमणिकाओं से अधिक उत्तम है तथा जो पुस्तकालय वर्गीकरण में मेल्विल ड्यूइ का यह एक महत्त्वपमर्ण योगदान है। यह सापेक्ष अनुक्रमणिका एक ऐसी

अनक्रमणिका है जाक विषयों और उनके पदों के कोवल वर्णानुक्रम में ही व्यवस्थित नहीं करती, बल्कि पदों के मध्य संबंधों को प्रदर्शित भी करती हे, तथा उस संदर्भ को भी दर्शाती है जिस संदर्भ में उनका प्रयोग अनसूची में किया गया है। यह मूल वर्गीकृत अनुसूची की कुंजी मात्र नहीं है, बल्कि यह वर्गीकरण को एक स्वतंत्र अभिगम भी प्रदानी करती हैं अत: यह डी डी सी का वैकल्पिक भाग नहीं, बल्कि इसका एक अभिन्न भाग है।

10. वर्ग संख्या की लेखन-विधि

जैसा कि आपको ज्ञात है—

(i) डी डी सी में प्रयुक्त संख्याएँ दशमलव भिन्न होतीं हैं।

(ii) किसी भी वर्ग संख्या में तीन से कम अंक नहीं होते, जैसे 5 को 500 तथा 53 को 530 लिखेंगे।

(iii) जब वर्ग संख्या में तीन से अधिक अंक हो जाएँ तो तीसरे और चौथे अंक के बीच एक बिन्दु (dot) लगाते हैं। जेसे—324.3, 362.14, 386.242

लम्बी संख्याओं की एकरसता (Monotony) को भंग करने तथा स्मृति-सहाय के रूप में तीसरेअंक के पश्चात् बिन्दु (dot) लगाते हैं। इसकी व्याख्या नीचे दी गई है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. पदानुक्रम का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.1 बिन्दु

यह स्मरण रखना अनिवार्य है कि तीन अंकों के बाद प्रयोग में लाया गया बिन्दु (dot) दशमलव बिन्दु नहीं होता जैसा कि आभास होता है। गणितीय दृष्टिकोण से यह विचार बेतुका है। एक दशमलव भिन्न को पुन: दशमलव के रूप में विभाजित नहीं किया जा सकता। वास्तव में, बिन्दु का प्रयोग सामान्य रूप में मनोवैज्ञानिक कारण से, अर्थात् लंबी संख्या के अंकों की एकरसता को भंग करने के लिए किया जाता है। यह वर्ग संख्या को कुछ समय के लिए याद रखने, उसक प्रतिलिपकरण (Copying) करने तथा उसे लिखन में सहायता करता है। शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों का मत है कि 324.12 को 32412 की अपेक्षा अधिक सरलता से याद रखा जा सकता है। अत: बिन्दु का कार्य स्मृति-सहाय होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

10.2 रिक्त स्थान

यदि कोई वर्ग संख्या छ: से अधिक अंकों की है तो प्रति तीन अंकों के पश्चात् रिक्त स्थान (Spaces) छोड़ते हैं। दूसरे शब्दों में, छठवें अंक के पश्चात् के अंक तीन अंकों के समूहों में लिखे जाते हैं, तथा दों समूहों के बीच रिक्त स्थान छोड़ा जाता है। यह रिक्त स्थान भी बिन्दु के उद्देश्य की भाँति की कार्य करता है, जेस लेखन में सरलता, याद रखने तथा प्रतिलिपिकरण में सरलता। उदाहरण के लिए वर्ग सख्या 384.1064 Telegraph companiese को व्यावहारिक रूप में अनुसूचियों में इस प्रकार लिखा गया है :

385.1065

अत: छठवे और सातवें अंक के बीच में रिक्त स्थान छोड़ा गया है (बिन्दु को अंक नहीं माना जाता)।

NOTES

इसी प्रकार वर्ग संख्या :

621.38800287 TV testing technique

की लेखन-विधि इस प्रकार होगी:

621ण्38800287

यहाँ छठवें और सातवें तथा नौवें और दसवें अंके के बीच रिक्त स्थान छोड़ा गया है। इस रिक्त स्थान को आवश्यकतानुसार बढ़ाया जा सकता है। दसरे शब्दों में किसी वर्ग संख्या में बिन्दु एवं रिक्त स्थान का कोई सारगर्मित अर्थ नहीं होता और न ही ये योजक चिह्न होते हैं।

11. दीर्घ कोष्ठकों में संख्याएँ, अप्रयुक्त प्रविष्टियाँ

अनुसूचियों का प्रयोग करते समय आप विभिन्न स्तरों की कई वर्ग संख्याओं को दीर्घ कोष्ठाकों (Square Brackets) के अन्दर पाएँगे। उदाहरणार्थ :

[309]	Social situation and conditions
[396]	[Unassigned]
[654]	[Unassigned]
[511.7]	Numerical analysis
[351.721]	Fiscal policy

दीर्घ कोष्ठकों में बंद वर्ग संख्याएँ या तो अब प्रयोग में नहीं हैं, या ये अभी तक किसी विषय ाके द्योतित नहीं करतीं। अत: इन संख्याओं को प्रयोग में नही लिया जाता। दीर्घ कोष्ठाकों में बंद संख्याएँ पाँच प्रकार की होती हैं जिन्हें नीचे दिया गया है:

(i) प्रारंभ से अनाबंटित संख्याएँ (Unassigned numbers)

(ii) संप्रति अनाबंटित संख्याएँ (Unassigned numbers)

(iii) रिक्त छोड़ी गई संख्याएँ (Left vacant only)

(iv) वैकल्पिक वर्ग संख्याएँ (Optional class numbers)

(v) 'पहले' टिप्पणियाँ (formely'notes)

11.1 प्रारंभ से अनाबंटित संख्याएँ

कुछ संख्याएँ ऐसी भी हैं जिनसे किसी भी संस्करण में किसी भी विषय को द्योतित नीहं किया गया। अर्थात् अभीतक इन संख्याओं को रिक्त या खाली रखा गया है।

उदाहरणार्थ :

इस प्रकार की प्रविष्टियों की संख्या संस्करण दर संस्करण घट रही है। ये रिक्त स्थान नए विषयों को शामिल या दृयोतित करने में उपयोगी होते हैं।

11.2 संप्रति अनाबंटित संख्याएँ

दूसरे प्रकार की कोष्ठकबद्ध संख्याएँ वे हैं जिन्हें पिछले कुछ संस्करणों से रिक्त रखा गया है।

इनके सामने दीघ्र कोष्ठक में [Unassigned] निखा रहता है तथा नीचे यह बतलाया गया होता है कि उस संख्या को किस संस्करण में आखिरी बार प्रयोग में लिया गया था।

उदाहरणार्थ :

[040] [Unassigned]
Most recently used in Edition 16

[313] [Unasigned]
Most recently used in Edition 14

[426] [Unassigned]
Most recently used in Edition 18

[665] [Unassigned]
Most recently used in Edition 17

डी डी सी के लगातार संशाधन के कारण ऐसी रिक्त संख्याएँ उत्पनन होती हैं। आवश्यकता होने पर इनका उपयोग किसी नवीन विषय को द्योतिि करने के लिए किया जा सकता है।

11.3 रिक्त छोड़ी गई संख्याएँ

दीर्घ कोष्ठक में दी गई तीसरे प्रकार की संख्याएँ वे हैं जिन्हें 19वें संस्करण में रिक्त रखा गया (Left vacant only) है और पहले उनके द्वारा द्योतित विषयों को 19वें संस्करण में किन्हीं अन्य संख्याओं द्वारा द्योतित किया गया है।

उदाहरण के लिए-

[329] POlitical parties and related organizations and processes
Class in 324

[175.83] Reading comics
Number discontinued; class in 175.8

[602.72] Patents
Do not use; class in 608

11.4 वैकल्पिक वर्ग संख्याएँ

दीर्घ कोष्ठकों में दी गई संख्याओं की चौथी श्रेणी वैकल्पिक वर्ग संख्याओं की है। कुछ विषयों को पहले के संस्करणों में जिन वर्ग संख्याओं द्वारा द्योतित किया जाता था उन्हें 19वें संस्करण में बदल कर उनके लिए किसी अन्य वर्ग संख्या का प्रयोग किया गया है। पर यदि कोई पुस्तकालय अपनी पूर्व-निर्मित वर्ग संख्याओं को बदलना नहीं चाहता तो उसे पूर्व वर्ग संख्या को जारी रखने का विकल्प दिया जाता है।

उदाहरणार्थ— [925]* Scientists

यहाँ, पृष्ठ 1449 पर दी गई पाद-टिप्पणी (footnote) के अनुसार * Use is opotional; prefe treatment described under 920.1–928.9

इस निर्देश का अर्थ है कि वैज्ञानिकों की जीवनियाँ या तो 925 और उसके उपविभागों में रखी जा सकती है या उन्हें 500 के अन्तर्गत प्राथमिकता दी जा सकती है।

[330.159] Socialist and related schools

(Use of this nuber is optional prefer 335)

वैकल्पिक सख्याएँ (Optional Class Numbers) यह सूचित करती हैं कि कुछ विषयों को दो विभिन्न स्थानों परप वर्गीकृत किया जा सकता है तथा डी डी सी प्रणाली इसे आपके विवेक पर छोड़ती है।

एक गणितज्ञ की जीवनी (biography of mathematician) को 925.1 या 510.92 में वर्गीकृत किया जा सकता है।

NOTES

अत: यह अपको निश्चित करना है कि इस प्रकार की पुस्तकों को आप किस संख्या के अंतर्गत वर्गीकृत करेंगे। परंतु विकल्प का चयन करने में आपको एकरूपता बनाए रखनी है। यह नीति का विषय है जिसे पहले ही निश्चित कर लेना चाहिए।

11.5 'पहले' टिप्पणियाँ

कुछ प्रविष्टियों में इस प्रकार की कोष्ठकबद्ध संख्याएँ पड़ती हैं। संशोधन की प्रक्रिया में कुछ विषयों को आशिंक या पूर्ण रूप से नई वर्ग संख्या प्रदान की जाती है। ऐसी स्थिति में नए स्थान पर इस बात को दर्शाने के लिए टिप्पणी की गई है। यह टिप्पणी *"formerly....."* के रूप में है तथा तिरछे शब्दों (italics) में छापी गई है और दीर्घ कोष्ठक के अन्दर पुरानी संख्या के साथ दी गई है:

उदाहरणार्थ—

002 The Book [*formerly* 001.552]

इसका अर्थ यह है कि पिछले संस्करण में विषय "the book"के लिए वर्ग संख्या 001.552 का प्रयोग किया गया था जो अब 002 है।

यदि किसी स्वतंत्र संख्या का किसी दूसरी संख्या में विलय कर दिया गया है तो उसे भी इस युक्ति द्वारा सूचित किया गया है।

418.02 Translation and interpretation

Class here Machine translaction [*formerly* 029.756]

इसका अर्थ यह है कि विषय Machine translation के लिए पहले एक स्वतंत्र संख्या 029.756 दी गई थी किन्तु वर्तमान संस्करण में इसका वर्ग संख्या 418.02 Translation Techniques in general में विलय कर दिया गया हैं

299.934 Theosophy [*formerly* 147,212.52]

इसका अर्थ है कि पिछले संस्करण में Theosophy 299.934 विषय को दो स्थानों पर रखा जा सकता था, 147 (Philosophy) के अंतर्गत और 212.52 (Religion) के अंतर्गत।

12. सार-संक्षेप

इस अध्यन में हमने आपकों ड्यूई दशमलव वर्गीकरण प्रणाली से पिरचित कराया है तथा इसकी संररचना और तीनों ग्रंथखंड़ों के व्यवस्थापन की व्याख्या की है। इस अध्याय में चर्चित मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:

(1) डी डी सी का प्रतिपादन मेल्विल ड्यूई (1851–1931) ने 1873 में किया तथा 1876 में इसका प्रथम बार प्रकाशन किया गया। 19वाँ संस्सकरण, जिसे आपके प्रयोग हेतु निर्धारित किया गया हे, का प्रकाशन 1979 में हुआ था।

(2) डी डी सी में दस मुख्य वर्गों और उनके विभागों,) Generalia से 9 History तक को प्रदर्शित करने के लिए दशमलव भिन्न अंकन का प्रयोग किया गया हैं

(3) विषयों के पदानुक्रम (Hierarchy) को दर्शाने-के लिए दशमलव भिन्न एक सुविधाजनक विधि है। साथ ही विषय को पुन: विस्तृत करने और नये विषयों को उचित स्थान दिलाने में भी यह उपयोगी है।

(4) डी डी सी के प्रथम खंड में प्रस्तावना, सात सहायक सारणियाँ तथा अनुसूचियो की तीन सारांश-तालिकाएँ हैं।

(5) ग्रंथखंड 2 (अनुसूचियाँ) में विषयों के विभागों को 001–999 तक दशमलव भिनन के क्रम में व्यवस्थित किया गया है।

(6) ग्रंथखंड 3 (अनुक्रमणिका) को सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया है। यह अनुसूचयों और सारणियों की वर्णानुक्रमिक कुंजी है।

(7) दीर्घ कोष्ठक में दी गई वर्ग संख्याओं का प्रयोग नहीं किया जाता हे।

(8) पूर्ण और स्पष्ट अर्थ जानने के लिए प्रत्येक वर्ग संख्या के उसके ऊपर दी गई वर्ग संख्या के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए।

13. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए आप एक स्व-निर्मित प्रणाली को उपयोग भी कर सकते हैं परंतु यह बहुत कठिन एवं समयसाध्य प्रक्रिया है। इसका एक अन्य उपाय किसी उपलब्ध प्रणाली का उपयोग करना है। इस कार्य के लिए अनेक विश्वप्रसिइद्ध एवं मानक वर्गीकरण प्रणालियाँ उपलब्ध हैं। ऐसी प्रणालियों में ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC : Dewey Decimal Classification), लाइब्रेरी ऑफ क्लैसिफिकेशन (LCC : Library of Congress Classification), यूनिवर्सल डेसिमल क्लैसिफिकेशन सामान्य वर्गीकरण की सारी प्रसिद्ध प्रणालियों में सर्वाधि प्रसिद्ध हैं। पूरे विश्व में इसका प्रयोग किया जा रहा है। यह प्रणाली 1873 में यू एस ए के मेल्विल ड्यूई (Melvil Dewey) (1851–1931) द्बारा प्रतिपादित तथा 1876 में प्रथम बार प्रकाशित की गई थी।

2. जिस प्रकार किसी फिल्म की कथा और उसके मूल-विषय को अभिनेताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, उसी प्रकार पुस्तकालय वर्गीकरण में विषयों को वर्गों और उपवर्गों में द्योति करने के लिए अंकन (Notation) का प्रयोग किया जाता है। अंकन को वर्गों एवं उसके उपवर्गों को द्योतित करने वाले संक्षिप्त प्रतीकों की सुनियोजित श्रृंखला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह पुस्तकालय में पुस्ताकों के व्यवस्थापन का यंत्रीकरण करता है। संक्षिप्तता का भाव अंकन में सन्निहित है, परंतु संक्षिप्तता इसकी अकेली/प्रमुख वरीयता नहीं है। वर्गीकरण प्रणाली का यंत्रीकरण अंकन का प्रथम गुण है।

3. डी डी सी में दी गई तीन सारांश-तालिकाएँ (प्रथम खंड, पृष्ठ 471–482) अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। ये इस प्रणाली की तीन रूपरेखाएँ हैं और बढ़ते विविरण के कम में दी गई है। पहली सारांश-तालिका जिसे दस मुख्य वर्ग (Ten Main Classes) (p.r471) भी कहते हैं, इस प्रणाली में दिए गए संपूर्ण ज्ञान जगत् के विभाजन की सर्वाधिक स्थूल एवं पहली रूपरेखा है। इस सारांश-तालिका को एक बार पढ़कार याद रखा जा सकता है। पृष्ठ 472 पर इस दस मुख्य वर्गों को पुनः दस शाखाओं में विभाजित किया गया है जिन्हें **विभाग (Division)** कहा गया है। इसमें $10 \times 10 = 100$ विभाग है। इसे द्वितीय सारांश-तालिका या डी डी सी के 100 विभोग (The 100 Divisions) कहते हैं। उदाहरणस्वरूप मुख्य वर्ग 300 Social Sciences की द्वितीय सारांश-तालिका इस प्रकार है :

310 Statistics

320 Political science

330 Economics

NOTES

340 Law
350 Public administration
360 Social problems and services
370 Education
380 Commerce (Trade)
390 Customs, etiquets folliore

विभाग 330 Economics की तृतीय सारांश-तालिका इस प्रकार है :

330 Economics
331 Labour economics
332 Financial economics
333 Land ecnomics
334 Cooperatives
335 Socialism and related systems
336 Public finance
337 International economics
338 Production
339 Macroeconomics and related topics

4. पदानुक्रम (Hierarchy) का अर्थ है, उत्तरोत्तर अधीनस्थता के क्रम में आने वाले विषय। पदानुक्रम का अर्थ है, श्रृंखला में नीचे उतरते हुए विषयों को बढ़ती विशिष्टता के आधार पर व्यवसित करना भी हैं विषय की बढ़ती विशिष्टता या पूर्ण-अंश संबंध (whole-per relationship) को संख्या में बांई और एक अंक जोड़कर तथा शाब्दिक शीर्षक को दा.ई ओर स्थानांतरित कर दर्शाया जाता है।

उदाहरणार्थ :

300	Social sciences
330	Economics
332	Financial economics
332.4	Money
332.41	Value of money
332.414	Factors affecting fluctuations in value

उपर्युक्त उदाहरण में प्रत्येक शीर्षक अपने से ऊपर क शीप्रक का अधीनस्थ है। प्रत्येक चरण में बाँइ और अर्थत् वर्ग संख्या के कॉलम में एक अंक की वृद्धि, एवं संबंधित शीर्षक के शीर्ष के दाँई आरे विस्थापत होने से श्रृंखला की लम्बाई में वृद्धि पर ध्यान दें।

14. मुख्य शब्द

अंक (Digit) : किसी अंकन प्रणाली की सबसे छोटी एकल इकाई। उदाहरण के लिए अंकन 954 में तीन अंक हैं 9, 5,4 तथा B, 7 में तीन अंक हैं B, (कोमा) और 7।

अंकन (Notation) : विषयों, उनके उपविभागों, तथा संबंधों को द्योतित करने के लिए प्रयुक्त संक्षिप्त प्रतीकों (Shorthand Symbols) की सुनियोजित श्रृंखला। यह फलकों पर ग्रंथों की व्यवस्था का यंत्रीकरण करता है।

अनुसूचियाँ (Schedules) : सभी विषयों तथा उनकी सभी शाखाओं में 001 से 999 या A/Z के संख्यात्मक क्रम में व्यवस्थित करने की लम्बी श्रृंखला। डी डी सी के ग्रंथखंड 2 में 001-999 की अनुसूचियाँ हैं।

क्रमबोधक प्रतीक (Ordinal Symbols) : प्रतीक जो केवल क्रम दर्शाते हैं तथा किसी भी गणनबोध मान से विच्युत होते हैं।

दस मुख्य वर्ग (Ten Main Classes) : डी डी सी में यह ज्ञान जगत् का प्रथम विभाजन है, जिसे प्रथम सारांश-तालिका भी कहा जाता है। इस प्रणाली (डी डी सी) के अनुसार ये दस वर्ग ज्ञान के प्रमुख विषय हैं। इन मुख्य वर्गों की संख्या हर प्रणाली में भिन्न-भिन्न है।

गणनबोध मान (Cardinal Value) : वे संख्याएँ जो मात्रा या परिमाण को एक, दो, तीन इत्यादि के रूप में व्यक्त करें।

पदानुक्रम (Hierarchy) : उत्तरोत्तर अधीनस्थता संबंध के आधार पर निर्मित विषयों या प्रविष्टियों का क्रम।

वर्गीकरण (Classification) : विभिन्न सत्ताओं (अमूर्त या मूर्त) को उनकी पारस्परिक समानता की मात्रा के आधार पर व्यवस्थित करने की कला और विज्ञान। इसका अर्थ उन्हें उनकी भिन्नता के आधार पर छाँटना, समूहीकृत तथा पृथक करना भी है।

वर्गीकरण अनुसूची (Classification Schedule) : विषयों तथा उनके उपविभागों की मुद्रित लिखित या अन्य रीति से तैयार की गई सुनियोजित सूची जिसमें प्रत्येक विषय तथा उसके उपविभाग के सामने उसे द्योतित करने वाला अंकन दिया गया होता है।

वर्गीकरण पुस्तकालय (Classification (Library)) : पुस्तकालय में पुस्तकों तथा अन्य अध्ययन सामग्री को उनकी विषय-वस्तु के आधार पर, पाठकों की सुविधा के अनुरूप व्यवस्थित करना। इसे सुनियोजित या तार्किक व्यवस्थापन भी कहते हैं। यह सूचना पुनर्प्राप्ति में सहायक है तथा फलकों पर अवलोकन को संभव करता है।

वर्गीकरण प्रणाली (Classification System) : एक विशिष्ट पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली, जैसे ड्यूई डेसिमल क्लासीफिकेशन, रंगनाथन का कोलन क्लासीफिकेशन या लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस क्लासीफिकेशन इत्यादि।

सारांश-तालिका (Summary) : डी डी सी में दी गई ज्ञान के विभागों की प्रमुख रूपरेखा। डी डी सी में बढ़ते विवरण के साथ तीन सारांश-तालिकाएँ दी गई हैं।

NOTES

15. अभ्यास-पश्न

1. डी.डी.सी. में प्रयुक्त दशमलव भिन्न में गुणधर्म की विवेचना कीजिए।
2. मूल योजना एवं न्यूनतम तीन अंको की परिपाटी से आप क्या समझते हैं।
3. ग्रंथखंड 1 की प्रस्तावना एवं सहायक सारणियों का वर्णन कीजिए।
4. ग्रन्थखंड 2 की अनुसूचियों का विवरण कीजिए।
5. वर्ग संख्या की लेखन-विधि पर प्रकाश डालिए।

16. सन्दर्भ ग्रन्थसूची

- Comaromi, John P. [et aij]. (1982). *Manual for use of Dewey Decimal Classification, 19th ed.* Albany, New York; Forest Press.
- Dewey, Melvil (1979). *Dewey Decimal Classification and Relative index.* 3.Vols. 19th ed. Albany, New York : Forest Press.
- Osborn, Jean (1982). *Dewey Decimal Classification 19th Edition : A study manual.* Littleton : Libraties Unlimited.
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987) *Inroduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi* : Sterling Publishers.
- *Decimal Classification. New Delhi :* Sterling Publishers.
- Sharma. Pandey S.k. (1998). *Practical Approach to DDC.* New Delhi : Ess ESS Publications.

NOTES

अध्याय-2

परिभाषाएँ, टिप्पणियाँ एवं निर्देश

अध्ययन के उद्देश्य

1. उद्देश्य
2. परिचय
3. परिभाषाएँ, व्याख्या एवं विस्तार-क्षेत्र
4. विभिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ
   - 4.1 समावेश टिप्पणियाँ
   - 4.2 'यहाँ वर्गीकृत करें' टिप्पणियाँ
   - 4.3 'अन्यत्र वर्गीकृत करें'
   - 4.4 '..... के अंतर्गत वर्गीकृत करें' टिप्पणियाँ
   - 4.5 '..... के लिए... देखे' टिप्पणी
   - 4.6 'व्यापक कृतियों को.....के अंतर्गत वर्गीकृत'
   - 4.7 स्थगित (कोष्ठकबद्ध) प्रविष्टियों के अंतर्गत टिप्पणियाँ
   - 4.8 विभिनन टिप्पणियों का महत्त्व
5. मध्यवर्ती शीर्षक/मध्यवर्ती प्रविष्टि
6. वर्ग संख्या निर्माण से संबंधित टिप्पणियाँ
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास-प्रश्न
11. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. उद्देश्य

इस अध्याय में हम आपको डी डी सी की अनुसूचियों में विभिन्न प्रविष्टियों के अंतर्गत दी गई परिभाषाओं, टिप्पणियों और निर्देशों स अवगत कराएँगे। ये टिप्पणियाँ संबंधित प्रविष्ट को स्पष्ट करने में सहायक होती है।

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप—

- किसी प्रविष्टि के अंअर्गत दी गई विभिन्न टिप्पणियों और निर्देशों के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे;
- किसी विषय के लिए वर्ग संख्या का निर्माण करते समय संबंधित निर्देशों एवं अनुदेशों का पालन कर पाएँगें; तथा
- अनुसूची में दिए गए मध्यवर्ती शीर्षकों की विचारधारा एवं उपयोगिता का वर्णन करने में सक्षम होंगे।

2. परिचय

सात सारणियों (ग्रंथखंड 1) तथा अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) की प्रत्येक प्रविष्टि में आप परिभाषाएँ, टिप्पणियाँ निर्देश पाएँगे। अनुसूचियों और सारणियों में दी गईयेक प्रविष्टि एक स्वत: पूर्ण इकाई है और इसक तीन घटक होते हैं: (i) एक संख्या या फैलाव दर्शाने वाली संख्या, (ii) एक शीर्षक, और (iii) आवश्यकतानुसर एक या अधिक टिप्पणियाँ तथा वर्ग संख्या निर्माण संबंधी निर्देश/अनुदेश। ये टिप्पणियाँ विभिन्न प्रकार की होती हैं जिनके विभिन्न कार्य होते हैं। प्रविष्टियों या शीर्षकों की परिभाषाओं, विषय-क्षेत्र और सीमाओं को समझने तथा व्याख्या करने में ये हमारी सहायता करती हैं। कभी अधिक उपयुक्त वर्ग संख्या तो कभी तुलनात्मक और संबंधित वर्ग संख्या के चयन में भी ये हमारी सहायता करती हैं। ये टिप्पणियाँ "वर्ग संख्या निर्माण" (Number Building) टिप्पणियाँ कहलाती हैं। इन सभी प्रकार के निर्देशों की इस इकाई के आगामी अनुच्छेदों में व्याख्या की गई है।

पुस्तकों का वर्गीकरण करने के लिए इन निर्देशों और टिप्पणियों को समझना अति आवश्यक है। अत: आपको एक अच्छा वर्गीकरणकर्ता बनने से पहले इन टिप्पणियों और निर्देशों सें सुपरिचित होना आवश्यक है।

3. परिभाषाएँ, व्याख्या एवं विस्तार-क्षेत्र

किसी वर्ग के विषय-क्षेत्र, अं और सीमाओं (चौहद्दी) में विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों में भिन्नता हो सकती है। अत: प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली को विषयों तथा उनके उपविषयों एक सूची बनाकर उनकी सीमाओं को परिभाषित कर लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, पुस्तकालय वर्गीकरण को इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए कि "एक वर्ग उसके सभी परिगणात्मक उपविभागों का कुल योग है" (रंगनाथन ने इसे परिगणना का उपसूत्र (Canon of Enumeration) कहा है)। पर्याप्त स्पष्टता बनाए रखने के लिए इस पिरगणना में कुछ टिप्पणियों और विधियों का भी उपयोग किया जाता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. वर्ग को परिभाषित करते हुए उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

वर्ग की परिभाषा

डी डी सी में कुछ वर्गों और उनके उपवर्गों की परिभाषाएँ दी गई हैं। प्रविष्टि के शीषक के नीचे परिभाषा दी जाती है। उदाहरणर्थ, प्रविष्टि "330 Economics" के अंतर्गत Ecnomics की सारगर्भित परिभाषा इस प्रकार प्रदान की गई है: "The science of human behavior as it relates to utilization of scarce means for the satisfaction of needs and desires through production, distribution, consumptio." कभी-कभी किसी किवष के विस्तार क्षेत्र को 'परिभाषा टिप्पणी' द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरणार्थ : 370. 159 Psychological effects of education का विस्तार-क्षेत्र : "Effects on students of schoold situation, teaching methods, other factors"। इस टिप्पणी द्वारा प्रविष्टि का अर्थ और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किए जाने वाले प्रलेख के प्रकार को स्पष्ट किया गया है।

यद्यपि डी डी सी का यह एक उपयोगी गुण है, किन्तु प्रत्येक प्रविष्अि का विषय की परिभाषा दी गई हो यह आवश्यक नहीं है। अत: जहाँ परिभाषा नहीं दी गई है वहाँ *Webster's Third New International Dictionary of the English Language* में दी गई परिभाषा को स्वीकार करना चाहिए।

4. विभिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ

कभी-कभी एक विषय की परिभाषा देने की अपेक्षा उसके विस्तार-क्षेत्र को दृष्टान्तों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

उदाहरणार्थ-

330.1542 Historical school of economic thought

अस प्रविष्टि का विस्तार-क्षेत्र इस प्रकार दिया गया है।

"School of Roscher, Knies, Hildebrand, Schmoller, Bucher, Knapp"

इसी प्रकार 253 Secular elergymen and postoral Dities (Pastoral theology), का विस्तार-क्षेत्र इस प्रकार दिया गया है:

"Priests, ministers, pastors, rectors, vicars, curates, chaplains, elders, deacons, assistats"

कभी-कभी विषय के विस्तार-क्षेत्र का वास्तविक उदाहरणों द्वारा ("Examples" द्वारा) स्पष्ट किया गया है।

उदाहरणार्थ, निम्नलिखित प्रविष्अि के अंतर्गत दिए गए उदाहरण पर ध्यान दे:

549.121 Mechnical properties of minerals

Exampes : eleavage, parting, fracture, hardness, tenacity, specific gravity.

एक अन्य उदाहरण देखें—

025.315 Structure of library catalog

Examples : dividend, unified, classified ऐसे उदाहरणों दृवारा हो पुस्तकालय प्रत की आन्तरिक संरचना या रूप को जान सकते हैं।

NOTES

ये उदाहरण दृष्टांत मात्र हैं और किसी भी प्रकार से सुविस्तृत नहीं है। किसी भी प्रकारण पर अन्य उदाहरण भी उद्धृत किए जा सकते हैं। कभी-कभी विस्तार-क्षेत्र को, कुछ प्रकरणों का निष्कासित कर, परिभाषित किया जाता हैं

उदाहरणार्थ:

791 Public performances

Other than musical, sport and game performance

यहात्र स्पष्ट है कि संगीत, खेल एवं खूल कूद, जो सार्वजनित रूप से सपन्न की जाने वाली कलाएँ हैं, का यहाँ समावेश नहीं किया गया है और इनके महत्त्व के कारण इन्हें अलग दर्शाया या वर्गीकृत किया गया है।

4.1 समावेश टिप्पणियाँ

कुछ विषयों (topics), को जो किसी वर्ग का भाग या अंश नहीं होते, किसी वर्ग के साथ स्थाई स्थान दे दिया जाता है। वास्तव में ऐसे विषय पूरी तरह विकसित नहीं होते और उनका ग्रंथराशि प्रमाम (Literary Warant) या साहित्य समादेश भी उन्हें पूर्ण और पृथक् वर्ग संख्या देने की माँग नहीं करता। इसलिए ऐसे विष्यों को उस वर्ग के अतंर्गत (तदर्थ आधार पर) स्थाई स्थान दे दिया जाता है, जिससे वे संबद्ध होते हैं। बाद में जब उस विषय पर पर्याप्त साहितय का प्रकाशन हो जाता है, तब डी डी सी की संपादकीय नीति के अनुसर ऐसे विषयों के लिए पृथ्क वर्गों का प्रावधान किया जाता है। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित प्रविष्टि के अंतर्गत दी गई समावेश टिप्पणी (Inclusion Note) देखें :

398.47 Ghosts as subject of the folklore including haunted places

इसका अर्थ यह है कि तार्किक आधार पर folklore with haunted places "प्रविष्टि" 398.47 "Ghosts as subjects of folklare" अंश नहीं है और न ही यह एक पूर्ण विकसित विषय है। अत: जब तक इसके लि पूर्ण वर्ग संख्या के औचित्य को न्यायोचित नीं ठहराया जाता तब तक इसकी वर्ग संख्या 398.47 ही दी जाएगी। एक अन्य उदाहरण देखें:

इस प्रविष्अि में दी गई "समावेश टिप्पणी" में कई महत्त्पूर्ण विषय हैं, जैसे : "relation to immediate community. academic freedom, right, obligations and public statu s of teachers"। इसकी पुन: व्याख्या करने पर ज्ञात होता है कि विषय academic freedomo पर इतना साहित्य उपलब्ध नहीं है कि उसे पृथक् वर्ग के रूप में माना जा सके। अत: अभी इसको अन्य विषयों के साथ समावेशित कर वर्ग संख्या 371.104 के अंतर्गत रखा गया है।

4.2 "यहाँ वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ

कुछ विषय दिए गए विषय का भाग ज्ञात नहीं होते। वे टिप्पणी में जिस विषय के साथ दिए गए होते हैं उनसे या तो व्यापक या फिर संकीर्ण होते हैं। "यहाँ वर्गीकृत करें।" ("Class here") का अर्थ यह है कि उन्हें आबंटित स्थान तर्कसंगत नहीं है, फिर भी सइ टिप्पणी द्वारा एक असमायोजित विषय को वर्ग सख्या प्रदान की जाती है। उदाहरणार्ा निम्नलिखित प्रविष्टि पर गौर करें।

576 Microbes

Class here microbiology

इसका अर्थ है कि यद्यपि Microbiology, Microbes का पर्याय नहीं है, फिर भी 576 Microbes के साथ ही रखा जाता है।

574.295 Immune reaction (in general pathology)

यहाँ हम "Class here serology" का निर्देश पाते हैं।

अब निम्नलिखित उदाहरणों को देखें:

370.19 Social aspects of education

Class here educatinal sociology

370.152 Cognitive processes

Class here intelligence

सैद्धांतिक रूप से एक तरफ विस्तार-क्षेत्र, टिप्पणियों और उदाहरणों के रूप में उद्धृत विषयों तथा दूसरी तरफ "समायोजित" ("Inclusion") "और "यहाँ वर्गीकृत करें" ("Class here") टिप्पणियों में उद्धृत विषयों में बहुत भिन्नता है। फिर भी उनका व्यावहारिक प्रभाव समान है।

ये विषय सापेक्ष अनुक्रमणिका (ग्रंथखंड-3) में भी टिप्पणियों के अंतर्गत उद्धृत किए गए हैं। इससे अनुसूचियों में इनकी खोज सरल हो जाती है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. समावेश टिप्पणी से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.3. "अत्यत्र वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ

"अन्यत्र वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ ("Class elsewhere" NOtes) यहाँ वर्गीकृत करें ("Class here" Notes) एवं समावेश टिप्पणियों ("Including" Notes) से विपरीत हैं। कभी-कभी किसी विषय, जासे किसी अन्य विषय का भाग अथवा उससे संबद्ध प्रतीती होता है, को एक स्वतंत्र वर्ग संख्या प्रदान की जाती है। ऐसी स्थिति में विभिन्न रूपों में एक टिप्पणी प्रदान की जाती है। इस प्रकार की टिप्पणी प्राय: उस विषय के उपविषयों के लिए और अधिक उपयुक्त वर्ग संख्या को सूचित करती है। टिप्पणी विषय शीर्षकों की किसी वर्णनुक्रमिक सूची में "देखिये" (sec) अन्योन्य संदर्भ (eross referencnce) के समान होती है। एसी टिप्पणियों की नीचे व्याख्या की गई है।

4.4 ".... के अंतर्गत वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ

निम्नलिखित उदाहरण देखें—

523.302 22 Moon pictures and designs

Class charts and photographs in 523.39

इसका अर्थ है कि 523.30222 Moon pictures and designs में charts and photographs of the moon, सम्मिलित नहीं है तथा इसके लिए अलग वर्ग संख्या 523.39 का प्रावधान है।

NOTES

NOTES

इसी प्रकार

181.4 Indian philosophy

यहाँ निर्देश है कि "Class philosophy of Pakistan and Bangladesh in 181.15"। इन दोनों विषयों का संबंध स्पष्ट है। यही कारण है कि यह टिप्पणी देनी पड़ी। एक अन्य उदाहरण देखें:

177.1 Ethies of courtesy, poloteness, hospitality

यहाँ निर्देश है कि "Class eitquette in 395"। इसका अर्थ यह है कि etiquette 177.1 विषय को Ethics of courtesy का भाग नहीं मानना चाहिए क्योंकि "Etiquette" के लिए पृथक् वर्ग संख्या दी गई है।

4.5 "…. के लिए….देखें" टिप्पणियाँ

यह एक अन्य प्रकार की टिप्पणी है जो संबंधित संख्या की ओर अन्योन्य संदर्भ प्रदान करती है।,

ऐसी स्थिति में यह "For...see..." का रूप धारण करती है।

उदाहरणार्थ: निम्नलिखित प्रविष्टि को देखे—

398.356 Seientific and technical themes in folklore

For medical folklore, see 398.353]

इसका अर्थ है कि Medical folklore को एक पृथक् वर्ग (साहित्य समादेश के आधार पर) 398.353 प्रदान किया गया है।

इसी प्रकार

181.45 Yoga–Indian philosophy

यहाँ निर्देश मिलता है कि: *"For physical yoga, see 613.7046; Hindi yogic medican, 294.543"*। इसका अर्थ यह है कि Yoga philosophy से संबंधित विषयों Yogic (physical) exercise और yogic meditation, को पृथक् वर्ग संख्याएँ प्रदान की गई हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. 'यहाँ' वर्गीकृत करें' टिप्पणी का अर्थ समझाइये।

.....

.....

.....

.....

4.6 "व्यापक कृतियों को...के अंतर्गत वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ

इस प्रकार की टिप्पणी किसी मध्यवर्ती प्रविष्टि या शीर्षक के अंतर्गत प्रदान की जाती है—(इसकी इस प्रकार की टिप्पणी किसी मध्यवर्ती प्रविष्टि या शीर्षक के अंतर्गत प्रदान की जाती है—(इसकी व्याख्या इस इकाई के अगले अनुच्छेद में की गई है) जिसे संख्याओं के फैला व के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। विभिन्न प्रकरणों का समावेश करने वाले किसी प्रलेख को वर्ग संख्य प्रदान करने हेतु इस टिप्पणी का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ—

181.41 – 181.48 Hindu Brahmanical philosophy

Class comprehensive works in 181.4

NOTES

इसी प्रकार—

297.12–297.14 Sources of Isiam

Class comprehensive works in 297.1

इसका अर्थ है कि Isiam के विभिन्न स्त्रोतों को वर्ग सख्या समूह 297.12–297.14 द्वारा प्रदर्शित किाय जाता है। परन्तु Islam के समस्त स्त्रोंतों से संबंधित पुस्तक की वर्ग संख्या 297.1 होगी।

4.7 स्थगित (कोष्ठकबद्ध) प्रविष्टियो के अंतर्गत टिप्पणियाँ

जब कोई वर्ग संख्या वर्तमान संस्करण में स्थगित कर दी जाती है तब एक टिप्पणी द्वारा उसकी नई वर्ग संख का उल्लेख किया जाता हे ये टिप्पणियाँ दो प्रकार की हैं:

(अ) "Do not use; Class..."('प्रयोग न करें; वर्गीकृत करें....") के रूप में।

(ब) "Clas in...."("....के अंर्गत वर्गीकृत करें") के रूप में।

"Co not use; Class..." के कुछ उदाहरण देखें:

[221.03] Dictionaries, encyclopedias, concodances of the Old Testament
Do not use; class dictionaries and encyclopedias 221.3, concordances in 221.4–221.5

इसका अर्थ यह है कि 19वें संस्करणण में dictionaries और encyclopaedias of the Old Testament पुरानी वर्ग संख्या 221.03 को वर्तमान संस्करण में बदलकर 221.3 कर दिया गया है।

एक अन्य उदाहरण देंखें—

[25052] Management of Local Christian Church]
Do not use; class management of local christian church in 254

कोष्ठकों में दी गई स्थगित संख्याओं के लिए वर्गीकृत करन के निर्देश "... के अंतर्गत वर्गीकृत (Class in.....)" स्वरूप वाली टिप्पणी में पाए जाते हैं।

उदाहरणार्थ—

[301.56] Educational
Class in 370.19

इसका अर्थ है कि इस विषय के लिए नई वर्ग संख्या 370.19 है। इस प्रकार की टिप्पणियाँ पहले की टिप्पणियों से अधिक स्पष्ट और सटीक है; यद्यपि उनका अर्थ और प्रभाव समान है।

4.8 विभिन्न टिप्पणियों का महत्त्व

किसी प्रविष्टि के अंतर्गत एक से अधिक टिप्पणिंयाँ एक साथ दी गई हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में ये टिप्पणिणाँ परस्पर विरोधी नहीं होतीं। डी डी सी की अनुसूचियों में अनेकानेक पारिभाषिक, विषय क्षेत्रीय, दृष्टान्तक एवं "यहाँ वर्गीकृत करें" या "वहाँ पर वर्गीकृत करें" टिप्पणियो की भरमार है। ये टिप्पणियाँ पुस्तकों को उचित रूप से वर्गीकृत करने तथा उनके लिए उपयुक्त वर्ग संख्या प्राप्त करने में मदद करती हैं। साथ ही ये टिप्पणियाँ प्रविष्टियों की समान रूप से व्याख्या करने तथा सभी देशों के सभी पुस्तकालयों में डी डी सी के प्रयोग में एकरूपता लने में भी सहायक हैं। इसके अलावा, ज्ञान की संरचना और ज्ञान की शाखाओं (Tree of Knowldge) में विभिन्न विषयों के स्थान के बारे में मतैक्य नहीं है। हो सकता है कि डी उी से वर्णित ज्ञा की संरचना सही या तार्किक न हो, लेकिन ये टिप्पणियाँ इन विषयो की स्थिति, सीमा (चौहद्दी) एवं विस्तार–क्षेत्र को, डी डी सी के संपादकों द्वारा निर्धारित स्वरूप में समझने में सहायता करती हैं।

NOTES

5. मध्यवर्ती शीर्षक/मध्यवर्ती प्रविष्टि

अनुसूचियों में कई ऐसे शीर्षक दिए गए हैं जिनकों किस एक संख्या द्वारा नहीं बल्कि संख्या–विस्तार द्वारा दृयातित किया गया है।

उदाहरणार्थ—

381–382	General internal and international commerce (Trad3)

यहाँ एक विषय (topic) जिसके अनेक उपविषय हैं, को 381–382 तथा उसके उपविभागों के अंतगर्तत दर्शाया गया है। इसमें पदानुक्रम को भंग कर दिया जाता है। इस रीति के द्वारा मध्यवर्ती शीर्ष के उपविभागों को संक्षिप्त वर्ग संख्या द्वारा द्योतित करने में सहायता मिलती है।

उदाहरणार्थ—

220	Bible
221	Old testament
22–024	Specific parts of the Old Testment

यहाँ 221 को पदानुक्रम में विभाजित कर Old Testament के विभिन्न भागों (पुस्तकों) को द्योतित करने की अपेक्षा उन्हें पृथक् अनभागों (Sections) की श्रृंखला में प्रस्तुत किया गया है, जैसे 222–224, तथा इस प्रकार Old Testament के उपविभागों के लिए पर्याप्त अतिरक्ति स्थान (और संक्षिपत वर्ग संख्याएँ) प्रदान करने के अवसर प्रदान किए गए हैं।

इस प्रकार की प्रविष्टियाँ पदानुक्रम के हर स्तर पर दिखाई पड़ती है। इन्हें मध्यवर्ती प्रविष्टियाँ के केंद्रीय शीर्ष्क (Centered entires or centered headings) भी कहते हैं क्योंकि क्योंकि इन्हें सदा पृष्ठ क मध्य या केंद्र में मुद्रित किया जाता है तथा पृष्ठ के बाएँ हाशिये पर मुद्रित एक समभुजी त्रिकोण (Equilateral Traiangle) द्वारा इसे इंगित किया जाता है। केंद्रीय या मध्यवर्ती शीर्षकोंके कुछ उदाहरण इस प्रकार है:

251–254	Local Christian Church
281.1 – 2814	Early Christian Church
368.06 – 368.08	Insurance of specific forms of risks
574.873–574.875	Specific Components of Cell Anatomy and Physiology

इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण डी डी सी की नुसूचियो में पाये जा सकते हैं। जैसा पहले कहा गया है ('अन्यत्र वर्गीकृत करें' टिप्पणिों में)कि प्रत्येक मध्यवर्ती शीर्षक के अंतर्गत एक टिप्पणी के दवारा यह निर्देशित किया जाता है कि सिकी पर विष पर व्यापक विषय वाली पुस्तक कहाँ वर्गीकृत क जाएगी, क्योंकि किसी पुस्तक को द्योतित करने क लिए एक विशेष वर्ग संख्या की आवश्यकता होती है: उसे किसी संख्या विस्तार (Span of numbers) द्वारा द्योतित नहीं किया जा सकता।

उदाहरणार्थ: 251–254 Local Church के अंतर्गत निर्देश है कि "Class comprehensive works in 250...."

जैसा पहले कहा जा चुका है कि मध्यवर्ती शीर्षक अनुसूची के पृष्ठ के मध्य में मुद्रित होता है, उसे एक संख्या–विस्तार द्वारा दृयोतित किया जाता है जिसे त्रिभुज ( ) द्वारा इंगित किया जाता हैतथा उसके अंतर्गत उस विषय के ऊपर व्यापक कृतियों की वर्ग संख्या से संबंधित निर्देश दिया जाता है।

यह ध्यातत्व हे कि सख्या–विस्तार द्वारा द्योतित प्रत्येक प्रविष्टि मध्यवती प्रविष्टि मध्यवर्ती प्रविष्टि नहीं होती। उदारहरणार्थ 324.274–279 या 367.91–.99 मध्यवर्ती शीर्षक नहीं हैं, केवल सतत संख्याओं के समूह हैं, जिन्हें निर्देशों के अनुसार व्यष्टिकृत किया जा सकता है।

NOTES

6. वर्ग संख्या निर्माण से संबंधित टिप्पणियाँ

अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) (और कुछ स्थितियों में 1 – 7 सारणियों में भी) में दी गई किसी भी संख्या को निम्नलिखित के उपयासेग द्वारा विस्तारित किया जा सकता है:

(i) सात सारणियों में (ग्रंथखंड 1) से किसी भी एक का उपयोग कर;

(ii) अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) के किसी भी वर्ग अथवा उसके उपवर्ग का प्रयोग कर।

ये विस्तार (जिसे संश्लेषण या वर्ग संख्या निर्माण कहते है) निर्देश रहित (या अभाव में) अथवा निर्देश सहित हो सकते हैं।

संपादकीय निदेश के अभाव में—अनुसूची या ग्रंथखंड 2 में दी गई किसी भी संख्या के साथ सारणी 1 या मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) की किसी भी संख्या को जोड़ने का प्रावधान है। इस प्रावधान को विस्तारित करते हुए सारणी 2 (Area), सारणी 5 (Racial, Ethnic National Groups) और सारणी 7 (Persons) को मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) 09, 088 और 089 के साथ जोड़ा जा सकता है।

केवल निर्देशों के आधार पर किसी प्रविष्टि के अंतर्गत निर्देश होने पर सारणी 2–7 (ग्रंथखंड 1) की संख्याओं को अनुसूची में दी गई संख्या के साथ सीधे प्रयोग किया जो सकता है।

इसी प्रकार, अनुसूचियों की एक संख्या को, अनुसूचियों में दी गई अन्य संपूर्ण संख्या या उसके भाग को, उसके साथ जोड़कर, केवल दिए गए निर्देश में "Add to the base number"...The number following....." निर्देश के आधार पर ही विस्तारित किया जा सकता है। इस प्रकार के निर्देश के साथ, वृष्टान्त के रूप में, उदाहरण दिए रहते हैं।

(अ) "add to" का सीमित निर्देश

इस प्रकार का निर्देश किसी प्रविष्टि से संबंधित होता है। उदाहरणार्थ—

333.31 Land Reform (economics)

यहाँ निर्देश मिलता है add "Areas" notiation 4–9 from Table 2 to the number 333.31 यह निर्देश केवल 33.31 तक ही सीमित तथा इस निर्देश के अनुसार 333.31 संख्या में Table के किसी अंक को जोड़ने का निर्देश है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. विभिन्न टिप्पणियों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

(ब) "add to" का सामूहिक निर्देश

कभी-कभी "add to" के प्रावधान को किसी पृष्ठ पर दी गई सभी संख्याओं पर लागू करने का निर्देश मिलता है। ऐसी स्थिति में ऐसी सभी संख्यओं को तारांकित (*) कर दर्शाया जाता है और पाद-टिप्पणी में एक और तारांक (*) सामूहिक "add to" निर्देश के लिए एक टिप्पणी डी जाती है। यह पाद टिप्पणी उस श्रृखला की सभी तारांकित संख्याओ पर लागू होती है। निर्देशों की पुनरावृत्ति को राकेने के लिए ऐसा किया जाता है। उदाहरणार्थ अनुसूची के पृष्ठ 616 पर संख्याओं की एक श्रृंखला 494.811 से 495.8 तक को तारांकित किया गया है, और पृष्ठ के पाद (foot) पर एक अन्य तारांक

सहिए एक निर्देश मिलता है "Add to the base number as instructed under 450–490" । इसका अर्थ यह है कि इस पृष्ठ की सीधी मारांकित संख्याएँ यदि आवश्यकता हो, तो वर्ग संख्या 420–490 (अनुसूचियों के पृष्ट 600 पर मुद्रित) के अंतर्गत दिए गए निर्देश कि अनुसार पुन: विस्तारित की जा सकती है। ये "ad to" टिप्पणियाँ डी डी सी में वर्ग संख्या निर्माण कि लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण की भाँति कार्य करती हैं। इस खंड की अन्य इकाइयों "add to" टिप्पणियों के विभिनन रूपों पर आधारित हैं।

7. सार-संक्षेप

इस अध्याय में हमने अनुसूचियों में दी गई विभिनन परिभाषाओं, टिप्पणियों और निर्देशों का अध्ययन किया है और वर्ग संख्या निर्माण में उनकी भूमिका के बारे में जाना है। इस अध्ययन के मुख्य बिन्दु हैं:

(1) वर्ग संख्या के विस्तार-क्षेत्र की व्याख्या करने के लिए डी डी सी की अनुसूचियों में दी गई प्रविष्टियों के साथ कई टिप्पणियाँ और निर्देश दिए गए हैं।

(2) परिभाषा देनेवाली टिप्पणियाँ किसी प्रविष्टि के विस्तार-क्षेत्र का दृष्टांत या इसका व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ,

(3) "यहाँ वगीकृत करें" टिप्पणियाँ किसी विषय या उसके उपविषयों के लिए अधिक विशिष्ट एवं उपयुक्त वर्ग संख्या की और निर्देशित करती हैं।

(4) "अन्यत्र वर्गीकृत करें" टिप्पणियाँ किसी विषय या उसके उपविषयों के लिए अधिक विशिष्ट या उपयुक्त वर्ग संख्या की ओर निर्देशित करती हैं।

(5) एक मध्यवर्ती शीर्षक, जिसे समभुजी त्रिभुज की नोक द्वारा सूचित किया जाता है, किसी विधारणा को संख्याओं की श्रृंखला द्वारा सूचित करता है क्योंकि पदानुक्रक में उस अवधारणा को द्योतित करने के लिए कोई विशिष्ट संख्या नहीं होती।

(6) "Add to the base number"....the number following....." जैसी संख्या निर्माण टिप्पणियाँ डी डी सी की वर्ग संख्या को संश्लेषित करने में अत्यंत उपयोगी है तथा वर्ग संख्या निर्माण का क्षमता में वृद्धि करती हैं।

8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. किसी वर्ग के विषय-क्षेत्र, अं और सीमाओं (चौहद्दी) में विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों में भिन्नता हो सकती है। अत: प्रत्येक वर्गीकरण प्रणाली को विषयों तथा उनके उपविषयों एक सूची बनाकर उनकी सीमाओं को परिभाषित कर लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, पुस्तकालय वर्गीकरण को इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए कि "एक वर्ग उसके सभी परिगणात्मक उपविभागों का कुल योग है" (रंगनाथन ने इसे परिगणना का उपसूत्र (Canon of Enumeration) कहा है) । पर्याप्त स्पष्टता बनाए रखने के लिए इस पिरगणना में कुछ टिप्पणियों और विधियों का भी उपयोग किया जाता है।

वर्ग की परिभाषा

डी डी सी में कुछ वर्गों और उनके उपवर्गों की परिभाषाएँ दी गई हैं। प्रविष्टि के शीषक के नीचे परिभाषा दी जाती है। उदाहरणर्थ, प्रविष्टि "330 Economics" के अंतर्गत Ecnomics की सारगर्भित परिभाषा इस प्रकार प्रदान की गई है: "The science of human behavior as it relates to utilization of scarce means for the satisfaction of needs and desires through production, distribution, consumptio." कभी-कभी किसी किवष के विस्तार क्षेत्र को 'परिभाषा टिप्पणी' द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरणार्थ : 370. 159 Psychological effects of education का विस्तार-क्षेत्र : "Effects on students of schoold situation, teaching methods, other factors" । इस टिप्पणी द्वारा प्रविष्टि का अर्थ और इसके अंतर्गत वर्गीकृत किए जाने वाले प्रलेख के प्रकार को स्पष्ट किया गया है।

2. कुछ विषयों (topics), को जो किसी वर्ग का भाग या अंश नहीं होते, किसी वर्ग के साथ स्थाई स्थान दे दिया जाता है। वास्तव में ऐसे विषय पूरी तरह विकसित नहीं होते और उनका ग्रंथराशि प्रमाम (Literary Warant) या साहित्य समादेश भी उन्हें पूर्ण और पृथक् वर्ग संख्या देने की माँग नहीं करता। इसलिए ऐसे विष्यों को उस वर्ग के अतंर्गत (तदर्थ आधार पर) स्थाई स्थान दे दिया जाता है, जिससे वे संबद्ध होते हैं। बाद में जब उस विषय पर पर्याप्त साहितय का प्रकाशन हो जाता है, तब डी डी सी की संपादकीय नीति के अनुसर ऐसे विषयों के लिए पृथ्क वर्गों का प्रावधान किया जाता है। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित प्रविष्टि के अंतर्गत दी गई समावेश टिप्पणी (Inclusion Note) देखें :

398.47 Ghosts as subject of the folklore including haunted places

इसका अर्थ यह है कि तार्किक आधार पर folklore with haunted places "प्रविष्टि" 398.47 "Ghosts as subjects of folklare" अंश नहीं है और न ही यह एक पूर्ण विकसित विषय है। अत: जब तक इसके लि पूर्ण वर्ग संख्या के औचित्य को न्यायोचित नीं ठहराया जाता तब तक इसकी वर्ग संख्या 398.47 ही दी जाएगी।

3. कुछ विषय दिए गए विषय का भाग ज्ञात नहीं होते। वे टिप्पणी में जिस विषय के साथ दिए गए होते हैं उनसे या तो व्यापक या फिर संकीर्ण होते हैं। "यहाँ वर्गीकृत करें।" ("Class here") का अर्थ यह है कि उन्हें आबंटित स्थान तर्कसंगत नहीं है, फिर भी सइ टिप्पणी द्वारा एक असमायोजित विषय को वर्ग सख्या प्रदान की जाती है। उदाहरणाि निम्नलिखित प्रविष्टि पर गौर करें।

576 Microbes
Class here microbiology

इसका अर्थ है कि यद्यपि Microbiology, Microbes का पर्याय नहीं है, फिर भी 576 Microbes के साथ ही रखा जाता है।

4. किसी प्रविष्टि के अंतर्गत एक से अधिक टिप्पणियाँ एक साथ दी गई हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में ये टिप्पणिणाँ परस्पर विरोधी नहीं होतीं। डी डी सी की अनुसूचियों में अनेकानेक पारिभाषिक, विषय क्षेत्रीय, दृष्टान्तक एवं "यहाँ वर्गीकृत करें" या "वहाँ पर वर्गीकृत करें" टिप्पणियो की भरमार है। ये टिप्पणियाँ पुस्तकों को उचित रूप से वर्गीकृत करने तथा उनके लिए उपयुक्त वर्ग संख्या प्राप्त करने में मदद करती हैं। साथ ही ये टिप्पणियाँ प्रविष्टियों की समान रूप से व्याख्या करने तथा सभी देशों के सभी पुस्तकालयों में डी डी सी के प्रयोग में एकरूपता लने में भी सहायक हैं। इसके अलावा, ज्ञान की संरचना और ज्ञान की शाखाओं (Tree of Knowldge) में विभिन्न विषयों के स्थान के बारे में मतैक्य नहीं है। हो सकता है कि डी डी से वर्णित ज्ञा की संरचना सही या तार्किक न हो, लेकिन ये टिप्पणियाँ इन विषयो की स्थिति, सीमा (चौहद्दी) एवं विस्तार-क्षेत्र को, डी डी सी के संपादकों द्वारा निर्धारित स्वरूप में समझने में सहायता करती हैं।

9. मुख्य शब्द

"अन्यत्र वर्गीकृत करें" टिप्पणी ("Class elsewhere" Notes) : किसी प्रविष्टि या शीर्षक के अन्तर्गत दी गई एक टिप्पणी जिसके आधार पर किसी विषय या उपविषय या उससे जुड़े विषयों के लिए अधिक उपयुक्त वर्ग संख्या प्राप्त करने हेतु निर्देश दिया जाता है।

मध्यवर्ती प्रविष्टि/केन्द्रीय शीर्षक (Centered Entry/Centered Heading) : यह एक शीर्षक है जिसे संख्याओं के फैलान द्वारा दर्शाया जाता है क्योंकि ऐसे शीर्षक के लिए कोई विशिष्ट वर्ग संख्या प्रदान नहीं की गई होती है। प्रत्येक मध्यर्ती प्रविष्टि के अंतर्गत व्यापक कृतियों के लिए एक वर्ग संख्या का उल्लेख किया जाता है।

NOTES

'में जोड़िये' निर्देश ('Add' Note) : किसी प्रविष्टि या शीर्षक के अंतर्गत दिया एक निर्देश, जिसके आधार पर अनुसूची से प्राप्त संख्या को विस्तारित करने के लिए उसमें अनुसूची (ग्रंथखंड 2) या सारणी 2 से 7 (ग्रंथखंड 1) की किसी संख्या या उसके अंश को जोड़ा जा सके।

"यहाँ वर्गीकृत करें" टिप्पणी ("Class here" Notes) : किसी प्रविष्टि या शीर्षक के अंतर्गत दिया गया ऐसा सुस्पष्ट निर्देश जिसमें किसी उपविषय या प्रकरण को ऐसी वर्ग संख्या के अंतर्गत वर्गीकृत करने का निर्देश हो, जिसका वह प्रत्यक्ष रूप में अंश प्रतीत नहीं होता। प्राय: वहाँ पर वर्गीकृत किया जाने वाला विषय उस शीर्षक की तुलना में अधिक व्यापक होता है जिसके अधीन वह टिप्पणी दी जाती है।

वर्गीकरणकर्त्ता (Classifier) : वह व्यक्ति जो किसी वर्गीकरण प्रणाली के आधार पर पुस्तकों और अन्य प्रलेखों की वर्ग संख्या का निर्माण करता है।

संख्या निर्माण टिप्पणी (Number Building Notes) : यह एक '..... में जोडिए' ('Add to') टिप्पणी है।

"समावेश टिप्पणी" **("Inclusion" Notes)** : कुछ विषयों को तदर्थ आधार (adhoc basis) पर किसी वर्ग के अंतर्गत वर्गीकृत करने का निर्देश देने वाली टिप्पणी। इन विषयों को "Including" पद के बाद दिया गया होता है।

10. अभ्यास-प्रश्न

1. 'समावेश टिप्पणी' के महत्त्वपूर्ण विषयों उल्लेख कीजिए।
2. स्थगित प्रविष्टियों के अन्तर्गत की जाने वाली टिप्पणियाँ का वर्णन कीजिए।
3. मध्वर्ती शीर्षक के उपविभागों को किस प्रकार घेतित किया जाता है?
4. वर्ग संख्या निर्माण से सम्बन्धित टिप्पणिया का वर्णन कीजिए।
5. "Ad to" के सीमित एवं सामूहिक निर्देश की व्याख्या कीजिए।

11. संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Comaromi, John p. [1982]. *Mannual for Use of Dewwy Decimal Clasification, 19th ed.* Albany, New York : Forest Press.
- Dewey, Melvil (1979). *Dewey Decimal Classififacion and Relative Index.*3
- Vols. 19th ed. Albany, New York, Forest Press.
- Osborn, Jean (1982). *Devey Classification. 19th Edition: A Study*
- *Mannual. Littleton* : Lebraries Unlimited.
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). *Introduction to the Pratice of Decimal Classification.* New Delhi : Sterling Publishers.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). *Practical Approach to DDC.* New Delhi : Ess Ess Publications.

अध्याय-3

तीन सारांश-तालिकाओं का परिचय तथा प्रलेख वर्गीकरण के चरण

अध्ययन के उद्देश्य

1. उद्देश्य
2. परिचय
3. दस मुख वर्ग
   3.1 दद मुख्य वर्गों का व्यवस्थापन
4. 100 विभागों की द्वितीय सारांश-तालिका
5. 1000 अनुभागों की तृतीय सारांश-तालिका
6. बहुस्तरीय सारांश-तालिकाएँ
7. प्रलेख वर्गीकरण के चरण
   7.1 प्रलेख के विशिष्ट विषय का निर्धारण
   7.2 प्रलेख के विशिष्ट विषय निर्धारण की प्रक्रिया
   7.3 प्रलेख के विशिष्ट विषय निर्धारण के अन्य स्रोत
8. विषय विश्लेषण
9. प्रयोगिक वर्गीकरण के चरण
10. सार-संक्षेप
11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द
13. अभ्यास-प्रश्न
14. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्याय के उद्देश्य

अध्याय 1 और 2 में आपको डी डी सी में की संरचना और संगठन तथा इसमें दी गई विभिन्न प्रकार की परिभाषाओं और टिप्पणियों से परिचित कराया गया है।

इस अध्याय में आप तीन मुख्य सारांश-तालिकाओं अर्थात् वर्गों की रूपरेखा, डी डी सी की अन्य निम्नस्तरीय सारांश-तालिकाओं और वर्गीकरण में उनकी भूमिका की जानकारी प्राप्त करेंगे।

- डी डी सी की तीन मुख्य सारांश-तालिकाओं एवं वर्गों की अन्य सारांश-तालिकाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,
- किसी प्रलेख के विशिष्ट बिषय को निर्धारित करने की प्रक्रिया जान सकेंगे, तथा
- प्रायोगिक वर्गीकरण के चरणों या सोपानों की व्याख्या कर सकेंगे।

2. परिचय

डी डी सी विषयों पर आधारित एक वर्गीकरण प्रणाली है जिसमें ज्ञान जगत् को अध्ययन के प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। ये प्रमुख विभाजन अध्ययन के विषय हैं और प्रत्येक विषय को एक पदानुक्रम में विभनन वर्गों में विभाजित कर सामान्य से विशिष्ट के क्रम में सूचीबद्ध किया गया है। प्रतयेक पृष्ठ वर्गों के विवरण से भरा पड़ा है और उनके उपविभाजन सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ते विवरण के साथ पदानुक्रम के उद्धृत हैं।

उदाहरणार्थ—

300	Social Sciences
330	Economics
332	Financiali Ecomomics
332.1	Banks and Banking
332.11	Central Banks]

कई वर्गों जैसे Science ओर Tecnology में बहुत विस्तृत और गहन विवरण प्रस्तुत किया गया है। सामन्य से विशिष्अ या संपूर्ण से एक अंश तक का यह क्रमिक विवरण विषय की खोज को आसान बनाता है। ज्ञान की रूपरेखा के विहंगावलोकन के लिए डी डी सी में वर्गों की विभनन स्तारों की सारांश-तालिकाएँ प्रदान की गई हैं। सारांश-तालिका एक संख्या के प्रमुख उपविभाजनों की एक सूची है जिसे उपविषय को विकसित करने के प्रारंभ में दिया गया है। किन्तु प्रथम तीन सारांश-तालिकाओं को समग्र वर्गीकरण के पूर्व में दिया गया है। तीनों प्रमुख सारांश-तालिकाओं को ग्रन्थखंड 1 (पृष्ठ 471–482) में दिया गया है। जैसा कि पहले कहा गया है, सारांश-तालिकाएँ दो प्रकार की हैं:

(अ) ज्ञान की तीन प्रमुख सारांश-तालिकाएँ, अर्थात् 10 मुख्य वर्ग, 100 विभाग, 1000 उपविभाग (इन्हें ग्रंथखंड 1 में दिया गया है)

(ब) निम्न स्तरीय सारांश-तालिकाएँ, जिनमें एक अनुभाग या उप-अनुभाग को अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) के वर्गों में वर्णित किया गया है।

तीन प्रमुख सारांश-तालिकाओं को तकनीकी रूप से इन नामों से जाना जाता है—

(1) प्रथम सारांश-तालिका या 10 मुख्य वर्ग (ग्रंथखंड, पृ.471)।

(2) द्वितीय सारांश-तालिका या 100 विभाग (ग्रंथखंड 1, पृ. 472)।

(3) तृतीय सारांश-तालिका या 1000 अनुभाग (ग्रंथखंड 1पृ. 473–482)।

ये तीनों सारांश-तालिकाएँ बढ़ने विवरण के क्रम में हैं। दशमलव वर्गीकरण होने के कारण विभाजन के प्रत्येक स्तर पर दस वर्ग हैं। इसलिए प्रत्येक सारांश-तालिका को दस से विभाजित किया गया है।

3. दस मुख्य वर्ग

"मुख्य वर्ग" (Main Class) शब्द अस्पष्ट है। इसकी परिभाषा और व्यय-क्षेत्र विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों में भिन्न-भिन्न हैं सामान्यत: यह वर्गों का प्रथम क्रम है जो ज्ञान जगत् के प्रथम विभाजन का परिणाम है।

स्पष्ट है कि मुख्य वर्गों की संख्या वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त अंकन पर निर्भर करती है। डी डी सी में दस मुख्य वर्ग और उनके लिए प्रयुक्त अंकन इस प्रकार हैं—

000	Generalities
100	Philosophy and related disciplins
200	Religion
300	Social sciences
400	Language
500	Pre sciences
600	Technology (Applied sciences)
700	The arts
800	Literature (Belles–Letters)
900	General geography and history and their auxiliaries

3. दस मुख्य वर्गों का व्यवस्थापन

यह पहले कहा जा चुका है कि मेल्विल ड्यूई ने दस मुख्य वर्गों (Ten Main Classes) का सृजन किया उसका कोई तार्किक, दार्शनिक या प्राकृतिक आधार नहीं है। यह केवल दशमलव अंकन द्वारा प्रादान किए गए दस स्थानों पर आधारित है। हालांकि मुख्य वर्गों की प्रकृति सामाजिक होती है। उनकी संख्या और विस्तार-क्षेत्र में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है। जैसे-जैसे ज्ञान विकसित होता है, वैसे-वैसे नए वर्ग उत्पन्न होते हैं। ये मुख्य वर्ग 1870 के दशक में जब ड्यूई ने इस प्रणाली का प्रतिपादन किया था, विश्वविद्यालयों में पढ़ाने जाने वाले शैक्षिक विषय थे। उन्होंने विषयों के व्यवस्थान को अपने समसामयिक दार्शनिक डब्ल्यू.टी. हैरिस (W.T. Harris) से प्राप्त किया था। अत: यह सिद्ध हो जाता है कि इन मुख्य वर्गों की प्रकृति सामाजिक है। इन दस मुख्य वर्गों को कण्ठस्थ कर लेना आवश्यक है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. तीन प्रमुख सारांश तालिकाओं के नाम बताइये।

.....

.....

.....

.....

4. 100 विभागों की द्वितीय सारांश-तालिका

प्रत्येक मुख्य वर्ग को पुन: विभाजित किया गया है जिसे विभाग कहा गया है। इस प्रकार डी डी सी में 10 × 10 = 100 विभाग हैं। इसे द्वितीय सारांश-तालिका भी कहते हैं जो ग्रंथखंड 1 के पृष्ठ 472 पर दी गई है। ये विभाग इस प्रकार है:

NOTES

000	Generalities	100	Philosophy and related disciplines
010	Bibliography	110	Metaphysics
020	Library and information	120	Epistemology, causation, humankind
030	General encyclopedic works	130	Paranormal phenomena and arts
040		140	Specific philosophical viewpoints
050	General serial publications	150	Psycholgy
060	General organizations & museology	160	Logic
070	Journalism, publishing, newspapers	170	Ethics (Moral philosophy)
080	General collections	180	Ancient, medieval, Orental
090	Manuscripts and book raritis	190	Modem Western philosiphy
200	**Religion**	**500**	**Pure Sciences**
200	Natural religion	510	Mathematics]
220	Bible	520	Astronomy and allied
230	Christian theology		
240	Christian moral and devotional	530	Physics
		540	Chemistry and allied sciences
250	Local chruch and religious orders	550	Sciences of earth and other world
260	Social and ecclesiastical theology	560	Paleontology
		570	Life sciences
270	History and geography of church	580	Botanical sciences
280	Christian denominations and sects	590	Zoological sciences
290	Other and comparative religions	**600**	**Technology (Applied sciences)**
300	**Social sciences**	610	Medical sciences
310	Statistics	620	Engineering and allied operations
320	Political science	630	Agriculture and related technologies
330	Economics	640	Home ecomomics and family living
340	Law	650	Management and auxiliary sevices
350	Public administration	660	Chemical and related technologies]
360	Social problems and services	670	Manufactures
370	Education	680	Manufacture for specific uses
380	Commerece (Trade)	690	Buildings
390	Cuistoms, etiquette, folklore	**700**	**The arts**
400	**Language**	710	Civic and landscape art
410	Linguistics	720	Architecture
420	English and Anglo–saxon languages	730	Plastic arts and Sculpture
430	Germanic languages, German	740	Drawing, decorative and minor arts
440	Romance langages, French	750	Painting and paintings
450	Italian, romanian, Rhaeto–Romanic	760	Graphic arts Prints
460	Spanish and Portuguese languages	770	Photography and photographs

470 Italic languages, Latin
480 Hellenic Classical Greek
490 Other languages
780 Music
790 Recreational and performing arts
800 Literature (Belles–Leters)
810 American literature in English
820 English and Anglo–Saxon
830 Literature of Germanic languages
840 Literatures of Romance language
850 Italian, romanic
860 Spanish & Prtuguese literatures
870 Italic literatures Latin
880 Hellenic Literatues Greek
890 Literatues of other languages
900 General geography and history
910 General geogrphy Travel
920 General biography and genealogy
930 General history of ancient world
940 General history of Europe
950 General history of Asia
960 General history of Africa
970 General history of North America
980 General history of South America
990 General history of other areas

संपूर्ण और सटीक शीर्षकों के लिए अनुसूचियों को देखें।

प्रत्येक मुख्य वर्ग में 9 विभाग होते हैं जिन्हें 1 से 9 तथा 0 Generalia द्वारा द्यातित किया गया है। मुख्य वर्गों के विभाजनों या विभागों को एक सुनियोजित व्यवस्था के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। यद्यपि यह आवश्यक नहीं कि आप इनको कण्ठस्थ करें ही, पर ऐसा करने से आप वर्गीकरण के कार्य में निपुण अवश्य हो जाएँगे।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. मोल्विल ड्यूर्ट द्वारा प्रतिपादित दस मुख्य वर्गों का आधार क्या है?

.....

.....

.....

.....

5. 1000 अनुभागों की तृतीय सारांश-तालिका

तृतीय सारांश-तालिका में 1000 अनुभाग हैं। 100 विभागों में से प्रत्येक को 10 अनुभागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार अनुभागों की संख्या 1000 है। प्रत्येक अनुभाग 3 अंकों की एक संख्या है। उदाहरणार्थ: 33 Economics विभाग के दस अनुभाग इस प्रकार हैं:

NOTES

330 Economics
331 Labour economics
332 Financial economics
333 land economics
334 Cooperatives
335 Socialism and related systems
336 Public finance
337 International economics
338 Production
339 Macro economics and related topics

कुछ अनुभाग संख्याओं, जैसे कि 327 International relations, 954 History of India को तृतीय सारांश-तालिका के 1000 अनुभागों से कण्ठस्थ कर लेना लाभप्रद रहेगा।

6.बहुस्तरीय सारांश-तालिकाएँ

सारांश-तालिकाओं वर्गों का विहंगावलोकन प्रस्तुत किया जाता है वर्गीकरणकर्ता के समय की बचत होती है औ उसे पृष्ठों को अधिक उलटने-पलटने की आवश्यकता नहीं होती। इनीक सहायता से वर्गीकरण सहायता से वर्गीकरणकर्ता एक ही झलक में उपयुक्त वर्ग का चयन कर सकता है। निम्नस्तरीय सारणियाँ कुछ गहन विवरण वाले वर्गों में प्रस्तुत की गई हैं। इन्हें बहुस्तरीय सारांश-तालिका कहते हैं। इनमें 4, 5 या 6 अंकों की संख्याएँ हो सकती हैं।

615 Pharmacology and therapeutics की सरांश-तालिका इस प्रकार है:
615.1 Drugs (Materia medica)
615.2 Inorganic drusgs
615.3 Organic drugs
615.4 Practical pharmacy
615.5 Therapectics
615.6 Methods of medication
615.7 Pharmacodynamics
615.8 Physical and other therapies
15.9 Toxicoloby (Poisons and poisoning)

उप-अनुभाग (Subsection) 615.7 Pharmacodynmics की सारांश-तालिका (p. 860, ग्रंथखंड 2) इस प्रकार है—

615.71 Drugs affecting cardiovascular system
615.72 Drugs affecting respiratory systems
615.73 Drugs affecting digestive systems and metabolism
615.74 Drugs affecting lymphatic and glandular systems
615.75 Antipyretics (Febrifuges)
615.76 Drugs affecting urogential system
615.77 Drugs affecting mooth and integumentary systems
615.78 Drugs afecting nervous systems

सारांशों को पृष्ठ के मध्य में मोटे अक्षरों से मुद्रित किया गया है। इससे पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों के उपविभागों का अच्छी तरह से विहंगावलोकन किया जा सकता है। अपेक्षित संख्या तक पहुँचने के लिए वर्गीकरणकर्ता के लिए पदानुक्रम के प्रत्येक उपविभाग को देखना आवश्यक नहीं होता है, न ही प्रत्येक पृष्ठ को पलटना आवश्यक होता है। सारांश-तालिकाएँ उन पुस्तकालयों के लिए सहायक होती हैं, जो व्यापक वर्ग संख्याओं को वरीयता देते हैं।

तीनों प्रमुख साराश-तालिकाएँ एवं बहुसंख्यक सारांश-तालिकाएँ अपेक्षित वर्ग संख्या को अधिक प्रभावी रूप से खोजने में सहायक होती हैं।

7. प्रलेख वर्गीकरण के चरण

प्रलेख वर्गीकरण का कार्य एक विज्ञान भी है और कला भी। वास्तव में वर्गीकरणकर्ता एक मिलानकर्ता होता है। उसके दो प्रमुख कार्य निम्नलिखत हैं:

(i) प्रलेख के विशिष्ट विषय का निर्धारण।

(ii) उस विशिष्ट विषय को अनुसूचियों और सारणियों की सहायत से उपयुक्त अंकन प्रदान करना।

7.1 प्रलेख के विशिष्ट विषय का निर्धारण

प्रत्येक प्रलेख ज्ञान का मूर्त रूप होता है। उसे उसकी विषय वस्तु के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वर्ग संख्या प्रलेख के विषय को प्रदान की जाती है न कि उसके भैतिक स्वरूप को। यही कारण है कि वर्गीकरण का कार्य एक कला है। वर्गीकरण के कार्य की उत्तमता वर्गीकरणकर्ता के विभिन्न विषयों के ज्ञान पर आधारित है। प्रलेख के विशिष्ट विषय के निर्धारण में अनुभव के साथ ही आपकी योग्यता ब्रढ़ती जाती है। प्रलेख के विशिष्अ विषय निर्धारण की प्रक्रिया निम्नलिखित हैं।

7. प्रलेख के विशिष्ट विषय निर्धारण की प्रक्रिया

सबसे पहले प्रलेख की आख्या पढ़ें। अधिकतर आख्याएँ, जो सरल और सटीक होती हैं, प्रलेख की विषय वस्तु की ओर निर्देशित करती हैं। उदाहरणार्थ, "Human Ajnatomy", "Cost Accontancy" और "History of Moghual India" जैसी आख्याएँ संबंधित प्रलेख के विषय को स्पष्ट रूप से सूचित करती हैं।

कुछ आख्याएँ विषय-अबोधक (fanciful) या प्रतीकात्मक (symbolic) होती हैं। ये आख्या के विषय को स्पष्ट नहीं करतीं। उदाहरणार्थ:

(1) Asian Drama

(2) City of Jay

(3) I dare

(4) Green Wisdom, by Arthur Galston

पहली पुस्तक अर्थशास्त्र, दूसरी कोकाता, तीसरी एक भारतीय महिला पुलिस अधिकारी किरन बेदी की जीवनी तथा चौथी पादप जीव-विज्ञान (plant biology) पर आधारित हैं। इसे उपाख्या से जाना जा सकता है। कोई-कोई आख्या, विषय के उल्लेख के बाबजूद भी, अपने विषय को स्पष्ट नहीं कर पाती।

उदाहरणार्थ—

Shakespeare

India

NOTES

पहली पुस्तक विलियम शेक्सपीयर की जीवनी है। दूसरी पुस्तक "Culture of India" (photographs) पर आधारित है। अत: कई आख्याएँ ऐसी भी होती हैं जो ग्रंथ से सही विषय को वर्णित नहीं करती। अत: केवल आख्या के आधार पर वर्गीकरण नहीं करना चाहिए।

7.3 प्रलेख के विशिष्ट विषय निर्धारण के अन्य स्त्रोत

पुस्तक आवरण (Blurb) : आख्या को पढ़ने के उपरांत पुस्तक आवरण को पढ़ाना चाहिए। यह "About the book" के रूप में पुस्तक के जैकेट या बाह्य आवरण पर दिया जाता हैं यह विषय का संक्षिप्त परिचय तथा उसकी महत्ता और उसके विवरण को प्रस्तुत करता है। ग्रंथ के विषय निर्धारण में यह अपरिहार्य है।

प्रस्तावना (Preface) :

प्रस्तावना पुस्तक के विषय-क्षेत्र और सीमाओं को विस्ता से जानने के लिए अपरिहार्य हैं कुछ लेखक प्रत्येक अध्याय की मूल अपधारणा को प्रस्तावना के रूप में स्पष्ट करते हैं। प्रत्येक वर्गीकरणकर्ता को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

पुस्तक के अन्य भाग (Other Parts of Book) : यह प्रस्तावना पूर्ण रूप से सहायक न हो, तो आपका प्राक्कथन (Foreward) (यहद हो,) विषय सारणी, पुस्तक के मूल पाठ के विभिन्न अंश, विशेषकर भूमिका का विलोकन करना चाहिए। साथ ही पुस्तक की अनुक्रमणिका (Index) को देखा लेना उपयोगी रहता हैं यदि पुस्तक की कोई समीक्ष प्रकाशित हुई हो तो विषय निर्धारण में उसका उपयोग अवश्य किया जाना चाहिए। अन्तिम उपाय के रूप में विषय विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए। इन स्त्रोतोंसे आप पुस्तक के विषय को जान सकते हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. तृतीय सारांश तालिका में कितने विभाग एवं अनुभाग हैं? 33वें विभाग Economics के अनुभाग बताइये।

.....

.....

.....

.....

8. विषय विश्लेषण

वर्गीकरण के कार्य के लिए विषय निर्धारण के उपरांत विषय विश्लेषण किया जाता है। पुस्तकालय या पुस्तक वर्गीकरण में विषय को उसके प्रणयन के आधार पर तथा विषय-वस्तु के आन्तरिक व्यवस्थापन या बाह्य आकार के आधार पर विश्लेषित किया जाता है। उदाहरणार्थ, अर्थशास्त्र विषय को लें। पुस्तक अर्थशास्त्र का इतिहास या अर्थशास्त्र का शब्दकोश हो सकती है। इसी आख्या से अर्थशास्त्र की पत्रिका, अर्थशास्त्र पर व्याख्यान, अर्थशास्त्र पर सांख्यिकीय सारणी, या अर्थशास्त्र पर विडयो कैसेट भी प्रकाशित हो सकते हैं। एक मिश्र आख्या को उसके मुख्यवर्ग, उपविषयों एवं उसके प्रणयन की रीति में तोड़ कर विभाजित किया जाना चाहिए। इस विश्लेषित आख्या को वर्ग संख्या प्रदान करनी चाहिए। कई अवसरों पर तो पूर्ण वर्ग संख्या बनी बनाई मिल जाती है। और कई अवसरों पर वर्ग सख्या को "...जोड़िये" ("add to") निर्देश द्वारा निर्मित किया जाता है।

8.1 डी डी सी का ज्ञान

उपरिलिखित रीति से विश्लेषित आख्या को अंकन प्रदान करने के लिए, आपको डी डी सी की अनुसूचियों, सारणियों वर्गों के विभागों, उनके पदानुक्रम, श्रृंखला और पंक्ति में क्रमिक व्यवस्थापन इत्यादि का ज्ञान होना आवश्यक हैं साथ ही आपको संख्या निर्माण के नियम, जो डी डी सी के व्याकरण स्वरूप हैं, का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

जैसा की पहले कहा जा चुका है, एक वर्गीकरणकर्ता के रूप में आपके मेलापक (Matchmaker) की भूमिका निभानी है, अर्थात् पुस्तक के विशिष्ट विषय को अनुसूचियों में दी गई उसकी उपयुक्त सख्या के साथ मिलाने का कार्य करना। इस कार्य को पूरा करने के लिए आपको ज्ञान-जगत् उसके विभिन्न वर्गों तथा संचार मध्यमों मे सद्य प्रकाशित साहित्य की प्रवृत्ति की सामान्य एवं व्यापक जानकारी होनी चाहिए। इस प्रकार की जानकारी कभी पूर्ण नहीं होती और अनुभव, आयु तथा अध्ययन के साथ-साथ बढ़ती जाती है।

9. प्रायोगिक वर्गीकरण के चरण

वर्गीकरण एक बौद्धिक कार्य है जिसे यंत्रवत् या मशीनी तरीके से संपन्न नहीं किया जा सकता। डॉ एस. आर. रंगनाथन ने अपनी द्विन्दु वर्गीकरण प्रणाली में किसी पुस्तक के विशिष्ट विषय को वर्ग संख्या में परिवर्तित या अनूदित करने के लिए कुछ चरणों का प्रतिपादन किया है। ये चरण या सोपान पक्षातमक वर्गीकरण, प्रणालियों पर पूर्णरूप से लागू होते हैं, पर डी डी सी जेसी प्रणालियों में भी सहायक हैं। ये चरण निम्नलिखित हैं:

चरण-0 : *अपरिष्कृत आख्या* (Raw Title) : प्रलेख में दी गई आख्या। उदाहरणार्थ : Atomic weight of gold या Shakespeare।

चरण-1 : *अभिव्यंजक आख्या* (*Expressive Title*) : यहाँ आवश्यकता पड़ने पर विषय को पूर्ण रूपेण अभिव्यंजक बनाने के लिए आवश्यकतानुसार शब्द या वाक्यांश जोड़ दिये जाते है। आख्या आदि विष अबोध क (Fanciful) हे अथवा अभिव्यंजक आख्या (Expressive titile) नहीं है तब आपको प्रलेख के सम्पर्ण विषय को अपनी भाषा में लिखना पड़ता है। उदाहरणार्थ, यदि आख्या, "Bard of Startford upon Avon" है तो इसकी अभिव्यंजक आख्या होगी : William Shakespeare—An Elizabethan English Dramatist : Biography"। पहले वाले उदाहरण को सार्थक बनाने के लिए आख्या में "Chemistry" शब्द जोड़कर आख्या को Atomic Weight of Gold in Chemistry बनाया जा सकता है।

चरण 2 : सारभूत आख्या (Kernel Title) : इस चरण मे अभिव्यंजक आख्यां में से असार्थ तीन सारांश-तालिकाओं का परिचय अथवा अनावश्यक शब्दों को हटा दिया जाता है।

उदाहरणार्थ—

Atomic, Weight, Gold, Chemistry.
English, Literature, Drams, Elizabethan.
Shakespeare, Life

चरण 3 : *विश्लेषि आख्या* (*Analyed Tule*) : इस चरण में मूल शब्दों को उनके पक्षों, श्रेणियों, मुख्य वर्गा या मानक उपविभाजनों इत्यादि में विश्लेषित किया गया जाता है।

Chenmistry (Division)–Gold (Inorganic chemistry)

Atomic wight (physical chemistry).

English literature (Basic class). Plays (Form).

Elizabethan (period). Shakespeare (Author). Life (Standrad subdivision)

चरण 4 : *परिवर्तित आख्या—(Transformed Title)* : इस चरण में उपरोक्त विश्लेषित आख्या पदों को उनके उद्धरण कम (Citation order) में पुनः व्यवस्थित किया जाता है।

Chemistry. Inorganic Chemistry. Gold. Atomic weight.

English Literature. Plays. Elizabethan Period.

Shakespeare.

चरण 5 : *मानपदीय आख्या (Title in Standard Terms)* : इस चरण मेंए यदि परिवर्तित आख्या की पदावली में प्रयुक्त शब्दों औरे अनुसूचियों की पदावली में प्रयुक्त शब्दों में कोई भिन्नता पाई जाती है तो लेखक या वर्गीकरणकर्ता द्वारा दी गई पदावली को अनुसूचियों में दी गई पदावली में परिवर्तित कर देते हैं। इसका अर्थ हुआ कि हमें अनुसूचियों में प्रयुक्त मानक पदावली का प्रयोग करना है। उदाहरणार्थ, ऊपर दिए गए उदारहण में Play को डी डी सी के ग्रंथखड 1 की सारणी 3 में दिए गए पद "Drama" में परिवर्तित कर देना चाहिए।

चरण : 6 : संकेद्रित संख्याओं में आख्या *(Tule in Focal Numbers)* इस चरण में आख्या के प्रत्येक पद के सामने उसकी संख्या मिली जाती है। उदाहरणार्थ—

Chemistry	54
Inorganic Chemistry	6
Gold	656
Theoretical (Physical Chemistry)	4
Atomic (Physical Chemistry)	42

वर्ग संख्या बनाने के लिए इन संख्याओं को एक कताद में लिखा जाता है :

546.656442

इसी प्रकार

English Literature	82
Drama	2
Elizbethan Period	3
Shakespeare	3
Biography	B

चरण 7 : वर्ग संख्या *(Class Number)* : इस चरण में तृतीय अंक के पश्चात् एक बिन्दु लगाकर वर्ग संख्या निर्मि की जाती है, जैस 882.33 B चूँकि इस वर्ग संख्या को हम पूर्व चरण में ही प्राप्त कर चुके हैं, अत: डी डी सी द्वारा वर्गीकरण करने में इस चरण की आवश्यकता नहीं।

चरण 8 : सत्यापन *(Verification)* : इस चरण में, यदि आवश्यक हो तो, आख्या को सापेक्ष अनुमणिका द्वारा सत्यापित किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रक्रिया यद्यपि धीमी है, पर इसका अनुसरण कर आप एक व्यवस्थित और सटीक वर्गीकरणकर्ता बन सकते हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. बहुस्तरीय सारांश तालिका को उदाहरण सहित समझाइये।

.....

.....

.....

.....

10. सार-संक्षेप

डी डी सी संपूर्ण ज्ञान जगत् का वर्गीकरण है। इसमें ज्ञान को विषयों में विभाजित किया गया है तथा उन्हें यथाशक्ति पदानुक्रम में प्रस्तुत किया गया है। इन विवरणो की रूपरेखा एवं विहंगावलोकन प्रस्तुत करने के

लिए ग्रंथखं 1 (पृ. 471–482) में तीन प्रमुख सारांश-तालिकाएँ दी गई हैं और ग्रंथखंड 2 अर्थात् अनुसूचियों में बहुसंख्यक बहुस्तरीय सारांश-तालिकाएँ दी गई हैं। ग्रंथखंड 1 की सभी सात सारणियों की भी अपनी सारांश-तालिकाएँ हैं। प्रथम सारांश-तालिका इस प्रमुख वर्गों की हैं। द्वितीय सारांश-तालिका 100 विभागों की है अर्थात् उसमें प्रत्येक मुख्य वर्ग का 10 विभागों में बाटाँ गया है एवं तृतीय सारांश-तालिका 1000 अनुभागों की सरांश-तालिका है, तीन सरांश-तालिकाओं का परिचय अर्थात् 100 में से प्रत्येक विभाग को 001 से 999 कके मध्य दस अनुभागों में विभाजित किया गया है है। एक अनुभाग में तीन अंक होते हैं। वे तीनों सारांश-तालिकाएँ डी डी सी के बढ़ते पदानुक्रम का विहंगावलोकन प्रस्तुत करती हैं। ये सरांश-तालिकाए७ अनुसूचियों में से उपयुक्त और सटीक संख्या का चयन करने में मदद करती हैं। वर्गीरकणकर्ता बड़ी सरलता से और तेजी से प्रथम से तृतीय सारांश-तालिकाओं का अवलोकन कर सकता है और तदुपरांत निम्न-स्तरीय सरांश-तालिकाओं तक पहुँचकर अनुसूचियों और सारणियों से वं संख्या प्राप्त कर सकता है। वर्ग संख्यओं को सामान्य से विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया गया है। वर्गीकरणकर्ता के लिए सर्वप्रथम प्रलेख के विशिष्ट विषय की जानकारी आवश्यक है। इसके लिए आख्या, उपाख्या, पुस्तक आवरण (Blurb of the book), विषय सारणी, प्राक्कथन, भूमिका, अनुक्रमणिका तथ मूलपाठ मुख्य स्त्रोत हैं। यदि ये स्त्रोत भी उपयोगी न लगें तो पुस्तक समीक्षाओं या विषय विशेषज्ञों की सहायता ली जा सकती है। कभी-कभी आख्याएँ अबोध क (Fanciful) और वर्गीकरण करने में अधिक उपयोगी नहीं होती। अत: वर्गीकरणकर्ता को यह सलाह दी जाती है कि केवल आख्या के आधार पर वर्गीकरण नहीं करना चाहिए।

विशिष्ट विषय खोने के उपरांत आख्या को विभिन्न पक्षों और मानक उपविभाजनों (Standard Subdividions) में विश्लेषित किया जाना चाहिए। विश्लेषण के उपरान्त हमें अंकन प्रदान करना होता है। इसके लिए हम डॉ ए. आर. रंगनाथ्न द्वरा प्रतिपादित प्रयोगिक वर्गीकरण के चरणों का उपयोग भी कर सकते हैं। इसके लिए हम प्रलेख की अपरिष्कृत आख्या (Raw title) को अभिव्यंजक आख्या में परिवर्तित करते हैं। तत्पश्चात् उसे सारभूत आख्या (Kernel title), विश्लेषित आख्या (Analysed title), मानकदपदीय आख्या (Standard term title) और वर्ग संख्या (Class Number) में बदल देते हैं। अन्त में वर्ग संख्या को अनुक्रमणिका से सत्यापित करते हैं अथवा अंकन का अनुसूचियों के शब्दों के अनुवद करते हैं। व्यवहारिक दृष्टिकोण से वर्गीरणकर्ता एक मेलापक का कार्य करता है जिसका कार्य पुस्तक के विषय को अनुसूची में दिए गए अंकों से मिलाना होता है। इस प्रकार वर्गीकरण एक विज्ञान और कला है। एक कला के रूप में इसके इसके लिए प्रलेख और विषयों के पर्याप्त ज्ञान की आवश्यकता होती है जिसका आयु और अनुभव के साथ विकास होता जाता है।

11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. तीन प्रमुख सारांश-तालिकाओं को तकनीकी रूप से इन नामों से जाना जाता है—
   (1) प्रथम सारांश-तालिका या 10 मुख्य वर्ग (ग्रंथखंड, पृ.471)।
   (2) द्वितीय सारांश-तालिका या 100 विभाग (ग्रंथखंड 1, पृ. 472)।
   (3) तृतीय सारांश-तालिका या 1000 अनुभाग (ग्रंथखंड 1पृ. 473–482)।

   ये तीनों सारांश-तालिकाएँ बढ़ने विवरण के क्रम में हैं। दशमलव वर्गीकरण होने के कारण विभाजन के प्रत्येक स्तर पर दस वर्ग हैं। इसलिए प्रत्येक सारांश-तालिका को दस से विभाजित किया गया है।

2. मेल्विल ड्यूई ने दस मुख्य वर्गों (Ten Main Classes) का सृजन किया उसका कोई तार्किक, दार्शनिक या प्राकृतिक आधार नहीं है। यह केवल दशमलव अंकन द्वारा प्रादान किए गए दस स्थानों पर आधारित है। हालांकि मुख्य वर्गों की प्रकृति सामाजिक होती है। उनकी संख्या और विस्तार-क्षेत्र में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है। जैसे-जैसे ज्ञान विकसित होता है, वैसे-वैसे नए वर्ग उत्पन्न होते हैं। ये मुख्य वर्ग 1870 के दशक में जब ड्यूई ने इस प्रणाली का प्रतिपादन किया था, विश्वविद्यालयों में

NOTES

पढ़ाने जाने वाले शैक्षिक विषय थे। उन्होंने विषयों के व्यवस्थान को अपने समसामयिक दार्शनिक डब्ल्यू.टी. हैरिस (W.T. Harris) से प्राप्त किया था। अत: यह सिद्ध हो जाता है कि इन मुख्य वर्गों की प्रकृति सामाजिक है। इन दस मुख्य वर्गों को कण्ठस्थ कर लेना आवश्यक है।

3. तृतीय सारांश-तालिका में 1000 अनुभाग हैं। 100 विभागों में से प्रत्येक को 10 अनुभागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार अनुभागों की संख्या 1000 है। प्रत्येक अनुभाग 3 अंकों की एक संख्या है। उदाहरणार्थ: 33 Economics विभाग के दस अनुभाग इस प्रकार हैं:

330	Economics
331	Labour economics
332	Financial economics
333	land economics
334	Cooperatives
335	Socialism and related systems
336	Public finance
337	International economics
338	Production
339	Macro economics and related topics

कुछ अनुभाग संख्याओं, जैसे कि 327 International relations, 954 History of India को तृतीय सारांश-तालिका के 1000 अनुभागों से कण्ठस्थ कर लेना लाभप्रद रहेगा।

4. सारांश-तालिकाओं वर्गों का विहंगावलोकन प्रस्तुत किया जाता है वर्गीकरणकर्ता के समय की बचत होती है औ उसे पृष्ठों को अधिक उलटने-पलटने की आवश्यकता नहीं होती। इनीक सहायता से वर्गीकरण सहायता से वर्गीकरणकर्ता एक ही झलक में उपयुक्त वर्ग का चयन कर सकता है। निम्नस्तरीय सारणियाँ कुछ गहन विवरण वाले वर्गों में प्रस्तुत की गई हैं। इन्हें बहुस्तरीय सारांश-तालिका कहते हैं। इनमें 4, 5 या 6 अंकों की संख्याएँ हो सकती हैं।

615	Pharmacology and therapeutics की सरांश-तालिका इस प्रकार है:
615.1	Drugs (Materia medica)
615.2	Inorganic drusgs
615.3	Organic drugs
615.4	Practical pharmacy
615.5	Therapectics
615.6	Methods of medication
615.7	Pharmacodynamics
615.8	Physical and other therapies
15.9	Toxicoloby (Poisons and poisoning)

12. मुख्य शब्द

अनुभाग (Sections) : डी डी सी की तृतीय सारांश-तालिका में 1000 अनुभाग हैं। 100 विभागों की प्रत्येक मुख्य शाखा अनुभाग कहलाती है। प्रत्येक अनुभाग में तीन सारगर्भित अंक होते हैं।

ग्रंथ आवरण (Blurb) : ग्रंथ आवरण के भीतर ग्रंथ का संक्षिप्त विवरण होता है। प्राय: इसका शीर्षक "About the Book" होता है।

प्रायोगिक वर्गीकरण चरण (Steps in Practical ClassificatioN) : रंगनाथन द्वारा सुझाए गए आठ क्रमिक चरण हैं जिनकी सहायता से किसी प्रलेख की आख्या को वर्ग संख्या में परिवर्तित किया जाता है।

मुख्य वर्ग (Main Classes) : डी डी सी में संपूर्ण ज्ञान को दस मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है। मुख्य वर्ग को ज्ञान जगत् के विभाजन के प्रथम क्रम की पंक्ति माना जा सकता है।

विभाग (Division) : द्वितीय सारांश-तालिका का प्रत्येक वर्ग विभाग (Division) कहलाता है। डी डी सी में प्रत्येक मुख्य वर्ग को 10 शाखाओं में विभाजित किया गया है जिसके कारण विभागों की संख्या 100 है।

विशिष्ट विषय (Specific Subject) : किसी प्रलेख के विशिष्ट विषय से तात्पर्य उस विषय से है जो ग्रंथ के विषय को पूर्णत: अभिव्यक्त करता है और वर्णित विषय के विस्तार और गहनता का पूर्ण और सटीक मापक भी है।

विषय विश्लेषण (Subject Analysis) : मुख्य वर्ग, पक्षों, उपविभागों एवं मानक उपविभाजनों की पदावली के अनुसार प्रलेख के विषय का विश्लेषण।

सारांश-तालिका (Summary) : वर्गों के प्रमुख उपविभागों के विहंगावलोकन को सारांश-तालिका कहते हैं। डी डी सी के ग्रंथखंड 1 में तीन प्रमुख सारांश-तालिकाएँ दी गई हैं जिनमें क्रमश: 10 मुख्य वर्गों, 100 विभागों तथा 1000 अनुभागों को परिगणित किया गया है।

13. अभ्यास-प्रश्न

1. वर्गीकरण के दस मुख्य वर्गों के व्यवस्थापन पर प्रकाश डालिए।
2. द्वितीय सारांश तालिका को उदाहरण सहित समझाइए।
3. तृतीय सारांश तालिका की विशषताओं की विवेचना कीजिए।
4. प्रलेख वर्गीकरण के विभिन्न चरणों का वर्णन की कीजिए।
5. प्रायोगिक वर्गीकरण के चरणों की व्याख्या कीजिए।

14. संदर्भ ग्रंथ सूची

- Comaromi, John, P [et al] (1982). Manual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th ed. Albany, New York : Forest press.
- Dewey, Melvil (1979). *Dewey Decimal Classification and Relative Index,* 3 Vols. 19th 3d. Albany, New York : Forest Press.
- Osborn, Jean (1983). *Dwey Decimal Classification. 19th Edition : A Study Manual.* Littleton : Libraries Unlimited. Satija, M.P. and Comaromi, John P.

NOTES

(1987). *Introduction to the Practice of Decimal Classification.* New Delhi : Sterling Publishers.

- Sharma, Pandey S.K. (2000). *Colon Classification Made Easy.* New Delhi. Ess Ess Pulications.
- Sharm, Pandey S.K. (1998). *Practical Approach to DDC.* New Delhi : Ess Ess Publications.
- शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। *सरलीकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण।* दिल्ली : सतनाहित्य प्रकरण।

अध्याय-4

सापेक्ष अनुक्रमणिका और उसका उपयोग

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्यय के उद्देश्य
2. परिचय
3. आवश्यकता और महत्त्व
   - 3.1 डी डी सी में कुछ विषयों का अतार्किक नियोजन
   - 3.2. वर्गीकरणकर्ता का सीमित ज्ञान
4. सापेक्ष अनुक्रमणिका का औचित्य
5. अनुक्रमणिका का विस्तार-क्षेत्र
6. अनुक्रमणिका का गठन
   - 6.1 मुख्य पदों क आधीन खोजना
   - 6.2 अनुक्रमणिका में वर्ग संख्या की खोज
   - 6.3. उपप्रविष्टियों में प्रयुक्त संक्षेपण
7. प्रविष्टियों सम्मुख प्रदत्त संख्याएँ
   - 7.1 सप्त सारणियों की प्रविष्टियाँ
   - 7.2 अन्योन्य संदर्भ
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. संदर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. उद्देश्य

किसी प्रलेख के विशिष्ट विषय को वर्ग संख्या प्रदान करने की प्रक्रिया में डी डी सी के 19वें संस्करण की सारणियाँ (Table) (ग्रन्थखंड1), अनुसूचियाँ (Schedules) (ग्रंथखंड 2) और सोपक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index) (ग्रंथखंड 3) महत्त्वपूर्ण उपकरण की भाँति कार्य करती है। इस अध्याय में आपको सापेक्ष अनुक्रमणिका एवं उसकी प्रकृति और उपयोग से परिचित कराया जाएगा।

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत आप:

- सापेक्ष अनुक्रमणिका को परिभाषित करने में;
- इसकी प्रकृति और विशेषताएँ समझने में;
- इसकी आपश्यकता और महत्ता जानने में;
- इसकी संरचना और संगठन को समझने में; तथा
- किसी विषय की वर्ग संख्या को अनुसूचियों और सारणियों में खोजने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

अध्याय 3 में यह कहा जा चुका है कि किस प्रकार विषय विश्लेषण के द्वारा किसी प्रलेख के विशिष्ट विषय का निर्धारण किया जाता है। साथ ही डी डी सी की अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) ओर सारणियों (ग्रंथखंड 1) की सहायता से विशिष्ट विषय के आधार पर वर्ग संख्या प्रदान करने के बार में भी बताया जा चुका है। अनुसूचियों एवं सारणियों में उपयुक्त वर्ग संख्या प्रदान करने में सापेक्ष अनुक्रमणिक भी (ग्रंथखंड 3) एक सशक्त भूमिका निभाती है।

डी डी सी के प्रथम संस्करण (1876) से ही सापोक्ष अनुक्रमणिका का इस प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यह अनुसूचियों के उपयोग में सहायक मात्र ही नहीं है अपितु अपने आप में भी अनुसूचियों से कम महत्त्व नहीं है। पुस्तकालय वर्गीकरण में मेल्विल ड्यूई का यह एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

3. आवश्यकता और महत्त्व

डी डी सी विषय पर आधारित वर्गीकरण प्रणाली है। इसका अर्थ यह है कि विषयों को उनके महाविषय के संदर्भ में वर्गीकृत किया जाता है। अनुसूचियों और विभिनन सहायक सारणियों में सभी अवधारणाओं और विषयों को उनके सर्वांग-आशांग-संबंध (Whole part relatonship) के तार्किक रूप में व्यवस्थित किया जाता है। इसक सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता कम भी कह सकते हैं। अनुसूचियों में आवश्यक विषय और उसी वर्ग संख्या खोजने के लिए ज्ञान जगत् में उसकी स्थिति का प्रारम्भिक ज्ञान होना आवश्यक है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह कितना ही ज्ञानी क्यों न हो, अनुसूचियों को कुंजी का उपयोग कभी न कभी अवश्य करना पड़ता है। डी डी सी में यह कुजी सापेक्ष अनक्रमणिका कहलाती है। निम्नांकित कारणों से वर्गीकरणकार्ता को अनुक्रमणिका का उपयोग करना पड़ता सकता है।

3.1 डी डी सी में कुछ विषयों का अतार्किक नियोजन

डी डी सी में कुछ विषयों को असंगत या अतार्किक स्थान पर रखा गया है। कुछ वर्गों का अनुपयुक्त आबंटन, जिसे 1873–76 में किया गया था, आज भी जारी है। बाद में कुछ नये विषयों को यत्र-तत्र समायोजित किया गया क्योंकि उनके लिए उचित स्थान पर समुचित रिक्त संख्याएँ उपलब्ध नहीं थी। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि सभी लोग यह मन चुके हैं कि इस प्रणाली की संरचना तार्किक नहीं है। अत: प्रणाली की संरचना कुछ अव्यवस्थित सी हो गई है और प्रत्येक नये संस्करण में विषयों के असंगत एवं अतार्किक नियोजन की संख्या बढ़ती जा रही है। अत: कभी-कभी वर्ग संख्या खोजने की सुनियोजित प्रक्रिया के बावजूद अनुसूची द्वारा वर्ग संख्या प्राप्त नहीं हो पाती।

3.2. वर्गीरणकर्ता का सीमित ज्ञान

डी डी डी अतार्किक संरचना के अतिरिक्त, कई बार वर्गीकरणकर्ता पुस्त क विशिष्ट विषय को नहीं समझ पाता जो वर्गीकरण के लिए आवश्यक है, तो कभी शब्द नया होता है और वर्गीकरणकर्ता संपूर्ण प्रणाली में उसे खोजने में असफल रहता है। एक विषय का उदारहण देखिये "Birhday Cards"। संभव है कि कोई इसक

मुख्य वर्ग को पहले न समझ पाये। Engineering जैसे विषयों में उपविषयों की भरमार है। उनमें वांछित विषय को आसानी से नहीं खोजा जा सकता। इसी कारण डी डी सी अनुसूची (ग्रंथखड 2) कहीं-कहीं एक अभेद्य दुर्ग की भाँति दिखाई देती है। कहीं-कहीं पदानुक्रम सोपान वर्गीकरणकर्ता को मिथ्या अंत अथवा अंध गली तक ले जाते हैं। ऐसी स्थिति में सापेक्ष अनुक्रमणिका ही अनुसूचियों में परिगणित वांछित विषय तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है।

4. सापेक्ष अनक्रमणिका का औचित्य

डी डी सी में अनुक्रमणिका को सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया है। सापेक्ष अनुक्रमणिका का अभिगम अनुसूचियों के अभिगम से उल्टा है। अनुसूचियाँ के अभिगम से उल्टा है। अनुसूचियाँ वर्गानुक्रम में व्यवस्थित हैं, जबकि सापेक्ष अनुक्रमणिक में सभी प्रविष्टियाँ वर्णानुक्रम में व्यवस्थित हैं। अधक महत्तपूर्ण यह है कि महाविषयों (Disciplines) को विषयों के आधार पर छितरा दिया गया है जबकि अनुसूचियों में विषयों (Subjects) को महाविषय (Discipline) के आधार छितराया गया है। इस प्रकार , सापेक्ष अनुक्रमणिका द्वारा अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) में बिखरे एक विषय के सभी संबंधित पक्षों को एक स्थान पर व्यवस्थित किया जाता है। इस प्रकार इसका अभिगम अनुसूचियों के लिए पूरक के समान है।

इस अनुक्रमणिका को सापेक्ष कहा गया है क्यों कि यह एक पद और उसके विभिन्न पहलुओं को मध्य संबंध प्रदर्शित करती है। उदाहरणार्थ, "Birth" विषय देखिए। इसके विभिन्न पहलू अनुसूची में बिखरे हो सकते हैं लेकिन सापेक्ष अनुक्रमणिका के पृष्ठ 117 पर इसके विभिन्न पहलुओं, जैसे Birth control, customs इत्यादि को निम्नलिखित प्रविष्टि के रूप में प्राप्त किया जा सकता है ।

Birth
Control
defects
literature and stage trmt.
of Jesus Christ

इस प्रकार विषयों के विभिन्न पहलू जो अनुसूचियों में बिखरे हैं, अनुक्रमणिका में एक स्थान पर एकत्रित किए गए हैं। इस प्रकार यह वर्गीकरणकर्ता को किसी उपविषय का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करने और उसकी शाखा-प्रशाखाओं (ramifications) को समझने में मदद करती है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. डी डी सी प्रणाली की संरचना को अतार्किक क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

5. अनुक्रमणिका का विस्तार-क्षेत्र

अनुक्रमणिका में निम्नलिखित प्रकार के पद वर्णानुक्रम में दिए हुए हैं:

(1) अनुसूचियों में दिए गए मुख्य पद / विचार

(2) प्रत्येक प्रविष्टि के अंर्तगत दिए गए सभी उदाहरण और दृष्टांत

(3) संख्या निर्माण टिप्पणी द्वारा प्राप्त कुछ यौगिक अवधारणाएँ (Compound Concepts)

(4) सभी सातों सहायक सारणियों 1–7 (ग्रंथखंड 1) में दी गई सारी अवधारणाएँ/प्रविष्टियाँ

(5) पर्यायवाची पदोंके लिएउ अन्योन्य संदर्भ, संबंधित अवधारणाओं के लिए अन्योन्य संदर्भ जैसे "देखिए" (see) और "यह भी देखिए" (see also) प्रविष्टियाँ।

NOTES

इस प्रकार अनुसूचियों और सारणियों में दिए गए 29,528 प्रविष्टियों की तुलना में सापेक्षिक अनुक्रमणिका में कुल प्रविष्टियों की संख्या 80,000 से भी अधिक है।

यह आवश्यक नहीं कि अनुक्रमणिका में सभी व्यक्तियों, नगरों, संगठनों, खनिजों, पौधों, जानवरों, रासायनिक योगों, औषधियों, या अन्य विषयों के लिए प्रविष्टियाँ हों। अत: विशिष्ट नामों के लिए हमें अनुक्रमणिका का उपयोग नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि शीर्षक नाम "A Biography of Pandit Ravi Shankar है तो Ravi Shankar के लिए अनु मणिका देखना उपयोगी नहीं होगा । ऐसे मामलों में हमें जीवनी विषय के अंतर्गत Musician's biography के अंतर्गत देखना चाहिए। इसी प्रकार यदि पुस्तक का शीर्षक Indian Library Association या Jawaharlal Nehru Nuniversity है तो हमें इन नामों अंतर्गत अनुक्रमणिका को देखने के स्थान पर क्रमश: "Library Association" और "Universities" के अंतर्गत देखना चाहिए।

6. अनुक्रमणिका का गठन

सापेक्ष अनुक्रमणिका के प्रत्येक पृष्ठ पर दो कॉलनम हैं। इसके लिए पृष्ठ को एक अर्ध्वाधर या खड़ी रेखा द्वारा विभाजित किया गया है । प्रत्येक कॉलम में प्रविष्टियाँ हैं। प्रविष्टियाँ वर्णानक्रम में व्यवस्थित हैं। अनुक्रमणिका की प्रविष्टि को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "एक पद अथवा वाक्यांश जिसके बाद–किसी संख्या के रूप में या अन्य पदों या वाक्यांशों के संदर्भ के रूप में–कोई सूचना दी गई होती है।" A term–or phrase followed by information in the form either of a unber of a reference to another term or phrase), उदाहरणार्थ (पृ.203)

Cities
local Govt. 352.00724
sociology 307.76
s.a. City

अनुसूचियों में प्रत्येक प्रविष्टि के सामने उसकी वर्ग संख्या दी गई है।
अनुक्रमणिका की अन्य प्रकारकी प्रविष्टियों के सम्मुख उनी वर्ग संख्या के बदल किसी अन्य पदों या प्रविष्टियों की आरे निर्देशित किया जाता है। उदाहरणार्थ—

Boars *See* Suiformes

इसका अर्थ है कि दो पर्यायवाची पदों "Boars"और "Suiformes" में से बाद वाले को अनुक्रमणिका में वरीयता दी गई है। अत: अवधारण से संबंधित सभी प्रविष्टियाँ Suiformes (पृष्ठ 1065, ग्रंथखंड 3) के अंतर्गत एकत्रित की गई हैं, अपौर जो इस अवधारणा के लिए वर्ग संख्या प्राप्त करनेहेतु Boars के अंतर्गत देख रहा है उसे see अन्योन्य संदर्भ द्वारा Suiformes की और निर्देशित किया गया है। इस अनुक्रमणिका में एक अन्य प्रकार की प्रविष्टि भी होती है जो संबंधित प्रविष्ट की ओर "यह भी देखों" (*s.a.* अर्थात् *se also*क) के रूप में निर्देशित करती है।

उदारहरणार्थ—

Monism
Philosophy 417.3
Indiv. Phil. 180–190
s.a. spec. branches of phil.
e.g. Metaphysics

इस प्रविष्टि की अन्तिम प्रक्ति का अर्थ है कि Monism दृटिकोण के लिए Philosophy के अंतर्गत विशिष्ट शाखा metaphysics को भी देखों (*see also*)।

NOTES

इसी प्रकार एक दूसरी अपेक्षाकृत सरल प्रविष्टि देखिए:

Umpiring

American football	796.332 3
baseball	796.535 7
Canadian Football	796.335 3
cricket	796.358 3
rugby	796.333 3
soccer	796.334.3

s.a. other specific games

उपर्यक्त प्रविष्टि में कुछ खेलों (जो वर्णनुक्रम में हैं) में अम्पायरिंग (Umpiring) क पक्ष को दर्शाया गया है। यदि आवययकता हो तो अन्य खेलों के अम्पायरिंग पक्ष के लिए संबंधिक खेल की अनुसूची देख सकते हैं, जैसे हॉकी के अम्पायरिंग पक्ष के लिए हॉकी की अनुसूची।

6.1 मुख्य पदों के आधीन खोजना

लम्बे यौगिक शीर्षकों के लिए हमें अनुक्रमणिक को मुख्य पदों (Key Terms) के अंतर्गत देखना चाहिए। ऐस आख्या की वर्ग संख्या खोजने के लिए हमें कभी-कभी एक से अधिक मुख्य पदों के अंतर्गत भी अनुक्रमाणिका को देखना पड़ सकता है। प्रथम मुख्य पद के अंतर्गत देखना महत्त्वपूर्ण होता है और इसके लिए अनुभव कीआवश्यकता होती है। इसके लिए सरल नियम यह है कि यदि आख्या में एक पद किसी वस्तु या पदार्थ के संदर्भ में है और दूसरा तकनीक अथवा प्रक्रिया को संदर्भित करता है तो उसे वस्तु अथवा पदार्थ के आधीन खोजना उचित रहेगा। उदाहरणार्थ, यदि हम अनुक्रमणिका में "Lunar eclipse" के लिए वर्ग संख्या खोज रहे हैं तब हमें पहले "Lunar" के अंतर्गत देखना चाहिए। एक अन्य उदाहरण देखिए: "Manufacture of Jute pulp" यहाँ हमें Jute pulp" (विशेषण + संज्ञा रूप) के अंतर्गत देखना चाहिए न कि Manufacture के अंतर्गत इतना ही नहीं, एकदम ,खोजने के लिए Manufacture के अंतर्गत खोजना निष्प्रभावी भी रहेगा। लकिन यदि प्रक्रिया या तकनीक विशिष्ट है तब प्रक्रिया के अंतर्गत भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ

"Bergius process of manufacturing synthetic petroleum" क लिए Bergius के अंतर्गत देखाना चाहिए।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. डी डी सी में सापेक्ष अनुक्रमणिका एवं अनुसूचियों में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

6.2 अनुक्रमणिक में वर्ग संख्या की खोज

जैसा कि कहा जा चुका है कि अनुक्रमणिका को मुख्य पदों के अंतर्गत देखना चाहिए, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि आप जिस पद को खोज रहे हैं, उस अनुक्रमणिका में स्थान दिया गया हो। भारतीय सन्दर्भ में कई पद ऐसे हैं जो भिनन रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, "Primary education" विषय में दो पद हैं "Primary" और "education" । यदि आप,अनुक्रमणिका में देखेंगें तो "Primary education" के अंतर्गत आपको संख्या नहीं मिलेगी। और education के अंतर्गत primary पद को उद्धृत नहीं किया गया है, क्योंकि पाश्चात्य देशों में इसे "elementary education" कहा जाता है। अत: प्रयोग किए पदो की जानकारी भी आवश्यक है।

NOTES

यदि आप विषय को ठीक से नहीं समझते या पदों के मध्य सही संबंध को नहीं पहचान पाते तो ऐसी स्थिति में भी आप अनुक्रमणिका की खोज में समय बर्बाद करेंगे।

उदाहरणार्थ, एक सरल से शीर्षक को देखिए

"Economic geology of copper"

इसमें तीन पद हैं : (1) economics (2) geology और (3) copper। आप किस पद के अंतर्गन देखेंगे, यदि आप "economics " के अंतर्गत देखेंगे तो आप कोई संख्या नहीं पाएत्रगे। इसी प्रकार यदि आप "geology" के अंतर्गत देखेंगे तब भी यही होगा। ऐसी स्थिति में पदों "economic और geology के संयोजन की संभावना हो सकती हैं "ecomomic geology" के अंतर्गत एक संख्या अद्धृत की गई है। किन्तु पूरे विषय के लिए विशिष्ट संख्या प्राप्त करने पर यह संख्या अनुपयोगी होगी। लेकिन यदि आप copper क अंतर्गत खोजेंगे तब आप copper, mineral aspects–economic geology पद पाएँगें (पृष्ठ —250) और उसकी संख्या 553.43प्राप्त होगी।

अत: यह आवश्श्क हैकि अपयुक्त पद के अंतर्गत ही खोज की जाए। यह सदा ही आवश्यक है कि संख्या को अनुसूचियों से पुन: जाँच लिया जाए। यह संख्या पदानुक्रम को समझने में सहायक होगा और आपको यह भी ज्ञात हो जाएगा कि वर्ग संख्याओं का निर्माण कि प्रकार हुआ है।

6.3 उपप्रविष्टियो के लिए प्रयुक्त संक्षेपण

अनुक्रमणिका में प्रविष्टियों के साथ संक्षिप्ताक्षर (Abbreviations)दिए गए हैं। ये स्थान की बचत करते हैं। सापेक्ष अनुक्रमणिका क प्रारम्भ में (प्रारंभिक पृष्ठ xi–xiii पर) सभी प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षरों की सूची दीगई है। पूरी सूची को देखने के उपरान्त आप शब्दों के पूर्ण रूप को आसानी से समझ जाएँगे। यदि आप किसी संक्षिप्त पद के अर्थ को समझने में असमर्थ हों तो आपको संक्षिप्ताक्षरों की सूची का उपयोग करना चाहिए। अनुभव से आप संक्षिप्ताक्षरों को आसानी से पढ़ने तथा समझने लगेंगे। कुछ संक्षिप्ताक्षर निम्नलिखित हैं :

gen. wks	=	general works
s.a	=	see also
spec.	=	specific
spec.jur.	=	specific jurisdiction
O.T.	=	Old Testament
St.	=	Saint

USA के सभी राज्यों को इस प्रकार संक्षिप्त किया गया है

Ia	=	lowa
Ida	=	Idaho
Wyo	=	Wyoming

सभी संक्षिप्ताक्षर अपनी पूरी वर्तनी (Spelling) के अनुसार उचित स्थान पर व्यवस्थित किए गए हैं।

7. प्रविष्टियो क सम्मुख प्रदत्त संख्याएँ

अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) में वद्यमान प्रत्येक विचारया विषय इत्यादि को अनुक्रमणिका में वर्णनुक्रम में व्यवस्थित कर उसके सम्मुचा उसी वर्ग संख्या दी गई है जिससे कि अनुसूचियों में उस चिार या विषय को पुन: संदर्भित किया जा सके। जैसे:

Boilers
Bldg. heating equip . 697.07
s.a. spec.kinds e.g. Steam heating

आइये इस प्रविष्टि क व्याख्या करें:

(1) "Boilers" used as hearing equipment for buildings की वर्ग संख्या 697.07 है।

(2) "Building heating equipemtn" के नीचे दी गई पंक्ति। अर्थ है कि यदि आवश्यक हो तो विशिष्ट प्रकार के heating equipemtns की वर्ग संख्या के लिए उस equipment को अनुक्रमणिका में ढूँढें। जैसे Steam heating को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया गया है। इसका अर्थ है कि "Boilers" की प्रविष्टियों को heating devices for building के अतिरिक, विशिष्ट प्रकार के Boilers के अंतर्गत भी दिया गया है। वास्तव में "Boiler" एक heating equipment के एक प्रकार के रूप मर्में स्वयं में एक विशिष्ट प्रविष्टि है। उदाहरणार्थ, Building hearing की कुछ अन्य विधियाँ "Solar heating', hot–water heating एवं fire places भी है। Room heating equipment इन विभिन्न प्रकारों की वर्ग संख्या को हमें इन पदों के अंतर्गत खोजना चाहिए । उदारहणार्थ, "Solar" (पृष्ठ 1023) के आधीन पर देखने पर हम पाते हैं:

Solar
heating
buildings 697.78

यहाँ heating पद solar का अधीननस्थ है एवं building पद heating का अधीनस्थ है। इस अधीनस्थता को बई ओर और थोड़ा स्थान छोड़कर दर्शाया गया है।

स्व-प्रगति परीक्षण

3. विशिष्ट नामों के लिए हमें अनुक्रमणिका का उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए।

.....

.....

.....

.....

7. 1 सप्त सारणियों की प्रविष्टियाँ

यदि प्रविष्टि सात–सहायक सारणियों (ग्रंथखंड 1) से है तो संख्या कॉलम में दी गई सुचना का क्रम निम्नत होगा:

सबसे पहले तिरछे शब्दों में सारणी के संक्षिप्त नाम को दिया जाता है, फिर एक डैश (–), तत्पश्चात् अवधारणा की संख्या देते हैं:

Bhutan *area* – 549 8

इसक अर्थ यह है कि Bhutanपद Area सारणी (सारणी 2) से लिया गया है और इसकी संख्या 5498 है। संख्या के पूर्व डैश (–) प्रयोग करने का अर्थ यह है कि यह संख्याकभी अकेले प्रयोग में नहं ली जाएगी, बल्कि इसक पहले अनुसूची से ली गई किसी अन्य संख्या का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ:

Bhutanese people *r.e.n.* – 914 18

इसका अर्थ यह है कि "Bhutanese pepple" पद सारणी 5 (Table) Racial, Ethnic, National Groups से लिया गया है जहाँ इसकी संख्या – 914 18 है ।

इनुक्रमणिक में विभिन्न सारणियों के लिए प्रयुक्त संक्षेपण इस प्रकार है:

Table	Full Name of the Table	Abbreviations used in the Index
Table 1	Standard Subdivisions	*s.s.*
Table 2	Areas	*area*
Table 3	Subdivisions of Individual Literatures	*lit.sub.*
Table 4	Subdivisions of Individual Languages	*lan.sub.*
Table 5	Racial, Ethnic, National Groups	*r.e.n.*
Table 6	Languages	*lang.*
Table 7	Persons	*Pers.*

NOTES

7.2 अन्योन्य संदर्भ

कभी-कभी हमें किसी प्रविष्टि के सामने संख्या नहीं मिलती, अपितु *see* या *see also* टिप्पणी द्वारा हमें किसी दूसरे पद की ओर निर्देशित किया जाता है। अनुक्रमणिका के प्रयोग के लिए इन अन्योन्य संदर्भों (Cross–references)को समझना अति आवश्यक है। ये दो प्रकार हैं :

(अ) "*se*" अन्योन्य संदर्भ

अनुक्रमण्किा में केवल मानक पदावली क ही उपयोग किया गया है। इसलिए एक अवधारणा के लिए एक पद का ही उपयोग किया है। पर्यायवाची पदों की स्थिति में हमें अप्रयुक्त पद से प्रयुक्त पद की ओर निर्देशित किया जाता है।

उदाहरणार्थ—

Linum *see* Flax
Linoleuim *see* Floor coverings
Zyriam *see* permian
Cartesian systems *see* corrdinate systems
Jackals *see* Canidae
Dust–caused respiratory diseases *se* pneumoconiosis
Immigrants *see* eEthnic groups; also Minority groups
Zoroastrian music *see* Zoroastrian sacred music
Flaustists *see* Flutists
Tswana *see* Bantu
Brass
arts
decorative 739.52
other aspects see Metal arts

इसी प्रकार पाठक को संक्षिप्ताक्षरों से पूर्ण पद की ओर निर्देशित किय जाता है जैसे,

ADP *see* Automatic data procesing
VAT *see* Added–value taxes
UN *see* United Nations

परंतु, यदि एक देश के अँगरेजी में दो नाम हैं, तब उसकी प्रविष्टि दोनो नामों के अंतर्गत दी गई है—

उदारणार्थ—

Siam	*area*–593
Thiland	*area*–593
Ceylon	*area*–549 3
Sri Lanka	*area*–549 3
Holland	*area*–492
Netherlands	*area*–492

(ब) "*s.a. (see also)*" अन्योन्य संदर्भ

किन्तु *see also* (अनुक्रमणिका में *s.a.* के रूप में लिखित) निर्देश अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस प्रकार के अन्योन्य संदर्भ सनुक्रमणिका में विभन्न पदों के अंतर्गत सम्बधित उपविषयों के लिए प्रयुक्त प्रविष्टियों की ओर निर्देशित करते हैं। उदाहरणार्थ निम्नलिखित हैं देखें:

Flags 929.92
mil.sc. 355.15
s.a. spec, mil branches
nonverbal commun. *see* signals

उपर्युक्त प्रविष्टि का अर्थ यह है कि "Flags" के लिए सामान्य संख्या 929.92 है। "Military science"(mil.sc.) संन्देर्भ में "Flags"की वर्ग संख्या 335.15 है। पुन: Military science के उपविषय के रूप में *s.a (see also)* हमें military की विशिष्ट शाखा जैसे Navy और Air Force की ओर, जहाँ इनके Flags की वर्ग सख्य बनाई जाती है , निर्देशित करती है।

इस प्रकार के अन्योन्य संदर्भ को प्रकीर्ण-संदर्भ (Scatter reference) कहते हैं तो विशिष्ट पद की ओर निर्देशित नहीं करते , बल्कि दूसरे संभावित पदों का सुझाव देते हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण

4. अनुक्रमणिका में वर्ग संख्या की खोज में क्या सावधानी अपेक्षित है?

.....
.....
.....
.....

8. सार-संक्षेप

इस अध्याय में हमने सापेक्ष अनुक्रमणिका की आवश्यकता, मूल्य विषय-क्षेत्र उपयोगिता और इसकी प्रविष्टयों के स्वरूप को समझा है इसमें प्रस्तुत मुय बिन्दु है:

(1) सापेक्ष अनुक्रमणिका में अनुसूचियों, तथा सात सहायक सारणियों में प्रयुक्त सभी पदों और कुछ पर्यावाची शब्दों को एक वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है।

(2) सापेक्ष अनुक्रमणिका (ग्रंथखंड 3) अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) और सारणियों (ग्रंथखंड1) के पदो के वर्गीकृत व्यवस्थान की न केल कुंजी प्रदान करती है, बल्कि ज्ञान वर्गीकरण के लिए भी एक स्वतन्त्र अभिगम प्रदा करती है।

(3) सापेक्ष अनुक्रमणिका में विषयों (Subjects) को महाविषयों (Disciplines) के अधीनस्थ रखा गया है। अनुक्रमणिका के माध्यम से हम किसी विषय (Subjects) को उसके महा विषय (Disciplines) के आधार र बिखरी हुई धारणाओं के साथ देख सकते हैं जो उनसूचियों द्वारा संभव नहीं होता।

(4) जहाँ तक पर्यायवाची पदों का प्रश्न है, अनुक्रमणिका में अप्रयुक्त पद से प्रयुक्त पद की ओर "*see*" अन्योन्य संदर्भ द्वारा निर्देशित किया गया है।

(5) *s.a.* (see also) अन्योन्य संदर्भ द्वारा संबंधित विषयों के बिखरे हुए पदों की ओर निर्देशित किया गया है।

NOTES

(6) कई उपप्रविष्टियों के लिए संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग किया गया है तथा संक्षिप्ताक्षरों की कुंजी अनुक्रमणिका के प्रारंभ में दी गई है।

(7) हमें अनुक्रमणिका पर अधिक निर्भर नहीं रहना चाहिए क्योंकि इससे न केवल हमारा ज्ञान सीमित हो जाता है बल्कि अनुसूचियों के प्रयोग में कमी आती है इसक उपयोग केवल उसी समय करना चाहिए जब अनुसूचियों द्वारा विशिष्ट विषय या प्रकरण का अभिगम दुष्कर अथवा असंभव हो।

9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. डी डी सी में कुछ विषयों को असंगत या अतार्किक स्थान पर रखा गया है। कुछ वर्गों का अनुपयुक्त आबंटन, जिसे 1873–76 में किया गया था, आज भी जारी है। बाद में कुछ नये विषयों को यत्र-तत्र समायोजित किया गया क्योंकि उनके लिए उचित स्थान पर समुचित रिक्त संख्याएँ उपलब्ध नहीं थी। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि सभी लोग यह मान चुके हैं कि इस प्रणाली की संरचना तार्किक नहीं है। अत: प्रणाली की संरचना कुछ अव्यवस्थित सी हो गई है और प्रत्येक नये संस्करण में विषयों के असंगत एवं अतार्किक नियोजन की संख्या बढ़ती जा रही है। अत: कभी-कभी वर्ग संख्या खोजने की सुनियोजित प्रक्रिया के बावजूद अनुसूची द्वारा वर्ग संख्या प्राप्त नहीं हो पाती।

2. डी डी सी में अनुक्रमणिका को सापेक्ष अनुक्रमणिका कहा गया है। सापेक्ष अनुक्रमणिका का अभिगम अनुसूचियों के अभिगम से उल्टा है। अनुसूचियाँ के अभिगम से उल्टा है। अनुसूचियाँ वर्गानुक्रम में व्यवस्थित हैं, जबकि सापेक्ष अनुक्रमणिक में सभी प्रविष्टियाँ वर्णानुक्रम में व्यवस्थित हैं। अधक महत्तपूर्ण यह है कि महाविषयों (Disciplines) को विषयों के आधार पर छितरा दिया गया है जबकि अनुसूचियों में विषयों (Subjects) को महाविषय (Discipline) के आधार छिताराया गया है। इस प्रकार , सापेक्ष अनुक्रमणिका द्वारा अनुसूचियों (ग्रंथखंड 2) में बिखरे एक विषय के सभी संबंधित पक्षों को एक स्थान पर व्यवस्थित किया जाता है। इस प्रकार इसका अभिगम अनुसूचियों के लिए पूरक के समान है।

3. यह आवश्यक नहीं कि अनुक्रमणिका में सभी व्यक्तियों, नगरों, संगठनों, खनिजों, पौधों, जानवरों, रासायनिक योगों, औषधियों, या अन्य विषयों के लिए प्रविष्टियाँ हों। अत: विशिष्ट नामों के लिए हमें अनुक्रमणिका का उपयोग नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ, यदि शीर्षक नाम "A Biography of Pandit Ravi Shankar है तो Ravi Shankar के लिए अनु मणिका देखना उपयोगी नहीं होगा । ऐसे मामलों में हमें जीवनी विषय के अंतर्गत Musician's biography के अंतर्गत देखना चाहिए। इसी प्रकार यदि पुस्तक का शीर्षक Indian Library Association या Jawaharlal Nehru Nuniversity है तो हमें इन नामों अंतर्गत अनुक्रमणिका को देखने के स्थान पर क्रमश: "Library Association" और "Universities" के अंतर्गत देखना चाहिए।

4. अनुक्रमणिका को मुख्य पदों के अंतर्गत देखना चाहिए, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि आप जिस पद को खोज रहे हैं, उस अनुक्रमणिका में स्थान दिया गया हो। भारतीय सन्दर्भ में कई पद ऐसे हैं जो भिनन रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, "Primary education" विषय में दो पद हैं "Primary" और "education" । यदि आप,अनुक्रमणिका में देखेंगें तो "Primary education" के अंतर्गत आपको संख्या नहीं मिलेगी। और education के अंतर्गत primary पद को उद्धृत नहीं किया गया है, क्योंकि पाश्चात्य देशों में इसे "elementary education" कहा जाता है। अत: प्रयोग किए पदो की जानकारी भी आवश्यक है।

यदि आप विषय को ठीक से नहीं समझते या पदों के मध्य सही संबंध को नहीं पहचान पाते तो ऐसी स्थिति में भी आप अनुक्रमणिका की खोज में समय बर्बाद करेंगे।

10. मुख्य शब्द

अनुक्रमणिका (Index) : विषयों अथवा अवधारणाओं का वर्णानुक्रमिक सूची है जिसमें प्रत्येक पद के माध्यम से एक संख्या खोजी जाती है। अनुक्रमणिकाएद्द वर्णानुक्रम के अतिरिक्त अन्य क्रम में भी व्यवस्थित हो सकती है।

और भी देखिए (s.a. (see also)) : यह अनुक्रमणिका में विभिन्न पदों से संबंधित पदों अन्य विषयों की ओर निर्देशित करती है।

देखिए (see) : अप्रयुक्त पद से प्रयुक्त पद की ओर निर्देशित करने वाली टिप्पणी। यह उपभोक्ता को संबंधित विषय की ओर निर्देशित करने वाला निर्देश है।

प्रकीर्ण संदर्भ (Scatter Reference) : यह अनुक्रमणिका में एक अन्योन्य संदर्भ है जो विशिष्ट पद की ओर संदर्भित करने की अपेक्षा विभिन्न संभावित पदों की ओर सूचित करता है। इसे see also संदर्भों द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

प्रविष्टि (Entry) : एक पद या वाक्यांश (Phrases) है जिसके बाद एक संख्या देकर या दूसरे पद की ओर निर्देशित कर कोई सूचना दी जाती है।

शब्दशः वर्णानुक्रम (Word-by-word Alphabetisation) : इसमें उन सभी पदों/अवधारणाओं के जिनके प्रथम शब्द समान हों, को वर्णानुक्रम में शब्द-दर-शब्द व्यवस्थित किया जाता है। ऐसी व्यवस्था में शब्द (न कि अक्षर) एक इकाई होता है। इसे Nothing before something method भी कहते हैं। इस विधि को ब्रिटिश स्टैन्डर्ड्स इन्स्टीट्यूशन (British Standards Institution) ने भी अनुमोदित किया है।

शीर्ष हाशिया (Indentation) : यह मुद्रणीय क़ला की व्यवस्था है जिसमें उपशीर्षकों को मुख्य शीर्षक के प्रथम अक्षर की बाईं ओर थोड़ा रिक्त स्थान छोड़कर मुद्रित किया जाता है।

सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index) : यह वर्गीकरण प्रणाली की वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका है जिसमें प्रत्येक प्रविष्टि के अंतर्गत एक विषय के सभी पहलुओं और संबंधित विषयों को एक साथ व्यवस्थित किया जाता है।

11. अभ्यास-प्रश्न

1. डी डी सी वर्गीकरण प्रणाली की आवश्यकता एवं महत्त का विवेचन कीजिए।
2. सापेच अनुक्रमणिका के औचित्य व मूल्यांकन कीजिए।
3. अनुक्रमणिक के विस्तार-क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।
4. अनुक्रमणिक का गठन उदाहरण सहित समझाइए।
5. उप प्रविष्टियों के लिए प्रयुक्त संपेक्षणों का वर्णन कीजिए।

NOTES

12. संदर्भ ग्रंथ सूची

- Comaromi, JOhn P. [et al]. (1982). *Manual for Use fo Dewey Decimal Classification , 19th ed.* Albany, New York : Forest press.
- Dewey, Melvil (1979). *Dewey Decimal Classicification and Relative Index.* 3 Vols. 19t ed. Albany, New York : Forest Press.
- Osbrn. Jean (1982). *Dewey Decimal Clasification, 19th Edition : A Study Manual.* Littleton : Libraries Unlimited
- Satija, M.P. and Comaromi, John P. (1987). *Introduction tothe Practice of Decimal Classification.* New Delhi : Sterling Publishers.
- शर्मा, पाण्डेय एस.के. (1998) । सरलीकृत डेवी डेसिमल क्लैसिफिकेशन, । दिल्ली: सत साहित्य प्रकाशन।

अध्याय-5

सारणियों एवं अनुसूचियों का अधययन

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सारणियाँ
   सारणी 1 : मानक उपविभाजन
   सारणी 2 : भौगोलिक क्षेत्र
   सारणी 3 : साहित्य-विशेष के उपविभाजन
   सारणी 4 : भाषा-विशेष के उपविभाजन
   सारणी 5 : भाषाएँ
   सारणी 6 : जातीय, प्रजातीय एवं राष्ट्रजन समूह
   सारणी 7 : जन
4. अनुसूचियाँ
   जेनरेलिया 800
   दर्शन और सम्बन्धित विषय 100
   धर्म 200
   सामाजिक विज्ञान 300
   भाषा 400
   शुद्ध विज्ञान 500
   प्रौद्योगिकी (अनुप्रयुक्त विज्ञान) 600
   कलाएँ 700
   साहित्य 800
   सामान्य भूगोल और इतिहास 900
5. सार-संक्षेप
6. प्रगति परीक्षण प्रश्नों
7. अभ्यास-प्रश्न
8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

इस अध्याय में हम आपके लिए ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (डी.डी.सी.) (DDC : Dewey Decimal Classification) 19वें संस्करण की सारणियों तथा अनुसूचियों का परिचय दे रहे हैं। किसी भी विषय की वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए आप अनुसूचियों के साथ सारणियों का आसानी से प्रयोग कर सकते हैं।

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप सक्षम होंगे—

- सात सहायक सारणियों की प्रकृति तथा उनकी उपयोगिता को समझने में;
- इन सारणियों का संश्लेषण करने अथवा वर्ग संख्या निर्माण में अनुप्रयोग करने में;
- अनुसूचियों में दिये गये मुख्य वर्गों, उनके विभाग और उपविभाग की जानकारी प्राप्त करने में;
- अनुसूची में विभिन्न स्थानों पर दिये गये निर्देशों तथा अनुदेशों का प्रयोग करने में; तथा
- सारणियों और अनुसूचियों से अंकन का प्रयोग करते हुये मुख्य वर्गों की विभिन्न शाखाओं से सम्बन्धित आख्याओं की वर्ग संख्या निर्मित करने में।

2. परिचय :

इकाई 1 के 1 से 4 अध्यायों में आपको ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन प्रणाली (19वाँ संस्करण) की संरचना, रूपरेखा तथा विशेषताओं के बारे में बताया जा चुका है। इस अध्याय में आपको सातों सहायक सारणियों के बारे में बताया जायेगा। ये सात सहायक सारणियाँ हैं, सारणी 1 : मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions), सारणी 2 : भौगोलिक क्षेत्र (Areas), सारणी 3 : साहित्य-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of Individual Literatures), सारणी 4 : भाषा-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of Individual Languages), सारणी 5 : जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रजन समूह (Racial, Ethnic, National Groups), सारणी 6 : भाषाएँ (Languages), सारणी 7 : जन (Persons)। यह इकाई हमारा ध्यान अनुसूचियों (000-900) के महत्वपूर्ण पक्षों एवं सारांश-तालिकाओं की ओर भी आकर्षित करती है जो विभिन्न विषयों के महत्वपूर्ण विभाजनों तथा इन विभाजनों के संश्लेषण अथवा अंक निर्माण प्रक्रिया में प्रयुक्त होने से सम्बन्धित हैं।

3. सारणियाँ :

सारणी (Table) को इस प्रकार परिभाषित किया गया है—"आश्रित अंकन का वह अनुक्रम जो विभिन्न और ज्ञात-शाखाओं के अन्तर्गत बार-बार प्रयोग में आने वाले विशिष्ट अवधारणाओं को बताता है।" ("a sequence of dependant notation indicating various special concepts used repeatedly with a variet of subjects and disciplines")। यह कुछ विशिष्ट अवधारणाओं को उघोषित करने वाली उप-वर्ग संख्याओं की क्रमबद्ध सूची होती है जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता बल्कि इन्हें किसी विषय की वर्ग संख्या के साथ लगाया जा सकता है। इस अनुभाग में सात सहायक सारणियाँ दी गई हैं। ये सब अनुसूचियों की सहायक हैं। वर्ग संख्या निर्माण की प्रक्रिया में इन सात सारणियों के प्रयोग को निम्नलिखित अनुच्छेदों में उदाहरणों सहित समझाया गया है।

3.1 सारणी 1 : मानक उपविभाजन :

डी.डी.सी. में सारणी 1 (Table 1 : Standard Subdivisions) का निरन्तर उपयोग किया जाता है। सारणी में प्रत्येक अंक से पूर्व डैश या हायफन (–) लगा है जो स्पष्ट करता है कि इन अंकों का उपयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता। जब आप सारणी 1 से कोई विशिष्ट अंक अनुसूचियों की किसी वर्ग संख्या के साथ जोड़कर कोई पूर्ण वर्ग संख्या बनाते हैं तब डैश या हायफन (–) को हटा दिया जाता है।

उदाहरण—निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्ग संख्या बताइए—

(अ) Study and Teaching of Library Classification, (ब) Formula in Physics ।

(अ) आख्या : Study and Teaching of Library Classification

वर्ग संख्या : 025.420 7

विश्लेषण :

020	=	Library and Information Science
025.42	=	Library Classification
-07 (Table)	=	Study and Teaching

संश्लेषण :

025.42 + - 07 = 025.420 7

(ब) आख्या : Formula in Physics

वर्ग संख्या : 530.212

विश्लेषण :

530	=	Physics
-0212 (Table)	=	Formulas

संश्लेषण :

530 + -0212

53 + -0212 = 530.212

आख्या : Market Research in Silk Textiles

वर्ग संख्या : 677.390 668

विश्लेषण :

677.39	=	Silk Textiles
-0688 (Tablel)	=	Market Research

संश्लेषण :

677.39 + -0688 = 677.390 688

3.2 सारणी 2 : भौगोलिक क्षेत्र :

सारणी 2 (Tabel 2 : Areas) भी एक महत्त्वपूर्ण सारणी है और डी.डी.सी. में वर्ग संख्या के संश्लेषण के लिए निरन्तर प्रयोग में लायी जाती है। सारणी 2 में सामान्य भौगोलिक क्षेत्र, प्रदेश, स्थान (-1) आते हैं जो भू-आकृतिक तथ्यों, जनसंख्या समूहों, राजनीतिक और आर्थिक समूहों से सम्बन्धित होते हैं। इस सारणी में व्यक्ति (-2), प्राचीन विश्व (-3) और आधुनिक विश्व (-4 से -9) को सम्मिलित किया गया है। डी.डी.सी. के 18वें संस्करण (1971) में अमुक 'के समान विभाजित करें' (Divide like) निर्देश दिये गये थे। इन निर्देशों को 19वें संस्करण में अनुसूचियों के "में जोड़िए" (Add to) तथा सारणियों में "से जोड़िए" (Add from) द्वारा बदल दिया गया है। अर्थात् "के समान विभाजित करें" निर्देश के स्थान पर "में जोड़िए" का प्रावधान कर दिया गया है। डी.डी.सी. के 19वें संस्करण में सारणी और अनुसूचियों में "में जोड़िए" के निर्देश आपको अनेक स्थानों पर मिलेंगे। जिसका प्रयोग सारणी 2 से भौगोलक उपविभाजन हेतु आधार संख्या के साथ किया जाता है।

NOTES

NOTES

एक उदाहरण देखिए—

327.3 – .9 = Foreign Policies and foreign relations between specific nations

Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 327, *e.g.*, Foreign Policy of United Kingdom 327.41 (Table 2)

उदाहरण

आख्या : Buddhist religious sects and reform movements in Japan.

वर्ग संख्या : 294.390 952

विश्लेषण :

294.39	=	Buddhist sects and reform movements
-09 (Table 1)	=	Historical and geographical treatment
-52 (Table 2)	=	Japan

संश्लेषण :

294.39 + -39 + -52 = 294.390 952

आख्या : Elementry education in India

वर्ग संख्या : 372.954

विश्लेषण :

372	=	Elementry Education
372.91 - .99	=	Geographical Treatment
		(Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 372.9)
-54 (Table 2)	=	India

संश्लेषण :

372.9 + -54 = 372.954

आख्या : Geography of the USA

वर्ग संख्या : 917.3

विश्लेषण :

910	=	General Geography
-73 (Table 2)	=	USA

संश्लेषण :

910 + -73

91 + -73 = 917.3

3.3 सारणी 3 : साहित्य-विशेष के उपविभाजन

सारणी 3 का संक्षिप्त परिचय दीजिए : सारणी 3 (Table 3 : Subdivisions of Individual Literatures) के उपविभाजनों में विशिष्ट साहित्यिक विधाएँ या रूप -1 से -7, विविध लेख -8 और विशेष समय अन्तराल -81 से -89 आते हैं। सारणी 3 के अंकन अन्य सारणियों के अंकन के समान ही कभी भी स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त नहीं होते। आवश्यकता होने पर इनका प्रयोग अनुसूचियों में विभिन्न साहित्यों के लिए निर्धारित तारांकित वर्ग संख्याओं के साथ 810-890, वांछित साहित्यों के आधार अंक के साथ जोड़ कर किया जाता है। सारणी 3 के साथ सारणी 3-A को इसकी पूरक सारणी के रूप में दिया गया है जो सारणी 3 की सहायता से वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए अतिरिक्त घटक प्रदान करती है।

उदाहरण—

आख्या : Idealism in English Poetry

वर्ग संख्या : 821.009 13

विश्लेषण :

820	=	English Literature
-1 (Table 3)	=	Poetry
-10009 (Table 3)	=	Critical Appraisal of Poetry
13 (Table 3-A)	=	Idealism

संश्लेषण :

820 + -1009 + 13

82 + -1009 + 13 = 821.009 13

आख्या : German Short Stories

वर्ग संख्या : 833.01

विश्लेषण :

830	=	German Literature
-301 (Table 3)	=	Short Stories

संश्लेषण :

830 + -301

83 + -301 = 833.01

आख्या : Critical Appraisal of Telugu Poety

वर्ग संख्या : 894.827 1009

विश्लेषण :

894.827	=	Telugu Literature
-1 (Table 3)	=	Poetry
-1009 (Table 3)	=	Critical Appraisal

संश्लेषण :

894.827 + -1009 = 894.827 1009

NOTES

3.4 सारणी 4 : भाषा-विशेष के उपविभाजन :

सारणी 4 (Tabel 4 : Subdivisions of Individual Languages) भाषा-विशेष के उपविभाजनों से सम्बन्धित है। अन्य सारणियों के समान इसके अंकनों का प्रयोग भी स्वतंत्र रूप से नहीं होता, बल्कि आवश्यकतानुसार अनुसूची में 420-490 के अन्तर्गत तारांकित (*) भाषाओं के लिए दी गई वर्ग संख्या के आधार अंक में जोड़कर किया जाता है।

उदाहरण—

आख्या : French Grammar

वर्ग संख्या : 445

विश्लेषण :

440	=	French Language
-5 (Table 4)	=	Grammar

संश्लेषण :

440 + -5

44 + -5 = 445

आख्या : English Words in Hindi

वर्ग संख्या : 491.432 421

विश्लेषण :

491.43	=	Hindi Language
-24 (Table 4)	=	Foreign Elements (Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to 24)
-21 (Table 6)	=	English

संश्लेषण :

491.43 + -24 + -21 = 491.432 421

आख्या : German-French Dictionary

वर्ग संख्या : 433.41

विश्लेषण :

430	=	German Language
-3 (Table 4)	=	Dictionary
-41 (Table 6)	=	French Language

संश्लेषण :

430 + -3 + -41

43 + -3 + -41 = 433.41

3.5 सारणी 5 : भाषाएँ :

सारणी 6 (Table 6 : Languages) के अंकनों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता बल्कि सामान्य अनुसूचियों और अन्य सारणियों के ऐसे अंकनों के साथ, जहाँ वर्गीकरणकार को 'भाषा' के लिए अंकन सारणी 6 से जोड़ने का अनुदेश दिया गया हो, इनका संयुक्त प्रयोग किया जाता है। इस सारणी का प्रयोग प्रायः मुख्य वर्ग 400 भाषा और 800 साहित्य तक ही सीमित है।

उदाहरण—

आख्या : Bengali Language Encyclopaedias

वर्ग संख्या : 039.914 4

विश्लेषण :

039	=	Encyclopaedias in other Languages (Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to base number 039)
-914 4 (Table 6)	=	Bengali Language

संश्लेषण :

039 + -9144	=	039.914 4

आख्या : Bible in Malyalam

वर्ग संख्या : 220.594 812

विश्लेषण :

220.5	=	Modern Versions and Translations of the Bible
220.53-.59	=	In other Language (Add "Languages" notation 3-9 form Table 6 to base number 220.5)
-948 12 (Table 6)	=	Malyalam

संश्लेषण :

220.5 + -948 12	=	220.594 812

आख्या : Social Status of Nepalis

वर्ग संख्या : 305.791 49

विश्लेषण :

305.7	=	Social status of Language Groups Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number 305.7)
-914 9 (Table 6)	=	Nepali

संश्लेषण :

305.7 + -914 9	=	305.791 49

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. सारणी को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

....

3.6 सारणी 6 : जातीय, प्रजातीय एवं राष्ट्रजन समूह :

इस सारणी (Table 5 : Racial, Ethnic, National Groups) के अंकनों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किय जाता। किन्तु अनुसूचियों और अन्य सारणियों में जिन अंकनों के साथ 'जातीय, प्रजातीय एवं राष्ट्रजन समूह' सम्बन्धित अंकन जोड़ने का अनुदेश दिया गया हो, उनके साथ इन्हें जोड़ा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, सारणी 1 (Table 1 Standard Subdivisions) के अंकन–089 में के साथ भी सारणी 5 के अंकन को अनुसूचियों के किसी भी अंकन के साथ जोड़ा जा सकता है।

NOTES

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Religion of Bantus

वर्ग संख्या : 299.683

विश्लेषण :

299.6	=	Religion of Black African and Negro Origin
299.68	=	Of specific groups and tribes (Add to base number 299.68 the numbers following 96 in "Racial, Ethnic, National Groups" notation 961-969 from Table 5)
-936 (Table 5)	=	Bantus

संश्लेषण :

299.68 + -963

299.68 + 3 = 299.683

आख्या : Japanese Cooking

वर्ग संख्या : 641.592 956

विश्लेषण :

641.592	=	Ethnic Cookery (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 03-99 from Table 5 to base number 641.592)
-956 (Table 5)	=	Japanese

संश्लेषण :

641.592 + -956 = 641.592 956

आख्या : North American Native Races

वर्ग संख्या : 572.897

विश्लेषण :

572	=	Human Races
572.8	=	Specific Human Races (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 572.8)
-97 (Table 5)	=	North American Native Races

संश्लेषण :

572.8 + -97 = 572.897

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्ग संख्या बनाइये।

(a) Study and teaching of librabry classification

(b) Formula in physis

.....

.....

.....

.....

3.7 सारणी 7 : जन :

इस सारणी (Table 7 : Persons) के अंकनों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जाता बल्कि अनुसूचियों में जिन वर्ग संख्याओं के साथ इन्हें जोड़ने (Add to) का निर्देश दिया गया हो, उनके साथ इन्हें जोड़ा जा सकता है। इसके अतिरिक्त सारणी 1 (Table 1 : Standard Subdivisions) के अंकन -024 के साथ भी सारणी 7 के अंकन को अनुसूची की किसी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण—

आख्या : Hindu religious groups in South Africa

वर्ग संख्या : 305.694 506 8

विश्लेषण :

305.6	=	Religious Groups (Add to base number 305.6 the numbers following 2 in 'Persons' notation 21-29 from Table 7, then add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-2945 (Table 7)	=	Hindus
0 (Zero, Vol. 2, p. 206)	=	Facet Indicator
-68 (Table 2)	=	South Africa

संश्लेषण :

305.6 + -2945 + 0 + -68

305.6 + -945 + -68 = 305.694 506 8

आख्या : Custom of doctors

वर्ग संख्या : 390.461

विश्लेषण :

390.4	=	Customs of people of various specific occupations (Add "Persons" nototion 09-99 from Table 7 to the base number 390.4)
-61 (Table 7)	=	Doctors

संश्लेषण :

390.4 + -61 = 390.461

आख्या : Pychology books for teachers

वर्ग संख्या : 150.243 72

विश्लेषण :

150	=	Psychology
-024 (Table 1)	=	Works for specific types of users (Add "Persons" notation 03-99 form Table 7 to the base number -024)
-372 (Table 7)	=	Teachers

संश्लेषण :

150 + -024 + -372

15 + -024 + -372 = 150.243 72

NOTES

4. अनुसूचियाँ :

पिछले अनुभागों और उप-अनुभागों में सात सहायक सारणियों (1-7) और इनकी सहायता से वर्ग संख्या निर्माण की प्रक्रिया को आप उपर्युक्त उदाहरणों के साथ समझ चुके हैं। अगले अनुभागों और उप-अनुभागों में आप अनुसूचियों (Schedules), अर्थात् मुख्य वर्गों और उनके विभागों के बारे में जानेंगे। प्रत्येक मुख्य वर्ग के अन्तर्गत दिये गये उदाहरणों के द्वारा आपको सम्बन्धित आख्या की प्रकृति का पता चलेगा तथा साथ ही उपर्युक्त वर्ग संख्या बनाने के लिए तालिकाओं में विभिन्न स्थानों पर 'में जोड़िए' (Add to) के निर्देशों का प्रयोग करने की आवश्यकता की जानकारी मिलेगी।

4.1 जेनरेलिया 800 :

इस मुख्य वर्ग की अनुसूची केवल ज्ञान के सामान्य पक्षों से ही सम्बन्धित नहीं है, बल्कि इसमें कुछ विशिष्ट विषयों/ विषय-क्षेत्रों जैसे—ग्रंथसूची 010, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान 020, संग्रहालय विज्ञान 060, पत्रकारिता, प्रकाशन, समाचार-पत्र 070, और दुर्लभ ग्रन्थ 090 भी सम्मिलित हैं। यह वर्ग सामान्य वर्ग (Generalities 000) समूह के नाम से भी जाना जाता है। डी.डी.सी. की दूसरी एवं तीसरी सारांश-तालिकाओं में हमें इस मुख्य वर्ग के विभागों और अनुभागों के बारे में जानकारी मिलती है। नीचे दिये गये उदाहरण इस मुख्य वर्ग के कई महत्वपूर्ण विभागों से सम्बन्धित हैं।

उदाहरण—

आख्या : British National Bibliography

वर्ग संख्या : 015.41

विश्लेषण :

015	=	Bibliographies from specific places (Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 015)
-41 (Table 2)	=	Britain

संश्लेषण :

015 + -41	=	015.41

आख्या : Classification of Botany

वर्ग संख्या : 025.465 81

विश्लेषण :

025.46	=	Classification of specific disciplines and subjects (Add 001 - 999 to base number 025.46)
581 (Vol. 2, p763)	=	Botany

संश्लेषण :

025.46 + 581	=	025.465 81

आख्या : General Organisation in Mexico City

वर्ग संख्या : 068.725 3

विश्लेषण :

068	=	General Organisations in other geographical areas

NOTES

(Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 068)

-7253 (Table 2) = Mexico State

संश्लेषण :

068 + -725 3 = 068.725 3

आख्या : Social Welfare Reporting

वर्ग संख्या : 070.449 361

विश्लेषण :

070.449 = Specific Subject (Journalism)
(Add 001-999 to base number 070-449)

361 (Vol. 2, p. 359) = Social Welfare

संश्लेषण :

070.449 + 361 = 070.449 361

आख्या : German Incunabula

वर्ग संख्या : 093.094 3

विश्लेषण :

093 = Incunabula

-90 (Table 1) = Geographical Treatment

-43 (Table 2) = Germany

संश्लेषण :

093 + -90 + -43 = 093.094 3

4.2 दर्शन और सम्बन्धित विषय 100 :

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत ज्ञान जगत् की दो महत्वपूर्ण शाखाओं : दर्शनशास्त्र और मनोविज्ञान को रखा गया है। इसकी महत्वपूर्ण शाखाएँ हैं : तत्वमीमांसा (Metaphysics), ज्ञान मीमांसा (Epistemology), तर्कशास्त्र (Logic) नीतिशास्त्र, (Ethics/Moral Philosophy), प्राचीन, मध्यकालीन और प्राच्यदर्शन (ancient, medieval and oriental phiosophies), आधुनिक (modern) पाश्चात्य दर्शन। डी.डी.सी. (खण्ड 1) में दी गई दूसरी तथा तीसरी सारांश-तालिकाओं (Summaries) में हमें इस मुख्य वर्ग (Philosophy and Related Disciplines 100) के विभागों और अनुभागों के बारे में जानकारी मिलती है। निम्नलिखित उदाहरण इस मुख्य वर्ग के कुछ विभागों से सम्बन्धित हैं।

उदाहरण—

आख्या : A Survey of research in child psychology

वर्ग संख्या : 155.407 23

विश्लेषण :

155.4 = Child Psychology

-0723 (Table 1) = Research Survey

NOTES

संश्लेषण :

155.4 + -0723 = 155.407 23

आख्या : Aesthetic Theories

वर्ग संख्या : 111.850 1

विश्लेषण :

111.85 = Beauty (Aesthetics)

-01 (Table 1) = Theory

संश्लेषण :

111.85 + -01 = 111.805 1

आख्या : Psychology for Teachers

वर्ग संख्या : 150.243 72

विश्लेषण :

150 = Psychology

-024 (Table 1) = Works for Specific types of users

(Add to "Persons" notation 03-99 form Table 7 to base number -024)

-372 (Table 7) = Teachers

संश्लेषण :

150 + -024 + -372

15 + -024 + -372 = 150.243 72

आख्या : Ethics of Painters

वर्ग संख्या : 174.975

विश्लेषण :

174.9 = Ethics of other professions and occupations

(Add "Persons" notation 09-99 from Table 7 to base number 174.9)

-75 (Table 7) = Painters

संश्लेषण :

174.9 + -75 = 174.975

आख्या : Hindu Philosophy

वर्ग संख्या : 181.045

विश्लेषण :

181 = Oriental Philosophy

181.04 – .99 = Based on Specific Religions

(Add to base number 181.0 the numbers following 29 in 294-299)

294.5 (Vol. 2) = Hinduism

संश्लेषण :

181.0 + 294.5

181.0 + 4.5 = 181.045

4.3 धर्म 200 :

यह मुख्य वर्ग (Religion 200) सामान्यतया ईसाइ धर्म के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित है। वर्ग संख्या 210 से लेकर 289 तक के अधिकांश भाग ईसाई धर्म के प्रति समर्पित हैं। संसार केअन्य मुख्य धर्मों का विवरण अंकन 292-299 के अन्तर्गत दिया गया है। इस मुख्य वर्ग के विभागों और अनुभागों को डी.डी.सी. (खण्ड 1) की दूसरी तथा तीसरी सारांश–तालिकाओं (Summaries) में सूचीबद्ध किया गया है। नीचे दिये गये उदाहरण कुछ मुख्य धर्मों की महत्वपूर्ण शाखाओं से सम्बन्धित हैं।

उदाहरण—

आख्या : Bible in German Language

वर्ग संख्या : 220.531

विश्लेषण :

220.5 = Modern Versions and Translation of Bible

220.53 -.59 = In Other Languages

(Add "Languages" notation 3-9 from Table 6 to the base number 220.5)

-31 (Table 6) = German

संश्लेषण :

220.5 + -31 = 220.531

आख्या : Worship in Buddhism

वर्ग संख्या : 294.344 3

विश्लेषण :

294.34 = Doctrines and Practices in Buddhism

(Add to base number 294.34 the numbers following 291 in 291.2-291.4)

291.43 = Worship

NOTES

संश्लेषण :

294.34 + 291.43

294.34 + 43 = 294.344 3

आख्या : Sacred books of Jainism

वर्ग संख्या : 294.482

विश्लेषण :

294.4 = Jainism

294.41-.48 = Jainism, General Principles

(Add to base number 294.4 the numbers following 291 in 291.1-291.8)

291.82 = Sacred Books

संश्लेषण :

294.4 + 291.82

294.4 + 82 = 294.482

आख्या : Hindu Religious Gurus

वर्ग संख्या : 294.561

विश्लेषण :

294.5 = Hinduism

294.56-.57 = Leaders, organisations, activities

(Add to base number 294.5 the numbers following 291 in 291.6-291.7)

291.61 = Religious Gurus

संश्लेषण :

294.5 + 291.61

294.5 + 61 = 294.561

आख्या : Religion of Hottentots

वर्ग संख्या : 299.681

विश्लेषण :

299 = Other Religions

299.68 = Religion of Specific Groups and Tribes

(Add to base number 299.68 the numbers following 96 in "Radial, Ethnic, National Groups" notation 961-969 from Table 5)

-961 (Table 5) = Hottentots

संश्लेषण :

299.68 + -961

299.68 + -1 = 299.681

4.4 सामाजिक विज्ञान 300 :

इस मुख्य वर्ग (Social Sciences 300) के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान के प्रमुख विषयों को सम्मिलित किया गया है। कुछ विषयों जैसे—मनोविज्ञान, इतिहास और भूगोल को 150 और 900 के अन्तर्गत रखा गया है, अर्थात् इन्हें मुख्य वर्ग 300 से पृथक कर दिया गया है। अनुसूचियों में सामाजिक विज्ञानों के लिए कई स्थानों पर विशेष सारणियाँ दी गई हैं। इन सारणियों के अंकनों का प्रयोग तारांकित (*) (Asterisk) अंकों के लिए किया जाता है। सामाजिक विज्ञानों के विभाग और अनुभाग डी.डी.सी. के खण्ड 1, पृ. 476 पर दूसरी तथा तीसरी सारांश-तालिकाओं में (Summaries) मिलते हैं। नीचे दिये गये उदाहरण सामाजिक विज्ञानों के कुछ प्रमुख क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं।

उदाहरण—

आख्या : Indians in the United States

वर्ग संख्या : 305.891 411 073

विश्लेषण :

305.8	=	Social Stratification of Racial, Ethic, National Groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 305.8 then, unless it is redundant, add 0 to the result, and and "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-914 11 (Table 5)	=	Indians
0 (Vol. 2, p. 207)	=	Facet Indicator
-73 (Table 2)	=	United States

संश्लेषण :

305.8 + -91411 + 0 + -73 = 305.891 411 073

आख्या : Conservation and Protection of forest lands

वर्ग संख्या : 333.751 6

विश्लेषण :

333.75	=	*Forest Lands (*Add as instructed under 333.7)
333.7	=	Natural Resources (Special Divisions are listed)
16 (Vol. 2, p. 280)	=	Conservation and Protection (Listed under 333.7)

संश्लेषण :

333.75 + 16 = 333.751 6

NOTES

आख्या : Election Law of India

वर्ग संख्या : 342.540 7

विश्लेषण :

342	=	Constitutional and Administrative Law
342.3-.9	=	Specific Jurisdictions and Areas (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 342)
-54 (Table 2)	=	India
342.07	=	Election Law

संश्लेषण :

342 + -54 + 342.07

342 + -54 + .07 = 342.540 7

आख्या : Cabinet Government in France

वर्ग संख्या : 354.440 4

विश्लेषण :

354	=	Public International Organisations and Specific Central Governments other than those of United States
354.3-.9	=	Specific Central Governments other than those of the United States (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 354)
-44 (Table 2)	=	France
04	=	Cabinet (Special Divisions listed under 354.3-.9)

संश्लेषण :

354 + -44 + 04 = 354.440 4

आख्या : Admission Procedure in Elementry Schools

वर्ग संख्या : 372.121 6

विश्लेषण :

372	=	Elementry Education
372.11-.18	=	Organisation and Administration (Add to base number 372.1 the number following 371 in 371.1-371.8)
371.216	=	Admission Procedure

संश्लेषण :

372.1 + 371.216 =

372.1 + .216 = 372.121 6

5.5 भाषा 400 :

मुख्य वर्ग भाषा 400 (Language) के अन्तर्गत विश्व की महत्वपूर्ण भाषाओं को रखा गया है। अन्य प्रमुख एवं गौण भाषाओं को सारणी 6 में परिगणित किया गया है। भाषाओं के विभिन्न पक्षों जैसे—शब्द–व्युत्पत्ति (Etymology), शब्दकोश, संरचना प्रणाली (व्याकरण) इत्यादि को सारणी 4 "भाषा–विशेष के उपविभाजन" में परिगणित किया गया है। वर्ग संख्या 420-490 के अन्तर्गत परिगणित एवं तारांकित भाषा–विशेष को सारणी 4 से अंकन लेकर आगे बढ़ाया जा सकता है। सारणी 4 के अंकन के प्रयोग के सम्बन्ध में आपको उप–अनुभाग 5.2.4 में बताया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Structure of Hindi

वर्ग संख्या : 491.435

विश्लेषण :

491.43 = *Hindi

(Add to base number as instructed under 420-490 "Under each language identified by*, add Subdivisions of Individual Languages" notation 01-86 from Table 4 to designated base number)

-5 (Table 4) = Structure

संश्लेषण :

491.43 + -5 = 491.435

आख्या : English-Telugu Dictionary

वर्ग संख्या : 423.948 27

विश्लेषण :

420 = English Language

-32 to -39 (Table 4) = Bilingual Dictionaries

(Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to -3)

-94827 (Table 6) = Telugu

संश्लेषण :

420 + -3 + -94827

42 + -3 + -94827 = 423.948 27

NOTES

आख्या : Pronunciation of French

वर्ग संख्या : 441.81

विश्लेषण :

440	=	French Language
441	=	Written and Spoken codes of standard French
-81 (Table 4)	=	Pronunciation

संश्लेषण :

441 + -81	=	441.81

आख्या : Sanskrit words in Kannada

वर्ग संख्या : 494.814 249 12

विश्लेषण :

494.814	=	Kannada
-24 (Table 4)	=	Foreign Elements
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to -24)
-912 (Table 6)	=	Sankrit

संश्लेषण :

494.814 + -24 + -912	=	494.814 249 12

आख्या : Russian Grammar for Students

वर्ग संख्या : 491.750 243 75

विश्लेषण :

491.7	=	Russian Language
-5 (Table 4)	=	Grammar
-024 (Table 1)	=	Works for Specific types of users
		(Add "Persons" notation 03-99 from Table 7 to base number - 024)
-375 (Table 7)	=	Students

संश्लेषण :

491.7 + -5 + -024 + -375	=	491.750 243 75

4.6 शुद्ध विज्ञान 500 :

इस मुख्य वर्ग (Pure Sciences 500) के अन्तर्गत शुद्ध विज्ञान की प्रमुख शाखाओं जैसे—गणित, खगोल शास्त्र, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, भू-विज्ञान, जैविकी, वनस्पति शास्त्र एवं प्राणि शास्त्र को सम्मिलित किया गया है और इन विषयों का गहन विभाजन प्रस्तुत किया गया है। अनुसूचियों में कुछ स्थानों पर वर्ग संख्या निर्माण हेतु संश्लेषण करने के लिए आपको कुछ विशिष्ट सारणियाँ मिलेंगी जिनकी सहायता से आपको सुविधा होगी।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Size of Venus

वर्ग संख्या : 523.421

विश्लेषण :

523.42	=	*Venus
		(Add as instructed under 523.41-523.48)
		(Add to each subdivision identified by * the numbers following 523.3 in 523.3 1-523.37)
523.31	=	Size

संश्लेषण :

523.42 + 523.31

523.42 + 1 = 523.421 /

आख्या : Liquid State Chemistry

वर्ग संख्या : 541.042 2

विश्लेषण :

541	=	Physical and theoretical Chemistry
541.042	=	State of Matter
		(Add to base number 541.042 the numbers following 530.4 in 530.41 -530.44)
530.42	=	Liquid-state Physics

संश्लेषण :

541.042 + 530.42

541.042 + 2 = 541.042 2

आख्या : Forecasting Snowstorms

वर्ग संख्या : 551.645 5

विश्लेषण :

551	=	Geology, Meteorology, General Hydrology
551.64	=	Forecasting of Specific Elements an Phenomena
		(Add to base number 551.64 the numbers following 551.5 in 551.51-551.57)
551.555	=	Snowstorms

संश्लेषण :

551.64 + 551.555

551.64 + 55 = 551.6455

NOTES

आख्या : Pathology of Rose Plants

वर्ग संख्या : 583.372 042

विश्लेषण :

583.372	=	*Roses
		(Add as instructed under 582-589)
04 (Vol. 2, p. 769)	=	General Principles (Listed Under 582-589)
		(Add to 04 the number following 581 in 581.1-581.8)
581.2	=	Pathology

संश्लेषण :

583.372 + 04 + 581.2

583.372 + 04 + 2 = 583.372 042

आख्या : Respiratory Organs of Amphibians

वर्ग संख्या : 597.604 42

विश्लेषण :

597.6	=	*Amphibians
		(Add as instructed under 592-599)
04 (Vol. 2, p. 795)	=	General Principles (Listed Under 592-599)
		(Add to 04 the numbers following 591 in 591.1-591.8)
591.42	=	Respiratory Organs

संश्लेषण :

597.6 + 04 + 591.42

597.6 + 04 + 42 = 597.604 42

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. सारणी 2 के विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.7 प्रौद्योगिकी (अनुप्रयुक्त विज्ञान) 600 :

इस मुख्य वर्ग (Technology (Applied Sciences) 600) में प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित समस्त विषयों एवं शाखाओं की विस्तृत प्रस्तुति की गई है। अनुसूचियों में अनेक स्थानों पर वर्ग संख्या निर्माण के लिए आपको विशिष्ट सारणियाँ मिलेंगी जिनसे आपको लाभ होगा। इन सारणियों द्वारा डी.डी.सी. की संश्लेषणात्मक विशेषताओं में अत्यन्त वृद्धि हुई है। इस मुख्य वर्ग में कुछ मुख्य विषय क्षेत्रों जैसे—आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी, कृषि-विज्ञान, गृह-अर्थशास्त्र, प्रबन्धन, रसायन अभियांत्रिकी, औद्योगिकी निर्माण और भवन निर्माण इत्यादि को सम्मिलित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Treatment of Gastric Ulcers

वर्ग संख्या : 616.334 06

विश्लेषण :

616.334	=	*Gastric Ulcers (Add as instructed under 616.1-616.9)
06 (Vol. 2, p. 869)	=	Therapy (Listed under 616.1-616.9)

संश्लेषण :

616.334 + 06	=	616.334 06

आख्या : Testing of copper material

वर्ग संख्या : 620.182 028 7

विश्लेषण :

620.182	=	*Copper (material) (*Add as instructed under 620.12-620.19)
028 (Vol. 2, p. 919)	=	Testing and Measurement (Listed under 620.12-620.19)

संश्लेषण :

620.182 + 028 7	=	620.182 028 7

आख्या : Fungus diseases of grapes

वर्ग संख्या : 634.824

विश्लेषण :

634.82	=	Grape Diseases (Add to base number 634.82 the numbers following 632 in 632.1-632.9)
632.4	=	Fungus diseases

संश्लेषण :

634.82 + 632.4		
634.82 + 4	=	634.824

आख्या : Aromatic Ethers

वर्ग संख्या : 661.846

विश्लेषण :

661.84	=	*Ethers (*Add as instructed under 661.82-661.89) (Add to each subdivision identified by * the numbers following 661.81 in 661.814-661.816)
661.816	=	Aromatic

NOTES

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. सारणी 2 के विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
4. सारणी 3 का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

NOTES

संश्लेषण :

661.84 + 661.816

661.84 + 6 = 661.846

आख्या : Sheep Wool Fabrics

वर्ग संख्या : 677.316 4

विश्लेषण :

677.31	=	Sheep Wool
677.312-317	=	Techniques, etc. (Add to base number 677.31 the numbers following 677.028 in 677.0282-677.0287)
677.028 64	=	Fabrics

संश्लेषण :

677.31 + 677.028 64

677.31 + 64 = 677.316 4

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. सारणी 3 का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.8 कलाएँ 700 :

इस मुख्य वर्ग (The Arts 700) में ललित कलाओं की महत्वपूर्ण विषय-शाखाओं जैसे—पौरकला (Civic Art), वास्तु- शास्त्र (Architecture), प्लास्टिक कलाएँ (Plastic Arts), रेखा चित्रण (Drawing Arts), पेंटिंग (Painting), रेखाचित्रीय कला (Graphic Arts), फोटोग्राफी (Photography), संगीत (Music) और मनोरंजनात्मक कलाओं (Recreational Arts) को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक कला में उसके विभिन्न पक्षों जैसे—विवरण, मूल्यांकन, समीक्षात्मक तथ्य, तकनीकों, क्रियाविधि, उपकरण और सामग्री इत्यादि को उद्धृत किया गया है। ललित कलाओं को विस्तृत रूप से ललित (Fine), आलंकारिक (Decorative), साहित्यक (Literary) अभिनयात्मक (Performing) और मनोरंजक (Recreational) कलाओं के अन्तर्गत समूहबद्ध किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Remodeling of Industrial Buildings

वर्ग संख्या : 725.402 86

विश्लेषण :

725.4	=	*Industrial Buildings (*Add as instucted under 721-729)
028 6 (Vol. 2, p. 1238)	=	Remodeling (Listed under 721-729)

संश्लेषण :

725.4 + 0286 = 725.402 86

आख्या : Religious Symbolism in Iconography

वर्ग संख्या : 731.88

विश्लेषण :

731.8	=	Iconography
731.82-.89	=	Specific Subjects in Iconography
		(Add to base number 731.8 the numbers following 704.94 in 704.942-704 949)
704.948	=	Religious Symbolism

संश्लेषण :

731.8 + 704.948

731.8 + 8 = 731.88

आख्या : Preservation of rugs and carpets

वर्ग संख्या : 746.704 88

विश्लेषण :

746.7	=	*Rugs and Carpets
		(*Add as instucted under 746)
048 8 (Vol. 2, p. 1283)	=	Preservation (Listed under 746)

संश्लेषण :

746.7 + 0488 = 746.704 88

आख्या : Mythology and Legend in water colour painting

वर्ग संख्या : 751.422 47

विश्लेषण :

751.422 4	=	Water colour painting techniques by subject
		(Add to base number 751.4224 the numbers following 704.94 in 704.942-704.949)
704.947	=	Mythology and Legend

संश्लेषण :

751.422 4 + 704.947

751.422 4 + 7 = 751.422 47

आख्या : Scores in Rock 'n' Roll music

वर्ग संख्या : 784.540 6

विश्लेषण :

784.54	=	*Rock 'n' Roll music
		(*Add as instructed under 784.1-784.7)
06 (Vol. 2, p. 1335)	=	Scores (Listed under 784.1 – 784.7)

संश्लेषण :

784.54 + 06 = 784.540 6

NOTES

4.9 साहित्य 800 :

इस मुख्य वर्ग (Literature 800) के अन्तर्गत विश्व के प्रमुख साहित्य और उनकी साहित्यिक विधाओं जैसे—कविता, नाटक, कथा–साहित्य, निबन्ध, भाषण–संभाषण, पत्र इत्यादि को रखा गया है। मूल व्यवस्थाक्रम में पहले भाषा, फिर साहित्यिक रूप या विधा, और तत्पश्चात् काल या अवधि को रखा गया है। इस मुख्य वर्ग से सम्बन्धित प्रलेखों की वर्ग संख्या को डी.डी.सी. की सारणी 3 एवं 3-A तथा सारणी 6 (अलग–अलग भाषाओं की सारणी) की सहायता से निर्मित किया जा सकता है। भारतीय साहित्य को 891 तथा 894 वर्ग संख्याओं के अन्तर्गत परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : English short stories of early 20th century

वर्ग संख्या : 823.01

विश्लेषण :

820	=	English Literature
-301 (Table 3)	=	Short Stories

संश्लेषण :

820 + -301

82 + -301 = 823.01

आख्या : Critical Appraisal of Idealism in French Poetry

वर्ग संख्या : 841.009 13

विश्लेषण :

840	=	French Literature
-100 9 (Table 3)	=	Critical Appraisal of Poetry (Add to -1009 notation 1-9 from Table 3-A)
13 (Table 3-A)	=	Idealism

संश्लेषण :

840 + -100 9 + 13

84 + -100 9 + 13 = 841.009 13-

आख्या : Collection of Spanish Essays

वर्ग संख्या : 864.008

विश्लेषण :

860	=	Spanish Literature
-4 (Table 3)	=	Essays
-400 1-400 9 (Table 3)	=	Standard Subdivisions (Add to -400 the numbers following -100 in -1001 - 1009)
-100 8 (Table 3)	=	Collection

NOTES

संश्लेषण :

860 + -400 + -100 8

86 + -400 + -8 = 864.008

आख्या : Hindi satire and humour after 1940

वर्ग संख्या : 891.437 7

विश्लेषण :

891.43	=	Hindi Literature
-7 (Table 3)	=	Satire and Humour
7 (Vol.2, p. 1422)	=	After 1940 (Period)

संश्लेषण :

891.43 + -7 + 7 = 891.437 7

आख्या : Collection of modern Telugu poetry

वर्ग संख्या : 894.827 170 8

विश्लेषण :

894.827	=	Telugu Literature
-1 (Table 3)	=	Poetry
7 (Vol. 2, p. 1430)	=	Modern Period
-08 (Table 3)	=	Collection

संश्लेषण :

894.824 + -7 + 7 + -08 = 894.827 170 8

4.10 सामान्य भूगोल और इतिहास 900 :

इस मुख्य वर्ग (General Geography and History 900) के अन्तर्गत भूगोल, इतिहास, जीवन–चरित जैसे प्रमुख विषयों को रखा गया है। वर्ग संख्या निर्माण के लिए अनुसूचियों में अनेक स्थानों पर विशिष्ट सारणियाँ दी गई हैं। प्रमुख देशों के लिए आपको इसमें ऐतिहासिक काल की जानकारी भी मिलेगी।

उदाहरण—

आख्या : Travel in ancient India

वर्ग संख्या : 913.404

विश्लेषण :

913	=	Travel in ancient world
913.1-.9	=	Continents, countries, etc. (Add "Areas" notation 31-39 from Table 2 to base number 91 then add as further...)
-34 (Table 2)	=	Ancient India
04 (Vol. 2, p. 1442)	=	Travel (Listed under 913.1-.9)

NOTES

संश्लेषण :

913 + -34 + 04

91 + -34 + 04 = 913.404

आख्या : Geography of Brazil

वर्ग संख्या : 918.1

विश्लेषण :

918	=	*Geography of South America
		(*Add as instructed under 914-919)
		(Add "Areas" notation 4-9 from Table 2 to base number 91)
-81 (Table 2)	=	Brazil

संश्लेषण :

918 + -81

91 + -81 = 918.1

आख्या : Dictionary of Indian National Biography

वर्ग संख्या : 920.054

विश्लेषण :

920.03-.09	=	General Collections of Biography
		(Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 920.0)
-54 (Tabel 2)	=	India

संश्लेषण :

920.0 + -54 = 920.054

आख्या : Study and Teaching of Independent India's History

वर्ग संख्या : 954.040 7

विश्लेषण :

954.04	=	Independent India
-07 (Table 1)	=	Study and Teaching

संश्लेषण :

954.04 + -07 = 954.040 7

आख्या : Historians of Mauryan period of India

वर्ग संख्या : 934.040 072 02

विश्लेषण :

934.04	=	*India, Mauryan period
		(*Add as instucted under 930-990)
007202 (Vol. 2, p. 1451)	=	Historians (Listed under 930-990)

संश्लेषण :

934.04 + 007 202 = 934.040 072 02

5. सार-संक्षेप :

NOTES

इस अध्याय के पिछले अनुभागों में आपको सात सहायक सारणियों से परिचित कराया गया है : T1. मानक उपविभाजन, T2. भौगोलिक क्षेत्र उपविभाजन, T3. साहित्य-विशेष के उपविभाजन, T4. भाषा-विशेष के उपविभाजन, T5. जातीय, प्रजातीय, राष्ट्र जनसमूह, T6. भाषाएँ, T7. जन, और विभिन्न अनुसूचियाँ : जेनरेलिया 000, दर्शन और सम्बन्धित विषय 100, धर्म 200, सामाजिक विज्ञान 300, भाषा 400, शुद्ध विज्ञान 500, प्रौद्योगिकी 600, कलाएँ 700, साहित्य 800, सामान्य भूगोल और इतिहास 900।

डी.डी.सी. में सात सहायक सारणियाँ संश्लेषण अथवा अंक निर्माण में सहायक हैं। सहायक सारणियों का प्रयोग अनुसूचियों के साथ ही किया जाता है। आपको अनुसूचियों के सभी मुख्य वर्गों तथा उनके अनुभागों में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के 'में जोड़िए' निर्देशों के बारे में बताया गया है। सरल, यौगिक तथा मिश्र विषयों के लिए डी.डी.सी. (19वें संस्करण) की अनुसूचियों तथा सारणियों का प्रयोग तथा वर्ग संख्या के निर्माण में 'जोड़िए' निर्देशों का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

6. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. सारणी (Table) को इस प्रकार परिभाषित किया गया है—"आश्रित अंकन का वह अनुक्रम जो विभिन्न और ज्ञात-शाखाओं के अन्तर्गत बार-बार प्रयोग में आने वाले विशिष्ट अवधारणाओं को बताता है।" ("a sequence of dependant notation indicating various special concepts used repeatedly with a variet of subjects and disciplines")। यह कुछ विशिष्ट अवधारणाओं को उघोषित करने वाली उप-वर्ग संख्याओं की क्रमबद्ध सूची होती है जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं किया जाता बल्कि इन्हें किसी विषय की वर्ग संख्या के साथ लगाया जा सकता है। इस अनुभाग में सात सहायक सारणियाँ दी गई हैं। ये सब अनुसूचियों की सहायक हैं। वर्ग संख्या निर्माण की प्रक्रिया में इन सात सारणियों के प्रयोग को निम्नलिखित अनुच्छेदों में उदाहरणों सहित समझाया गया है।

2. **(अ) आख्या :** Study and Teaching of Library Classification

   वर्ग संख्या : 025.420 7

   विश्लेषण :

020	=	Library and Information Science
025.42	=	Library Classification
-07 (Table)	=	Study and Teaching

   संश्लेषण :

   025.42 + - 07 = 025.420 7

   (ब) आख्या : Formula in Physics

   वर्ग संख्या : 530.212

   विश्लेषण :

530	=	Physics
-0212 (Table)	=	Formulas

   संश्लेषण :

   530 + -0212

   53 + -0212 = 530.212

3. सारणी 2 (Tabel 2 : Areas) भी एक महत्त्वपूर्ण सारणी है और डी.डी.सी. में वर्ग संख्या के संश्लेषण के लिए निरन्तर प्रयोग में लायी जाती है। सारणी 2 में सामान्य भौगोलिक क्षेत्र, प्रदेश, स्थान (-1) आते हैं जो भू-आकृतिक तथ्यों, जनसंख्या समूहों, राजनीतिक और आर्थिक समूहों से सम्बन्धित होते हैं। इस सारणी में व्यक्ति (-2), प्राचीन विश्व (-3) और आधुनिक विश्व (-4 से -9) को सम्मिलित किया गया है। डी.डी.सी. के 18वें संस्करण (1971) में अमुक 'के समान विभाजित करें' (Divide like) निर्देश दिये गये थे। इन निर्देशों को 19वें संस्करण में अनुसूचियों के "में जोड़िए" (Add to) तथा सारणियों में "से जोड़िए" (Add from) द्वारा बदल दिया गया है। अर्थात् "के समान विभाजित करें" निर्देश के स्थान पर "में जोड़िए" का प्रावधान कर दिया गया है। डी.डी.सी. के 19वें संस्करण में सारणी और अनुसूचियों में "में जोड़िए" के निर्देश आपको अनेक स्थानों पर मिलेंगे। जिसका प्रयोग सारणी 2 से भौगोलक उपविभाजन हेतु आधार संख्या के साथ किया जाता है।

4. **सारणी 3 का संक्षिप्त परिचय दीजिए :** सारणी 3 (Table 3 : Subdivisions of Individual Literatures) के उपविभाजनों में विशिष्ट साहित्यिक विधाएँ या रूप -1 से -7, विविध लेख -8 और विशेष समय अन्तराल -81 से -89 आते हैं। सारणी 3 के अंकन अन्य सारणियों के अंकन के समान ही कभी भी स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त नहीं होते। आवश्यकता होने पर इनका प्रयोग अनुसूचियों में विभिन्न साहित्यों के लिए निर्धारित तारांकित वर्ग संख्याओं के साथ 810-890, वांछित साहित्यों के आधार अंक के साथ जोड़ कर किया जाता है। सारणी 3 के साथ सारणी 3-A को इसकी पूरक सारणी के रूप में दिया गया है जो सारणी 3 की सहायता से वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए अतिरिक्त घटक प्रदान करती है।

7. अभ्यास-प्रश्न

1. डी.डी.सी. की सहायक सारणियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. सारणी 1 के मानक उप विभाजन पर प्रकाश डालिए।
3. सारणी 3 के अन्तर्गत साहित्य विशेष के उप विभाज्य को समझाइए।
4. मुख्य वर्ग धर्म 200 एवं भाषा 400 को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
5. मुख्य वर्ग कलाएँ 700 एवं साहित्य 800 का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- Commoromi, John P. [at el]. (1982). Manual for Use of the Dewey Decimal Classification, 19th ed. Albany : Forest Press.
- Dewey,Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 19th ed. Albany : Forest Press. 3 Vols.
- Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC-20), Theory and Practice : A-Self Instructional Manual Madras : T.R. Publications.
- Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical Approach to DDC. Delhi : Ess Ess.

सहायक सारणियाँ एवं युक्तियाँ

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सारणियों की सहायता से वर्ग संख्या निर्माण
4. सारणी 1 का प्रयोग : मानक उपविभाजन
   4.1 : मानक उपविभाजनों के अभिलक्षण
   4.2 : मानक उपविभाजनों का प्रयोग
   4.3 : एकाधिक शून्य के साथ मानक उपविभाजनों को जोड़ना
5. सारणी 2 का प्रयोग : भौगोलिक क्षेत्र
   5.1 : भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना
   5.2 : मानक उपविभाजन 09 की सहायता से भौगोलक-क्षेत्र संख्या जोड़ना
   5.3 : "..... में जोड़िए" निर्देशानुसार भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना
   5.4 : दो भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना
6. सारणी 3 का प्रयोग : साहित्य-विशेष के उपविभाजन
   6.1 : व्यष्टि लेखकों की साहित्यिक कृतियों का वर्गीकरण
   6.2 : भाषा-विशेष की संकलित कृतियाँ और साहित्यिक समीक्षा
7. सारणी 4 का प्रयोग : भाषा-विशेष के उपविभाजन
8. सारणी 6 का प्रयोग : भाषाएँ
   8.1 : द्विवभाषिक शब्दकोशों का वर्गीकरण
9. सारणी 5 का प्रयोग : जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रजन समूह
   9.1 : निर्देश होने पर सारणी 5 का प्रयोग
   9.2 : सारणी 2 से भौगोलिक-क्षेत्र के अंकन द्वारा सारणी 5 का विस्तार
   9.3 : शून्य का पक्ष-संकेतक की भाँति प्रयोग कर सारणी 5 का विस्तार
   9.4 : मानक उपविभाजन 089 द्वारा सारणी 5 का प्रयोग
10. सारणी 7 का प्रयोग : जन
    10.1 : निर्देश होने पर सारणी 7 का प्रयोग
    10.2 : मानक उपविभाजन 088 द्वारा सारणी 7 का प्रयोग
11. सार-संक्षेप
12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
13. मुख्य शब्द
14. अभ्यास-प्रश्न
15. ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम के अध्याय 5 में आपको पहले ही सात सारणियों से परिचित करा दिया गया है। इस अध्यायमें हम आपको उन सात सहायक सारणियों के प्रयोग के बारे में जानकारी देंगे जिनका विवरण खण्ड–1 में दिया गया है। यहाँ हम आपको बताना चाहते हैं कि इन सहायक सारणियों का प्रयोग अनुसूचियों (ग्रन्थ खण्ड–2) से प्राप्त वर्ग संख्या का विस्तार करने के लिए किया जाता है। इसे समझने के बाद आप अनुसूचियों के साथ इन सारिणयों का प्रयोग अच्छी तरह करना सीख पायेंगे तथा इनकी सहायता से सूक्ष्म एवं गहन वर्गीकरण भी आसानी से कर सकेंगे।

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप निम्नलिखित को जानने में सक्षम हो सकेंगे—

- सभी सात सारणियों में उपलब्ध उन अवधारणाओं को पहचान सकेंगे जो अनुसूचियों (ग्रन्थखण्ड 2) में उपलब्ध अंकों से भिन्न हैं।
- अनुसूचियों में परिगणित किसी भी अंक के साथ सारणियों के अंकन को जोड़कर वर्ग संख्या का विस्तार करना; तथा
- दो और दो से अधिक सारणियों का साथ–साथ प्रयोग करना।

2. परिचय :

प्रारम्भ में ड्यूई क्लैसिफिकेशन एक शुद्ध परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति थी जिसमें सभी ज्ञात मूल तथा यौगिक विषयों को परिगणित किया गया था। परन्तु, नये–नये यौगिक तथा मिश्र विषयों की जटिलता से आप्लावित ज्ञान–जगत् के निरन्तर विस्तारशील स्वरूप का सामना करने के लिए इस प्रणाली में वर्ग संख्याओं के संश्लेषण के प्रावधान धीरे–धीरे विकसित किये गये। एक प्रावधान अनुसूचियों से जोड़ने (add-to) की युक्ति द्वारा अनुसूची के किसी अंक के सम्पूर्ण या आंशिक विस्तार करने से सम्बन्धित है। अनुसूचियों में परिगणित अंकों को विस्तृत करने से सम्बन्धित एक अन्य प्रावधान भी है। इस प्रावधान के अन्तर्गत वर्ग संख्या का विस्तार विभिन्न सारणियों के अंकों को जोड़कर किया जाता है।

ये सारणियाँ ग्रन्थखण्ड–1 में दी गई हैं। सारणी 1 को सबसे पहले डी.डी.सी. के दूसरे संस्करण (1885) में प्रस्तुत किया गया था। सारणी 2 'भौगोलिक क्षेत्र' प्रथमत: 17वें संस्करण (1965) में सूचीबद्ध की गई, और अगली पाँच सारणियाँ पहली बार 18वें संस्करण (1971) में अस्तित्व में आई। ये सहायक सारणियाँ हैं। अर्थात् ये सारणियाँ अतिरिक्त या गौण सारणियाँ हैं जिनकी आवश्यकता केवल सूक्ष्म या गहन वर्गीकरण के लिए होती है। दूसरे शब्दों में ये अनुसूचियों की पूरक हैं। इनमें दी गई संख्याएँ कभी भी एकाकी या स्वतंत्र रूप से प्रयोग में नहीं ली जातीं। छोटे पुस्तकालयों में, जहाँ व्यापक वर्ग संख्या देना पर्याप्त है, इन सारणियों का प्रयोग नहीं किया जाता। अत: इनका प्रयोग वैकल्पिक है। ग्रन्थखण्ड–1 में दी गई सात सारणियाँ निम्नलिखित हैं–

Number	Name	Abbreviation	Pages in Vol. 1
Table 1	Standard Subdivisions	s. s. -	1-13
Table 2	Areas	area-	14-386
Table 3	Subdivisions of Individual Literatures	lit. sub.-	387-403
Table 4	Subdivisions of Individual Languages	lang. sub.-	404-407
Table 5	Racial,Ethnic, National Groups	r.c.n.-	408-417
Table 6	Languages	lan -	418-431
Table 7	Persons	pers.-	432-452

3. सारणियों की सहायता से वर्ग संख्या निर्माण :

यह बताया जा चुका है कि सारणी के अंकों का प्रयोग एकाकी या स्वतंत्र रूप से नहीं होता है। इनका प्रयोग आवश्यकतानुसार अनुसूची में दिये अंक के साथ जोड़ कर किया जाता है। जैसा कि पहले कहा जा चुक है,

अनुसूची के किसी अंक को, विशिष्ट निर्देशों के आधार पर, पुनः विस्तारित किया जा सकता है। इन निर्देशों में यह बताया जाता है कि किसके साथ जोड़ना है, कहाँ से जोड़ना है इत्यादि। लेकिन सारणी 1 : मानक उपविभाजन से किसी भी अंक को बिना किसी निर्देश के भी जोड़ा जा सकता है। आवश्यकता होने पर सारणी 2 के अंकन को ss-09 के द्वारा, साारणी 5 के अंकन को ss-089 के द्वारा तथा सारणी 7 के अंकन को ss-088 द्वारा जोड़ा जा सकता है। अन्यथा, सारणी 2 से 7 तक सभी सारणियों के अंकन को अनुसूचियों में दिये गये निर्देशों की सहायता से सीधे ही जोड़ा जा सकता है। सारणियों के प्रयोग ने ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति को अधिक संश्लेषणात्मक बना दिया है तथा इनके द्वारा वर्ग संख्या निर्माण का कार्य भी आसान हो गया है।

4. सारणी 1 का प्रयोग : मानक उपविभाजन :

मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) साधारणतः किसी विषय के प्रस्तुतीकरण के दृष्टिकोण अथवा माध्यम को और प्रलेखों के स्वरूप को बताता है। दूसरे शब्दों में, इसके अन्तर्गत उन धारणाओं को परिगणित किया जाता है जो विषय के प्रस्तुतीकरण के दृष्टिकोण तथा उसकी प्रकृति के बारे में बताती हैं, जैसे—दर्शन, इतिहास, शोध, क्रमिक प्रकाशन, सम्मेलन की कार्यवाही, शब्दकोश इत्यादि। ये धारणाएँ किसी विषय को द्योतित नहीं करतीं तथा प्रत्येक विषय में बार-बार प्रकट होती रहती हैं। इसलिए इन्हें मानक उपविभाजन कहा जाता है क्योंकि इनके नाम/पद और अंकन सदा एक से रहते हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी विषय के विश्वकोष के लिए मानक उपविभाजन सदैव -30 होगा, चाहे यह दर्शनशास्त्र का विश्वकोष हो या अंकगणित का जा बीजगणित का अथवा अन्य किसी विषय का।

4.1 मानक उपविभाजनों के अभिलक्षण :

(अ) ये किसी विषय के अविषयक (non-subject) आवर्ती पक्ष होते हैं।

(ब) ये सदा शून्य से प्रारम्भ होते हैं, जैसे— -01 दर्शन तथा सिद्धान्त; -05 क्रमिक प्रकाशन; -09 इतिहास।

(स) ये स्वयं में वर्ग संख्या नहीं बन सकते, बल्कि वर्ग संख्या में जोड़े जाते हैं।

4.2 मानक उपविभाजनों का प्रयोग :

किसी आख्या का वर्गीकरण करने के लिए सबसे पहले विशिष्ट विषय में यदि कोई मानक उपविभाजन है तो उसे पहचानना चाहिए। विशिष्ट विषय की वर्ग संख्या अनुसूचियों से प्राप्त की जाती है। तत्पश्चात् सारणी 1 से मानक उपविभाजन (ss) को अन्त में जोड़ा जाता है।

उदाहरण—

आख्या : A dictionary of algebra

वर्ग संख्या : 512.003

विश्लेषण :

512	=	Algebra
-003 (Table 1)	=	Dictionary

संश्लेषण :

512 + -003	=	512.003

आख्या : A Journal on Hinduism

वर्ग संख्या : 294.505

विश्लेषण :

294.5	=	Hinduism
-05 (Table 1)	=	Serial

संश्लेषण :

294.5 + -05	=	294.505

NOTES

4.3 एकाधिक शून्य के साथ मानक उपविभाजनों को जोड़ना :

विभिन्न स्थानों पर तालिकाओं में दिये गये निर्देशों या उदाहरणों के द्वारा यह बताया गया है कि मानक उपविभाजनों को वर्ग संख्या से जोड़ने से पहले कितने शून्यों की आवश्यकता है। कभी-कभी, कुछ मामलों में, मानक उपविभाजन बिना शून्य के भी जोड़े जा सकते हैं। यह भी ध्यातव्य है कि यदि मानक उपविभाजन को ऐसी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा रहा है जिसकी दाहिनी छोर पर शून्य (एक या दो) हो तो अनावश्यक सूची (Filler) को हटा दिया जाता है।

उदाहरण—

(अ) आख्या : Dictionary of Science

वर्ग संख्या : 503

विश्लेषण :

503 = Science

-03 (Table 1) = Dictionary

संश्लेषण :

500 + -03

5 + -03 = 503

(ब) आख्या : Dictionary of Mathematics

वर्ग संख्या : 510.3

विश्लेषण :

510 = Mathematics

-03 (Table 1) = Dictionary

संश्लेषण :

510 + -03

51 + -03 = 510.3

आख्या : History of Medicie

वर्ग संख्या : 610.9

विश्लेषण :

610 = Medicine

-09 (Table 1) = History

संश्लेषण :

610 + -09

61 + -09 = 610.9

इस नियम के अनेक अपवाद भी हैं।

उदाहरण के लिए—

200.7 Study and teaching of religion

जब भी इस प्रकार की विभिन्नताएँ या अपवाद सामने आते हैं, तब अनुसूचियों में दिये गये उदाहरण या निर्देश सहायता करते हैं।

NOTES

दो शून्यों का प्रयोग यदि निर्देशों हो तो कुछ वर्ग संख्याओं में मानक उपविभाजनों को दो या तीन शून्यों के साथ जोड़ा जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Encyclopaedia of Constitutional Law

Constitutional Law के लिए वर्ग संख्या 342 है। इसके (342) अन्तर्गत (Vol. 2, p. 333) निर्देश दिया गया है—

मानक उपविभाजन के लिए 342.001 -.009 प्रयोग करें। इस प्रकार हमारी वर्ग संख्या होगी—

वर्ग संख्या : 342.003

विश्लेषण :

342	=	Constitutional Law
		(Use 342.001 - 342.009 for standard subdivisions)
-003 (Table 1)	=	Encyclopaedia
		(Instead of 03 we are using 003 as instructed)

आख्या :

342 + - 003 = 342.003

इसी भाँति,

आख्या : Research in Mammals

वर्ग संख्या : 599.007 2

विश्लेषण :

599	=	Mammals
		(.001 -.009 standard subdivisions)
-007 2 (Table 1)	=	Research
		(Instead of -072 we are using -007 2 as instructed)

संश्लेषण :

599 + -007 2 = 599.007 2

आख्या : Journal of Human Anatomy

वर्ग संख्या : 611.005

विश्लेषण :

611	=	Human Anatomy
		(.001 -.009 standard subdivisions notations from Table 1)

NOTES

-005 (Table 1) = Journal

(Instead of -05 we are using -005 as instructed)

संश्लेषण :

611 + -005 = 611.005

अब दूसरा उदाहरण लें—

आख्या : Dictionary of Economics

वर्ग संख्या : 330.03

330 अर्थशास्त्र के अन्तर्गत परिगणना इस प्रकार है—

330.31 दर्शन और सिद्धान्त (philosophy and theory)

330.02-.08 मानक उपविभाजन (standard subdivisions)

(प्रथम सारणी से अंकन) (Notations from Table 1)

यहाँ हम देखते हैं कि बिना किसी स्पष्ट निर्देश के भी *ss* को जोड़ने की रीति को उदाहरण या विवरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

विश्लेषण :

330 = Economics

(.02-.08 standard subdivisions Notations from Table 1)

-03 (Table 1) = Dictionary

संश्लेषण :

330 + -03 = 330.03

आख्या : Research in Economics

वर्ग संख्या : 330.072

विश्लेषण :

330 = Economics

(.02-.08 standard subdivisions Notations from Table 1)

-072 (Table 1) = Research

संश्लेषण :

330 + -072 = 330.072

तीन शून्यों का प्रयोग

कई मामलों में मानक उपविभाजन के साथ तीन शून्यों को जोड़ने का निर्देश या प्रावधान है। उदाहरण के लिए वर्ग 351 Central Governments :

351.0001 Philosophy and theory of central governments

(351.000 2-.000 3 standard subdivisions)

NOTES

इस प्रकार :

आख्या : A Journal on central governments

वर्ग संख्या : 351.000 5

विश्लेषण :

351	=	Central Governments
-000 5 (Table 1)	=	Journal
		(Zeros are added as instructed)

संश्लेषण :

351 + -000 5	=	351.000 5

आख्या : Research on central governments

वर्ग संख्या : 351.000 72

विश्लेषण :

351	=	Central Governments
351.000 7-.000 9	=	Standard subdivisions (Notations from Table 1)
-000 72 (Table 1)	=	Research
		(Zeros are added as instructed)

संश्लेषण :

351 + -000 72	=	351.000 72

इसी प्रकार :

आख्या : A Journal on curriculum

वर्ग संख्या : 375.000 5

विश्लेषण :

375	=	Curriculums
	=	(.000 1-.000 8 standard subdivisions Notations from Table 1)
-000 5 (Table 1)	=	Journal

संश्लेषण :

375 + -000 5	=	375.000 5

मानक उपविभाजन को कितने शून्यों के साथ वर्ग संख्या में लगाया जाये, इससे सम्बन्धित कोई सुनिश्चित नियम नहीं है। इन्हें वर्ग संख्या में जोड़ने के लिए प्रविष्टियों के अन्तर्गत दिये गये नियम या निर्देश का अनुसरण किया जाता है।

5. सारणी 2 का प्रयोग : भौगोलिक क्षेत्र :

यह सारणी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों, जनसंख्या समूहों, राजनीतिक, प्राकृतिक, भौतिक और भूभौतिक विभाजनों की एक सुनियोजित सूची है। द्वितीय सारणी (Table 2 : Areas) के मुख्य विभाजन निम्नलिखित हैं–

NOTES

– 1 सामान्य भौगोलिक क्षेत्र (Areas and places in general)
– 2 व्यक्ति/जनसंख्या समूह (Persons/population clusters)
– 3 प्राचीन विश्व (Ancient world)
– 4 यूरोप (Europe)
– 5 एशिया (Asia)
– 6 अफ्रीका (Africa)
– 7 उत्तरी अमेरिका (North America)
– 8 दक्षिणी अमेरिका (South America)
– 9 विश्व के अन्य भाग (Other parts of the world)

5.1 भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना :

भौगोलिक संख्या को आधार या मूल वर्ग संख्या में जोड़ा जाता है। किसी वर्ग संख्या में भौगोलिक- क्षेत्र संख्या तीन प्रकार से विद्यमान हो सकती है—

(1) परिगणित वर्ग संख्या में पहले ही सम्मिलित हो—

315 General Statistics of Asia
915 General Geography of Asia
950 General History of Asia

(2) इसे मानक उपविभाजन *ss*-09 के साथ किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है।

(3) यदि प्रविष्टि के अन्तर्गत निर्देश हो तो इसे वर्ग संख्या के साथ सीधे जोड़ा जा सकता है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. ग्रन्थ खण्ड 1 में दी गयी सात सारणियों का परिचय दीजिए।

.....
.....
.....
.....

5.2 मानक उपविभाजन 09 की सहायता से भौगोलक-क्षेत्र संख्या जोड़ना :

कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनकी वर्ग संख्या में भौगोलिक-क्षेत्र दर्शाने वाली संख्या को जोड़ना आवश्यक होता है। ऐसी स्थिति में भौगोलिक-क्षेत्र संख्या को मानक उपविभाजन (Standard subdivisions) -09 की सहायता से जोड़ा जाना चाहिए।

-09 आपको याद होगा कि मानक उपविभाजन (*ss*) -09 के अन्तर्गत निम्नलिखित उल्लेख किया गया है—

-091 Treatment by area, regions, places in general

-093-099 Treatment by specific continents, countries, localities, extrater-restrial world

इन प्रविष्टियों के अन्तर्गत निम्नलिखित निर्देश दिये गये हैं—

"Add" "Areas notation 1 from Table 2 to base number -09"। इसका अर्थ यह हुआ कि भौगोलिक-क्षेत्र की संख्या -1 अथवा -3-9 संख्याओं को वर्ग संख्या में जोड़ा जा सकता है। मानक उपविभाजन (Standard subdivisions) -09 द्वारा किसी भी भौगोलिक-क्षेत्र सूचक संख्या को किसी भी वर्ग संख्या के साथ बिना किसी निर्देश के भी जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण—

आख्या : Commercial Banks of India

वर्ग संख्या : 332.120 954

NOTES

यहाँ मुख्य विषम 'Commerical Banks' है। इसकी वर्ग संख्या 332.12 है। इस प्रविष्टि के अन्तर्गत भौगोलिक-क्षेत्र को दर्शाने हेतु कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए हम *ss*-09, -091, अथवा -093-099 द्वारा यहाँ क्षेत्र संख्या को जोड़ेंगे।

विश्लेषण :

332.12	=	Commercial Banks
-09 (Table 1)	=	Historical and Geographical Treatment
-54 (Table 2)	=	India

संश्लेषण :

332.12 + -09 + -54 = 332.120 954

अब हम एक अन्य उदाहरण लेंगे।

आख्या : Women Labour in China

वर्ग संख्या : 331.409 51

यहाँ मुख्य विषम "Women labour or women workers" है। इसकी वर्ग संख्या 331.4 है। 331.4 और उपविभाजनों में भौगोलिक-क्षेत्र संख्या को जोड़ने का कोई प्रावधान नहीं है।

अत: हम *ss*-09 के द्वारा क्षेत्र संख्या जोड़ेंगे। चीन का अंक सारणी 2 में -51 है।

विश्लेषण :

331.4	=	Women Workers
-09 (Table 1)	=	Historical and Geographical Treatment
-51 (Table 2)	=	China

संश्लेषण :

331.4 + -09 + -51 = 331.409 51

आख्या : Freedom of speech in communist countries

वर्ग संख्या : 323.443 091 717

विश्लेषण :

323.443	=	Freedom of Speech
-09 (Table 1)	=	Historical and Geographical Treatment
-171 7 (Table 2)	=	Communist bloc

संश्लेषण :

323.443 + .09 + -171 7 = 323.443 091 717

यह ध्यान रखना चाहिए कि यहाँ "क्षेत्र" अंकन को सारणी 2 से *ss*-091 के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार जोड़ा जाता है, न कि *ss*-093-099 के अन्तर्गत दिये निर्देशों के अनुसार।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. सारणियों की सहायता से वर्ग संख्या का निर्माण कैसे किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

NOTES

5.3 "..... में जोड़िए" निर्देशानुसार भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना :

किसी विषय की परिगणना करते समय डी.डी.सी. में भौगोलिक-क्षेत्र संख्या के प्रयोग का पूर्वानुमान कर लिया गया है और उसी के अनुसार भौगोलिक स्थानों के नाम जोड़ने के लिए अनेक स्थानों पर प्रावधान किये गये हैं। अनेक प्रविष्टियों में सारणी 2 : भौगोलिक-क्षेत्र से "जोड़ने का" निर्देश दिया गया है। प्राय: इस प्रकार के निर्देश उन विषयों एवं उपविभाजनों के अन्तर्गत दिये गये हैं जिनका भौगोलिक औचित्य है। इन प्रकरणों में अनुसूचियों से क्षेत्र संख्या जोड़ना उतना ही सरल होता है जितना कि सारणी 1 से क्षेत्र संख्या को मानक उपविभाजन (*ss*) के द्वारा जोड़ना।

उदाहरण—

आख्या : Elementary Education in India

वर्ग संख्या : 372.954

यहाँ मुख्य विषय प्राथमिक शिक्षा (Elementry Education) है। इसकी वर्ग संख्या 372 है। इसके विशिष्ट सारांश-तालिका (Special Summary) (पृ. सं. 529) का अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि—

372.9 Histrocial and Geograhical Treatment of Elementary Education

यह हमारा उपर्युक्त आधार अंक है। इसके उपविभाजनों (Vol. 2 page 534) को देखने पर हम पाते हैं—

372.91-.99 Geographical Treatment

यहाँ "..... में जोड़िये" निर्देश दिया हुआ है। जिसके अनुसार—

सारणी 2 की आधार संख्या 372.9 में क्षेत्र संख्या 1-9 को जोड़ना है।

सारणी 2 में भारत के लिए संख्या-54 है। इसे आधार संख्या 372.9 के साथ जोड़ने पर हमें प्राप्त होता है—

372.9 + -54 = 372.954

यह हमारी अपेक्षित वर्ग संख्या है।

आख्या : Elementary Education in Assam

वर्ग संख्या : 372.954 162

विश्लेषण :

372	=	Elementary Education
372.9	=	Historical and Geographical Treatment
372.91-.99	=	Geographical Treatment (Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 372.9)
-541 62 (Table 2)	=	Assam

संश्लेषण :

372.9 + -541 62	=	372.954 162

आख्या : Elementary Education in Rural Areas of the world

वर्ग संख्या : 372.917 34

विश्लेषण :

372	=	Elementary Education

NOTES

372.9	=	Historical and Geographical Treatment
372.91 -.99	=	Geographical Treatment
		(Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 372.9)
-173 4 (Table 2)	=	Rural Areas

संश्लेषण :

372.9 + -173 4 = 372.917 34

आख्या : Economic-conditions in India

वर्ग संख्या : 330.954

विश्लेषण :

330	=	Economics
330.9	=	Economic Situation and Conditions
330.91-.99	=	Geographical Treatment
		(Add "Areas" notation 1-9 from Table 1 to base number 330.9)
-54 (Table 2)	=	India

संश्लेषण :

330.9 + -54 = 330.954

आख्या : Economy (Economic Conditions) of Himachal Pradesh

वर्ग संख्या : 330.954 52

विश्लेषण :

330	=	Economics
330.9	=	Economic Situation and Conditions
330.91-.99	=	Geographical Treatment
		(Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 330.9)
-545 2 (Table 2)	=	Himachal Pradesh

संश्लेषण :

330.9 + -545 2 = 330.954 52

आख्या : Birds of Antarctica

वर्ग संख्या : 598.299 89

विश्लेषण :

598	=	Aves (Birds)
598.29	=	Geographical Treatment of Aves

NOTES

598.293-.299	=	Treatment by specific continents, countries, localities (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 598.29)
-989 (Table 2)	=	Antarctica

संश्लेषण :

598.29 + -989 = 598.299 89

कभी-कभी एक अनुभाग (Three digit figure) सीधे ही भौगोलक क्षेत्र से विभाजित कर दिया जाता है।

उदाहरण देखिए—

आख्या : Foreign Policy of China

वर्ग संख्या : 327.51

विश्लेषण :

327	=	Foreign Policy
372.3-.9	=	Foreign Policies of and foreign relations between specific nations (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 327)
-51 (Table 2)	=	China

संश्लेषण :

327 + -51 = 327.51

यहाँ विषय है, विदेश नीति (Foreign Policy) और इसकी वर्ग संख्या 327 है। जब हम इसके उपविभाजनों 327.3-.9 पर दृष्टि डालते हैं, तो पाते हैं कि (उपविभाजन 327.3-.9) विभिन्न देशों की विदेश नीतियों को यहाँ वर्गीकृत करना चाहिए। इसके लिए निर्देश यह है कि : "सारणी 2 से आधार संख्या 327 में क्षेत्र संख्या 3-9 को जोड़िए" ("Add 'Areas' notation 3-9 from Table 2 to base number 327")

आख्या : Foreign Policy of Sri Lanka

वर्ग संख्या : 327.549 3

विश्लेषण :

327	=	Foreign Policy
327.3-.9	=	Foreign Policies of and foreign relations between specific nations (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 327)
-549 3 (Table 2)	=	Sri Lanka

संश्लेषण :

327 + -549 3 = 327.549 3

NOTES

5.4 दो भौगोलिक-क्षेत्र संख्या जोड़ना :

ऐसे बहुत से उदाहरण देखने में आते हैं जिनमें एक विषय में दो भौगोलिक क्षेत्र पाये जाते हैं उदाहरण के लिए द्विपक्षीय अनुबन्ध, विदेश सम्बन्ध, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरण इत्यादि।

ऐसे कई मामलों में दोनों स्थानों की संख्याओं को जोड़ने के प्रावधान हैं। सामान्यतः दो क्षेत्र संख्याओं को शून्य के द्वारा जोड़ा जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Foreign Relations between India and Russia

वर्ग संख्या : 327.540 47

विश्लेषण :

327	=	International Relations
327.3-.9	=	Foreign Policies of and foreign relations between specific nations (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 327 ..... then for foreign relations between that nation and another nation, region, area, place add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2.....)
-54 (Table 2)	=	India
0	=	Facet Indicator
-47 (Table 2)	=	Russia

संश्लेषण :

327 + -54 + 0 + -47 = 327.540 47

आख्या : Foreign Relations between Japan and USA

वर्ग संख्या : 327.520 73

विश्लेषण :

327	=	International Relations
327.3-.9	=	Foreign Policies of and foreign relations between Specific nations (Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 327... then for foreign relations between that nation and another nation, region, area, place and 0 and to the rsult add "Areas" notation 1-9 from Table 2...)
-52 (Table 2)	=	Japan
0	=	Facet Indicator
-73 (Table 2)	=	United States

संश्लेषण :

327 + -52 + 0 + -73 = 327.520 73

NOTES

अब एक अन्य उदाहरण लेते हैं—

आख्या : Trade between India and Iran

वर्ग संख्या : 382.095 405 5

विश्लेषण :

3282	=	International Commerce (Foreign Trade)
382.09	=	Historical and Geographical Trealment (Add "Areas" notation 1-9 from Table 2 to base number 382.09... then for trade between two countries, regions, area, place and 0 and again add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-54 (Table 2)	=	India
0	=	Facet Indicator
-55 (Table 2)	=	Iran

संश्लेषण :

382 + -54 + 0 + -55 = 382.095 405 5

6. सारणी 3 का प्रयोग : साहित्य-विशेष के उपविभाजन :

साहित्य : 800 की अनुसूची में किसी विषय की पूर्व निर्मित वर्ग संख्या का मिलना विरल है। साहित्यिक कृतियों के लिए मुख्य वर्ग 800 और इसके उपविभाजनों के लिए वर्ग संख्या निर्देशानुसार सारणी 3 या 3-A या दोनों की सहायता से निर्मित की जाती है। सारणी 3 में किसी भी भाषा के साहित्य 810-890 में प्रयुक्त होने वाले किसी भी नियमित विषय के लिए अंकन उपलब्ध हैं। सारणी 3 में साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा काव्य, नाटक, उपन्यास और इसी तरह की अन्य साहित्यिक विधाएँ सूचीबद्ध की गई हैं। सारणी 3-A में साहित्य के विभिन्न विषय सूचीबद्ध हैं। सारणी 3-A में साहित्य के विभिन्न विषय सूचीबद्ध हैं। सारणी 3-A सामान्यतः सारणी 3 की पूरक है।

6.1 व्यष्टि लेखकों की साहित्यिक कृतियों का वर्गीकरण :

व्यष्टि लेखक की कृतियों के लिए परिसूत्र है : आधार (भाषा) संख्या (Language (Base) Number) (Vol. 2) + रूप या विधा (Form) (Table 3) + समय या काल (Vol. 2 में विशेष कालानुक्रम सारणी प्रत्येक भाषा के साहित्य के नीचे दी गई है)।

उदाहरण—

आख्या : Paradise Lost by John Milton (1608-1674)

It is sport-Elizabethan English Poetry.

वर्ग संख्या : 821.4

विश्लेषण :

82	=	English Literature
-1 (Table 3)	=	Poetry
4	=	Period (1608-1674) (Vol. 2, p. 1403)

NOTES

संश्लेषण :

82 + -1 + 4 = 821.4

आख्या : Poetry of John Keats (1775-1821)

He was an English poet of the Romantic period.

वर्ग संख्या : 821.7

विश्लेषण :

82 = English Literature

-1 (Table 3) = Poetry

7 = Period (1775-1821) (Vol. 2, p. 1404)

संश्लेषण :

82 + -1 + 7 = 821.7

आख्या : David Copperfield by Charles Dickens (1812-1870)

He was an English novelist of the Victorian era.

वर्ग संख्या : 823.8

विश्लेषण :

32 = English Literature

-3 (Table 3) = Fiction

8 = Period (1812-1870)

संश्लेषण :

82 + -3 + 8 = 823.8

अब हम भारतीय लेखकों की कृतियों की वर्ग संख्या बनाते हैं। भारतीय भाषाओं के लिए समय/काल सारणी 891.4 के अन्तर्गत (Page 1422, Vol. 2) पर दी गई है।

आख्या : Hindi Poetry of Jai Shankar Prasad (1890-)

वर्ग संख्या : 891.431 6

विश्लेषण :

891.43 = Hindi Literature

-1 (Table 3) = Poetry

6 = Period (Vol. 2, p. 1422)

संश्लेषण :

891.43 + -1 + 6 = 891.431 6

आख्या : Godan by Prem Chand (1880-1936)

वर्ग संख्या : 891.433 5

विश्लेषण :

891.43 = Hindi Literature

-3 (Table 3) = Fiction

5 = Period (Vol. 2, p. 1422)

NOTES

संश्लेषण :

891.43 + -3 + 5 = 891.433 5

आख्या : (Bengali) Plays of Tagore (1861-1941)

वर्ग संख्या : 891.442 5

विश्लेषण :

891.44	=	Bengali Literature
-2 (Table 3)	=	Drama
5	=	Period (Vol. 2, p. 1422)

संश्लेषण :

891.44 + -2 + 5 = 891.442 5

आख्या : Poetry of Malyalam Poet Shankar G. Gurup (1901-)

वर्ग संख्या : 894.812 16

विश्लेषण :

894.812	=	Malyalam Literature
-1 (Table 3)	=	Poetry
6	=	Period (Vol. 2, p. 1422)

संश्लेषण :

894.812 + -1 + 6 = 894.812 16

6.5.2 भाषा-विशेष की संकलित कृतियाँ और साहित्यिक समीक्षा

उदाहरण—

आख्या : History of English Literature

वर्ग संख्या : 820.9

विश्लेषण :

82	=	English Literature
-09 (Table 3)	=	History

संश्लेषण :

82 + -09 = 820.9

आख्या : History of 20th Century English Literature

वर्ग संख्या : 820.900 91

विश्लेषण :

82	=	English Literature
-09 (Table)	=	History
-090 01-090 09 (Table 3)	=	Literature from Specific Periods (Add to 0900 the notation from the period table for the specific literature)
91	=	20th Century (Vol. 2, p. 1404)

संश्लेषण :

82 + -0900 + 91 = 820.900 91

आख्या : An Anthology of German Poetry

वर्ग संख्या : 831.008

विश्लेषण :

830	=	German Literature
-1008 (Table 3)	=	Anthology

संश्लेषण :

830 + -100 8

83 + -100 8 = 831.008

आख्या : Anthology of English Literature Displaying Romaticism

वर्ग संख्या : 820.801 45

विश्लेषण :

82	=	English Literature
-08 (Table 3)	=	Collections (In more than one form by more than one author)
		(Add to -080 notations 01-99 from Table 3-A)
-145 (Table 3-A)	=	Romanticism

संश्लेषण :

82 + -080 + -145 = 820.801 45

7. सारणी 4 का प्रयोग : भाषा-विशेष के उपविभाजन :

इस सारणी में ऐसी अवधारणाओं के लिए अंकन दिये गये हैं जो मुख्य वर्ग 400 के अन्तर्गत परिगणित प्रत्येक भाषा के साहित्य में बार-बार प्रकट होती हैं। इस सारणी का प्रयोग निर्देशानुसार किया जाता है। मुख्य वर्ग 400 की प्रत्येक तारांकित (*) संख्या, पाद टिप्पणी (Footnote) द्वारा हमें 420-490 (विशिष्ट भाषाएँ) के नीचे के निर्देशों की ओर प्रेरित करती है। यह निर्देश (पृष्ठ संख्या 600, खण्ड 2) इस प्रकार है : *द्वारा द्योतित प्रत्येक भाषा में, निर्धारित आधार संख्या के साथ, सारणी 4 : "भाषा-विशेष के उपविभाजन" के अंकन 01-86 को जोड़ें ("Under each language indentified by*, add 'Subdivisions of Individual Languages' notation 01-086 from Table 4 to designated base number")।

अब कुछ उदाहरण देखते हैं—

उदाहरण—

आख्या : German Grammar

यहाँ जर्मन भाषा विषय है। इसकी आधार संख्या 43 है जो कि तारांकित (*) संख्या है। "Grammar" या व्याकरण एक भाषाशास्त्रीय पक्ष है जिसके लिए सारणी 4 संख्या –5 दी गई है। इस प्रकार पूर्ण वर्ग संख्या होगी—

वर्ग संख्या : 435

विश्लेषण :

43	=	*German Language
-5 (Table 4)	=	Grammar

NOTES

NOTES

संश्लेषण :

43 + -5 = 435

आख्या : Sankrit Grammar

वर्ग संख्या : 491.25

विश्लेषण :

491.2 = *Sanskrit Language

-5 (Table 4) = Grammar

संश्लेषण :

491.2 + -5 = 491.25

आख्या : A dictionary of Hindi Language

वर्ग संख्या : 491.433

विश्लेषण :

491.43 = *Hindi Language

-3 (Table 4) = Dictionary

संश्लेषण :

491.43 + -3 = 491.433

यह बात ध्यान रखने योग्य है कि संख्या जो 420-490 के बीच में हैं, परन्तु वह बिना तारांकित (*) है, तो उसका विस्तार सारणी 4 द्वारा नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए—

Grammar of Pali Language

491.37

Grammar of Nepali Language

491.49

8. सारणी 6 का प्रयोग : भाषाएँ :

इस सारणी में लगभग ज्ञात भाषाओं की सुनियोजित की गई है। इसके अंकन का प्रयोग निर्देश होने पर ही किया जाता है। सारणी 3 एवं 4 के विपरीत, सारणी 6 का प्रयोग विविध अनुसूचियों तथा सहायक सारणियों में अनेक स्थानों पर होता है। फिर भी, सारणी 6 से अंकन जोड़ने की जहाँ आवश्यकता है वहाँ पर्याप्त एवं स्पष्ट ".... में जोड़िए" निर्देश मिलता है।

उदाहरण—

आख्या : Bible in Hindi

वर्ग संख्या : 220.591 43

इसी भाँति :

Bible in French Language

220.5 + -41 (Table 6) = 220.541

Bible in Sinhalese Language

220.5 + -9148 (Table 6) = 220.591 48

आख्या : Talmudic Literature in English

वर्ग संख्या : 296.120 521

विश्लेषण :

296.12	=	Talmudic Language
296.120 5	=	Translations
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number 296.120 5)
-21 (Table 6)	=	English

संश्लेषण :

296.120 5 + -21 = 296.120 521

आइये कुछ अन्य उदाहरण देखें जिनमें सारणी 6 से अंकन जोड़ने के निर्देश हैं।

आख्या : A Social Study of English Speaking People

वर्ग संख्या : 305.721

विश्लेषण :

305	=	Social Stratification
305.7	=	Language Groups
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number 305.7)
-21 (Table 6)	=	English

संश्लेषण :

305.7 + -21 = 305.721

आख्या : A Social Study of Bengalis

वर्ग संख्या : 305.791 44

विश्लेषण :

305	=	Social Stratification
305.7	=	Language Groups
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number 305.7)
-9144 (Table 6)	=	Bengali

संश्लेषण :

305.7 + -9144 = 305.791 44

305.7 के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार, सारणी 6 से प्राप्त अंकन को वर्ग संख्या के साथ जोड़ने के बाद पुनः उस संख्या में सारणी 2 से प्राप्त अंकन को शून्य (0) लगाकर जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए—

NOTES

NOTES

आख्या : A Social Study of Bengalis in England

वर्ग संख्या : 305.791 440 42

विश्लेषण :

305	=	Social Stratification
305.7	=	Language Groups
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to base number 305.7... then add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-9144 (Table 6)	=	Bengali
0	=	Facet Indicator
-42 (Table 2)	=	England

संश्लेषण :

305.7 + -9144 + 0 + -42 = 305.791 440 42

सामान्य विश्वकोशों (031-039) को उनकी भाषाओं के आधार पर विभक्त किया गया है और प्रमुख भाषाओं के कुछ सामान्य विश्वकोशों के लिए वर्ग संख्या पहले से ही बनी हुई हैं।

आख्या : Hindi Vishwa Kosh-a general encyclopaedia in Hindi Language

वर्ग संख्या : 039.914 3

विश्लेषण :

039	=	Encyclopaedia in other Languages
		(Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to base number 039)
-9143 (Table 6)	=	Hindi

संश्लेषण :

039 + -9143 = 039.914 3

आख्या : General Encyclopaedia in Telugu

वर्ग संख्या : 039.948 27

विश्लेषण :

039	=	Encyclopaedia in other Languages
	=	(Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to base number 039)
-94827 (Table 6)	=	Telugu

संश्लेषण :

039 + -94827 = 039.948 27

इसी भाँति 051-059 : सामान्य सामयिक पत्रिकाएँ भी भाषा द्वारा 031-039 सामान्य विश्वकोशों के समान विभक्त की गई हैं।

आख्या : General Periodicals in Spanish

वर्ग संख्या : 056.1

विश्लेषण :

056	=	Periodicals in Spanish and Portuguese
		(Add "Languages" notation 61-69 from Table 6 to base number 05)
-61 (Table 6)	=	Spanish

संश्लेषण :

05 + -61	=	056.1

आख्या : General Periodicals in Portuguese

वर्ग संख्या : 056.9

विश्लेषण :

056	=	Periodicals in Spanish and Portuguese
		(Add "Languages" notation 61-69 from Table 6 to base number 05)
-69 (Table 6)	=	Portuguese

संश्लेषण :

05 + -69	=	056.9

आख्या : A General Periodical in Hindi

वर्ग संख्या : 059.914 3

विश्लेषण :

059	=	Periodicals in other Languages
		(Add "Languages" notation 2-9 from Table 6 to base number 059)
-9143 (Table 6)	=	Hindi

संश्लेषण :

059 + -9143	=	059.914 3

8. द्विवभाषिक शब्दकोशों का वर्गीकरण :

जैसा पहले कहा जा चुका है कि निर्देश होने पर सारणी 6 का प्रयोग दूसरी सारणियों के साथ भी हो सकता है। सारणी 4 के साथ सारणी 6 का उपयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें अनेक भाषाशास्त्रीय विषय है। अत: सारणी 6 एक प्रकार से सारणी 4 की पूरक है और द्विवभाषिक शब्दकोशों की वर्ग संख्या के निर्माण में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। द्विवभाषिक शब्दकोशों में शब्द एक भाषा में दिये जाते हैं तथा उनके अर्थ दूसरी भाषा में दिये जाते हैं। इस प्रकार के शब्दकोशों के अंकन के लिए सूत्र है—

आधार संख्या (Base number) + -3 (Table 4) + Table 6

NOTES

NOTES

सारणी 4 में द्विवभाषिक शब्दकोशों के लिए वर्ग संख्या निर्माण हेतु स्पष्ट नियम हैं। इन्हें उस भाषा के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है जिसके अन्तर्गत रखने से उस शब्दकोश की उपयोगिता बढ़े। हमारे देश में A Russia - English Dictionary को पहले रूसी भाषा के अन्तर्गत वर्गीकृत करना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

उदाहरण—

आख्या : Russian English Dictionary

वर्ग संख्या : 491.732 1

विश्लेषण :

491.7	=	Russian Languages
-3 (Table 4)	=	Dictionary
-21 (Table 6)	=	English

संश्लेषण :

491.7 + -3 + -21 = 491.732 1

आख्या : Tamil Hindi Dictionary

वर्ग संख्या : 494.811 391 431

विश्लेषण :

494.811	=	Tamil Language
-3 (Table 4)	=	Dictionary
-91431 (Table 6)	=	Hindi

संश्लेषण :

494.811 + -3 + -91431 = 494-811 391 431

एक तमिल हिन्दी शब्दकोष हिन्दी बाहुल्य क्षेत्र में अधिक उपयोगी सिद्ध होगा यदि इसका वर्गीकरण पहले तमिल में हो (ऊपर की आख्या देखिये)। यही शब्दकोष यदि तमिल भाषा बोलने वाले क्षेत्र में वर्गीकृत हो तो निम्नलिखित रीति अपनाई जायेगी—

आख्या : Tamil Hindi Dictionary

वर्ग संख्या : 494.433 948 11

विश्लेषण :

494.43	=	Hindi Language
-3 (Table 4)	=	Dictionary
-94811 (Table 6)	=	Tamil

संश्लेषण :

494.43 + -3 + -94811 = 494.433 948 11

इस भाँति आप यह देखेंगे कि द्विवभाषिक शब्दकोश के लिए वर्ग संख्या पुस्तकालय के अनुसार अलग-अलग होगी। अब यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि यदि दोनों ही भाषाएँ समान रूप से उपयोगी हैं तो शब्दकोश को किस भाषा के अन्तर्गत पहले वर्गीकृत किया जाये। इस प्रकार की दुविधा के लिए सारणी 4 में एक अन्य

NOTES

नियम दिया गया है। स्पेनिश ग्रीक शब्दकोष हमारे देश में किसी भी भाषा के अन्तर्गत वर्गीकृत हो सकता है। लेकिन नियम यह कहता है कि इस प्रकार के शब्दकोषों को उस भाषा के अन्तर्गत किया जाना चाहिए जो अनुक्रम में बाद में आती हो।

जैसे—

स्पेनिश = 461

ग्रीक = 480

इन अंकों में 480 अनुक्रम में बाद में आता है और इस प्रकार इसे आधार संख्या मानकर उसकी वर्ग संख्या होगी—

आख्या : Greek Spanish Dictionary

वर्ग संख्या : 483.61

विश्लेषण :

480	=	Greek Language
-3 (Table 4)	=	Dictionary
-61 (Table 6)	=	Spanish

संश्लेषण :

480 + -3 + -61	=	
48 + -3 + -61	=	483.61

सारणी 4 में (पृष्ठ संख्या 405) द्विवभाषिक शब्दकोशों के लिए बनी बनाई वर्ग संख्याएँ भी हैं और इनके लिए नियम भी दिये गये हैं। स्व-जाँच अभ्यास 9 में दिये गये उदाहरणों को वर्गीकृत करें तत्पश्चात् अपने उत्तरों की जाँच करें।

निर्देशानुसार सारणी 6 का प्रयोग सारणी 4 के निम्नलिखित उपविभाजनों के साथ भी किया जाता है—

-24	Foreign Eelements
-834	Audio-lingual approach to expression for those whose native language is different.
-864	Readers (Primers) for those whose native language is different.

कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिये गये हैं—

आख्या : French Words and Phrases used in English

वर्ग संख्या : 422.441

विश्लेषण :

420	=	English Language
-24 (Table 4)	=	Foreign Elements
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to 2-24)
-41 (Table 6)	=	French

संश्लेषण :

420 + -24 + -41		
42 + -24 + -41	=	422.441

NOTES

यहाँ अंग्रेजी भाषा आधार अंक का कार्य करेगी।

आख्या : Latin Elements in French Language.

वर्ग संख्या : 422.471

विश्लेषण :

440	=	French Language
-24 (Table 4)	=	Foreign Elements
		(Add "Languages" notation 1-9 from Table 6 to -24)
-71 (Table 6)	=	Latin

संश्लेषण :

440 + -24 + -71

44 + -24 + -71 = 442.471

आख्या : Persian Words in Urdu Language

वर्ग संख्या : 491.3439 249 155

विश्लेषण :

491.439	=	Urdu Language
-24 (Table 4)	=	Foreign Elements
		(Add "Language" notation 1-9 from Table 6 to -24)
-9155 (Table 6)	=	Persian

संश्लेषण :

491.439 + -24 + -9155 = 491.439 249 155

9. सारणी 5 का प्रयोग : जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रजन समूह :

इस सारणी में व्यक्ति-समूहों को उनके राष्ट्रीय, जातीय, उपजातीय एवं वंशानुगत उत्पत्ति के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है। इस सारणी का प्रयोग अधिकांशतः माँग के आधार पर किया जाता है। आवश्यकता के आधार पर इसका प्रयोग मानक उपविभाजन (*ss*)-089 के द्वारा किया जा सकता है।

9.1 निर्देश होने पर सारणी 5 का प्रयोग :

वर्ग संख्या बनाने हेतु इस सारणी के प्रयोग को समझने के लिए कुछ उदाहरण लेते हैं।

उदाहरण—

आख्या : Ethnopsychology of German People

वर्ग संख्या : 155.843 1

विश्लेषण :

155.8	=	Ethnopsychology
155.84	=	Ethnopsychology of Specific and Racial Groups
		(Add "Racial, Ethnic, National Groups." notation 01-99 from Table 5 to base number 155.84)
-31 (Table 5)	=	German

संश्लेषण :

155.84 + -31 = 155.843 1

इसी भाँति :

आख्या : Ethnopsychology of Jews

वर्ग संख्या : 155.849 24

विश्लेषण :

155.8	=	Ethnopsychology
155.84	=	Ethnopsychology of Specific and Racial Groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 155.84)
-924 (Table 5)	=	Jews

संश्लेषण :

155.84 + -924 = 155.849 24

साथ ही 305.8 के अन्तर्गत जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रीय समूहों के वर्गीकरण के लिए आधार अंक 305.8 में सारणी 5 से अंकन जोड़ने का निर्देश मिलता है।

आख्या : A Social Stratification of German People

वर्ग संख्या : 305.831

विश्लेषण :

305.8	=	Social Stratification of Racial, Ethnic, National Groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table5 to base number 305.8)
-31 (Table 5)	=	German

संश्लेषण :

305.8 + -31 = 305.831

362.797 : Social Welfare Services to Young People of Various Specific Racial, Ethnic, National Groups (विभिन्न विशिष्ट जातीय, प्रजातीय, राष्ट्रीय समूहों के युवा वर्ग के लिए समाज कल्याण सेवाएँ) के अन्तर्गत सारणी 5 से अंकन जोड़ने की बात कही गई है। उदाहरण के लिए—

आख्या : Social Welfare Services to Indians

वर्ग संख्या : 362.797 914 11

विश्लेषण :

362.797	=	Young People of Various Specific Racial, Ethnic, National Groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 362.797)
-91411 (Table 5)	=	Indians

NOTES

NOTES

संश्लेषण :

362.797 + -91411 = 362.797 914 11

Ethnic Cookery 641.592 के अन्तर्गत सारणी 5 से अंकन जोड़ने की बात कही गई है।

आख्या : Australian Cookery

वर्ग संख्या : 641.592 24

विश्लेषण :

641.592	=	Ethnic Cookery (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 03-99 from Table 5 to base number 641.592)
-24 (Table 5)	=	Australian

संश्लेषण :

641.592 + -24 = 641.592 24

आख्या : Punjabi Culinary Art

वर्ग संख्या : 641.592 914 2

विश्लेषण :

641.592	=	Ethnic Cookery (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 03-99 from Table 5 to base number 641.592)

संश्लेषण :

641.592 + -9142 = 641.592 914 2

9.2 सारणी 2 से भौगोलिक-क्षेत्र के अंकन द्वारा सारणी 5 का विस्तार :

जैसा कि सारणी 5 (पृ. सं. 408) के अन्तर्गत निर्देश है, इस सारणी की प्रत्येक संख्या का पुन: विस्तार सारणी 2 के अंकन के द्वारा हो सकता है। भौगोलिक-क्षेत्र सारणी 2 से सारणी 5 का यह योग (जोड़ने का कार्य) दो प्रकार से हो सकता है।

(1) शून्य (0) के द्वारा। इस स्थिति में शून्य एक पक्ष संकेतक के रूप में कार्य करेगा। सारणी 5 के किसी भी अंक को, शून्य को पक्ष संकेतक के रूप में प्रयोग करके, सारणी 2 अर्थात् भौगोलिक-क्षेत्र अंकन को जोड़कर विस्तारित किया जा सकता है। ऐसा करने के लिए किसी भी निर्देश की आवश्यकता नहीं है।

(2) कभी-कभी भौगोलिक-क्षेत्र सारणी की किसी संख्या द्वारा सारणी 5 की किसी संख्या को प्रत्यक्ष रूप से विभक्त करने के लिए निर्देश दिये गये हैं। इस प्रकार के उदाहणों में पक्ष-संकेतक के रूप में शून्य (0) के उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

स्व-प्रगति परीक्षण

3. मानक उदयविभाजन के अभिलक्षण बताइये।

.....

.....

.....

.....

NOTES

9.3 शून्य का पक्ष-संकेतक की भाँति प्रयोग कर सारणी 5 का विस्तार :

सम्बन्धित अनुदेश है : "सिवाय उस स्थान के जहाँ अनुसूची निर्दिष्ट करती है, और जब तक कि यह अनुपयोगी न ही, इस सारणी के अंकन के साथ शून्य (0) जोड़ दें, तत्पश्चात् सारणी 2 से "भौगोलक-क्षेत्र" अंकन 1-9 को जोड़ें।"

("Except where the schedules instruct otherwise, and unless it is redundant, and 0 to the number from this table and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2")

उदाहरण के लिए—

Germans in Brazil

-31 (Table 5) + 0 + -81 (Table 2) = -31081

अब इसी प्रकार के कुछ और उदाहरण देखते हैं—

आख्या : A Study of the Social Stratification of Jews in Germany

वर्ग संख्या : 305.892 404 3

विश्लेषण :

305.8	=	Social Stratification of racial, ethnic, national groups
		(Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 305.8....add 0 and to the result and "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-924 (Table 5)	=	Jews
0	=	Facet Indicator
-43 (Table 2)	=	Germany

संश्लेषण :

305.8 + -924 + 0 + -43 = 305.892 404 3

आख्या : A Social Study of Germain Nationals in the USA

वर्ग संख्या : 305.831 073

विश्लेषण :

305.8	=	Social Stratification of Racial, Ethnic, national groups
		(Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 305.8 .... add 0 and to the result "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-31 (Table 5)	=	Germans
0	=	Facet Indicator
-73 (Table 2)	=	United States

संश्लेषण :

305.8 + -31 + 0 + -73 = 305.831 073

NOTES

आख्या : A Social Study of Nepalis in India

वर्ग संख्या : 305.891 495 054

विश्लेषण :

305.8	=	Social Stratification of racial, ethnic, national groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 305.8... add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-91495 (Table 5)	=	Nepalis
0	=	Facet Indicator
-54 (Table 2)	=	India

संश्लेषण :

305.8 + -91495 + -54 = 305.891 495 054

आख्या : Relation of state of Negroes (Africans) in USA : a political study

वर्ग संख्या : 323.119 607 3

विश्लेषण :

323	=	Relation of state to its residents
323.11	=	Recial, ethnic, national aggregates (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 2-9 from Table 5 to base number 323.11... add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-96 (Table 5)	=	Negroes
0	=	Facet Indicator
-73 (Table 2)	=	United States

संश्लेषण :

323.11 + -96 + 0 + -73 = 323.119 607 3

आख्या : Education of Bengali Children in UK

वर्ग संख्या : 371.979 144.041

विश्लेषण :

371.97 origion	=	Students Exceptional because of racial, ethnic, national
		Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number 371.97 then add 0 and to the result add "Areas" notation 1-9 from Table 2)
-9144 (Table 5)	=	Bengali
0	=	Facet Indicator
-41 (Table 2)	=	UK

संश्लेषण :

371.97 + -9144 + 0 + -41 = 371.979 144 041

9.4 मानक उपविभाजन 089 द्वारा सारणी 5 का प्रयोग :

डी.डी.सी. के 19वें संस्करण में सारणी 5 के प्रयोग को सर्वव्यापी बना दिया गया है। इस मानक उपविभाजन (-089) के द्वारा अनुसूचियों की किसी भी वर्ग संख्या को सारणी 5 का प्रयोग कर विस्तृत किया जा सकता है–

-089 Treatment among specific, racial, ethnic, national groups

यहाँ हमें आधार संख्या -089 में सारणी 5 के 01-99 अंकन को जोड़ने हेतु निर्देश दिया गया है।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Development of Hockey among Punjabi people

वर्ग संख्या : 791.530 899 144

विश्लेषण :

791.53	=	Puppetry
-089 (Table 1)	=	Treatment among specific racial, ethnic, nationa l groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number -089)
-9144 (Table 5)	=	Bengalis

संश्लेषण :

791.53 + -089 + -9144 = 791.530 899 144

आख्या : Punjabi Ahmadiyyas—a religion derived from Islam

वर्ग संख्या : 297.860 899 142

विश्लेषण :

297.86	=	Ahmadiyya Movement
-089 (Table 1)	=	Treatment Among Specific Racial, Ethnic, National Groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number -089)
-9142 (Table 5)	=	Punjabis

संश्लेषण :

297.86 + -089 + -9142 = 297.860 899 142

आख्या : Punjabi Ahmadiyyas in England

वर्ग संख्या : 297.860 899 142 042

विश्लेषण :

297.86	=	Ahmadiyya Movement
-089 (Table 1)	=	Treatment among specific racial, ethnic, national groups (Add "Racial, Ethnic, National Groups" notation 01-99 from Table 5 to base number -089)
-9142 (Table 5)	=	Punjabis
0	=	Facet Indicator
-42 (Table 2)	=	England

संश्लेषण :

297.86 + -089 + 9142 + 0 + -42 = 297.860 899 142 042

यहाँ ध्यातव्य है कि सारणी 5 का अंकन - 914 2, सारणी 2 से शून्य (0) को पक्ष संकेतक के रूप में प्रयोग करके विभक्त किया गया है।

10. सारणी 7 का प्रयोग : जन :

इस सारणी में व्यक्तियों को उनकी विशिष्ट आजीविका तथा अन्य दूसरी विशेषताओं जैसे उनके सामाजिक, आर्थिक एवं भौतिक स्तर के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है। सारणी 7 का प्रयोग दो प्रकार से होता है— अनुसूचियों में दिये गये निर्देशानुसार और मानक उपविभाजन -088 के द्वारा।

NOTES

10.1 निर्देश होने पर सारणी 7 का प्रयोग

390.4 Customs of Peope of Various Specific Occupations

यहाँ निर्देश या आदेशानुसार 390.4 के साथ हमें सारणी 7 का उपर्युक्त अंकन जोड़ना है।

उदाहरण—

आख्या : Customs of Lawyers

वर्ग संख्या : 390.434 4

विश्लेषण :

390.4	=	Customs of People of various Specific Occupations (Add "Persons" notation 09-99 from Table 7 to base number 390.4)
-344 (Table 7)	=	Lawyers

संश्लेषण :

390.4 + -344	=	390.434 4

आख्या : Customs of Surgeons

वर्ग संख्या : 390.461 7

विश्लेषण :

390.4	=	Customs of People of Various Specific Occupations (Add "Persons" notation 09-99 from Table 7 to base number 390.4)
-617 (Table 7)	=	Persons with surgical specialties

संश्लेषण :

390.4 + -617	=	390.461 7

आख्या : Customs of Military Personnels

वर्ग संख्या : 390.435 5

विश्लेषण :

390.4	=	Customs of People of Various Specific Occupations (Add "Persons" notation 09-99 from Table 7 to base number 390.4)
-355 (Table 7)	=	Military Personnel

संश्लेषण :

390.4 + -355	=	390.435 5

आख्या : Muslim Artists

वर्ग संख्या : 704.297 1

विश्लेषण :

704	=	Fine and Decorative Art
704.04 -.87	=	Treatment among other groups of specific kinds of persons (Add "Persons" notation 04-87 from Table 7 to base number 704)
-2971 (Table 7)	=	Muslims

संश्लेषण :

704 + -2971 = 704.297 1

स्व-प्रगति परीक्षण

NOTES

4. निम्नलिखित आख्याओं के लिए वर्ग संख्या का निर्माण करें।
   (a) Dictionary of science
   (b) Dictionary of mathematics.

.....
.....
.....
.....

10.2 मानक उपविभाजन 088 द्वारा सारणी 7 का प्रयोग :

मानक उपविभाजन-088 (सारणी 1) के अन्तर्गत यह अनुदेश दिया गया है कि यदि आवश्यकता पड़े तो सारणी 7 का प्रयोग कर इसका विस्तार किया जा सकता है।

उदाहरण—

आख्या : Cartoons drawn by school children

वर्ग संख्या : 741.508 805 4

विश्लेषण :

741.5	=	Cartoons
-088 (Table 1)	=	Treatment among groups of specific kinds of persons
		(Add "Persons" notation 04-99 from Table 7 to base number -088)
-054 (Table 7)	=	Children

संश्लेषण :

741.5 + -088 + -054= 741.508 805 4

आख्या : Contributions to music by blind persons

वर्ग संख्या : 780.880 816 1

विश्लेषण :

780	=	Music
-088 (Table 1)	=	Treatment among groups of specific kinds of persons
		(Add "Persons" notation 04-99 from Table 7 to base number -088)
-08161 (Table 7)	=	Blind Persons

संश्लेषण :

780 + -088 + -08161

78 + -088 + -08161 = 780.880 816 1

NOTES

11. सार-संक्षेप :

ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति के 19वें संस्करण के ग्रन्थ खण्ड 1 में 7 सारणियाँ दी गई हैं। इन सारणियों में से अन्तिम पाँच सारणियाँ प्रथम बार 1971 में 18वें संस्करण में सम्मिलित की गई। वे सारणियाँ विषयों के विभिन्न पक्षों के अंकन से सम्बन्धित हैं, अथवा हम यह भी कह सकते हैं कि अनुसूचियों की कुछ वर्ग संख्याओं की पूरक हैं। इन संख्याओं का प्रयोग कभी भी एकांकी रूप से नहीं होता है, वरन् इनका प्रयोग अनुसूचियों से प्राप्त संख्याओं के साथ जोड़कर किया जाता है; यदि ऐसा करने का अनुदेश दिया गया हो तो सारणी की एक संख्या का प्रयोग दूसरी संख्या का विस्तार करने के लिए भी किया जा सकता है। ये सारणियाँ अनुसूचियों की पूरक हैं। सारणी 2 से 7 तक में सूचीबद्ध संख्याएँ अनुदेशानुसार की विधि जैसे ग्रन्थसूची, विश्वकोश, इतिहास, दर्शन इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। ये सभी मानक उपविभाजन हैं। मानक उपविभाजन अनुसूचियों में परिगणित किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़े जा सकते हैं। इनकी पहचान यह है कि इन्हें शून्य के साथ जोड़ा जाता है, परन्तु कुछ मामलों में मानक उपविभाजन को कभी-कभी एक, दो और यहाँ तक कि तीन शून्यों के साथ भी जोड़ा जाता है। किसी मानक उपविभाजन को मुख्य वर्ग या विभाग के साथ जोड़ते समय रिक्त स्थान (कम से कम तीन अंक रखने के लिए) को भरने के लिए प्रयुक्त शून्यों को सामान्यतया हटा दिया जाता है जब तक कि ऐसा न करने का कोई अनुदेश दिया गया हो।

सारणी 2 राजनीतिक, भौगोलिक क्षेत्रों तथा विश्व जनसंख्या समूहों की सूची है। इसमें मुख्य विभाग राजनीतिक हैं। इस सारणी में परिगणित संख्याओं को वर्ग संख्या में सीधा, निर्देश के अनुसार अथवा मानक उपविभाजन के द्वारा जोड़ा जा सकता है। सारणी 3, साहित्य-विशेष के उपविभाजन, के दो भाग हैं—सारणी 3 तथा 3-A। सारणी 3 में साहित्य तथा साहित्य की विधा यथा कविता, नाटक, उपन्यास इत्यादि के मानक उपविभाजन सूचीबद्ध हैं। सारणी 3-A में विभिन्न प्रकरणों अथवा विषयों को सूचीबद्ध किया गया है। इनका प्रयोग मुख्यतया मुख्य वर्ग 800 : साहित्य में होता है। सारणी 3 का प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाता है। सारणी 4 : "भाषा- विशेष के उपविभाजन" में भाषा विज्ञान के विविध पक्षों, जैसे व्याकरण, शब्द-प्रयोग, स्वर शास्त्र इत्यादि को रखा गया है। इसका प्रयोग आवश्यकतानुसार केवल मुख्य वर्ग 400 के साथ ही किया जाता है। द्विवभाषिक शब्दकोशों में सारणी 4 तथा सारणी 6 का एक साथ प्रयोग होता है। सारणी 5 जातीय एवं प्रजातीय, राष्ट्रजन समूह से सम्बन्धित है तथा इसका प्रयोग या तो आवश्यकतानुसार अनुदेशों के आधार पर या मानक उपविभाजन 089 के द्वारा किया जाता है। इसका स्पष्ट प्रयोग इन जातीय और उपजातीय समूहों का, विषय के सम्बन्ध में, विशिष्टीकरण करने के लिए किया जाता है। सारणी 6 में विश्व की भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। इसका प्रयोग अनुदेशानुसार तब किया जाता है जब किसी विषय के भाषा-पक्ष का अथवा भाषा के आधार पर व्यक्तियों के समूह का विशिष्टीकरण करना हो। इसका प्रयोग सारणी 4 के साथ भी किया जाता है। सारणी 7 : "जन" में व्यक्तियों को सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के आधार पर रखा गया है। लेकिन इस सारणी का मुख्य भाग व्यक्तियों के व्यवसायों जैसे डॉक्टर, वकील, अर्थशास्त्री, इत्यादि से सम्बन्धित है। इसका प्रयोग या तो निर्देश के अनुसार या मानक उपविभाजन -088 के साथ किया जाता है।

इन सारणियों का प्रयोग डी.डी.सी. की व्यापकता तथा अंक-निर्माण क्षमता में वृद्धि करता है। इन सारणियों का, विशेषत: सारणी 3 से सारणी 4 तक का प्रयोग सूक्ष्म वर्गीकरण के लिए किया जाता है।

12. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. ये सारणियाँ ग्रन्थखण्ड-1 में दी गई हैं। सारणी 1 को सबसे पहले डी.डी.सी. के दूसरे संस्करण (1885) में प्रस्तुत किया गया था। सारणी 2 'भौगोलिक क्षेत्र' प्रथमत: 17वें संस्करण (1965) में सूचीबद्ध की गई, और अगली पाँच सारणियाँ पहली बार 18वें संस्करण (1971) में अस्तित्व में आई। ये सहायक सारणियाँ हैं। अर्थात् ये सारणियाँ अतिरिक्त या गौण सारणियाँ हैं जिनकी आवश्यकता केवल सूक्ष्म या गहन वर्गीकरण के लिए होती है। दूसरे शब्दों में ये अनुसूचियों की पूरक हैं। इनमें दी गई संख्याएँ कभी भी एकाकी या स्वतंत्र रूप से प्रयोग में नहीं ली जातीं। छोटे पुस्तकालयों में, जहाँ व्यापक वर्ग संख्या देना

NOTES

पर्याप्त है, इन सारणियों का प्रयोग नहीं किया जाता। अत: इनका प्रयोग वैकल्पिक है। ग्रन्थखण्ड-1 में दी गई सात सारणियाँ निम्नलिखित हैं-

Number	Name	Abbreviation	Pages in Vol. 1
Table 1	Standard Subdivisions	s. s. -	1-13
Table 2	Areas	area-	14-386
Table 3	Subdivisions of Individual Literatures	lit. sub.-	387-403
Table 4	Subdivisions of Individual Languages	lang. sub.-	404-407
Table 5	Racial,Ethnic, National Groups	r.c.n.-	408-417
Table 6	Languages	lan -	418-431
Table 7	Persons	pers.-	432-452

2. यह बताया जा चुका है कि सारणी के अंकों का प्रयोग एकाकी या स्वतंत्र रूप से नहीं होता है। इनका प्रयोग आवश्यकतानुसार अनुसूची में दिये अंक के साथ जोड़ कर किया जाता है। जैसा कि पहले कहा जा चुक है, अनुसूची के किसी अंक को, विशिष्ट निर्देशों के आधार पर, पुन: विस्तारित किया जा सकता है। इन निर्देशों में यह बताया जाता है कि किसके साथ जोड़ना है, कहाँ से जोड़ना है इत्यादि। लेकिन सारणी 1 : मानक उपविभाजन से किसी भी अंक को बिना किसी निर्देश के भी जोड़ा जा सकता है। आवश्यकता होने पर सारणी 2 के अंकन को ss-09 के द्वारा, साारणी 5 के अंकन को ss-089 के द्वारा तथा सारणी 7 के अंकन को ss-088 द्वारा जोड़ा जा सकता है। अन्यथा, सारणी 2 से 7 तक सभी सारणियों के अंकन को अनुसूचियों में दिये गये निर्देशों की सहायता से सीधे ही जोड़ा जा सकता है। सारणियों के प्रयोग ने ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति को अधिक संश्लेषणात्मक बना दिया है तथा इनके द्वारा वर्ग संख्या निर्माण का कार्य भी आसान हो गया है।

3. **मानक उपविभाजनों के अभिलक्षण :**

(अ) ये किसी विषय के अविषयक (non-subject) आवर्ती पक्ष होते हैं।

(ब) ये सदा शून्य से प्रारम्भ होते हैं, जैसे— -01 दर्शन तथा सिद्धान्त; -05 क्रमिक प्रकाशन; -09 इतिहास।

(स) ये स्वयं में वर्ग संख्या नहीं बन सकते, बल्कि वर्ग संख्या में जोड़े जाते हैं।

4. **(अ) आख्या :** Dictionary of Science

वर्ग संख्या : 503

विश्लेषण :

503 = Science

-03 (Table 1) = Dictionary

संश्लेषण :

500 + -03

5 + -03 = 503

(ब) आख्या : Dictionary of Mathematics

वर्ग संख्या : 510.3

विश्लेषण :

510 = Mathematics

NOTES

-03 (Table 1) = Dictionary

संश्लेषण :

510 + -03 ,

51 + -03 = 510.3

13. मुख्य शब्द

अनुसूचियाँ (Schedules) : अनुसूची का अर्थ है सूची। वर्गीकरण के विशेष संदर्भ में अनुसूची का अर्थ है ऐसी दीर्घ सूची जिसमें वर्गों को उनके अंकन के साथ सुसंबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है। ड्यूई डेसिमल क्लासिफिकेशन पद्धति के ग्रंथखंड 2 को अनुसूची के नाम से जाना जाता है।

अविषयी पक्ष (Non-Subject Aspects) : किसी प्रलेख में वर्णित वे प्रश्न जो दृष्टिकोण या प्रलेख के आन्तरिक स्वरूप को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए इतिहास, दर्शन इत्यादि दृष्टिकोण हैं, तथा शब्दकोश आन्तरिक रूप हैं इनकी आवश्यकता केवल पुस्तकालय वर्गीकरण में होती है, ज्ञान वर्गीकरण में नहीं।

मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) : ये किसी विषय के अविषयी पक्ष होते हैं जो विभिन्न विषयों में प्रकट हो सकते हैं। जैसे– ग्रन्थसूची, क्रमिक प्रकाशन, सम्मेलन, दर्शन, इतिहास, शब्दकोश इत्यादि। इनके लिए प्रयुक्त नाम, पद तथा अंकन सदैव एक से रहते हैं चाहे विषय कोई भी हो। इसलिए इनका नाम मानक उपविभाजन है। इन्हें सारणी 1 (ग्रंथखंड 1) में सूचीबद्ध किया गया है।

सारणियाँ (Tables) : ये एक प्रलेख के सहायक तथा अन–अपरिहार्य पक्षों की सूचियाँ हैं। डी डी सी के 19वें संस्करण में सात सारणियाँ (सारणी 1 से सारणी 7) दी गई हैं। डी डी सी के 19वें संस्करण के ग्रंथखंड 1 में इन्हें सूचीबद्ध किया गया है।

14. अभ्यास-प्रश्न

(1) सारणियों की सहायता से वर्ग संख्या निर्माण की विधि पर प्रकाश डालिए।

(2) सारणी 2 के भौगोलिक क्षेत्रों की संख्या कैसे जोड़ी जाती है ?

(3) साहित्य विशेष के उपविभाजन हेतु सारणी 3 के प्रयोग का वर्णन कीजिए।

(4) द्विभाषिक शब्द कोषों का वर्गीकरण कैसे किया जाता है ? स्पष्ट कीजिए।

(5) सारणी 5 के विस्तार से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

15. ग्रन्थ–सूची

- Batty, C.D. (1981). Introduction to the Nineteenth Edition of Dewey Decimal Classification. London : Forest Press.
- Comoromi, John P. [et al]. (1982). Manual for the Use of the Dewey Decimal Classification, Edition 19. Albany : Forest Press.
- Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3 Vols. 19th ed. Albany : Forest Press.

प्रायोगिक वर्गीकरण

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. सरल संश्लेषण
4. बहुसंश्लेषण
   - 4.1 सामाजिक विज्ञानों से उदाहरण
   - 4.2 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से उदाहरण
   - 4.3 मानविकी से उदाहरण
5. अग्रता-क्रम
   - 5.1 अग्रता-सारणी
   - 5.2 अग्रता-क्रम निर्देश
6. संख्याओं की प्राथमिकता निर्धारित करने हेतु अन्य उपाय
   - 6.1 वर्ग संख्या में शून्यों की संख्या द्वारा
   - 6.2 अमूर्त से अधिक मूर्त को वरीयता देना
7. मानक उपविभाजनों (सारणी 1) के लिए अग्रता-सारणी
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

यह अध्याय मिश्र एवं जटिल वर्ग संख्याओं के निर्माण के लिए बहुसंश्लेषण (Multiple Synthesis) का प्रयोग करने में आपकी सहायता करेगा। जिसमें कि एक ही आधार के लिए जोड़ने के निर्देशों का बारम्बार उपयोग किया जाता है। इसके साथ ही, उस परिस्थिति में आप अधिक उपर्युक्त या विशिष्ट संख्या का चयन करना सीखेंगे जहाँ अनुसूची में संश्लेषण के बारे में नहीं कहा गया है। यह अध्याय अनुसूचियों में कुछ प्रविष्टियों से जुड़ी हुई अग्रता-सारणियों (Precedence Tables) से सम्बन्धित है।

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप—

- बहुसंश्लेषण युक्त विषयों की वर्ग संख्या निर्मित करने में निपुण होंगे; तथा
- दो वर्ग संख्याओं के बीच चुनाव करने हेतु उग्रता-सारणियों एवं निर्देशों की व्याख्या कर सकेंगे तथा उनका प्रयोग करना जान सकेंगे।

2. परिचय :

आपको इस खण्ड के अध्याय 5 में संख्याओं के संश्लेषण की प्रक्रिया से तथा अध्याय 6 में सात सारणियों के प्रयोग से परिचित करा दिया गया है। यह अध्याय बहुसंश्लेषण की प्रक्रिया से सम्बन्धित है जिसकी आवश्यकता अत्यन्त जटिल विषयों के गहन वर्गीकरण में होती है। बहुसंश्लेषण को एक से अधिक "जोड़ने के" निर्देशों का प्रयोग करके संख्या निर्माण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। बहुसंश्लेषण के प्रावधान डी.डी.सी. के प्रत्येक संस्करण के साथ बढ़ते जा रहे हैं, यद्यपि डी.डी.सी. में "बहुसंश्लेषण" पद का प्रयोग नहीं हुआ है।

जैसा कि बताया जा चुका है, सरल संश्लेषण के सम्बन्ध में मूलभूत बिन्दु सही आधार संख्या को पहचानना है। सही आधार संख्या का चयन इस बात पर निर्भर करेगा कि आपको डी.डी.सी. की संरचना की कितनी जानकारी है और इस बात पर भी निर्भर करेगा कि किसी विषय के उन पक्षों का आपको कितना ज्ञान है जो बुनियादी या आधार रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इसके लिए एक जटिल विषय की आधार संख्या को पहचानने में कुशल होने के अनुभव की भी आवश्यकता होगी। रंगनाथन के पक्ष परिसूत्र (PMEST) से भी आपको बहुत सहायता मिल सकती है। एक आधार वर्ग में यदि दो पहलुओं में से एक पहलू मूर्त (Conrete) तथा दूसरा अमूर्त (Abstract) है तो सामान्यत: मूर्त पक्ष को पुन: संश्लेषण के लिए आधार संख्या के रूप में चुना जायेगा। मूल संख्या ही आधार है। अनुसूचियों में आधार संख्या को पहचानने के लिए पर्याप्त मार्गदर्शन उपलब्ध हैं। अनुसूचियों में आधार संख्याएँ सदैव "..... में जोड़िए" निर्देशों से युक्त होती हैं। बहुसंश्लेषण की प्रक्रिया में संख्याएँ के घटकों (Components) को खोजने के लिए हमें अनुसूची में पीछे की तरफ और आगे की तरफ कुछ जाना पड़ता है ताकि उन घटकों को चुनी गई आधार संख्या (Base Number) के साथ जोड़ा जा सके।

3. सरल संश्लेषण :

आधार संख्या में अनुसूची से पूर्ण या आंशिक संख्याएँ केवल निर्देशों के होने पर ही जोड़ी जा सकती हैं। जहाँ भी "..... में जोड़िए" के निर्देश दिये गये हैं, उनके साथ उदाहरण भी अवश्य ही दिये गये हैं। उदाहरण में दी गई पूर्व-निर्मित संख्या के आधार पर आप सम्बन्धित विषय के लिए संख्याएँ जोड़कर वर्ग संख्या निर्मित कर सकते हैं। अनुसूची में इस प्रकार की आधार संख्या बनाने के लिए स्थान-स्थान पर मार्गदर्शन मिलता है। आइये, हम कुछ उन आख्याओं को लेते हैं जिनके लिए आधार संख्या अनुसूचियों में दी गई हैं।

अब हम अनुसूचियां में दिये गये विभिन्न चरणों का विश्लेषण इस निर्मित उदाहरण के आधार पर करेंगे।

उदाहरण—

आख्या : Administration of Secondary School Libraries

वर्ग संख्या : 025.197 822 3

विश्लेषण :

025.19	=	Administration of Specific types of Libraries
		(Add to base number 025.19 the number following 02 in 026-027)
027.822 3	=	Secondary School Libraries

संश्लेषण :

025.19 + 027.822 3

025.19 + 7.822 3 = 025.197 822 3

4. बहुसंश्लेषण :

उपर्युक्त उदाहरण सरल संश्लेषण (Simple Synthesis) का था। अब हम ऐसे उदाहरण लेते हैं जिनमें दोहरे संश्लेषण (Double Synthesis) का प्रयोग किया गया है—

उदाहरण—

आख्या : Administration of Law Libraries

वर्ग संख्या : 025.196 34

विश्लेषण :

025.19	=	Administration of specific types of libraries
		(Add to base number 025.19 the numbers following 02 in 026-027)
026	=	Special Library
340	=	Law

026 + 340

026.34	=	Law Library

(Now going back to 025.19 we are to add to this base number the number following 02 in 026.34)

संश्लेषण :

025.19 + 026.34

025.19 + 6.34 = 025.196 34

4.1 सामाजिक विज्ञानों से उदाहरण

आख्या : International Law for Trade in Tobacco

वर्ग संख्या : 341.754 713 71

विश्लेषण :

341	=	International Law
341.754 7	=	International Law for trade in specific commodities
		(Add to base number 341.754 7 the numbers following 380.14 in 380.141-380.145)
380.141	=	Commerce in Products of agriculture
		For specific number of Tobacco there is an instruction under 380.141 which says :

NOTES

NOTES

(Add to base number 380.141 the number following 63 in 633-638)

633.71 = Tobacco

We will add the number following 63 in 633.71, i.e., 371 to the base number 380.141

संश्लेषण :

380.141 + 633.71

380.141 + 3.71 = 380.141 371

This is the number for Tobacco Trade

Now again going back to original base 341.754 7 where we are to add to this number the number following 380.14 in 380.141 371.

Now adding this number to 341.754 7 we get :

341.754 7 + 380.141371

341.754 + 1371 = 341.754 713 71

Repeating the process :

341.754 7 (Base Number) + 1 (From 380.141) + 371 (From 633.71)

The number for International Law for Trade in Tobacco is 341.754 713 71

आख्या : Wages of Women in the Textite Industry

वर्ग संख्या : 331.428 77

यह अर्थशास्त्र का एक विषय है।

विश्लेषण :

331.4 = Women Workers

331.41-.42 = Secondary aspects of employment of women

(Now, there is an instruction to add to the base number 331.4 the numbers following 331 in 331.1-331.2

331.28 = Wages in Specific Industries...

संश्लेषण :

Thus, the wages of women in (manufacturing) industry is :

331.4 + 331.28

331.4 + 28 = 331.428

विश्लेषण :

331.282-.289 = Extractive, manufacturing, construction

(Add to the base number 331.28 the numbers following 6 in 620-690)

(Now 331.28 is further extended by the numbers following 6 in 620-690)

677 = Textile

We will add to base number 331.28 the number following 6 in 677.

संश्लेषण :

331.28 + 677

331.28 + 77 = 331.287 7

Hence, the number for wages of women in the textile industry will be :

331.4 = Women Labour

28 from 331.28 = Wages

77 from 677 = Textile Industry

संश्लेषण :

331.4 + 331.28 + 677

331.4 + 28 + 77 = 331.428 77

आख्या : Foreign Ministry of the Government of India

वर्ग संख्या : 354.540 61

विश्लेषण :

354 = Public international organization and specific central governments other than those of United States

354.3-.9 = Specific central governments other than those of United States

(Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 354 then also add further as the table provided under 354.3-.9)

-54 (Table 2) = India

06 = Specific executive department and ministries of cabinet rank

(Special Table provided under 354.3-.9)

(Under 06 there is an instruction Add to 06 the number following 351.0 in 351.01-351.08)

351.01 = Foreign Ministry

संश्लेषण :

354 + -54 + 06 + 351.01

354 + -54 + 06 + 1 = 354.540 61

आख्या : Home Ministry of the Indian Government

वर्ग संख्या : 354.540 63.

विश्लेषण :

354 = Public International Organizations and specific central governments other than those of United States

354.3-.9 = Specific central government other than those of United States

(Add "Areas" notation 3-9 from Table 2 to base number 354 then also and further as the table provided under 354.3-.9)

NOTES

NOTES

-54 (Table 2) = India

06 = Specific executive departments and ministries of cabinet rank

(Special Table provided under 354.3-.9)

(Under 06 there is an instruction Add to 06 the number following 351.0 in 351.01-351.08)

351.03 = Home affairs departments

संश्लेषण :

354 + 54 + 06 + 351.03

354 + -54 + 06 + 3 = 354.540 63

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. सही आधार संख्या चयन किन बातों पर निर्भर है?

.....

.....

.....

.....

4.2 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से उदाहरण

आख्या : Atomic Structure of Uranium

वर्ग संख्या : 546.431 44

विश्लेषण :

546.431 = *Uranium

(Add as instructed under 546)

4 = Theoretical Chemistry

(Listed under 546)

The digit 4 is further amplified.

(Add to 4 th numbers following 541.2 in 541.22-541.28)

541.24 = Atomic Structure

4 + 541.24

4 + 4 = 44

संश्लेषण :

546.431 + 4 + 541.24

546.431 + 4 + 4 = 546.431 44

आख्या : Radiochemistry of Uranium

वर्ग संख्या : 546.431 58

विश्लेषण :

546.431 = *Uranium

(Add as instructed under 546)

5 = Physical Chemistry

(Listed under 546)

The digit 5 is further amplified.

(Add to 5 the number following 541.3 in 541.34-541.39)

541.38 = Radiochemistry

5 + 541.38

5 + 8 = 58

संश्लेषण :

546.431 + 5 + 541.38

546.431 + 5 + 8 = 546.431 58

आख्या : Anatomy of Horses

वर्ग संख्या : 636.108 91

विश्लेषण :

636.1 = Horses

636.101-.108 = General Principles

(Add to the base number 636.10 the numbers following 636.01-636.08)

636.089 = Veterinary Sciences/Medicine

(Anatomy is a topic of veterinary medicine)

(Add to base number 636.089 the number following 61 in 610-619)

611 (Vol. 2, p. 828) = Anatomy

संश्लेषण :

636.10 + 636.089 + 611

636.10 + 89 + 1 = 636.108 91

आख्या : Monkeys as pests of apple orchards

वर्ग संख्या : 634.119 698 2

विश्लेषण :

634.11 = *Apples

(Add as instructed under 633-635)

9 = Pests

(Listed under 633-635 with an instruction)

(Add to 9 the numbers following 632 in 632.1-632.9)

632.6 = Animal Pests

(Add to base number 632.6 the numbers following 59 in 592-599)

599.82 = Monkey

संश्लेषण :

634.11 + 9 + 632.6 + 599.82

634.11 + 9 + 6 + 9.82 = 634.119 698 2

आख्या : Rats as wheat pests

वर्ग संख्या : 633.119 693 233

NOTES

NOTES

विश्लेषण :

633.11	=	*What
		(Add as instructed under 633-635)
9	=	Pests
		(Listed under 633-635 with an Instruction)
		(Add to 9 the numbers following 632 in 632.1-632.9)
632.6	=	Animal Pests
		(Add to base number 632.6 the numbers following 59 in 592-599)
599.323 3	=	Rats

संश्लेषण :

633.11 + 9 + 632.6 + 599.323 3

633.11 + 9 + 6 + 9.323 3 = 633.119 693 233

आख्या : Anatomy of the lungs of horses

वर्ग संख्या : 636.108 912 4

विश्लेषण :

636.1	=	Horses
636.101-.108	=	General Principles
		(Add to the base number 636.10 the numbers following 636.0 in 636.01-636.08)
636.089	=	Veterinary Sciences/Medicine
		(Anatomy is a topic of veterinary medicine)
		(Add to base number 636.089 the numbers following 61 in 610-619)
611.24	=	Anatomy to Lungs

संश्लेषण :

636.10 + 636.089 + 611.24

636.10 + 89 + 1.24 = 636.108 912 4

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. बहु संश्लेषण का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित आख्या को वर्गीकृत कीजिए।

Wages of women in the textile industry

.....

.....

.....

.....

7.3.3 मानविकी से उदाहरण

आख्या : Photography of Hindu Religious Festivals

वर्ग संख्या : 778.989 453 6

विश्लेषण :

770 = Photography

778.9 = Photography of Specific Subjects

(Add to the base number 778.9 the numbers following 704.94 in 704.942-704.949)

704.948 = Religion and religious symbols

704.948 9 = Other Religious

(Add to base number 704.948 9 the numbers following 29 in 292-299)

294.5 = Hindu Religion

But in this example we need a number for Hindu Religious Festivals.

294.51-.53 = Relationship, doctrines, public worship

(Add to base number 294.5 the numbers following 291 in 291.1-291.3)

291.36 = Religious Festivals

So, we will add 36 number following 291

294.5 + 291.36

294.5 + 36 = 294.536

294.536 = Hindi Religious Festivals

Now we will again go back to 704.9489 to add the number following 29 in 294.536

704.948 9 + 294.536

704.948 9 + 4.536 = 704.948 945 36

704.948 945 36 = Art Hindu Religious Festivals

Now we will again go back to 778.9

Here we are told to add to number following 704.94 in 704.948 945 36

संश्लेषण :

778.9 + 704.948 945 36

778.9 + 8.945 36 = 778.989 453 6

778.9	89	45	36	= Photography of Hindu religious festivals
↓	↓	↓	↓	
Photography of Specific Subjects	Other religions form	Hinduism form	Festival forms	
↓	↓	↓		
704.98 89	29 4.5	291. 36		

NOTES

NOTES

अन्त में यह कहा जा सकता है कि बहुसंश्लेषण साधारणत: पुनर्संश्लेषण है, जहाँ हम "में जोड़िए" निर्देश का एक से अधिक बार प्रयोग करते है। यदि आप सही आधार संख्या चुनते हैं और तब "में जोड़िए" के निर्देशों का सावधानी से प्रयोग करते हैं तो थोड़ी सी घुमावदार प्रक्रिया अपनाने में कोई डर या परेशानी नहीं है। वास्तव में पुनर्संश्लेषण द्वारा वर्ग संख्या बनाना आनन्द एवं आत्मविश्वास प्रदान करता है।

5. अग्रता-क्रम :

संश्लेषण, बहुसंश्लेषण तथा बहुविषयी विषयों की गहन परिगणना के बावजूद भी प्रत्येक विषय के लिए सह-विस्तृत वर्ग संख्या (विषय के प्रत्येक पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाली वर्ग संख्या) बनाना सदा सम्भव नहीं होता। उदाहरण के लिए, हम एक साधारण आख्या "Classification in Public Libraries" को लें। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति में पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए वर्ग संख्या 025.42 दी गई है और सार्वजनिक पुस्तकालय (Public Libraries) के लिए निर्धारित वर्ग संख्या 027.4 है। दोनों के लिए पृथक् संख्याएँ दी गई हैं परन्तु इन्हें परस्पर जोड़ने के लिए कोई प्रावधान नहीं है। इस समस्या का एक कारण यह है कि डी.डी.सी. अभी तक एक प्रकार से परिगणनात्मक (Enumerative) वर्गीकरण ही है जिसका उद्देश्य प्रलेखों को विस्तृत रूप से समूहबद्ध करना है। यह शैल्फ/फलक वर्गीकरण है, प्रलेखों के सम्पूर्ण विषय विश्लेषण (Subject Analysis) की विधि नहीं है।

जो भी हो, पुस्तकालयों में एक प्रायोगिक वर्गीकरणकर्ता के रूप में आप प्राय: इस प्रकार की परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना करेंगे। इस प्रकार की परिस्थितियों में हमें एक पक्ष को रखना होगा तथा दूसरे को नजरअन्दाज करना होगा। अब समस्या यह आती है कि किस पक्ष को रखा जाये तथा किसे छोड़ा जाये।

इन परिस्थितियों में निर्णय लेना अनेक घटकों पर निर्भर करता है। पहला, लेखक द्वारा अधिक जोर दिये गये पक्ष को सर्वप्रथम ध्यान में रखना चाहिए। यह पुस्तकालय नीति पर भी निर्भर कर सकता है। यदि यह समाधान उपर्युक्त नहीं हो तो सामान्य (और स्व-विवेक) नियम यह है कि दो पक्षों में से अधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष को चुना जाये, यद्यपि दो पक्षों में से अधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष को चुनना सरल कार्य नहीं है। इन परिस्थितियों में सहायता हेतु डी.डी.सी. की सम्पादकीय प्रस्तावना के अन्तर्गत दिशा-निर्देश दिये गये हैं। इसमें विभिन्न प्रविष्टियों के अन्तर्गत अग्रता-सारणी अथवा अग्रता-निर्देश दिये गये हैं और दो तथा दो से अधिक विषय पक्षों की विशिष्टता की तुलना हेतु कुछ दूसरे सामान्य नियम दिये गये हैं।

5.1 अग्रता-सारणी :

अग्रता-सारणी (Table of Precedence) किसी विषय के विभिन्न पहलुओं की एक सारणीबद्ध सूची है जो एक पहलू की दूसरे पहलू के ऊपर प्राथमिकता निर्धारित करती है। यह वरीयता या अग्रता एक निर्देश रूप में भी प्रतिपादित की जा सकती है। अग्रता सारणी को अधिकृत रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है : "एक से अधिक पहलुओं के आधार पर अनुसूचियों में विभाजित विषय के अग्रता क्रम को निर्देशित करने वाली सारणी अग्रता-सारणी कहलाती है।" इसका उदाहरण निम्नलिखित हैं—

155.42-155.45 बाल मनोविज्ञान (Child Psychology by Specific Groupings (Vol. 2, p. 175) को विभिन्न विशेष समूहीकरण के द्वारा एक निर्देश के साथ उग्रता-सारणी के रूप में दिया गया है। जैसे कि Pre-school boys 155.423 (not 155.432)। नीचे दी गई अग्रता-सारणी को देखें—

Exceptional Children	155.45
By Class, type, Relationships	155.44
By age groups	155.42
By sex	155.43

आइये, अब एक अन्य उदाहरण देखें—

आख्या : Psychology of Exceptional Sibling Children

वर्ग संख्या : 155.45

NOTES

यह जटिल विषय निम्नांकित व्यवहार्य घटकों (Viable Components) में विखण्डित किया जा सकता है—

155.43 = Psychology of Sibling Children

155.45 = Psychology of Exceptional Children

Preferred Class Number will be :

155.45

चूँकि ऊपर दी गई अग्रता-सारणी के अनुसार 155.45 अपवाद बालक (exceptional children) 155.44 या इसके व्युतक्रम (derivatives) घटकों से प्राथमिक है, अत: हमारी वरीयता वर्ग संख्या 155.45 होगी।

इसी प्रकार,

आख्या : Psychology of Pre-school girls

वर्ग संख्या : 155.423 not 155.433

नीचे एक अन्य अग्रता-सारणी दी गई है—

291.61-291.64 Religious leaders and their work (Vol. 2, p. 176)

291.63 = Divinely inspired persons

291.62 = Persons endowed with supernatural power

291.61 = Clergy and counselors

291.64 = Interpreters of religion

आख्या : 'Clergymen with supernatural power' के लिए

291.62 (not 291.61)

Divinely inspired religious writers के लिए

291.63 (not 291.64)

नीचे पुन:

362.79 (Problems of and welfare services to) other classes of young people (Vol. 2, p. 476)

अग्रता-सारणी एक निर्देश के साथ दी गई है—

"Observe the following table of precedence, e.g., adolescent male immigrants 362.799 (not 362.792 or 362.796)"

362.799 = Miscellaneous Classes

362.795 = Children

362.793 = Females

362.792 = Males

362.796 = Adolescents

362.797 = Young people of various specific racial, ethnic, national groups

आइये एक और उदाहरण देखते हैं—

'Welfare services to city youth males'

NOTES

यहाँ उपर्युक्त सारणी के अनुसार 'City Youth' जो कि विविध वर्ग (Miscellaneous Class) 362.799 में आता है, को "Males" 362.792 की अपेक्षा प्राथमिकता दी गई है। अत: उचित संख्या 362.799 होगा।

पृष्ठ संख्या 1125 (Vol. 2) पर, विशिष्ट प्रबन्धकीय क्रियाकलापों (Specific Management Activities) 658.401-658.409 के अन्तर्गत अग्रता-सारणी का एक अन्य उदाहरण निम्नलिखित है—

658.409 = Personal Aspect of Management

658.407 = Management of Executive Personnel

658.402 = Internal Organisation

658.406 = Managing Change

658.401 = Planning, Policy making, control

658.403 = Decision making and information management

658.408 = Social Responsibility of Management

658.404 = Project Management

उपर्युक्त सारणी का प्रयोग करने पर

Decision making and information management for internal organisation की वर्ग संख्या 658.402 होगी, न (not 658.403)

ऐसी सारणियों के अन्य उदाहरण अनुसूची से लिए जा सकते हैं।

5.2 अग्रता-क्रम निर्देश :

विषयों को अग्रता-क्रम में सारणीबद्ध रूप में दिये जाने के स्थान पर हमें अनुसूचियों में पहले या बाद में आने वाली संख्याओं का उपयोग करने के लिए निर्देश दिये गये हैं। इन्हें अग्रता-निर्देश (Precedence Notes) कहा जाता है और इनका उद्देश्य और प्रभाव अग्रता-क्रम सारणियों के समान ही होता है।

आइये दोनों प्रकार के कुछ उदाहरण लें।

अन्तिम संख्या का प्रयोग

उदाहरण के लिए "365 Penal Institutions" के अन्तर्गत निर्देश है :

"जब तक कोई अन्य निर्देश न हों, दो या दो से अधिक पक्षों वाले मिश्रित विषय के उपविभाजनों को इस अनुसूची के सबसे अन्त में आने वाले संख्या के अन्तर्गत वर्गीकृत करें"।

("Unless other instructions are given, class complex subjects with aspects in two or more subdivisions of this schedule in the number coming last in the schedule....")

उदाहरण—

Maximum security military prisons (camp)

365.48 (not 365.33)

Prison discipline for political prisoners

365.643 (not 365.45)

इसी प्रकार का निर्देश

395 Etiquette (manners) के नीचे

अनुसूचियों के सबसे अन्त में आने वाली वर्ग संख्या के प्रयोग करने के लिए दिया गया है।

उदाहरण—

Etiquettes for entertainments at weddings

395.3 (not 395.22)

Table manners for people of specific ages and sex

395.54 (not 395.1)

सारणी 7 जनवरी (Persons) 03-08 "Persons by various non-ccupational characteristics" में निर्देश दिया गया है : ("Unless other instructions are given class complex subjects with aspects in two or more subdivisions in this table in the number coming last in the table.....") "यदि कोई अन्य निर्देश नहीं हो तो दो या दो से अधिक पहलुओं वाले मिश्रित विषय के उपविभाजनों को इस तालिका के सबसे अन्त में आने वाली संख्या के अन्तर्गत वर्गीकृत करें।"

उदाहरण—

Upper class retired persons

-069 6 (not -062 1)

Upper class middle-aged persons

-062 1 (not -056 4)

उपर्युक्त आख्याओं को पूर्ण संख्या में प्रयोग करने पर :

Upper class middle-aged persons as artists

704.062 1 (not 704.056 4)

Upper class retired persons as artists

704.069 6 (not 704.062 1)

पूर्व संख्या का प्रयोग करना

दूसरी ओर डी.डी.सी. में ऐसे भी अवसर भी उपलब्ध हैं जब हमें इन परिस्थितियों में पूर्व संख्या का प्रयोग करने के लिए कहा जाता है।

उदाहरण—

331.3-.6 Labour Force by Personal Characteristics के अन्तर्गत निर्देश है : "Unless other instructions are given, class complex subjects with aspects in two or more sub-divisions of this schedule in the number coming first in schedule" ("यदि कोई दूसरे निर्देश नहीं दिये गये हैं तो दो या अधिक पक्षों वाले मिश्रित विषयों के उपविभाजनों को इस अनुसूची में पहले आने वाली संख्या के अन्तर्गत वर्गीकृत करें।")

Immigrant women labour

331.4 (not 331.62 or its subdivisions)

Middle-aged casual labour force

331.394 (not 331.544)

6. संख्याओं की प्राथमिकता निर्धारित करने हेतु अन्य उपाय :

जब किसी वर्ग के अन्तर्गत कोई स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया हो तब उस विषय की प्राथमिकता निर्धारित करने के लिए कुछ सामान्य या स्व-विवेकी नियम होते हैं। सम्पादक द्वारा अनुच्छेद 8.55 सम्पादकीय प्रस्तावना खण्ड में एतद्सम्बन्धी कुछ संकेत बिन्दु दिये गये हैं। (Vol. 1, pp. xlvii-xlix)

NOTES

6.1 वर्ग संख्या में शून्यों की संख्या द्वारा :

एक संख्या को दूसरे संख्या से अधिक वरीय मानने का एक रोचक संकेत दिया गया है। इस संकेत के अनुसार शून्य रहित वर्ग संख्या को शून्य सहित वर्ग संख्या से वरीय मान लिया जाता है; इसी प्रकार एक शून्य सहित वर्ग संख्या को दो शून्य सहित वर्ग संख्या पर वरीयता दी जाती है।

उदाहरण—

Social aspects of direct relief to young people
362.71 (not 362.704)
Manufacture of metallic outdoor furniture
684.18 (not 684.105)
Architecture of wooden ceilings
721.7 (not 721.044 8)
Planning and policy making in home affairs department
351.03 (not 351.007 2)

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. प्रत्येक विषय के लिए सही विस्तृत वर्ग संख्या बनाना सदा संभव क्यों नहीं होगा?

.....
.....
.....
.....

6.2 अमूर्त से अधिक मूर्त को वरीयता देना :

यदि कोई दिशा-निर्देश नहीं दिया गया हो, तो सम्पूर्ण को आंशिक से प्राथमिक मानिये; मूर्त को अमूर्त से अधिक वरीयता दीजिए; किसी वस्तु/द्रव्य को प्रक्रिया से महत्त्वपूर्ण मानिये, तथा प्रक्रिया को अभिकरण या अभिकर्ता से अधिक वरीयता दीजिये।

उदाहरण—

Curriculum for kindergarten
372.218 (not 372.19)
(Preferring concrete over the abstract) (अमूर्त से मूर्त को प्राथमिकता देते हुये)
Harvesting of China Jute
633.56 (not 631.5)
Grammar of Oriya Language
491.45 (not 415)

अन्तिम दो उदाहरणों में हमने वस्तु/द्रव्य (मूर्त) सत्ता को प्रक्रिया/संचालन से अधिक वरीयता दी है। इसके अतिरिक्त कृषि और भाषा में भी यही उद्धरण क्रम प्रयोग किया जाता है।

7. मानक उपविभाजनों (सारणी 1) के लिए अग्रता-सारणी :

सामान्यत: दो मानक उपविभाजन एक के बाद एक क्रम (succession) में एक वर्ग संख्या के लिए प्रयोग में नहीं लिये जाते हैं। यदि एक विषय में दो मानक उपविभाजन विद्यमान हों तो केवल एक को ही वरीयता के आधार पर प्रयोग में लिया जाता है और दूसरे को छोड़ दिया जाता है। अग्रता-सारणी पहले से ही सारणी 1 में दी जा चुकी है। इसका संक्षिप्त सार नीचे दिया गया है—

NOTES

Study and Teaching	-07
Management	-068
Miscellany	-02
Organizations	-06
Terminology	-014
Dictionaries, etc.	-03
Serial Publications	-05

यदि हम वरीयता क्रम का निरीक्षण करें तो यह स्पष्ट हो जाता है, कि पक्ष संकेतक सामान्य विशिष्ट ("general special") के बाद दृष्टिकोण ("viewpoints") आते हैं और वास्तविक रूप विभाजन अंत में आते हैं। इसका अर्थ हुआ कि आन्तरिक रूप को बाह्य रूप पर वरीयता दी जाती है।

आइये हम "encyclopaedia of organisations on applied psychology" का उदाहरण लेते हैं। यहाँ encyclopaedia तथा organisations दोनों ही मानक उपविभाजन हैं जिनका संख्यान क्रमशः -03 तथा -06 है। अतः इन दोनों में से केवल एक को ही जोड़ा जायेगा। वरीयता सारणी के अनुसार "-06" को "-03" पर वरीयता दी जायेगी। अतः सही वर्ग संख्या 158.06 है न कि 158.03 या अन्य कोई संख्या जो दोनों मानक उपविभाजनों को मिलाकर बने यथा 158.0306।

इसी प्रकार "Directory of library schools in India" के लिए वर्ग संख्या निम्नलिखित होगी—

020.711 54 instead of 020.255 4
Journal of terminology of science
501.4 (not 505)

अतः जब भी एक विषय में दो मानक उपविभाजन साथ-साथ आयें तो इस सारणी को यह जानने के लिए अवश्य देखा जाना चाहिये कि दोनों में से किसे प्रयोग में लाया जाये तथा किस उपविभाजन को छोड़ा जाये।

जो भी हो, यदि कोई वर्ग संख्या दो मानक उपविभाजनों के लिए ग्रहणशील है तो ऐसे उदाहरण अनुसूची में अलग दर्शा दिये गये हैं। इस तरह के उदाहरण, जिनमें दो मानक उपविभाजन हैं, कुछ ही हैं परन्तु स्पष्ट रूप से बताये गये हैं। 01-09 में से किसी भी मानक उपविभाजन को -04 मानक उपविभाजन में जोड़ा जा सकता है। इसके कारण स्पष्ट है : क्योंकि -04 वास्तव में मानक उपविभाजन नहीं है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. अग्रता सारणी क्या है? उदाहरण सहित समझाइये।

.....
.....
.....
.....

8. सार-संक्षेप :

इस अध्याय में आपको बहुसंश्लेषण की प्रक्रिया एवं डी.डी.सी. में संख्या निर्माण की प्रक्रिया में अग्रता क्रम के बारे में बताया गया है। इस अध्याय के विभिन्न अनुभागों में दिये गये विवरण और उदाहरण जटिल विषयों के वर्गीकरण हेतु बहुसंश्लेषण के प्रयोग को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। इस विवरण के प्रमुख बिन्दु हैं—

(1) बहुसंश्लेषण पद का प्रयोग डी.डी.सी. में औपचारिक रूप से नहीं किया गया है। इस पद को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि यह "जोड़िए" निर्देशों को दुहराते हुए एक ही आधार संख्या में दो या अधिक पक्षों या पहलुओं को एक के बाद दूसरे को जोड़ते हुए वर्ग संख्या निर्माण की प्रक्रिया है।

(2) डी.डी.सी. में अनेक अनेक स्थितियाँ तथा प्रावधान हैं जहाँ आपको "..... में जोड़िए" को एक ही आधार संख्या पर एक से अधिक बार प्रयोग करना होगा।

NOTES

(3) जटिल विषयों का वर्गीकरण करने में मुख्य समस्या आधार संख्या को पहचानने की तथा विभिन्न पक्षों या तथ्यों के क्रम को निर्धारित करने की है, कि किसे आधार संख्या से जोड़ा जाये।

(4) परिसूत्र हो सकता है : सत्ता/संचालन/अभिकरण (entity/operation/agent)।

(5) वरीयता क्रम से तात्पर्य संख्याआबें की प्राथमिकता निर्धारित करने से है जब दो या अधिक वर्ग संख्याओं में से एक को चुनना हो। सामान्यत: हमें दो संख्याओं में से अधिक विशिष्ट संख्या को चुनना होता है। चयन का यह कार्य लेखक द्वारा किसी पहलू या पक्ष को दिये गये महत्त्व पर भी निर्भर करता है।

(6) अग्रता-सारणी सूचीबद्ध रूप में एक संख्या पर दूसरी संख्या को श्रेण्य मानने में हमें मार्गदर्शन प्रदान करती है। यह वरीयता क्रम में वर्गों की एक सूची है।

(7) वरीयता या अग्रता टिप्पणी या निर्देश में हमें या तो अनुसूची में पहले आने वाली या बाद में आने वाली संख्या का प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया जाता है। हमें यह भी सलाह दी जाती है कि शून्य रहित वर्ग संख्या को शून्य सहित वर्ग संख्या से अधिक श्रेण्य माना जाना चाहिए; और किसी एक शून्य सहित संख्या से अधिक श्रेण्य मानना चाहिए।

(8) यदि कोई स्पष्ट मार्गदर्शन उपलब्ध न हो तो हमें दो संख्याओं में से अधिक विशिष्ट संख्या को वरीयता देनी है, यद्यपि कभी-कभी दो संख्याओं (वर्ग संख्याओं) की विशिष्टता की तुलना करना आसान नहीं होता। इस प्रकार के उदाहरणों में हमें अमूर्त की अपेक्षा मूर्त को अधिक वरीयता देनी है; आंशिक के ऊपर पूर्ण को वरीयता देनी है और सत्ता (entity) के स्थान पर प्रक्रिया को प्राथमिकता देनी है।

9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. सही आधार संख्या का चयन इस बात पर निर्भर करेगा कि आपको डी.डी.सी. की संरचना की कितनी जानकारी है और इस बात पर भी निर्भर करेगा कि किसी विषय के उन पक्षों का आपको कितना ज्ञान है जो बुनियादी या आधार रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इसके लिए एक जटिल विषय की आधार संख्या को पहचानने में कुशल होने के अनुभव की भी आवश्यकता होगी। रंगनाथन के पक्ष परिसूत्र (PMEST) से भी आपको बहुत सहायता मिल सकती है। एक आधार वर्ग में यदि दो पहलुओं में से एक पहलू मूर्त (Conrete) तथा दूसरा अमूर्त (Abstract) है तो सामान्यत: मूर्त पक्ष को पुन: संश्लेषण के लिए आधार संख्या के रूप में चुना जायेगा। मूल संख्या ही आधार है। अनुसूचियों में आधार संख्या को पहचानने के लिए पर्याप्त मार्गदर्शन उपलब्ध हैं। अनुसूचियों में आधार संख्याएँ सदैव "..... में जोड़िए" निर्देशों से युक्त होती हैं। बहुसंश्लेषण की प्रक्रिया में संख्याएँ के घटकों (Components) को खोजने के लिए हमें अनुसूची में पीछे की तरफ और आगे की तरफ कुछ जाना पड़ता है ताकि उन घटकों को चुनी गई आध ार संख्या (Base Number) के साथ जोड़ा जा सके।

2. **आख्या :** Wages of Women in the Textite Industry

वर्ग संख्या : 331.428 77

यह अर्थशास्त्र का एक विषय है।

विश्लेषण :

331.4	=	Women Workers
331.41-.42	=	Secondary aspects of employment of women (Now, there is an instruction to add to the base number 331.4 the numbers following 331 in 331.1-331.2
331.28	=	Wages in Specific Industries...

संश्लेषण :

Thus, the wages of women in (manufacturing) industry is :

331.4 + 331.28

331.4 + 28 = 331.428

विश्लेषण :

331.282-.289 = Extractive, manufacturing, construction

(Add to the base number 331.28 the numbers following 6 in 620-690)

(Now 331.28 is further extended by the numbers following 6 in 620-690)

677 = Textile

We will add to base number 331.28 the number following 6 in 677.

संश्लेषण :

331.28 + 677

331.28 + 77 = 331.287 7

3. संश्लेषण, बहुसंश्लेषण तथा बहुविषयी विषयों की गहन परिगणना के बावजूद भी प्रत्येक विषय के लिए सह-विस्तृत वर्ग संख्या (विषय के प्रत्येक पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाली वर्ग संख्या) बनाना सदा सम्भव नहीं होता। उदाहरण के लिए, हम एक साधारण आख्या "Classification in Public Libraries" को लें। ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन पद्धति में पुस्तकालय वर्गीकरण के लिए वर्ग संख्या 025.42 दी गई है और सार्वजनिक पुस्तकालय (Public Libraries) के लिए निर्धारित वर्ग संख्या 027.4 है। दोनों के लिए पृथक् संख्याएँ दी गई हैं परन्तु इन्हें परस्पर जोड़ने के लिए कोई प्रावधान नहीं है। इस समस्या का एक कारण यह है कि डी.डी.सी. अभी तक एक प्रकार से परिगणनात्मक (Enumerative) वर्गीकरण ही है जिसका उद्देश्य प्रलेखों को विस्तृत रूप से समूहबद्ध करना है। यह शेल्फ/फलक वर्गीकरण है, प्रलेखों के सम्पूर्ण विषय विश्लेषण (Subject Analysis) की विधि नहीं है।

4. अग्रता-सारणी (Table of Precedence) किसी विषय के विभिन्न पहलुओं की एक सारणीबद्ध सूची है जो एक पहलू की दूसरे पहलू के ऊपर प्राथमिकता निर्धारित करती है। यह वरीयता या अग्रता एक निर्देश रूप में भी प्रतिपादित की जा सकती है। अग्रता सारणी को अधिकृत रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है : "एक से अधिक पहलुओं के आधार पर अनुसूचियों में विभाजित विषय के अग्रता क्रम को निर्देशित करने वाली सारणी अग्रता-सारणी कहलाती है।" इसका उदाहरण निम्नलिखित हैं—

155.42-155.45 बाल मनोविज्ञान (Child Psychology by Specific Groupings (Vol. 2, p. 175) को विभिन्न विशेष समूहीकरण के द्वारा एक निर्देश के साथ उग्रता-सारणी के रूप में दिया गया है। जैसे कि Pre-school boys 155.423 (not 155.432)। नीचे दी गई अग्रता-सारणी को देखें—

Exceptional Children	155.45
By Class, type, Relationships	155.44
By age groups	155.42
By sex	155.43

NOTES

NOTES

10. मुख्य शब्द

अग्रता-सारणी/टिप्पणी का क्रम (Order of Precedence Table/Note) : एक विषय के दो या अधिक पक्षों में से एक को चुनने या वरीयता देने के लिए अग्रता क्रम निर्देश या टिप्पणी। यह अनुदेश सारणीबद्ध या निर्देश के रूप में हो सकता है।

प्रति वर्गीकरण (Cross Classification) : मिश्र विषयों के वर्गीकरण के कार्य में ऐसी परिस्थिति, जिसमें अग्रता के अभिलक्षणों के प्रयोग में विसंगति उपस्थित होती हो। उदाहरण के लिए "storing of China jute" का वर्गीकरण करते समय कोई इसे storing के अंतर्गत वर्गीकृत करेगा तो कोई इसे Chine jute के अंतर्गत रखेगा।

मिश्र वाक्य (Complex Subject) : एक बहुपक्षीय विषय। संश्लेषण के द्वारा प्राप्त सभी वर्ग संख्याएँ मिश्र विषयों वाली होती हैं। डी डी सी अभी तक अनेक मिश्र विषयों की वर्ग संख्या प्रदान करने में समर्थ नहीं है, इसलिए प्रति वर्गीकरण से बचाव के लिए अभिलक्षण के अग्रता-क्रम पर निर्भर होना पड़ता है। (डी डी सी में बहुसंश्लेषण पद औपचारिक रूप से प्रयुक्त नहीं किए गए हैं।)

11. अभ्यास-प्रश्न

(1) आहार संख्या में अनुसूची से पूर्ण या आंशिक संख्याएँ कैसे जोड़ी जाती हैं ?

(2) सामाजिक विज्ञानों से उदाहरण देते हुए बहुसंश्लेषण की प्रक्रिया समझाइए।

(3) अग्रता-क्रम से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(4) संख्याओं की प्राथमिकता को निर्धारित करने के उपायों का वर्णन कीजिए।

(5) मानक उपविभाजनों के लिए अग्रता सारणी का वर्णन कीजिए।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- Comoromi, John P. [at etl.] (1982). Manual for use of the Dewey Decimal Classification, 19th ed. Albany : Forest Press.
- Ewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3 Vols. 19th ed. Albany : Forest Press.
- Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC-20), Theory and Practice : A Self Instructional Manual. Madras : T.R. Publications.

प्रस्तावना, संरचना तथा व्यवस्था

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन की पृष्ठभूमि
4. वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति
5. कोलन क्लैसिफिकेशन में अंकन
6. संरचना तथा रूपरेखा
7. कोलन क्लैसिफिकेशन में अनुक्रमणिका
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. मुख्य शब्द
11. अभ्यास-प्रश्न
12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

विगत वर्षों में पुस्तकालयों में उपयोग के लिए अनेक वर्गीकरण पद्धतियों का विकास हुआ है। वर्गीकरण के सामान्य सिद्धान्त पर आधारित एस.आर. रंगनाथन द्वारा विकसित कोलन क्लैसिफिकेशन एक ऐसी ही पद्धति है। इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप—

- कोलन क्लैसिफिकेशन का विहंगावलोकन;
- कोलन क्लैसिफिकेशन की वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक प्रक्रिया की व्याख्या;
- कोलन क्लैसिफिकेशन में प्रयुक्त अंकन का प्रयोग;
- इस पद्धति की आधार योजना की व्याख्या; तथा
- कोलन क्लैसिफिकेशन की अनुक्रमणिका का उपयोग करने में समर्थ हो सकेंगे।

2. परिचय :

कोलन क्लैसिफिकेशन का प्रतिपादन स्वर्गीय एस. आर. रंगनाथन द्वारा किया गया था। इसका प्रथम संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ था। इस समय तक (आज तक) इस प्रणाली के सात संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं। सातवें संस्करण की अनुक्रमणिका अभी तक उपलब्ध नहीं है। अतः एक शिक्षार्थी के लिए इस संस्करण की सहायता से वर्ग संख्या निर्मित करना कठिन है। इसी कारण, यहाँ कोलन क्लैसिफिकेशन के षष्ठम् संस्करण को ही प्रयोग में लाया गया[1]। षष्ठम् संस्करण का प्रथम प्रकाशन 1960 में तथा पुनर्मुद्रण 1960 में तथा पुनर्मुद्रण 1963, 1964, 1969, 1976, 1989 एवं 1990 में हुआ। इसका ग्रंथात्मक विवरण निम्नलिखित हैं—

S.R. Ranganathan—6th edition—4th reprint—Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science, 1990.

इस पद्धति की उचित जानकारी प्राप्त करने के लिए, इस पद्धति के षष्ठम् संस्करण की प्रति अपने पास अवश्य रखें।

3. कोलन क्लैसिफिकेशन की पृष्ठभूमि :

1924 में लन्दन में खिलौने की एक दुकान में 'मेकेनो सेट' के प्रदर्शन को देखकर रंगनाथन के मस्तिष्क में कोलन क्लैसिफिकेशन की रचना का विचार आया। मेकेनो सेट (Meccano Set) में अनेक Slotted Strips, Rods, Wheel Serews, Nuts तथा Bolts होते हैं जिनकी सहायता से अनेक प्रकार के प्रतिरूपों का विनिर्माण किया जा सकता है। कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति में रंगनाथन द्वारा किसी सिद्धान्त का प्रयोग किया गया। इसमें मानक एकक 'मेकेनो सेट' के strips के समान हैं तथा योजक चिन्ह 'स्क्रू' एवं 'बोल्ट' के समान हैं। मानक इकाइयाँ अनुसूचियाँ थीं तथा वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए योजक चिन्ह के रूप में कोलन का प्रयोग किया गया था।

प्रथम संस्करण (1933)

कोलन क्लैसिफिकेशन का प्रथम संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ था। इसमें तीन भाग थे : भाग 1 में सिद्धान्तों से सम्बन्धित नियमों की व्याख्या की गई थी। भाग 2 में अनुसूचियाँ थीं तथा भाग 3 में अनुक्रमणिका थी। इसमें मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया था। मुख्य वर्गों के लिए 26 रोमन दीर्घ अक्षरों, हिन्द-अरबी संख्याओं तथा रोमन लघु अक्षरों की व्यवस्था थी।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. कोलन क्लासिफिकेशन की रचना भी पृष्ठभूमि का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

प्रत्येक मुख्य वर्ग (M.C. : Main Class) में एक पक्ष-परिसूत्र (Facct Formula) की व्यवस्था थी। विभिन्न पक्षों के संयोजन के लिए द्विबिन्दु (Colon) को योजक चिन्ह (केवल एक योजक चिन्ह) के रूप में प्रयोग किया था।

NOTES

द्वितीय संस्करा (1939)

द्वितीय संस्करण 1939 में प्रकाशित हुआ था। इस संस्करण में अष्टक सिद्धान्त एवं स्वपक्षीय युक्तियों की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया। Spritual Experience and Mysticism को भी एक मुख्य वर्ग के रूप में सम्मिलित किया गया। पूर्व में वर्णित तीन भागों के अतिरिक्त एक चतुर्थ भाग को जोड़ा गया। इसमें प्रथम भाग में दिये गये नियमों पर आधारित 3000 उदाहरणों को सम्मिलित किया गया।

तृतीय संस्करण (1950)

तृतीय संस्करण 1950 में प्रकाशित हुआ था। यह संस्करण पुस्तकालय वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धान्त पर आधारित था। यह पाँच मूलभूत श्रेणियों : व्यक्तित्व ([P] : Personality), पदार्थ ([M] : Matter), ऊर्जा ([E] : Energy), स्थान ([S] : Space), एवं काल ([T] : Time) की अभिधारणा पर आधारित था। प्रत्येक मूलभूत श्रेणी को एक संकेतक अंक (योजक चिन्ह) प्रदान किया गया है—अल्प विराम (,) व्यक्तित्व के लिए; अर्धविराम (;) पदार्थ के लिए; द्विबिन्दु (:) ऊर्जा के लिए; तथा बिन्दु (.) स्थान एवं काल के लिए।

चतुर्थ संस्करण (1952)

चतुर्थ संस्करण (1952) में काल के संकेतक अंक को विषर्यस्त अल्प विराम (') में परिवर्तित कर दिया गया। इस संस्करण में संकेतक अंकों के क्रमबोध मान को निर्धारित किया गया। मुख्य वर्गों के आधार को विस्तृत करने के लिए अनेक ग्रीक अक्षरों को इस संस्करण में सम्मिलित किया गया।

पंचम संस्करण (1957)

1957 में प्रकाशित पंचम संस्करण में नियमों तथा अनुसूचियों दोनों में ही अनेक परिवर्तन किये गये। चतुर्थ संस्करण में सम्मिलित ग्रीक अक्षरों को रिक्त एवं रिक्तक अंकों (Emply and Emptying digits) द्वारा परिवर्तित कर दिया गया। स्थान एवं काल पक्षों के द्वितीय स्तर को भी सम्मिलित किया गया।

षष्ठम् संस्करण (1960)

कोलन क्लैसिफिकेशन का षष्ठम् संस्करण 1960 में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में 'नियमों' से सम्बन्धित अध्यायों वाले भाग को पुनर्व्यवस्थित किया गया एवं किसी सीमा तक पुनः लिखा गया। संक्षेपण पर अध्याय 6, वर्गीकरण पर अध्याय 7, तथा सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं पर अध्याय 8 इस संस्करण में सम्मिलित किये गये। अनुसूची भाग में – अन्तर विषयी, अंतः पक्ष एवं अंतः पंक्ति दशा सम्बन्धों को जोड़ा गया। कुछ मुख्य वर्गों की अनुसूचियों में परिवर्तन किये गये। 1963 में पुनर्मुद्रित षष्ठम् संस्करण में नियमों के खण्ड के पहले एक परिशिष्ट दिया गया।

सप्तम संस्करण (1987)

1972 में रंगनाथन के देहावसान के बाद, कोलन क्लैसिफिकेशन का सप्तम संस्करण 1987 में प्रकाशित हुआ था। इस संस्करण में सारभूत परिवर्तन किये गये। अभी तक इस संस्करण की अनुक्रमणिका प्रकाशित नहीं हो पाई है, फलस्वरूप इसका उपयोग कठिन है।

कोलन क्लैसिफिकेशन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि : रंगनाथन वर्गीकरण पद्धति के प्रथम प्रणेता थे जिन्होंने वर्गीकरण पद्धति की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। 1937 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Prolegomena to Library Classification में रंगनाथन ने इस सिद्धान्तों का विवरण दिया है। Prolegomena के तीन प्रमुख संशोधन हो चुके हैं। तृतीय संशोधन 1967 में प्रकाशित हुआ था। रंगनाथन ने अपने ही द्वारा प्रतिपादित सूत्रों, सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं के आधार पर कोलन क्लैसिफिकेशन को विकसित किया। वर्गीकरण के उपसूत्रों (Canons) का प्रावधान Prolegomena में तथा सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों

NOTES

का उल्लेख Elements of Library Classification में किया गया है। कोलन क्लैसिफिकेशन, जो मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा पर आधारित है, रंगनाथन द्वारा प्रदत्त वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धान्त (Dynamic Theory) का ही परिणाम है।

कोलन क्लैसिफिकेशन के प्रारम्भिक संस्करण (संस्करण 1 से 3) पूर्णतया पक्षात्मक होने पर भी अत्यन्त अनम्य थे। चतुर्थ संस्करण के पश्चात् पक्षों के लिए अलग-अलग संकेतक अंकों के प्रयोग तथा आवर्तन एवं स्तर की अवधारणा के फलस्वरूप यह लगभग नम्य पक्षात्मक (Almost Freely Faceted) पद्धति हो गई। कोलन क्लैसिफिकेशन के सप्तम संस्करण में खण्ड अंकन के प्रयोग के कारण पक्षों की संख्या एवं उनके क्रम में अपरिवर्तनीयता या अनम्यता समाप्त हो गई है। परिणामस्वरूप यह नम्य पक्षात्मक (Freely Faceted) वर्गीकरण पद्धति बन गई है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. कोलन क्लासिफिकेशन के प्रथम संस्करण का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

4. वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति :

कोलन क्लैसिफिकेशन एक वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति है। इस परिप्रेक्ष्य में यह पद्धति डयूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन (DDC : Dewey Decimal Classification) अथवा लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस क्लैसिफिकेशन (LC : Library of Congress Classification) जैसी परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धतियों से भिन्न है। कोलन क्लैसिफिकेशन में विषयों की पूर्व निर्मित वर्ग संख्याओं का प्रावधान नहीं है। कोलन क्लैसिफिकेशन की अनुसूचियों में कुछ मानक एकक अनुसूचियाँ हैं। नियमों एवं सिद्धान्तों के आधार पर विभिन्न एकक अनुसूचियों में से अंकों को जोड़कर सभी सम्भावित विषयों के लिए वर्ग संख्या का निर्माण किया जा सकता है। यह प्रक्रिया 'मेकेनो सेंट' के उपयोग के समान है। कोलन क्लैसिफिकेशन में अंक निर्माण की प्रक्रिया के दो प्रमुख सोपान या चरण निम्नलिखित हैं—

(1) विषयों का पक्षों में विश्लेषण कर उनको पाँच मूलभूत श्रेणियों में परिवर्तित करना; तथा

(2) पक्षों का संश्लेषण करना।

कोलन क्लैसिफिकेशन में वर्ग संख्या निर्माण के लिए विश्लेषण एवं संश्लेषण की प्रक्रिया को निम्नांकित उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है—

उदाहरण—

आख्या : Circulation of Periodicals in College Libraries in India in 1996.

उपर्युक्त आख्या से यह स्पष्ट है कि यह पुस्तक मुख्य वर्ग Library Science से सम्बन्धित है। इस प्रकार मुख्य वर्ग (M.C.) = Library Science

विश्लेषण करने पर इस आख्या के निम्नलिखित पक्ष ज्ञात होंगे—

(i) Circulation (ii) Periodicals

(iii) College Libraries (iv) India

(v) 1996

इनमें से प्रत्येक पक्ष किसी-न-किसी मूलभूत श्रेणी का बोधक है। Circulation एक प्रक्रिया है, इस कारण इससे ऊर्जा पक्ष [E], Periodical पदार्थ होने के कारण पदार्थ पक्ष [M], College Libraries व्यक्तित्व पक्ष [P] का बोध होता है। India स्थान पक्ष [S] एवं 1996 काल पक्ष [T] है। इस प्रकार पक्षों को ह्रासमान मूर्तता क्रम—PMEST में व्यवस्थित किया जा सकता है।

Library Science (M.C.), College Libraries [P], Periodicals [M], Circulation [E], India [S] तथा 1996 [T]।

दूसरे चरण में विभिन्न पक्षों के अंकन की पहचान की जाती है।

Library Science (M.C.) = 2
College Libraries [P] = 33
Periodicals [M] = 46 (Taken from Generalia Bibliography)
Circulation [E] = 6
India [S] = 44 (Taken from Space Isolate Schedule Page 2.8 to 2.17)
1996 [T] = N96 (Taken from Time Isolate Schedule Page 2.7)

संकेतक अंकों की सहायता से विभिन्न पक्षों से प्राप्त अंकन का संश्लेषण करने पर उपर्युक्त आख्या की निम्नलिखित वर्ग संख्या बनेगी—

2(M.C.) 33[P]; 46[M] : 6[E]. 44[S] 'N96[T]
= 233' 46 : 6.44 'N96

टिप्पणी : उपरिलिखित वर्ग संख्या से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व पक्ष के पहले संकेतक अंक अल्पविराम (,) का प्रयोग नहीं किया जाता है।

मुख्य वर्ग 2 Library Science को प्रदत्त पक्ष परिसूत्र 2[P]; [M] : [E] [2P] के अनुसार ऐसा किया गया है। इस प्रकार एक विषय का विश्लेषण पाँच मूलभूत श्रेणियों के आधार पर ग्रन्थ के विषय को पक्षात्मक स्वरूप प्रदान करता है और उनका संश्लेषण ग्रन्थ में वर्णित विषय का प्रतिनिधित्व करता है।

5. कोलन क्लैसिफिकेशन में अंकन :

किसी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे अंकन कहते हैं। इस पद्धति का उपयोग करने से पूर्व इसमें प्रयुक्त अंकन की जानकारी प्राप्त आवश्यक है—

क्रमांक	प्रयुक्त अंकों के प्रकार	प्रयुक्त अंकों की संख्या
1.	हिन्द-अरबी संख्याएँ (1-9)	9
2.	रोमन वर्णमाला के दीर्घाक्षर (A-Z)	26
3.	रोमन वर्णमाला के लघु अक्षर ((a-z) i, l एवं 0 छोड़कर)	23
4.	ग्रीक अक्षर Δ (डेल्टा) एवं Σ (सिग्मा)	2
5.	लघु को टक ( )	2
6.	विराम चिन्ह (योजक चिन्ह) विपर्यस्त अल्प विराम (') बिन्दु (.) द्विबन्दु (:) अर्ध-विराम (;) अल्प-विराम (,) हाइफन (-)	6
7.	शून्य (0) योजक चिन्ह के रूप में	1
8.	वाणाकृति अभिमुख वाणाकृति → परांगमुख वाणाकृति ←	2

NOTES

हिन्द-अरबी संख्याएँ (1-9) तथा रोमन वर्णमाला (दीर्घ एवं लघु अक्षर) को कोलन क्लैसिफिकेशन में सारगर्भित अंक कहा जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन में रोमन दीर्घाक्षर एवं ग्रीक अक्षर Δ (डैल्टा) एवं Σ (सिग्मा) का प्रयोग एवं प्रामाणिक वर्गों तथा काल एकलों के लिए किया गया है। एक विषय के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करने के लिए हिन्द-अरबी संख्याओं का प्रयोग किया जाता है। संख्याओं का प्रयोग दशमलव भिन्न के रूप में किया गया है। रोमन लघु अक्षरों को सामान्य एकलों, काल एकल के द्वितीय स्तर एवं दशा सम्बन्ध के लिए प्रयोग में लाया गया है।

अंक शून्य (0), विराम चिन्हों एवं वाणाकृतियों का प्रयोग संयोजन अथवा संकेत चिन्हों के रूप में किया गया था। लघु कोष्ठक का प्रयोग विषय युक्ति के लिए किया गया है।

कोलन क्लैसिफिकेशन में प्रत्येक अंक को क्रमबोध मान एवं व्यवस्थापन क्रम प्रदान किया गया है जो निम्नलिखित है—

)←→0 '. : ; , - a b c d f g h j k m n p q r s t u v w x y z 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0 A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z (

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. कोलन क्लासीफिकिशन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए?

.....

.....

.....

.....

6. संरचना तथा रूपरेखा

कोलन क्लैसिफिकेशन की पुस्तक तीन भागों में है—

भाग 1 : नियम (Rules)

भाग 2 : अनुसूचियाँ (Schedules)

भाग 3 : वरेण्य ग्रन्थ एवं धर्मग्रन्थ (Classics and Sacred Books)

भाग 1 : यह भाग नियमों से सम्बन्धित है—इस में परिभाषा, पूर्ण विराम एवं उदाहरण है।

अध्याय 01-04 में क्रमशः आह्वान संख्या, वर्ग संख्या, पुस्तक संख्या एवं संग्रह संख्या का वर्णन है।

अध्याय 05 में पक्ष, मुख तथा युक्तियों की अवधारणा का परिचय दिया है, जिनके द्वारा वर्ग संख्या के पक्षों में केन्द्र बिन्दुओं का निर्माण किया जा सकता है।

अध्याय 06 में संक्षेपणों का वर्णन है।

अध्याय 07 एवं 08 में वर्गीकरण के उपसूत्रों तथा सहायक क्रम प्राप्त करने के सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है।

अध्याय 1-5 में मुख्य वर्गों, सामान्य एकलों, काल एकलों, स्थान एकलों एवं भाषा एकलों का वर्णन है।

अध्याय 6 में दशा सम्बन्ध—अन्तर विषय, अंतः पक्ष एवं अंतः पंक्ति सम्बन्धों का परिचय दिया है।

अध्याय 7 में वरेण्य-ग्रन्थ विधि का वर्णन है जिसकी सहायता से प्राच्य विद्या तथा अन्य क्षेत्रों के वरेण्य ग्रन्थों को व्यवस्थित किया जा सकता है।

NOTES

इस भाग के शेष अध्यायों में सभी मुख्य वर्गों से सम्बन्धित नियमों एवं विशेषताओं तथा उदाहरणों को समाविष्ट किया गया है।

इस भाग के अंत में अनुक्रमणिका है।

भाग 2 : इस भाग में वर्गीकरण की अनुसूचियाँ हैं, जैसे—

अध्याय 02 : पुस्तक संख्या निर्मित करने के लिए रूप विभाजनों की अनुसूची।

अध्याय 1-5 : सामान्य एकलों, काल एकलों, स्थान एकलों एवं भाषा एकलों की अनुसूचियाँ।

अध्याय 6 : दशा सम्बन्ध, अन्तर विषय, अंत: पक्ष एवं अंत: पंक्ति सम्बन्धों के लिए अनुसूचियाँ।

शेष अध्यायों में समस्त मुख्य वर्गों की अनुसूचियाँ दी गई हैं। स्थान एकल (अध्याय 4) तथा Bontany (अध्याय 1) एवं Zoology (अध्याय K) के लिए वर्णानुक्रम में अनुक्रमणिका का प्रावधान उनकी अनुसूचियों के तुरन्त बाद किया गया है। भाग 2 के अंत में समस्त अनुसूचियों के प्रारम्भ में मूलभूत संघटक पदों की वर्णानुक्रमिक दी गई है। अनुक्रमणिका के प्रारम्भ में अनुक्रमणिका के प्रयोग से सम्बन्धित सामान्य निर्देश दिये गये हैं।

भाग 3 : इस भाग में प्राच्य-विद्या के वरेण्य ग्रन्थों की वर्ग संख्या दी गई है। इसमें विशेष नामों सहित धर्म-ग्रन्थों की अनुसूची भी दी गई है।

प्रत्येक भाग का पृष्ठांकन पृथक अनुक्रम में है। पृष्ठ संख्या को दो भागों में दर्शाया गया है तथा दोनों भागों के बीच एक बिन्दु दिया गया है। बिन्दु की बाईं ओरका अंक भाग एवं दाईं ओर का/के अंक उस भाग की पृष्ठ संख्या दर्शाता/दर्शाते है/हैं। उदाहरणार्थ 1.7 का अर्थ भाग 1 का 7वाँ पृष्ठ। इसी प्रकार 2.123 एवं 5.53 का तात्पर्य होगा भाग 2 का पृष्ठ 123 एवं भाग 3 का पृष्ठ 53।

पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों के बाद एक परिशिष्ट दिया गया है। इसमें मुद्रण की कुछ विसंगतियों में सुधार एवं कुछ गौण परिवर्तनों का उल्लेख है।

7. कोलन क्लैसिफिकेशन में अनुक्रमणिका :

जैसा कि अनुभाग 8.5 में पहले ही बताया जा चुका है, कोलन क्लैसिफिकेशन की पृष्ठ संख्या 2.124 पर अनुसूचियों की वर्णानुक्रमिक अनुक्रमणिका दी गई है। यह कोलन क्लैसिफिकेशन के भाग 2 में अनुसूचियों में प्रयुक्त मूलभूत संघटक पदों की अनुक्रमणिका है। जिस एकल पद की वर्ग संख्या का निर्माण आप करना चाहते हैं उस के मुख्य वर्ग एवं पक्ष की जानकारी प्राप्त करने में यह अनुक्रमणिका सहायक है।

अनुक्रमणिका के प्रारम्भ में, इसके प्रयोग सम्बन्धी निर्देश तथा संक्षेपण के संकेत दिये गये हैं। अनुक्रमणी में उल्लिखित प्रविष्टियों के अर्थ एवं आशय की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

अनुक्रमणी में से नमूने की एक प्रविष्टि नीचे दी गई है—

Epidermis G[P], K[P2], L[P], 871

इस प्रविष्टि से यह स्पष्ट होता है कि एकल पद Epidermis का प्रयोग Biology में व्यक्तित्व [P], Zoology में व्यक्तित्व द्वितीय स्तर [P2] तथा Medicine में व्यक्तित्व [P] पक्ष के रूप में किया गया है। इन सारे स्थानों पर Epidermis एकल पद के लिए 871 का प्रयोग किया गया है। अत: इसकी वर्ग संख्या निम्नलिखित है—

C 871
K, 871
L 871

NOTES

किसी विषय के एकल पद के पक्ष तथा मुख्य वर्ग को ज्ञात करने के लिए इस अनुक्रमणी का प्रयोग किया जा सकता है। अनुक्रमणी से यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि किसी एकल पद का किन-किन सन्दर्भों तथा किन मुख्य वर्गों में किन पक्षों में प्रयोग किया गया है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. कोलन क्लासीफिकेशन में अंक निर्माण की प्रक्रिया के सोपान बताइये।

.....

.....

.....

.....

8. सार-संक्षेप :

इस इकाई में आपको कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति से अवगत कराया गया है। वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक तथा पूर्णतया पक्षात्मक विशेषता के कारण यह पद्धति अन्य वर्गीकरण पद्धतियों से भिन्न है। कोलन क्लैसिफिकेशन में मिश्रत अंकन का प्रयोग किया गया है। इसके द्वारा यथा-संभव अधिकांश नवीन वर्गों का समावेश किया जा सकता है। कोलन क्लैसिफिकेशन के अनेक संशोधन प्रकाशित किये जा चुके है। इसका नवीनतम संस्करण सप्तम् संस्करण है, जिसमें अनुक्रमणिका नहीं है। इस कारण हमारे देश के अधिकांश पुस्तकालयों में अभी भी षष्ठम् संस्करण का ही प्रयोग किया जा रहा है।

9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. 1924 में लन्दन में खिलौने की एक दुकान में 'मेकेनो सेट' के प्रदर्शन को देखकर रंगनाथन के मस्तिष्क में कोलन क्लैसिफिकेशन की रचना का विचार आया। मेंकेनो सेट (Meccano Set) में अनेक Slotted Strips, Rods, Wheel Serews, Nuts तथा Bolts होते हैं जिनकी सहायता से अनेक प्रकार के प्रतिरूपों का विनिर्माण किया जा सकता है। कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति में रंगनाथन द्वारा किसी सिद्धान्त का प्रयोग किया गया। इसमें मानक एकक 'मेकेनो सेट' के strips के समान हैं तथा योजक चिन्ह 'स्क्रू' एवं 'बोल्ट' के समान हैं। मानक इकाइयाँ अनुसूचियाँ थीं तथा वर्ग संख्या निर्मित करने के लिए योजक चिन्ह के रूप में कोलन का प्रयोग किया गया था।

2. कोलन क्लैसिफिकेशन का प्रथम संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ था। इसमें तीन भाग थे : भाग 1 में सिद्धान्तों से सम्बन्धित नियमों की व्याख्या की गई थी। भाग 2 में अनुसूचियाँ थीं तथा भाग 3 में अनुक्रमणिका थी। इसमें मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया था। मुख्य वर्गों के लिए 26 रोमन दीर्घ अक्षरों, हिन्द-अरबी संख्याओं तथा रोमन लघु अक्षरों की व्यवस्था थी।

   प्रत्येक मुख्य वर्ग (M.C. : Main Class) में एक पक्ष-परिसूत्र (Facct Formula) की व्यवस्था थी। विभिन्न पक्षों के संयोजन के लिए द्विबिन्दु (Colon) को योजक चिन्ह (केवल एक योजक चिन्ह) के रूप में प्रयोग किया था।

3. **कोलन क्लैसिफिकेशन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि :** रंगनाथन वर्गीकरण पद्धति के प्रथम प्रणेता थे जिन्होंने वर्गीकरण पद्धति की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। 1937 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Prolegomena to Library Classification में रंगनाथन ने इस सिद्धान्तों का विवरण दिया है। Prolegomena के तीन प्रमुख संशोधन हो चुके हैं। तृतीय संशोधन 1967 में प्रकाशित हुआ

था। रंगनाथन ने अपने ही द्वारा प्रतिपादित सूत्रों, सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं के आधार पर कोलन क्लैसिफिकेशन को विकसित किया। वर्गीकरण के उपसूत्रों (Canons) का प्रावधान Prolegomena में तथा सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों का उल्लेख Elements of Library Classification में किया गया है। कोलन क्लैसिफिकेशन, जो मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा पर आधारित है, रंगनाथन द्वारा प्रदत्त वर्गीकरण के गत्यात्मक सिद्धान्त (Dynamic Theory) का ही परिणाम है।

4. कोलन क्लैसिफिकेशन में अंक निर्माण की प्रक्रिया के दो प्रमुख सोपान या चरण निम्नलिखित हैं—

(1) विषयों का पक्षों में विश्लेषण कर उनको पाँच मूलभूत श्रेणियों में परिवर्तित करना; तथा

(2) पक्षों का संश्लेषण करना।

कोलन क्लैसिफिकेशन में वर्ग संख्या निर्माण के लिए विश्लेषण एवं संश्लेषण की प्रक्रिया को निम्नांकित उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है—

उदाहरण–

आख्या : Circulation of Periodicals in College Libraries in India in 1996.

उपर्युक्त आख्या से यह स्पष्ट है कि यह पुस्तक मुख्य वर्ग Library Science से सम्बन्धित है। इस प्रकार मुख्य वर्ग (M.C.) = Library Science

विश्लेषण करने पर इस आख्या के निम्नलिखित पक्ष ज्ञात होंगे—

(i) Circulation

(ii) Periodicals

(iii) College Libraries

(iv) India

(v) 1996

10. मुख्य शब्द

अंकन (Notation) : किसी वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाली क्रमबोधक संख्या।

एकल विचार (Isolate Idea) : पाँच मूलभूत श्रेणियों में से एक की अभिव्यक्ति करने वाली, विचार की, एक इकाई।

केन्द्रबिन्दु (Focus) : एक बुनियादी वर्ग अथवा एकल विचार को निर्दिष्ट करने वाला पद।

पक्ष (Facet) : एक मूलभूत श्रेणी के आधार पर अभिज्ञात एकलों का समूह।

प्रामाणिक वर्ग (Canonical Class) : किसी वर्ग संख्या में मुख्य संख्या के अतिरिक्त पक्ष अंक में प्रथम स्थान पर लगाया गया अंक।

NOTES

वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक (Analytico-synthetic) : वर्गीकरण की ऐसी पद्धति जो किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षों में विश्लेषण तथा योजक चिह्नों की सहायता से पक्ष-संख्याओं का वर्ग संख्या के रूप में संश्लेषण पर आधारित हो।

11. अभ्यास-प्रश्न

(1) कोलन क्लासीफिकेशन के द्वितीय एवं तृतीय संस्करणों का उल्लेख कीजिए।

(2) कोलन क्लासीफिकेशन के चतुर्थ एवं पंचम संस्करणों की विशेषता बताइए।

(3) कोलन क्लासीफिकेशन ड्यूई डेसिमल क्लासीफिकेशन से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।

(4) कोलन क्लासीफिकेशन की संरचना तथा रूपरेखा का वर्णन कीजिए।

(5) कोलन क्लासीफिकेशन की अनुक्रमणिका की विशेषता बताइए।

12. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- Ranganathan, S.R. (1990), A Descriptive Account of the Colon Classification. Reprint, Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Ranganathan, S.R. (1989). Elements of Library Classification. 2nd ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Ranganathan S.R. (1989).Prodegomena to Library Classification. 3rd ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Satija, M.P. (1989). Manual of Practical Colon Classification. 2nd rev. ed. New Delhi : Sterling Publishers.
- Sharma, Pandey S.K. (2000). Colon Classification Made Easy. New Delhi : Ess Ess.
- शर्मा, पाण्डेय एस. के. (1998)। सरलीकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण 1 दिल्ली : सत्साहित्य प्रकाशन।

अनुसूचियाँ एवं तकनीकें

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी. सी.) में विषयों का मानचित्रण
4. मूलभूत श्रेणियाँ
5. आवर्तन एवं स्तर
   - 5.1 आवर्तन की अभिव्यक्ति
   - 5.2 स्तर की अभिव्यक्ति
6. प्रणाली एवं विशेष
7. सामान्य स्कल
   - 7.1 पूर्वस्थापक सामान्य एकल
   - 7.2 पश्चस्थापक सामान्य एकल
8. दशा सम्बन्ध
9. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी.सी.) में युक्तियाँ
   - 9.1 काल युक्ति
   - 9.2 भौगोलिक युक्ति
   - 9.3 विषय युक्ति
   - 9.4 स्मृति सहायक युक्ति
   - 9.5 वर्ण युक्ति
   - 9.6 अध्यारोपण युक्ति
10. सार-संक्षेप
11. प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द
13. अभ्यास-प्रश्न
14. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य :

अध्याय 8 में कोलन क्लैसिफिकेशन (सी.सी.) पद्धति की समग्र संरचना का वर्णन किया गया है। इस इकाई में हमें सी.सी. के आधारभूत तथ्यों तथा इसके द्वारा प्रलेखों के वर्गीकरण से सम्बन्धित तरीकों की जानकारी प्राप्त करनी है।

इस अध्याय का अध्ययन करने के उपरान्त आप—

- कोलन क्लैसिफिकेशन में विषयों के मानचित्रण की जानकारी पाने;
- कोलन क्लैसिफिकेशन में प्रयुक्त मूलभूत श्रेणियों का विवेचन करने;
- विभिन्न मूलभूत श्रेणियों की अभिव्यक्ति में आवर्तन एवं स्तर की अवधारणा की व्याख्या करने; तथा
- सामान्य एकलों, दशा सम्बन्धों तथा अन्य युक्तियों का प्रयोग कर वर्ग संख्याओं का निर्माण करने में सक्षम होंगे।

2. परिचय :

इस अध्याय में कोलन क्लैसिफिकेशन (सी. सी.; के षष्ठम संस्करण द्वारा विषयों के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त तकनीकों से अवगत कराया जायेगा। प्रारम्भ में, इस पद्धति में विषयों के मानचित्रण का विहगावलोकन प्रस्तुत किया गया है।

कोलन क्लैसिफिकेशन में वर्गीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया पाँच मूलभूत श्रेणियों पर आधारित है। कोलन क्लैसिफिकेशन द्वारा स्वीकृत वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली में मूलभूत श्रेणियाँ वर्गीकरण निर्माण खण्ड का कार्य करती है। साधारण से यौगिक विषयों की ओर अग्रसर होने पर मूलभूत श्रेणियों के विभिन्न आवर्तनों एवं स्तरों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। मिश्र विषयों के वर्गीकरण में दशा-सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तकनीकों के अतिरिक्त, कोलन क्लैसिफिकेशन में पक्ष के केन्द्र बिन्दुओं को उचित अंकन प्रदान करने के लिए अनेक युक्तियों का प्रयोग किया गया है। इन युक्तियों के प्रयोग से वर्गीकरणकर्ता को कुछ सीमा तक स्वायत्तता प्राप्त होती है। इससे अनुसूचियों में अनावश्यक परिगणन की आवश्यकता नहीं रहती। फलस्वरूप उनका आकार छोटा हो जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन में आधारभूत तकनीकों एवं युक्तियों की जानकारी से विभिन्न प्रकार की जटिलता वाले विषयों का वर्गीकरण करने में सहायता प्राप्त होगी।

3. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी. सी.) में विषयों का मानचित्रण :

कोलन क्लैसिफिकेशन में विषयों के मानचित्रण की प्रक्रिया निम्नलिखित चार्ट द्वारा दर्शाई गये हैं—

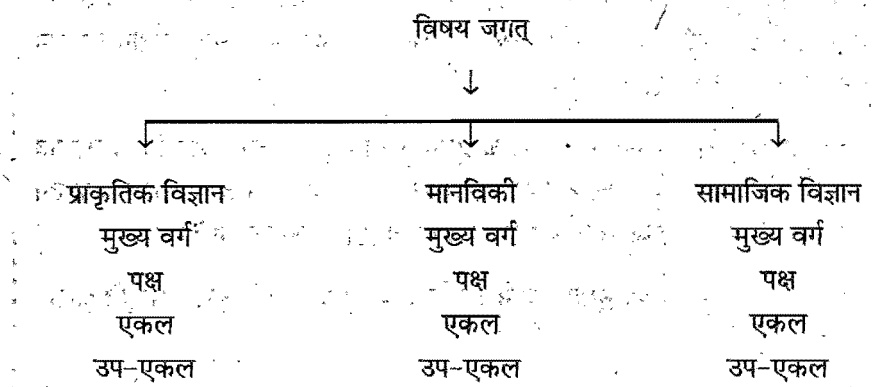

पहली बात यह है कि ज्ञान के पारम्परिक विभाजन के आधार पर रंगनाथन ने विषय जगत् को मोटे तौर से प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में विभाजित किया है। उन्होंने इसे आंशिक व्याप्ति

(Partial Comprehension) की संज्ञा दी है। दूसरी बात यह है कि विषय जगत् के प्रत्येक विस्तृत विभाग को मुख्य वर्गों के समुच्चय में विभाजित किया है। तीसरी बात यह है कि विभिन्न लक्षणों का अनुप्रयोग कर प्रत्येक मुख्य वर्ग को पक्षों में विभाजित किया गया है। पक्षों का क्रम पक्ष-क्रम के सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित किया गया है। चौथी बात यह है कि प्रत्येक पक्ष को एकलों में विभाजित किया गया है। पक्षों में एकलों का निर्धारण सहायक क्रम के सिद्धान्तों द्वारा किया गया है। पाँचवीं बात यह है कि प्रत्येक एकल का विभाजन उप-एकलों में किया गया है। ज्ञान के सतत् एवं गतिशील विकास के कारण विभाजन की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

4. मूलभूत श्रेणियाँ :

रंगनाथन के अनुसार पाँच और केवल पाँच मूलभूत श्रेणियाँ हैं—व्यक्तित्व [P], पदार्थ [M], ऊर्जा [E], स्थान [S], काल [T] अथवा संक्षेप में PMEST। किसी भी विषय का प्रत्येक पक्ष तथा उसका प्रत्येक केन्द्र बिन्दु पाँच मूलभूत श्रेणियों में से किसी न किसी की अभिव्यक्ति होता है। मूर्त्तता वृद्धि के क्रम में पाँच मूलभूत श्रेणियाँ क्रमशः अपने योजक चिन्हों सहित इस प्रकार हैं—

मूलभूत श्रेणी	पक्ष का प्रतीक	योजक चिन्ह का नाम
काल (Time)	[T]	विषर्यस्त अल्प विराम (')
स्थान (Space)	[S]	बिन्दु (.)
ऊर्जा (Energy)	[E]	द्विबिन्दु (:)
पदार्थ (Matter)	[M]	अर्ध विराम (;)
व्यक्तित्व (Personality)	[P]	अल्पविराम (,)

(पाँच मूलभूत श्रेणियों (FFC : Five Fundamental Categories) की स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम BLIS-03, खण्ड 3, इकाई 7 : मूलभूत श्रेणियाँ, पक्ष विश्लेषण एवं पक्ष-क्रम को देखें।)

5. आवर्तन एवं स्तर :

यौगिक विषयों में पाँच मूलभूत श्रेणियों में से कुछ की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है। किसी एक विषय के पक्ष का विश्लेषण करने पर मूलभूत श्रेणियों की पुनरावृत्ति की अभिधारणा को आवर्तन (Round) कहा जाता है। एक ही मूलभूत श्रेणी के आवर्तन के अन्तर्गत उसकी पुनरावृत्ति की अभिधारणा को स्तर (Level) कहा जाता है।

5.1 आवर्तन की अभिव्यक्ति :

मूलभूत श्रेणी 'ऊर्जा' (Energy) की अभिव्यक्ति एक ही विषय में एक से अधिक बार हो सकती है। ऊर्जा की प्रथम अभिव्यक्ति तीन मूलभूत श्रेणियों [P], [M] तथा [E] की अभिव्यक्ति के प्रथम आवर्तन से समाप्त हो जाती है। एक ही विषय में ऊर्जा की द्वितीय, तृतीय इत्यादि अभिव्यक्ति को क्रमशः ऊर्जा द्वितीय आवर्तन [2E] तथा ऊर्जा तृतीय आवर्तन [3E] कहा जाता है।

मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व तथा पदार्थ की अभिव्यक्ति ऊर्जा के प्रथम, द्वितीय अथवा अन्य आवर्तन के पश्चात् होती है। इन अभिव्यक्तियों को क्रमशः व्यक्तित्व का द्वितीय आवर्तन [2P] तथा व्यक्तित्व का तृतीय आवर्तन [3P], पदार्थ का द्वितीय आवर्तन [2M] तथा पदार्थ का तृतीय आवर्तन [3M] कहा जाता है।

Agriculture, Medicine तथा Sociology मुख्य वर्गों में ऊर्जा पक्ष की एक से अधिक बार आवृत्ति हुई है।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Prevention of Alocholism in Slum Dwellers

वर्ग संख्या : = Y57 : 411 : 5

यहाँ Y	=	Sociology (M.C.)
Y57	=	Sociology (M.C.), Slum Dwellers [P]
Y57 : 411	=	Sociology (M.C.), Slum Dwelers [P], Alcoholis [E] (1st Round Energy Manifestation)
Y57 : 411 : 5	=	Sociology (M.C.), Slum Dwellers [P], Alcoholism [E], Prevention [2E] (2nd Round Energy Manifestation)

मूलभूत श्रेणी स्थान तथा काल की अभिव्यक्ति विषय के अन्तिम आवर्तन में होती है।

5.2 स्तर की अभिव्यक्ति :

प्रत्येक आवर्तन में मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व एवं पदार्थ का प्रयोग एक से अधिक बार हो सकता है। एक ही आवर्तन में व्यक्तित्व तथा पदार्थ की आवृत्ति की क्रमश: व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर [P2], व्यक्तित्व का तृतीय स्तर [P3] इत्यादि तथा पदार्थ का द्वितीय स्तर [M2], पदार्थ का तृतीय स्तर [M3] इत्यादि की संज्ञा दी जाती है।

Generalia Bibliography, Fine Arts, Literature तथा Law मुख्य वर्गों में व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी का एक से अधिक बार प्रयोग किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Code of Criminal Procedure in India

मुख्य वर्ग Z (Law) है।

मुख्य वर्ग Z का पक्ष-परिसूत्र निम्नवत है :

Z[P], [P2], [P3], [P4]

यहाँ [P] को भौगोलिक युक्ति द्वारा स्थान एकल अनुसूची से प्राप्त किया गया है। [P2], [P3], [P4] पक्षों का उल्लेख मुख्य वर्ग Z (Law) की अनुसूची में किया गया है।

उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष 'Personality' की चारों स्तरों पर अभिव्यक्ति की गई है।

उपर्युक्त आख्या की वर्ग संख्या Z44, 75, 15 है।

यहाँ, Z	=	Law (M.C.)
Z44	=	Law (M.C.), India [P] (1st Level Personality Manifestation)
Z44, 75	=	Law (M.C.), India [P], Criminal Action [P2] (2nd Level Personality Manifestation)
Z44, 75, 15	=	Law (M.C.), India [P], Criminal Action [P2], Procedure for Criminal Action [P3] (3rd Level Personality Manifestation) [P3]

मूलभूत श्रेणी ऊर्जा का प्रयोग एक आवर्तन में केवल एक बार ही किया जाता है।

स्थान एवं काल मूलभूत श्रेणी की आवृत्ति का प्रयोग केवल अन्तिम आवर्तन में पाया जाता है। ये दोनों श्रेणियाँ अन्तिम आवर्तन में दो स्तरों पर पाई जाती हैं।

NOTES

6. प्रणाली एवं विशेष

प्रणाली : किसी एक विशेष विचारधारा के अनुसार एक मूल विषय के प्रतिपादन को प्रणाली (System) कहा जाता है। प्रणाली पक्ष का निर्माण काल युक्ति अर्थात् प्रणाली की उत्पत्ति की तिथि (शताब्दी) द्वारा किया जाता है।

मुख्य वर्ग Physics में निम्नांकित प्रणालियों का उल्लेख किय गया है—

C	Physics
CK	Gravitation theory (यहाँ K इस विचारधारा की उत्पत्ति काल 1600 से 1699 को दर्शाता है)
CM	Kinetic theory
CM6	Ether theory
CM65	Electromagnetic theory
CM9	Electron theory
CM96	Radio activity
CN	Relativity
CN1	Quantum theory
CN2	Wave mechanics (statistical mechanics)

Physics, Agriculture, Medicine, Psychology, Education, History, Economics मुख्य वर्गों की अनुसूचियों के अंत में प्रणाली पक्ष की परिगणना की गई है। अन्य मुख्य वर्गों में प्रणाली पक्ष का सृजन काल युक्ति का प्रयोग कर किया जाता है। काल युक्ति द्वारा निर्मित प्रणाली को मूल वर्ग के समकक्ष माना जाता है। रंगनाथन ने इसको परिवर्धित मूल वर्ग प्रकार 1 (Amplified Basic Class Kind 1) की संज्ञा दी है। मुख्य वर्ग से सम्बन्धित पक्ष-परिसूत्र का प्रयोग प्रणाली मूल वर्ग में भी किया जाता है। वर्ग संख्या बनाते समय प्रणाली मूलवर्ग में व्यक्तित्व पक्ष के एकल के पहले अल्पविराम का प्रयोग सदैव किया जाना चाहिए, यद्यपि मुख्य वर्ग के पक्ष-परिसूत्र में अल्पविराम का प्रावधान नहीं है।

उदाहरण—

आख्या : Homoeopathic Treatment of Diarrhoea

मुख्य वर्ग Medicine = L

मुख्य वर्ग Medicine का पक्ष-परिसूत्र निम्नलिखित है—

L[P] : [E] [2P]

मुख्य वर्ग Medicine की अनुसूची में अन्त में प्रणाली पक्ष के अन्तर्गत Homoeopathy का उल्लेख किया गया है। (पृष्ठ 2.86) Homocopathy के लिए मूल वर्ग LL है। इस प्रकार उपर्युक्त आख्या की वर्ग संख्या होगी—

NOTES

LL, 25 : 452 : 6

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
LL	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet)
LL, 25	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Intestine [P]
LL, 25 : 452	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Intestine [P], Disease [E], Functional disorder [2P] ([E] cum [2P] together represents Diarrhoea)
LL, 25 : 452 : 6	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Intestine [P], Diarrhoea [E] cum [2P], Treatment [2E] cum [3P]

विशेष : किसी एक सम्पूर्ण विषय के विशिष्ट क्षेत्र की विशेषता का अध्ययन विशेष (Special) कहलाता है। कुछ मुख्य वर्गों के अंत में विशेष पक्ष का उल्लेख किया गया है। किसी मुख्य वर्ग के अंक के साथ अंक 9 के बाद रोमन दीर्घ अक्षर का प्रयोग कर विशेष पक्ष का सृजन किया जाता है। उदाहरणार्थ, मुख्य वर्ग E Chemistry में 'Biochemistry' को E9G विशेष पक्ष दिया गया है। विशेष को भी मूल वर्गों के समकक्ष माना जाता है। रंगनाथन ने इसे परिवर्धित मूल वर्ग प्रकार 2 (Amplified Basic Class Kind 2) की संज्ञा दी है। मुख्य वर्ग से सम्बन्धित पक्ष-परिसूत्र का प्रयोग विशेष मुख्य वर्ग में भी किया जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Small Industry Export

वर्ग संख्या : X9B, 8(A) : 545

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
X	=	Economics (M.C.)
X9B	=	Economics (M.C.), Small Scale (Special Facet)
X9B, 8(A)	=	Economics (M.C.), Small Scale (Special Facet), Industry [P]
X9B, 8(A) : 545	=	Economics (M.C.), Small Scale (Special Facet), Industry [P], Export [E] cum [2P]

जब किसी ग्रन्थ का वर्गीकरण करने के लिए प्रणाली एवं विशेष दोनों का प्रयोग किया जाता है तब प्रणाली का उल्लेख विशेष से पहले किया जाता है और दोनों को अल्पविराम (,) से पृथक् किया जाता है। यदि 'प्रणाली' एवं 'विशेष' एक के बाद आ रहे हैं तो 'विशेष' पक्ष में से मुख्य वर्ग का अंक छोड़ देना चाहिए।

उदाहरण—

आख्या : Ayurvedic Treatment of old age skin diseases

वर्ग संख्या : LB, 9E, 87 : 4 : 6

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
LB	=	Medicine (M.C.), Ayurveda (System Facet)
LB, 9E	=	Medicine (M.C.), Ayurveda (System Facet), Old Ag (Special Facet)
LB, 9E, 87	=	Medicine (M.C.), Ayurveda (System Facet), Old Ag (Special Facet), Skin [P]
LB, 9E, 87 : 4	=	Medicine (M.C.), Ayurveda (System Facet), Old Ag (Special Facet), Skin [P], Disease [E]
LB, 9E, 87 : 4 :6	=	Medicine (M.C.), Ayurveda (System Facet), Old Ag (Special Facet), Skin [P], Disease [E], Treatment [2E,

NOTES

7. सामान्य एकल :

ऐसा एकल विचार जो किसी भी बुनियादी विषय अथवा यौगिक विषय में एक ही एकल पद द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है तथा एक ही संख्या द्वारा निरूपित किया जाता है उसे सामान्य एकल (C1 : Common Isolates) कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, सामान्य एकल वह एकल है जो समस्त मुख्य वर्गों में समान है।

सामान्य एकल को दो श्रेणियों में रखा जाता है—

पूर्वस्थापक सामान्य एकल (ACI : Anteriorising Common Isolates) तथा,

पश्चस्थापक सामान्य एकल (PCI : Posteriorising Common Isolates)

कोलन क्लैसिफिकेशन में उपर्युक्त सामान्य एकलों को निम्नलिखित कारणों से दो श्रेणियों में रखा गया है।

पूर्वस्थापक सामान्य एकल को विषय के सामान्य व्यवहार से पूर्व प्रयुक्त किया जाता है। इस श्रेणी में परिचयात्मक सामग्री जैसे—शब्दकोश, विश्वकोश, ऐतिहासिक सामग्री, सामाजिक पत्र-पत्रिकाएँ, सम्मेलन कार्यवाही इत्यादि एकलों को सम्मिलित किया गया है। इन एकलों का पूर्वस्थापक मान, प्रलेख संग्रह के व्यवस्थापन में सहायक होता है।

पश्चस्थापक सामान्य एकल के मान का पूर्वस्थापक होना आवश्यक नहीं है। परिचयात्मक सामग्री नहीं होने के कारण ये एकल मूलवर्ग के साथ बाद में लगाये जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी विषय के व्यवसायिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित एकल के लिए पूर्वस्थापक मान का होना आवश्यक नहीं है।

आइए अब हम सामान्य एकलों के दो प्रकारों की विवेचना करते हैं—

7.1 पूर्वस्थापक सामान्य एकल :

पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को किसी योजक चिन्ह के मूल वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है। पूर्वस्थापक सामान्य एकल से युक्त वर्ग संख्या को सामान्य वर्ग संख्या पर वरीयता प्रदान की जाती है।

पूर्वस्थापक सामान्य एकल तीन प्रकार के हैं—

(1) स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

(2) केवल स्थान पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

(3) केवल काल पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोग में आने वाले पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का उल्लेख कोलन क्लैसिफिकेशन के पृष्ठ 2.5 पर किया गया है। इस सूची को देखने पर ज्ञात होता है कि कुछ ACls का अपना पक्ष-परिसूत्र है। पक्ष-परिसूत्र का स्पष्टीकरण नियम भाग में पृष्ठ 1.45 पर किया गया है। इन सामान्य एकलों के पक्ष-परिसूत्र का विवरण एक-एक कर नीचे दिया गया है—

ACI 'k : encyclopedia' (विश्वकोश) का पक्ष-परिसूत्र : k[P], [P2]

यहाँ, [P] = वर्णित विषय का भौगोलिक विस्तार क्षेत्र (भौगोलिक युक्ति द्वारा प्राप्त)

[P2] = उत्पत्ति का काल (काल युक्ति द्वारा प्राप्त)

ACI 'm : periodical' (सामयिकी) का पक्ष-परिसूत्र : m[P], [P2]

यहाँ, [P] = प्रायोजित करने वाली मूल संस्था का देश अथवा स्थान (भौगोलिक युक्ति द्वारा प्राप्त)

[P2] = उत्पत्ति का काल (काल युक्ति द्वारा प्राप्त)

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Indian Journal of Botany, 1978

वर्ग संख्या : Im44, N78

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
Im	=	Botany (M.C.), Journal (ACI)
Im44	=	Botany (M.C.), Journal (ACI), India [P]
Im44, N78	=	Botany (M.C.), Journal (ACI), India [P], Year of Epoch i.e., 1978 [P2]

ACI 'p : conference' (सम्मेलन) का पक्ष-परिसूत्र : p[P], [P2]

यहाँ, [P]	=	वर्णित विषय का भौगोलिक विस्तार क्षेत्र (भौगोलिक युक्ति द्वारा प्राप्त)।
[P2]	=	सम्मेलन आयोजन का वर्ष, यदि एक ही बार है, (काल युक्ति द्वारा प्राप्त तीन अंकों में)। यदि सार्वधिक है। तो अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में उत्पत्ति का काल।

स्व-प्रगति परीक्षण

1. कोलन क्लासिफिकेशन में वर्गीकरण की प्रक्रिया किन पाँच मूलभूत श्रेणियों पर आधारित है?

.....

.....

.....

.....

उदाहरण—

आख्या : Procedings of Indian National Conference on Biochemistry held in 1989 in New Delhi.

वर्ग संख्या : E9Gp44, N89

यहाँ, E	=	Chemistry (M.C.)
E9G	=	Chemistry (M.C.), Biochemistry (Special Facet)
E9Gp	=	Chemistry (M.C.), Biochemistry (Special Facet), Conference Proceedings (ACI)
E9Gp44	=	Chemistry (M.C.), Biochemistry (Special Facet), Conference Proceedings (ACI), India [P] (The Geographical area of Purview got by Geographical Device)
E9Gp44, N89	=	Chemistry (M.C.), Biochemistry (Special Facet), Conference Proceedings (ACI), India [P], Year of the Conference [P2] (got by Chronological Device)

NOTES

ACI 'w' : Biography (जीवनचरित) को निम्नांकित विभागों को पुनः विभाजित किया गया है—

General (सामान्य)

Individual (व्यक्तिगत)

Autobiography (आत्मचरित)

Ana (एना)

Letters (पत्र)

उपर्युक्त विभाजनों का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

General (सामान्य) w [S], [T]

यहाँ, [S] = स्थान

[T] = काल

Individual (व्यक्तिगत)	w[P]
Autobiography (आत्मचरित)	w[P], 1
Ana (एना)	w[P], 2
Letters (पत्र)	w[P], 4

यहाँ, [P] = जीवन चरित कोशीय व्यक्ति का जन्म वर्ष

व्यक्तिगत जीवनचरित के लिए जन्म वर्ष तीन अंकों में तथा सामूहिक जीवनचरित के लिए अन्तिम प्रभावी दशक (LED : Last Effective Decade) लिया जायेगा।

ACI 'x : Works' (कृतियाँ) निम्नांकित दो भागों में विभाजित है—

General (सामान्य)

Individual (व्यक्तिगत)

उपर्युक्त विभाजनों का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

General (सामान्य)	x [S], [T]
Individual (व्यक्तिगत)	x [P]

यहाँ, [P] = लेखक के जन्म वर्श को काल युक्ति द्वारा प्राप्त करेंगे। अकेले लेखक का जन्म वर्ष तीन अंकों में तथा सामूहिक लेखकों के लिए जन्म वर्ष का अन्तिम प्रभावी दशक (LED) लिया जायेगा।

स्व-प्रगति परीक्षण

2. रंगनाथन ने विषय-जगत का विभाजन किन आधारों पर किया है?

.....

.....

.....

.....

केवल स्थान पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल स्थान पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को दो विभागों में विभाजित किया गया है—

r Administrative Report (प्रशासनिक प्रतिवेदन)

s Statistics (if Periodical) सांख्यिकी (यदि सावधिक प्रकाशन हो)

NOTES

ACI's : Statistics' (सांख्यिकी) के साथ काल पक्ष संलग्न करने का प्रावधान है।

उदाहरण—

आख्या : India's Population Statistics of 1989.

वर्ग संख्या : Y : 5.44sN89

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
Y : 5	=	Sociology (M.C.), Demography [E] (i.e., Population)
Y : 5.44	=	Sociology (M.C.), Demography [E], India [S]
Y : 5 : 44s	=	Sociology (M.C.), Demography [E], India [S], Statistics (ACI)
Y : 5.44sN89	=	Sociology (M.C.), Demography [E], India [S], Statistics (ACI), 1989 [T] (got by Chronological Device)

केवल काल पक्ष के बादं प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

केवल काल पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को निम्नलिखित विभाजनों में विभाजित किया गया है—

s	Statistics (if stray) (सांख्यिकी (यदि छुट-पुट हो))
t	Commission report (आयोग प्रतिवेदन)
t4	Survey (सर्वेक्षण)
t5	Plan (योजना)
t6	Ideal (आदर्श)
v	Source material (स्रोत सामग्री)
v5	Literature (साहित्य)
v6	Tradition (परम्परा)
v7	Archaeology, etc., (as in V History) (पुरातत्त्व इत्यादि (जैसा कि V History) में))
v8	Archive (as in V History) (अभिलेखागार (जैसा कि V History में))

ये विभाजन केवल काल एकल के पश्चात् ही जोड़े जाते हैं।

उदाहरण—

आख्या : Survey of Agricultural Libraries in India, 1989.

वर्ग संख्या : 24(J).44 'N89t4'

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
24	=	Library Science (M.C.), Business Library [P]
24(J)	=	Library Science (M.C.), Agricultural Library [P] (The Isolate Number for Agriculture got by Subject Device)

24(J).44	=	Library Science (M.C.), Agricultural Library [P], India [S] (Taken from Space Isolate Schedule)
24(J).44 'N89	=	Library Science (M.C.), Agricultural Library [P], India [S], 1989 [T] (Taken from Time Isolate Schedule)
24(J).44 'N89t4	=	Library Science (M.C.), Agricultural Library [P], India [S], 1989 [T], Survey (ACI)

7.2 पश्चस्थापक सामान्य एकल :

पूर्वस्थापक सामान्य एकलों (ACIs) के विपरीत, पश्चस्थापक सामान्य एकलों (PCIs) को मूल वर्ग संख्या के साथ संलग्न करने के लिए योजक चिन्ह की आवश्यकता होती है। पश्चस्थापक सामान्य एकल (PCI) को किसी वर्ग के साथ जोड़ने पर उस वर्ग का विस्तार कम हो जाता है। PCI से निर्मित वर्ग मौलिक वर्ग के पश्चात् व्यवस्थित किया जाता है, अर्थात् यह मूल वर्ग के उपरान्त आता है।

पक्ष-परिसूत्र के आधार पर मूल वर्ग की वर्ग संख्या निर्मित करने के बाद ही PCI जोड़ा जाता है। परवर्ती पश्चस्थापक सामान्य एकल (PCI) दो प्रकार के हैं—

(1) Energy Common Isolate (ऊर्जा सामान्य एकल), तथा

(2) Personality Common Isolate (व्यक्तित्व सामान्य एकल)

ऊर्जा सामान्य एकल के लिए योजक चिन्ह के रूप में द्विबिन्दु (:) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Criticism of Hindi Poetry

वर्ग संख्या : O152, 1 : g

यहाँ, O	=	Literature (M.C.)
O152	=	Literature (M.C.), Hindi Language [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
O152, 1	=	Literature (M.C.), Hindi Language [P], Poetry [P2]
O152, 1 : g	=	Literature (M.C.), Hindi Language [P], Poetry [P2], Criticism (PCI) (Energy Common Isolate)

व्यक्तित्व सामान्य एकल का प्रयोग स्थान एकल के बाद योजक चिन्ह अल्पविराम (,) लगाकर किया जाता है। व्यक्तित्व सामान्य एकल का पक्ष-परिसूत्र निम्नवत है—

[P] पक्ष में स्थानीय संख्या के लिए वर्ण युक्ति द्वारा अस्थानीय संख्या के लिए अंक 9 में काल युक्ति जोड़कर वर्ग संख्या का निर्माण किया जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Delhi College of Engineering

वर्ग संख्या : D.4481, e4, D

यहाँ, D	=	Engineering (M.C.)
D.4481	=	Engineering (M.C.), Delhi [S] (Taken from Space Isolate Schedule)

NOTES

D.4481, c4	=	Engineering (M.C.), Delhi [S], Higher Educational Institution (PCI)
D.4481, c4, D	=	Engineering (M.C.), Delhi [S], Higher Educational Insittution (PCI), Delhi College of Enginnering [P] (Here the Isolate in [P] for the PCI 'e4' is got by Alphabetical Device)

आख्या : American Library Association (found in 1876)

वर्ग संख्या : 2.7, g, 9M76

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
2.7	=	Library Science (M.C.), America [S] (Tanken from Space Isolate Schedule)
2.7 g	=	Library Science (M.C.), America [S], Learned Society (PCI)
2.7, g, 9M76	=	Library Science (M.C.), America [S], Learned Society (PCI, Founded in 1876 [P] (The Isolate in [P] for the PCI 'g' is got by Chronological Device and it preceded by 9)

टिप्पणी : उपर्युक्त दो उदाहरणों में प्रथम, एक स्थानीय संस्था है, अत: [P] पक्ष के एकल को वर्ण युक्ति द्वारा प्राप्त किया गया है। द्वितीय, एक अस्थानीय संस्था है, अत: [P] पक्ष के एकल को काल युक्ति द्वारा प्राप्त किया गया है।

[P2] तथा [E] पक्षों को भी आवश्यकतानुसार (PCI) के साथ संलग्न किया जा सकता है। [P2] तथा [E] पक्षों के एकल, मुख्य वर्ग "V History" के समान हैं।

उदाहरण—

आख्या : Functions of the Director of National Library (Calculta)

वर्ग संख्या : 213.44, d, N03, 1 : 3

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
213	=	Library Science (M.C.), National Library [P]
213.44	=	Library Science (M.C.), National Library [P], India [S]
213.44, d	=	Library Science (M.C.), National Library [P], India [S], Institution (PCI)
213.44, d, 9N03	=	Library Science (M.C.), National Library [P], India [S], Institution (PCI), National Library Calcutta [P] (The isolate in [P] for the PCI 'd' is got by Chronological Device and it is preceded by 9)
213.44, d, 9N03, 1	=	Library Science (M.C.), National Library [P], India [S], Institution (PCI), National Library Calcutta [P], Director [P2] (Taken from Main Class 'V History')
213.44, d, 9N03, 1 : 3	=	Library Science (M.C.), National Library [P], India [S], Institution (PCI), National Library Calcutta [P] Director [P2], Function [E] (Taken from Main Class 'V History')

NOTES

अभी तक हमने सरल तथा यौगिक या संयुक्त वर्गों का वर्णन किया है। इस खण्ड में मिश्र (complex) वर्गों का वर्णन किया जायेगा। दो या अधिक वर्गों के पारस्परिक सम्बन्धों द्वारा निर्मित वर्ग को मिश्र वर्ग की संज्ञा दी जाती है। संघटक वर्गों को दशा (Phase) तथा उनके सम्बन्धों को दशा सम्बन्ध (Phase Relation) कहा जाता है।

दशा सम्बन्ध दो या अधिक वर्गों के मध्य, मुख्य वर्ग के एक एवं उसी पक्ष के एकलों के मध्य में अथवा एकलों की एक एवं उसी पंक्ति में घटित होता है। अतएव, सम्बन्धों के निम्न तीन स्तर हैं—

(i) अन्तर-वर्ग अथवा अन्तर-विषय दशा सम्बन्ध (Inter-class or subject Phase Relation)

(ii) अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध (Intra-facet Phase Relation)

(iii) अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra-array Phase Relation)

प्रत्येक स्तर के अन्तर्गत पाँच प्रकार के सम्बन्ध हो सकते हैं—

(i) सामान्य-सम्बन्ध (Genral Relation)	:	सम्बन्ध जो सामान्य है अर्थात् कम या अधिक व्यापक तथा जिसका अनुसूची में अंकित कोई प्रकार नहीं है।
(ii) झुकाव सम्बन्ध (Bias Relation)	:	जहाँ दशा 1 का झुकाव दशा 2 पर हो।
(iii) तुलना सम्बन्ध (Comparison Relation)	:	जहाँ दशा 1 की तुलना दशा 2 से की जाती है।
(iv) भेद सम्बन्ध (Difference Relation)	:	जहाँ दो दशाओं के मध्य अन्तर की चर्चा की गई है।
(v) प्रभाव सम्बन्ध (Influence Relation)	:	जब एक दशा दूसरी दशा को प्रभावित करती है।

दशा सम्बन्ध का सामान्य योजक चिन्ह शून्य (0) तथा एक उपर्युक्त सम्बन्ध संकेतक है। इसका उल्लेख अनुसूची के अध्याय 6 (पृष्ठ 2.28) पर किया गया है। विभिन्न प्रकार के दशा सम्बन्धों की जानकारी कुछ विनिर्मित उदाहरणों की सहायता से प्राप्त की जा सकती है।

(क) अन्तर-वर्ग अथवा अन्तर-विषय दशा सम्बन्ध

दो या अधिक मुख्य वर्गों अथवा विषयों के मध्य पाँच प्रकार के सम्बन्ध हो सकते हैं—

(i) सामान्य विषय दशा सम्बन्ध

आख्या : Relation between Philosophy and Religion

वर्ग संख्या : Q0aR

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
0a	=	Connecting Symbol indicating General Relation between two subjects or Main Classes
R	=	Philosophy (M.C.)

टिप्पणी : उपर्युक्त आख्या में Philosophy मुख्य वर्ग Religion से पहले है किन्तु वर्ग संख्या में Religion का अंकन Philosophy के अंकन से पहले हैं। यह Rule No. 62al (पृष्ठ 1.55) के अनुसार है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि "जिस संघटक की वर्ग संख्या दूसरे से क्रमबोध मान में लघु है, उसका प्रयोग प्रथम

NOTES

दशा के रूप में किया जाता है।" अनुसूची में मुख्य वर्ग Religion मुख्य वर्ग Philosophy से पहले दिया गया है। अतएव वर्ग संख्या निर्मित करते समय मुख्य वर्ग Religion का प्रयोग मुख्य वर्ग Philosophy से पहले किया जायेगा।

(ii) झुकाव विषय दशा सम्बन्ध

आख्या : Mathematics for Economics

वर्ग संख्या : B0bX

यहाँ, B	=	Mathematics (M.C.)
0b	=	Connecting symbol indicating Bias Relation between two Subjects or Main Classes
X	=	Economics (M.C.)

टिप्पणी : उपर्युक्त आख्या से यह स्पष्ट है कि इस प्रलेख में Mathematics विषय विशेष रूप से अर्थशास्त्रियों के लिए प्रस्तुत किया गया है। दूसरे शब्दों में इसका झुकाव Economics विषय की ओर है। झुकाव विषय दशा सम्बन्ध का संकेत कर इस प्रकार की पुस्तकों को Mathematics की सामान्य पुस्तकों से अलग किया जा सकता है।

(iii) तुलना दशा सम्बन्ध

आख्या : Botany Compared to Zoology

वर्ग संख्या : 10cK

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
0c	=	Connecting Symbol indicating Comparison Phase Relation between two Subjects or Main Classes
K	=	Zoology (M.C.)

(iv) भेद विषय दशा सम्बन्ध

आख्या : Differcnce between Engineering and Technology

वर्ग संख्या : D0dF

यहाँ, D	=	Engineering (M.C.)
0d	=	Connecting symbol indicating Difference Phase Relation between two Subjects or Main Classes
F	=	Technology (M.C.)

(v) प्रभाव विषय दशा सबन्ध

आख्या : Influence of Religion on Working Class

वर्ग संख्या : Y490gQ

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
Y49	=	Sociology (M.C.), Working Class [P]

0g	=	Connecting symbol indicating Influencing Phase Relation
Q	=	Religion (M.C.)

NOTES

प्रभाव सम्बन्ध का प्रयोग करते समय, प्रभावित दशा अर्थात् Working Class (Y49) के बाद प्रभावकारी दशा अर्थात् Religion (Q) का प्रयोग किया जायेगा।

(ख) अंत:पक्ष दशा सम्बन्ध

एक मुख्य वर्ग के पक्ष के एकलों के मध्य स्थिर अन्तर-सम्बन्ध को अंत:पक्ष दशा सम्बन्ध कहा जाता है। अंत:पक्ष दशा सम्बन्ध पाँच प्रकार के होते हैं—

(i) सामान्य अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध

आख्या : Study of Administration and Circulation in Academic Libraries

वर्ग संख्या : 23 : 60 : 8

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
3	=	Academic Libraries [P]
6	=	Circulation [E]
0j	=	Connecting symbol indicating Intra-facet General Relation
8	=	Administration [E]

(ii) झुकाव अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध

आख्या : Electronics for Nuclear Engineers

वर्ग संख्या : D650k7

यहाँ, D	=	Engineering (M.C.)
65	=	Electronics [P]
0k	=	Connecting symbol indicating Intra-facet Bias Relation
7	=	Nuclear Engineering [P]

(iii) तुलना अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध

आख्या : Jainism Compared to Buddhism

वर्ग संख्या : Q30m4

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
3	=	Jainism [P]
0m	=	Connecting symbol indicating Intra-facet Comparison Relation
4	=	Buddhism [P]

NOTES

(iv) भेद अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध

आख्या : Difference between Adult Education and University Education

वर्ग संख्या : T30n4

यहाँ, T	=	Education (M.C.)
3	=	Adult [P]
0n	=	Connecting symbol indicating Intra-facet Difference Relation
4	=	University [P]

(v) प्रभाव अंत: पक्ष दशा सम्बन्ध

आख्या : Influence of Christianity on Buddhism

वर्ग संख्या : Q40r6

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
4	=	Buddhism [P]
0r	=	Connecting symbol indicating Intra-facet Influence Relation
6	=	Christianity [P]

(ग) अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

एक पक्ष की समान पंक्ति के दो एकलों के मध्य अन्तर-सम्बन्ध को अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध कहा जाता है। अत: पंक्ति दशा सम्बन्ध पाँच प्रकार के हैं—

(i) सामान्य अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

आख्या : General Study of Insane Criminal

वर्ग संख्या : S630t5

यहाँ, S	=	Psychology (M.C.)
6	=	Abnormal [P]
3	=	Insane [P]
0t	=	Connecting symbol indicating Intra-array General Relation
5	=	Criminal [P]

(ii) झुकाव अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

आख्या : Chemical Method used for Examination of Urine

वर्ग संख्या : L : 4 : 4030u5

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)

NOTES

4	=	Disease [E]
4	=	Pathology [2E] cum [3P]
03	=	Chemical Method [2E] cum [3P]
0u	=	Connecting symbol indicating Intra-array Bias Relation
5	=	Examination of Urine [2E] cum [3P]

(iii) तुलना अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

आख्या : Rural Sociology Compared to Urban Sociology

वर्ग संख्या : Y310v3

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
31	=	Rural [P]
0v	=	Connecting symbol indicating Intra-array Comparison Relation
3	=	Urban [P]

(iv) भेद अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

आख्या : Difference between Saivism and Saktaism

वर्ग संख्या : Q230w5

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
23	=	Saivism [P]
0w	=	Connecting symbol indicating Intra-array Difference Relation
5	=	Saktaism [P]

(v) प्रभाव अंत: पंक्ति दशा सम्बन्ध

आख्या : Influence of Humidity on Temperature

वर्ग संख्या : U2840y5

यहाँ, U	=	Geography (M.C.)
284	=	Temperature [P]
0y	=	Connecting symbol indicating Intra-array Influence Relation
5	=	Humidity [P]

पाँच प्रकार के सम्बन्धों के अतिरिक्त एक उपकरण दशा सम्बन्ध (Tool Phase Relation) भी है। इसका निरूपण विषय युक्ति द्वारा द्विबिन्दु (:) लगाकर मुख्य वर्ग में जोड़कर किया जाता है। उदाहरण के लिए Geoghysics विषय में यह अन्तर्निहित है कि Physics का उपयोग उपकरण के रूप में Geology के लिए किया गया है अर्थात् दो विषयों के मध्य उपकरण दशा सम्बन्ध हैं। अत: Geophysics विषय की वर्ग संख्या होगी—

NOTES

H : (C)

यहाँ, H = Geology (M.C.)

C = Physics (M.C.)

9. कोलन क्लैसिफिकेशन (सी.सी.) में युक्तियाँ :

कोलन क्लैसिफिकेशन में किसी पक्ष की वर्ग संख्या को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न युक्तियाँ (Devices) का प्रावधान है। वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त कुछ महत्त्वपूर्ण युक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) काल युक्ति (CD : Chronological Device)

(2) भौगोलिक युक्ति (GD : Geographical Device)

(3) विषय युक्ति (SD : Subject Device)

(4) स्मृति सहायक युक्ति (MD : Mnemonic Device)

(5) वर्ण युक्ति (AD : Alphabetical Device)

(6) अध्यारोपण युक्ति (SID : Superimposition Device)

कोलन क्लैसिफिकेशन में युक्तियों की सहायता से नवीन एकलों का सृजन किया जाता है। युक्तियाँ वर्गीकरणकर्ता को स्वायत्तता प्रदान करती हैं। युक्तियों के प्रयोग से अनुसूचियों में एकलों की संख्या को कम किया जा सकता है तथा एकलों की अनावश्यक पुनरावृत्ति को रोका जा सकता है। युक्तियों का विवरण निम्नलिखित है—

9.1 काल युक्ति :

काल युक्ति के अन्तर्गत काल एकल अनुसूची से काल एकलों का प्रयोग कर नवीन एकलों का निर्माण किया जाता है। 'Mathematics', 'Physics', 'Medicine', 'Religion', 'Psychology', 'Education', 'History' तथा 'Economics' मूल वर्गों में प्रणाली पक्ष का निर्माण इस युक्ति द्वारा किया जाता है।

उदाहरण—

CM65 = Electromagnetic Theory

यहाँ, C = Physics (M.C.)

M65 = 1865 (Taken from Time Isolate Schedule)

The year 1865 is the epoch of origin of the Electromagnetic Theory

LB = Ayurveda

यहाँ, L = Medicine (M.C.)

B = 9999 to 1000 BC

SN = Gestalt Psychology

NOTES

यहाँ, S	=	Psychology (M.C.)
N	=	1900 to 1999 AD

TN1 = Montessori School

यहाँ, T	=	Education (M.C.)
N1	=	1910 to 1919

XN19 = Technocracy

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
N19	=	1919

इस युक्ति के प्रयोग के लिए अनुसूची अथवा नियम भाग में निर्देश दिये गये हैं।

उदाहरण—

मुख्य वर्ग, V History, एकल 4A[P2] के अन्तर्गत विशिष्ट राजनैतिक दल का अंकन काल युक्ति द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार,

Indian National Congress की वर्ग संख्या होगी = V44, 4M89

यहाँ, V	=	History (M.C.)
44	=	India [P]
4	=	Specific Parties [P2]
M89	=	1889 Year of epoch of the Indian National Congress Derived by CD

इसी प्रकार मुख्य वर्ग '2 Library Science' (पृष्ठ 1.64) के नियम भाग में वर्गीकरण की विभिन्न प्रणालियों का उल्लेख काल युक्ति द्वारा किया जाता है।

2 : 51M	Decimal
2 : 51M9	Expansive
2 : 51M96	UDC
2 : 51N	LC
2 : 51N3	Colon
2 : 51N34	Bibliographic

उपर्युक्त उदाहरणों में 2 : 51 Library Classification का प्रतिनिधित्व करता है। ऊर्जा एकल '51 Classification' में काल युक्ति का प्रयोग कर प्रत्येक प्रणाली को वैयक्तिकता प्रदान की गई है।

NOTES

काल युक्ति के प्रयोग का उल्लेख 'B Mathematics', 'N Fine Art', 'P Linguistics', 'Q Religion', 'O Literature' मुख्य वर्गों तथा भाषा एकल की अनुसूचियों में किया गया है।

z41 = Sinology

यहाँ, z = Generalia (M.C.)

41 = China (Taken from Space Isolate Schedule)

V7 = American History

यहाँ, V = History (M.C.)

7 = America (Taken from Space Isolate Schedule)

Z44 = Indian Law

यहाँ, Z = Law (M.C.)

44 = India (Taken from Space Isolate Schedule)

इसी प्रकार प्रामाणिक वर्गों 'NA to NR Fine Arts' के अन्तर्गत व्यक्तित्व पक्ष का निर्माण भौगोलिक युक्ति (GD) द्वारा किया गया है।

उदाहरण—

NR5 = European Music

यहाँ, NR = Music (M.C.)

5 = Europe (Taken from Space Isolate Schedule)

NQ7 = American Paintings

यहाँ, NQ = Painting (M.C.)

7 = America (Taken from Space Isolate Schedule)

मुख्य वर्गों 'Q Religion', 'R Philosophy' तथा 'Y Sociology' के अन्तर्गत व्यक्तित्व पक्ष का निर्माण भौगोलिक युक्ति द्वारा किया गया है।

उदाहरण—

Q8451 = Zoroastriarrism

यहाँ, Q = Religion (M.C.)

8 = Other Religions [P]

45 = Persia (Taken from Space Isolate Schedule)

1 = Zoroastrianism (by using Favoured Category Device)

R842 = Japanese Philosophy

NOTES

यहाँ, R	=	Philosophy (M.C.)
8	=	Other Systems (Canonical Division)
42	=	Japan (Taken from Space Isolate Schedule)

Y753 = French Society

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
7	=	Race as a Social Group [P]
53	=	France (Taken from Space Isolate Schedule)

मुख्य वर्ग 'P Linguistics' की अनुसूची में विशिष्ट क्षेत्र से सम्बन्धित भाषा के विभिन्न रूपों का निर्माण भौगोलिक युक्ति द्वारा किया गया है। विस्तृत विवरण के लिए कोलन क्लैसिफिकेशन के नियम भाग (पृष्ठ 1.105) का अध्ययन किया जा सकता है।

उदाहरण—

P152, 9D445221 = Mirzapuri dialect of Hindi

यहाँ, P	=	Linguistics (M.C.)
152	=	Hindi [P]
9D	=	Dialect [P2]
445221	=	Mirzapur (Taken from Space Isolate Schedule)

मुख्य वर्गों के अतिरिक्त, भौगोलिक युक्ति का प्रयोग पूर्वस्थापक सामान्य एकलों (ACI) k : encyelopaedia, m : periodieal, n : serial, p : conference proceedings, v : history तथा w : biography में भी किया जा सकता है। इन सामान्य एकलों में व्यक्तित्व पक्ष [P1] का निर्माण भौगोलिक युक्ति द्वारा किया जाता है।

उदाहरण—

k7, M29 = Encyclopedia Americann

यहाँ, k	=	Encyclopaedia (ACI)
7	=	America (Taken from Space Isolate Schedule)
M29	=	Starting Period of Publication Americana (got by CD)

टिप्पणी : कोलन क्लैसिफिकेशन के अनुच्छेद 21 (पृष्ठ 1.45) का अध्ययन करें।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि काल तथा भौगोलिक दोनों युक्तियों में काल एवं स्थान एकलों का प्रयोग 'काल पक्ष' अथवा 'स्थान पक्ष' के रूप में नहीं किया जाता है। इन एकलों का प्रयोग एकलों के उपविभाजन के लिए निर्देशानुसार किया जा सकता है।

NOTES

9.3 विषय युक्ति :

विषय युक्ति (Subject Device) में अन्य विषयों की उचित वर्ग विशेषताओं का प्रयोग नये एकलों के निर्माण अथवा उनके उपविभाजन के लिए किया जाता है। एकलों अथवा उपएकलों के व्यष्टीकरण के लिए भी इस युक्ति का प्रयोग किया जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन के नियम भाग अथवा अनुसूची में इस युक्ति के प्रयेग के लिए निर्देश दिये गये हैं। Library Science, Economics, History एवं Law मुख्य वर्गों में व्यक्तित्व पक्ष के रूप में विषय युक्ति का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण—

24(Q) = Religious Libraries

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
4	=	Business Libraries [P]
(Q)	=	Religion (M.C.) (used as Subject Device)

D6, 8(M14) = Printing Machine

यहाँ, D	=	Engineering (M.C.)
6	=	Mechanical engineering [P]
8	=	Machine Tool [2P]
(M14)	=	Printing (derived by using Subject Device, taking isolate M14 from the Main Class M Useful Arts)

X8(M7) = Textile Industry

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
8	=	Industry [P]
(M7)	=	Textile (derived by using Subject Device, taking isolate M7 from the Main Class M Useful Arts)

कोलन क्लैसिफिकेशन में एक विषय को ऊर्जा पक्ष के रूप में प्रयोग करने का भी प्रावधान है। कुछ विषयों Mathematics, Philosophy, Law को युक्ति अर्थात् समस्या अथवा कार्यवाही के रूप में प्रयोग किया जाता है। ऐसी दशा में, एक विशिष्ट विषय के अनुप्रयोगों को दर्शाने के लिए विषय युक्ति का प्रयोग ऊर्जा पक्ष के रूप में किया जाता है।

उदाहरण—

C : (B) = Mathematical Physics

यहाँ, C	=	Physics (M.C.)
(B)	=	Mathematics (M.C.) (used as Energy Isolate)

अनेक स्थानों पर विषय युक्ति का प्रयोग स्पष्टीकरण के उद्देश्य के लिए किया जाता है। इस युक्ति का प्रयोग Organic Chemistry में कुछ पदार्थों, Architecture में भवनों, Sculpture में विषयों, Education में विषयों की प्रशिक्षण तकनीकों तथा Economics में उद्योगों के व्यष्टीकरण के लिए किया जाता है। विषय युक्ति का प्रयोग स्थान एकल अनुसूची में भी किया जाता है।

उदाहरण—

Muslim Countries = 1(Q7)

9.4 स्मृति सहायक युक्ति :

स्मृति सहायक का अर्थ स्मृति की सहायता करने की कला है। समस्त वर्गों में विशिष्ट अवधारणाओं को दर्शाने के लिए विशिष्ट अंक अथवा अंकों के प्रयोग को स्मृति सहायक युक्ति कहा जाता है। उदाहरणार्थ, अंक 1 का प्रयोग ईश्वर, विश्व, एक आयाम अथवा रेखा इत्यादि के लिए किया जाता है। नियम भाग (पृष्ठ

1.32) में समान मौलिक तत्त्वों की सूची दी गई है। यह एक शक्तिशाली युक्ति है, जिसके प्रयोग से वर्गीकरणकर्ता को असीम स्वायत्तता प्राप्त होती है।

उदाहरण—

2 : 51 : 2= Structure of Classification

यहाँ, 2	=	Library Science (M.C.)
51	=	Classification (from [E][2P])
2	=	Structure (Seminal Mnemonic, sec Page 1.32 of CC)

Z44,81 : 3 = Functions of Indian Supreme Court

यहाँ, Z	=	Law (M.C.)
44	=	India [P] (taken from Space Isolate Schedule)
81	=	Supreme Court [P2]
3	=	Functions (Seminal Mnemonic, see Page 1.32 of CC)

स्व-प्रगति परीक्षण

3. आवर्तनों की अभिव्यक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

9.5 वर्ण युक्ति :

एक एकल संख्या के निर्माण के लिए अथवा उसे आगे बढ़ाने के लिए वर्ण युक्ति (AD : Alphabetical Device) का प्रयोग किया जाता है। इस युक्ति में, व्यक्ति अथवा वस्तु अथवा उत्पादन का व्यष्टीकरण करने के लिए व्यक्ति अथवा वस्तु अथवा उत्पादन के नाम के एक, दो या तीन अक्षरों का प्रयोग किया जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन में साहित्यिक एवं वरेण्य लेखकों की कृतियों इत्यादि, मशीनों के नामों, कृषकीय उत्पादों, वायरस, बैक्टीरिया इत्यादि के वैयक्तिकरण या व्यष्टीकरण के लिए वर्णक्रम युक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस युक्ति का प्रयोग तभी किया जाता है जब किसी अन्य युक्ति का प्रयोग सम्भव न हो। इस युक्ति के प्रयोग के लिए नियम विभिन्न भागों तथा अनुसूचियों में यथा स्थान निर्देश सहित दिये गये हैं।

उदाहरण—

J381B = Basmati Rice

यहाँ, J	=	Agriculture (M.C.)
381	=	Rice [P]
B	=	Basmati (Alphabetical Device)

D5133 M = Maruti Cars

यहाँ, D	=	Engineering (M.C.)
5133	=	Cars [P]
M	=	Maruti (Alphabetical Device)

9.6 अध्यारोपण युक्ति :

जब अनुसूचियों में एकलों की व्यवस्था नहीं की गई हो तो एक ही पक्ष में से दो एकलों का प्रयोग कर एकलों को विकसित किया जा सकता है। अध्यारोपण युक्ति (SID : Superimposition Device) द्वारा वर्ग संख्या में एक ही अनुसूची के दो एकल अंकों को संयोजक रेखा (-) से जोड़ा जाता है।

NOTES

उदाहरण—

Gypsy Woman = Y15-738

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
15	=	Woman [P]
738	=	Gypsy [P]

Shoulder Bone = L161-82

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
161	=	Shoulder [P]
82	=	Bone [P]

नियम के अनुसार अनुसूची में प्रथम उल्लिखित एकल को पहले तथा संयोजक रेखा के बाद दूसरे एकल को रखा जाता है। इसके प्रयोग के समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अंको का निर्माण बोधगम्य और तर्कसंगत हो। यदि आवश्यक हो तो अनुसूची में दूसरे स्थान पर दिये गये अंक को पहले भी रखा जा सकता है।

स्व-प्रगति परीक्षण

4. पूर्व स्थापन सामान्य एकल क्या है? ये कितने प्रकार के होते हैं?

.....

.....

.....

.....

10. सार-संक्षेप :

इस अध्याय में आपको कोलन क्लैसिफिकेशन में विषयों के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त मूल तकनीकों से अवगत कराया गया है।

इस अध्याय में निम्नलिखित प्रमुख बिन्दुओं का विवरण दिया गया है—

(1) कोलन क्लैसिफिकेशन में वर्ग संख्या के निर्माण के लिए विषय में पाँच मूलभूत श्रेणियों तथा उनके आवर्तनों एवं स्तरों को अभिज्ञात करना होता है।

(2) सामान्य एकल दो प्रकार के हैं—पूर्वस्थापक सामान्य एकल तथा पश्चस्थापक सामान्य एकल।

(3) जटिल विषयों के वर्गीकरण के लिए दशा सम्बन्ध सहायक होते हैं।

दशा सम्बन्धों के निम्नलिखित तीन स्तर हैं—

(i) अन्तर-वर्ग अथवा अन्तर-विषय दशा सम्बन्ध, (ii) अन्त-पक्ष दशा सम्बन्ध, (iii) अंत:पंक्ति दशा सम्बन्ध।

(4) किसी एक विशेष विचारधारा के अनुसार विषय के स्पष्टीकरण के लिए प्रणाली, तथा किसी एक विषय की विशेषज्ञता का अध्ययन करने के लिए विशेष वर्ग का प्रयोग।

(5) कोलन क्लैसिफिकेशन में प्रयुक्त युक्तियों द्वारा वर्गीकरणकर्त्ता को स्वायत्तता प्रदान की गई है तथा सूची के आकार को कम किया गया है। कोलन क्लैसिफिकेशन की प्रमुख युक्तियाँ हैं : काल युक्ति, भौगोलिक युक्ति, विषय युक्ति, स्मृति सहायक युक्ति, वर्ण युक्ति तथा अध्यारोपण युक्ति।

NOTES

11. प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. कोलन क्लैसिफिकेशन में वर्गीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया पाँच मूलभूत श्रेणियों पर आधारित है। कोलन क्लैसिफिकेशन द्वारा स्वीकृत वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली में मूलभूत श्रेणियाँ वर्गीकरण निर्माण खण्ड का कार्य करती है। साधारण से यौगिक विषयों की ओर अग्रसर होने पर मूलभूत श्रेणियों के विभिन्न आवर्तनों एवं स्तरों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। मिश्र विषयों के वर्गीकरण में दशा-सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तकनीकों के अतिरिक्त, कोलन क्लैसिफिकेशन में पक्ष के केन्द्र बिन्दुओं को उचित अंकन प्रदान करने के लिए अनेक युक्तियों का प्रयोग किया गया है। इन युक्तियों के प्रयोग से वर्गीकरणकर्ता को कुछ सीमा तक स्वायत्तता प्राप्त होती है। इससे अनुसूचियों में अनावश्यक परिगणन की आवश्यकता नहीं रहती। फलस्वरूप उनका आकार छोटा हो जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन में आधारभूत तकनीकों एवं युक्तियों की जानकारी से विभिन्न प्रकार की जटिलता वाले विषयों का वर्गीकरण करने में सहायता प्राप्त होगी।

2. ज्ञान के पारम्परिक विभाजन के आधार पर रंगनाथन ने विषय जगत् को मोटे तौर से प्राकृतिक विज्ञान, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान में विभाजित किया है। उन्होंने इसे आंशिक व्याप्ति (Partial Comprehension) की संज्ञा दी है। दूसरी बात यह है कि विषय जगत् के प्रत्येक विस्तृत विभाग को मुख्य वर्गों के समुच्चय में विभाजित किया है। तीसरी बात यह है कि विभिन्न लक्षणों का अनुप्रयोग कर प्रत्येक मुख्य वर्ग को पक्षों में विभाजित किया गया है। पक्षों का क्रम पक्ष-क्रम के सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित किया गया है। चौथी बात यह है कि प्रत्येक पक्ष को एकलों में विभाजित किया गया है। पक्षों में एकलों का निर्धारण सहायक क्रम के सिद्धान्तों द्वारा किया गया है। पाँचवीं बात यह है कि प्रत्येक एकल का विभाजन उप-एकलों में किया गया है। ज्ञान के सतत् एवं गतिशील विकास के कारण विभाजन की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है।

3. **आवर्तन की अभिव्यक्ति :**

   मूलभूत श्रेणी 'ऊर्जा' (Energy) की अभिव्यक्ति एक ही विषय में एक से अधिक बार हो सकती है। ऊर्जा की प्रथम अभिव्यक्ति तीन मूलभूत श्रेणियों [P], [M] तथा [E] की अभिव्यक्ति के प्रथम आवर्तन से समाप्त हो जाती है। एक ही विषय में ऊर्जा की द्वितीय, तृतीय इत्यादि अभिव्यक्ति को क्रमशः ऊर्जा द्वितीय आवर्तन [2E] तथा ऊर्जा तृतीय आवर्तन [3E] कहा जाता है।

   मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व तथा पदार्थ की अभिव्यक्ति ऊर्जा के प्रथम, द्वितीय अथवा अन्य आवर्तन के पश्चात् होती है। इन अभिव्यक्तियों को क्रमशः व्यक्तित्व का द्वितीय आवर्तन [2P] तथा व्यक्तित्व का तृतीय आवर्तन [3P], पदार्थ का द्वितीय आवर्तन [2M] तथा पदार्थ का तृतीय आवर्तन [3M] कहा जाता है।

4. पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को किसी योजक चिन्ह के मूल वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है। पूर्वस्थापक सामान्य एकल से युक्त वर्ग संख्या को सामान्य वर्ग संख्या पर वरीयता प्रदान की जाती है।

   पूर्वस्थापक सामान्य एकल तीन प्रकार के हैं—

   (1) स्थान पक्ष से पूर्व प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

   (2) केवल स्थान पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

   (3) केवल काल पक्ष के बाद प्रयोज्य पूर्वस्थापक सामान्य एकल

12. मुख्य शब्द

एकल विचार (Isolate Idea) : पाँच मूलभूत श्रेणियों में से एक की अभिव्यक्ति करने वाला विषय एकक।

केन्द्र (Focus) : एक एकल विचार अथवा मूल वर्ग को निर्दिष्ट करने वाला पद।

NOTES

दशा संबंध (Phase Relation) : एकलों की समिश्र अवली में विभिन्न दशा के मध्य संबंध।

पक्ष (Facet) : एक मूलभूत श्रेणी पर आधारित एकलों का समूह।

सामान्य एकल (Common Isolate) : ऐसा एकल जो सारे मुख्य वर्गों में सामान्य रूप में प्रयोग हो।

13. अभ्यास-प्रश्न

(1) कोलन क्लासीफिकेशन में विषयों का मानचित्रण किस प्रकार किया जाता है ?

(2) मूलभूत श्रेणियाँ कितनी हैं ? प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

(3) सामान्य एकल क्या हैं ? इन्हें किन दो श्रेणियों में रखा गया है ?

(4) दशा सम्बन्ध किसे कहते हैं ? इसके स्तरों तथा प्रकारों का वर्णन कीजिए।

(5) कोलन कलासीकिशन में वर्गीकरण की युक्तियों का वर्णन कीजिए।

14. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Kaula, P.N. (1985). A Treatise on Colon Classification. New Delhi : Sterling Publishers.
- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Satija, M.P.(1989). Manual of Practical Colon Classification. 2nd rev. ed. New Delhi : Sterling Publishers.
- Sharma, Pandey S.K. (2000). Colon Classification Made Easy. New Delhi : Ess Ess.
- भार्गव, जी.डी. (1998)। ग्रन्थालय वर्गीकरण। सप्तम् संशोधित संस्करण। भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, पाण्डेय एस.के. (1988)। सरलीकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण। दिल्ली : सत्साहित्य प्रकाशन।

वर्गीकरण के सोपान

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. कार्य के तीन धरातल
   - 3.1 वैचारिक धरातल
   - 3.2 शाब्दिक धरातल
   - 3.3 अंकन धरातल
4. अष्ट-सोपान विधि
5. हल किये हुये उदाहरण
6. सार-संक्षेप
7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
8. मुख्य शब्द
9. अभ्यास-प्रश्न
10. ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

अध्याय 8 तथा 9 में कोलन क्लैसिफिकेशन पद्धति की सामान्य संरचना, उसकी विशेषताएँ तथा उसमें प्रलेखों के वर्गीकरण के लिए प्रयुक्त विभिन्न युक्तियों का उल्लेख किया गया है। इस अध्याय में हम प्रलेखों के वर्गीकरण में प्रयुक्त सोपानों या चरणों का विवेचन करेंगे। सोपान तर्क संगत हैं और यदि उनका विधिवत अनुसरण किया जाये तो उसके अच्छे परिणाम निकल सकते हैं।

इस अध्याय का अध्यन करने के पश्चात् आप—

- प्रलेखों का वर्गीकरण करने के लिए तीन धरातलों की व्याख्या करने में;
- रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित प्रलेखों के वर्गीकरण के लिए अष्ट-सोपान विधि का वर्णन करने में; तथा
- अष्ट-सोपान विधि की सहायता से विभिन्न स्तर की जटिलता वाले विषयों का वर्गीकरण करने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

अभी तक कोलन क्लैसिफिकेशन में प्रयुक्त विभिन्न तकनीकों से आपको अवनत कराया गया है। इस अध्याय में कार्य के तीन धरातलों—वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल एवं अंकन धरातल तथा इन तीन कार्य धरातलों में प्रयुक्त वर्गीकरण के विभिन्न सोपानों की जानकारी प्रस्तुत की गई है। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित 'अष्ट-सोपान विधि' प्रलेखों के वर्गीकरण की सुनियोजित विधि प्रस्तुत करती है। यह वर्गीकरण की प्रक्रिया के सरलीकरण में सहायक है। इस अध्याय में हल किये गये उदाहरणों द्वारा वर्गीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

3. कार्य के तीन धरातल

रंगनाथन के अनुसार पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली तीन कार्य धरातलों पर आधारित है। तीन धरातल हैं : वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल। विषय विश्लेषण का कार्य वैचारिक धरातल पर प्रारम्भ होता है। दूसरा कार्य विषय के शब्द समूहों को पुनर्व्यस्थित कर विषय के नाम को परिवर्तित करना है तथा शब्द समूहों को एकल पदों में पुनर्स्थापित करना है। इस श्रत पर सम्पन्न कार्य शाब्दिक धरातल के कार्य हैं। अंत में शाब्दिक धरातल पर अभिज्ञात मूल विषय एवं समस्त एकल पदों को अंकन में परिवर्तित कर दिया जाता है। तत्पश्चात् इन अंकनों को योजक चिन्हों की सहायता से मूल वर्ग में संश्लेषित किया जाता है। एकल विचार एवं अंकन का संश्लेषण कर वर्ग संख्या का निर्माण करना अंकन कहलाता है। अतएव, कोलन क्लैसिफिकेशन में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रक्रिया तीन स्तरों पर की जाती है—

(1) वैचारिक धरातल (Idea Plane) ⟶ विषय का विश्लेषण।

(2) शाब्दिक धरातल (Verbal Plane) ⟶ मूल विषय एवं एकल पदों का अभिज्ञान एवं उनकी पुनर्व्यस्था, तथा

(3) अंकन धरातल (Notationl Plane) ⟶ मूल विषय एवं एकल पदों का अंकन में अनुवाद तथा अंततः अंकनों का संश्लेषण।

3.1 वैचारिक धरातल

किसी पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली में सर्वप्रथम विषय जगत् की परिगणना की जाती है। इसके पश्चात् अन्तर सम्बन्ध निर्धारित कर क्रम निश्चित किया जाता है। यह कार्य वैचारिक धरातल पर किया जाता है। वैचारिक धरातल को अदृश्य या प्रच्छन्न धरातल भी कहा जाता है। प्रलेखों विषयों का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्दअंकों के पीछे प्रच्छन्न रूप में विद्यमान रहते हैं। प्रलेखों में वर्णित विषय के विश्लेषण का कार्य वैचारिक धरातल में ही किया जाता है। वैचारिक धरातल में प्रथम कार्य मूल वर्ग की पहचानना है। इस धरातल में विषय जगत् एवं एकलों का अध्ययन एवं विश्लेषण कर उन्हें सहायक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

NOTES

वैचारिक धरातल का कार्य ज्ञात विषयों एवं उनके एकलों के विश्लेषण एवं व्यवस्थापन तक सीमित नहीं है। प्रणाली की आधारभूत संरचना में बिना छोड़-छोड़ दिये अज्ञात एवं नव अवतरित विषयों को मान्यता प्रदान कर वर्तमान में स्थित विषयों के अन्तर्गत उनका स्थान निर्धारित करना भी इसी धरातल का कार्य है।

वैचारिक धरातल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह एक नियंत्रण करने वाला धरातल है क्योंकि इस धरातल में की गई विश्लेषण की गुणवत्ता अन्य दो धरातलों में प्रतिबिम्बित होती है।

वैचारिक धरातल में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है—

(1) प्राप्त सम्मिश्रित पदों का विभाजन;

(2) विषय के नाम की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति;

(3) पक्षों में विश्लेषण;

(i) काल एवं स्थान की अभिव्यक्ति;

(ii) ऊर्जा की अभिव्यक्ति;

(iii) पदार्थ की अभिव्यक्ति;

(iv) व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति; तथा अंत में

(4) विश्लेषित पक्षों का संश्लेषण।

उपर्युक्त सोपानों को एक उदाहरण की सहायता से भली प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

उदाहरण—

आख्या : Circulation of Newspapers in Research Libraries in India in 1995

सोपान 1 : Circulation, Newspapers, Research Libraries, India, 1995

सोपान 2 : Circulation, Newspapers, Research Libraries, (Library Science) India, 1995

सोपान 3 :

Library Scienc	—	मूल वर्ग (Basic Class)
India	—	स्थान पक्ष (Space Facet)
1995	—	काल पक्ष (Time Facet)
Circulation	—	ऊर्जा पक्ष (Energy Facet)
Newspapers	—	पदार्थ पक्ष (Matter Facet)
Research Libraries	—	व्यक्तिगत पक्ष (Personality Facet)

सोपान 4 : Library Science (Basic Class), Research Libraries [P],Newspapers [M], Circulation [E], India [S], 1995 [T]

स्व-प्रगति परीक्षण

1. पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली के तीन धरातलों का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

3.2 शाब्दिक धरातल

वर्गीकरण की दूसरी प्रक्रिया शाब्दिक धरातल पर सम्पन्न की जाती है। मूल वर्ग एवं एकल विचारों के विश्लेषण एवं संश्लेषण के पश्चात् दूसरे सोपान में इनको वर्गीकरण की अनुसूचियों में उपलब्ध प्राकृतिक भाषा के मानक पदों अथवा तकनीकी पदावली में परिवर्तित किया जाता है। शाब्दिक धरातल में निम्नलिखित कारणों से कुछ समस्याएँ हैं—

NOTES

(1) साधारण शब्दों के अर्थ की अस्पष्टता,

(2) समनार्थी एवं पर्यायवाची शब्दों की आवृत्ति; तथा

(3) नवीन पदों के सतत विनिर्माण के कारण नवीनता बनाये रखने में कठिनाई।

उदाहरण : Library Science (BC), Research Libraries [P], Newspapers [M], Circulation [E], India [S], 1995 [T]

3.3 अंकन धरातल

वर्गीकरण की अन्तिम प्रक्रिया अंकन धरातल पर की जाती है। शाब्दिक धरातल में प्राप्त परिणामों को, इस धरातल में, वर्गीकरण की भाषा में परिवर्तित किया जाता है। विभिन्न विषयों एवं एकल विचारों के निरूपण हेतु क्रमबोधक संख्याओं का प्रयोग किया जाता है। एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों के निरूपण के लिए प्रयुक्त क्रमबोधक संख्या की प्रणाली को अंकन प्रणाली कहा जाता है। इस धरातल में वर्गीकरण की प्रक्रिया को अंकन धरातल कहा जाता है।

अंकन धरातल के वर्गों तथा एकल विचारों की सहायक व्यवस्था उपलब्ध होती है। तथापि, यह आवश्यक है कि तीव्रगति से अवतरित हो रहे नवीन वर्गों के समायोजन के लिए वर्गीकरण प्रणाली में लचीलापन होना चाहिए।

इस धरातल का प्रथम सोपान है, मूल वर्ग एवं एकल विचारों का प्रतिनिधित्व अंकन में करना। विषय के लिए प्रयुक्त अंकन को वर्ग संख्या तथा एकल विचारों के लिए प्रयुक्त अंकन को एकल अंक कहा जाता है।

अंकन धरातल में दो सोपानों का प्रावधान है।

प्रथम सोपान में मूल वर्ग तथा एकल अंकों का अनुवाद वर्गीकरण प्रणाली में से प्राप्त उपर्युक्त संख्याओं में करना है। द्वितीय सोपानमें संख्याओं का संश्लेषण अनुसूची में उपलब्ध पक्ष-परिसूत्र के अनुसार उचित योजन चिन्हों की सहायता से किया जाता है।

उदाहरण—

सोपान 1 : Library Scienc (M.C.) = 2
Research Libraries [P] = 36
Newspapers [M] = 44
Circulation [E] = 6
India [S] = 44
1995 [T] = N95

सोपान 2 : = संश्लेषण :

पक्ष परिसूत्र = 2[P]; [M]; [E] [2P]

2	36	:	44	:	6	44	'N95
(B.C.)	[P]		[M]		[E]	[S]	[T]

अतएव, वर्ग संख्या है :

236; 44 : 6.44 'N95

4. अष्ट-सोपान विधि

प्रलेखों के विषय का प्राकृतिक भाषा से वर्गीकरण की भाषा अर्थात् क्रमबोधक संख्या की भाषा में अनुवाद करने के लिए रंगनाथन ने आठ चरणों या सोपानों की अनुशंसा की है। प्रारम्भिक अनुच्छेदों में यह जानकारी दी गई कि किस प्रकार वर्गीकरण तीन धरातलों—वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल एवं अंकन धरातल पर किया जाता है। तीनों धरातलों के समस्त सोपानों के संयोजन से वर्गीकरण के आठ सोपान प्राप्त होते हैं। रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित सोपान निम्नलिखित हैं—

NOTES

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या (Raw Title)
सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या (Full Title)
सोपान 2 : सारभूत आख्या (Kernal Title)
सोपान 3 : विश्लेषित आख्या (Analysed Title)
सोपान 4 : परिवर्तित आख्या (Transformed Title)
} वैचारिक धरातल

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या (Title in Standard Terms) ← शाब्दिक धरातल

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्यायुक्त आख्या (Title in Focal Numbers)
सोपान 7 : वर्ग संख्या (Class Number)
} अंकन धरातल

इन सोपानों का पूर्ण विवरण निम्नवत् है—

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या (Raw Title)

प्रलेख की वास्तविक आख्या।

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या (Full Title)

प्रलेख की अभिव्यंजक आख्या। मूल विषय पद अथवा कुछ एकल पदों की अनुपस्थिति में प्रलेख की अपरिष्कृत आख्या पूर्ण तथा अभिव्यंजक नहीं होती। इस चरण में, अपरिष्कृत आख्या के अनुपस्थित पदों को पूरा कर उसे अभिव्यंजक आख्या में परिवर्तित किया जाता है।

सोपान 2 : सारभूत आख्या (Kernal Title)

समस्त अवांछनीय शब्दों, जैसे—संयुक्ति, उपपद इत्यादि को त्याग कर केवल मूल या सारभूत पदों को रहने दीजिए।

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या (Analysed Title)

प्रत्येक सारभूत पद की मूलभूत श्रेणी तथा उसके आवर्तन एवं स्तर की अभिव्यक्ति को जानिये। प्रत्येक मूल पद के साथ मूलभूत श्रेणी की अभिव्यक्ति के चिन्हों को लगाइये। प्राप्त मिश्र पद को मूल संघटक पदों के साथ रखना आवश्यक है जिससे विश्लेषण प्रक्रिया सुगमता से सम्पन्न की जा सके।

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या (Transformed Title)

पक्ष-परिसूत्र के अनुसार समस्त आधारभूत पदों को उनके सम्बन्धित चिन्हों के साथ पुनर्व्यस्थित कीजिए।

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या (Title in Standard Terms)

समस्त सारभूत पदों को अनुसूची में दिये गये मानक पदों में प्रतिस्थापित कीजिए।

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्यायुक्त आख्या (Title in Focal Numbers)

प्रत्येक मानक पद को उसकी मूल वर्ग संख्या अथवा एकल संख्या द्वारा प्रतिस्थापित कीजिए।

सोपान 7 : वर्ग संख्या (Class Number)

स्व-प्रगति परीक्षण

2. वर्गीकरण प्रक्रिया के शाब्दिक धरातल का आशय स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

NOTES

प्रत्येक संकेन्द्रीय संख्या के चिन्ह को सम्बन्धित योजक चिन्हों द्वारा प्रतिस्थापित कीजिए।

उपर्युक्त आठ सोपानों के अतिरिक्त सत्यापन के उद्देश्य से एक सोपान और जोड़ा जा सकता है। इस चरण में संश्लेषित वर्ग संख्या की प्रामाणिकता को जाँचने के लिए उसका नैसर्गिक भाषा में अनुवाद किया जाता है।

निम्न उदाहरण की सहायता से वर्गीकरण की अष्ट-सोपान विधि को समझा जा सकता है।

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Documentation of Newspaper Clipping in Research Libraries in India during 1989

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Documentaion of Newspaper Clippings in Research Libraries (in Library Science) in India during 1989

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Documentation, Newspaper Clippings, Research Libraries, Library Science, India 1989

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Documentation [E], Newspaper Clippings [M], Research Libraries [P], Library Science (MC), India [S], 1989 [T]

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Library Science (MC), Research Libraries [P], Newspaper Clipping [M], Documentation [E], India [S], 1989, [T]

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Library Science (MC), Research [P], Newspaper [M] (मुख्य वर्ग Library Science की अनुसूची में दिये गये निर्देशानुसार Generalia Bibiography मुख्य वर्ग के [P] से लिया गया है।), Documentation [E], India [S], 1989 [T]

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या 2 (MC), 36 [P], 44 [M], 97 [E], 44 [S], N 89 [T]

सोपान 7 : वर्ग संख्या 236; 44 : 97.44 'N89

टिप्पणी : उपर्युक्त वर्ग संख्या में व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी के पहले किसी योजक चिन्ह का प्रयोग नहीं किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि मुख्य वर्ग 'Library Science' के पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष के पहले किसी भी योजक चिन्ह को लगाने का प्रावधान नहीं है। वर्ग संख्या का निर्माण करते समय प्रत्येक मुख्य वर्ग में दिये गये पक्ष-परिसूत्र का पूर्णतया पालन किया जाना चाहिए।

वर्गीकरण का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में अष्ट-सोपान विधि अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई है। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि पुस्तकालयों में प्रलेखों का वर्गीकरण करते समय वर्गीकरणकर्ता प्रत्येक सोपान का अनुसरण करे। वास्तव में तो इसकी आवश्यकता नहीं है, पर पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए अष्ट-सोपान विधि का ज्ञान शिक्षार्थियों के लिए आवश्यक है। इस विधि का प्रयोग करने की जानकारी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है।

स्व-प्रगति परीक्षण

3. वर्गीकरण की प्रक्रिया में अंकन धरातल का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5. हल किये हुये उदाहरण

इस खण्ड में अष्ट-सोपान विधि के प्रयोग द्वारा विभिन्न स्तर की कठिनाई वाले विषयों के वर्गीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है।

NOTES

आख्या 1 : Treatment of Lung Tuberculosis

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Treatment of Lung Tuberculosis

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Treatment of the Disease of the Lung Caused by the Infection Tuberculosis in Medicine

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Treatment, Disease, Lung, Tuberculosis, Infection, Medicine

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Treatment [2E], Disease [E], Lung [P], Tuberculosis Infection [2P] Medicine (M.C.)

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Medicine (M.C.), Lung [P], Disease [E], Tuberculosis Infection [2P], Treatment [2E]

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Medicine (M.C.), Lung [P], Disease [E], Tuberculosis [2P], Therapeuties [2E]

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या : L (M.C.), 45 [P], 4 [E], 21 [2P], 6 [2E]

सोपान 7 : वर्ग संख्या : L45 : 421 : 6

आख्या 2 : Curing of Viral Diseases of Tulip

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Curing of Viral Diseases of Tulip

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Curing of Viral Diseases of the Florat Plant Tulip in Agriculture

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Curing, Viral Disease, Floral Plant Tulip, Agriculture

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Curing [2E], Viral [2P], Disease [E], Floral Plant Tulip [P], Agriculture (M.C.)

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Agriculture (M.C.), Floral Plant Tulip [P], Disease [E], Viral [2P], Curing [2E]

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Agriculture (M.C.), Tulip [P], Disease [E], Virus [2P], Curing [2E]

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या : J (M.C.), 16912 [P], 4 [E], 23 [2P], 6 [2E]

सोपान 7 : वर्ग संख्या : J16912 : 423 : 6

आख्या 3 : Influence of Humidity on Atmospheric Pressure

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Influence of Humidity on Atmospheric Pressure

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Meteorological Study of Influence of Humidity on Atmospheric Pressure in Geography

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Influence, Humidity, Atmosphere Pressure, Geography

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Influence (Influence Phase Relation), Meteorology [P], Humidity (Isolate under [P] Meteorology), Atmospheric Pressure (Isolate under [P] Meteorology), Geography (M.C.)

NOTES

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Geography (M.C.), Meteorology [P], Atmospheric Pressure (Isolate idea under [P]) influence (Phase Relation), Humidity (Isolate idea under [P] Meteorology)

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Geography (M.C.), Meteorology [P], Atmospheric Pressure (Isolate idea under [P] Meteorology), Influence (Phase Realtion), Humidity (Isolate idea under [P] Meteorology)

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या : U (M.C.), 28[P], 2(Isolate under [P]), 0y(Intera-Array Influence Phase Relation), 5 (Isolate under [P])

सोपान 7 : वर्ग संख्या : U2820y5

टिप्पणी : इस आख्या में Humidity तथा Atmospheric Pressure पद मुख्य वर्ग Meteorology के व्यक्तित्व पक्ष [P] के एकल हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण

4. वर्गीकरण भी अष्ट-सोपान विधि को एक उदाहरण की सहायता से समझाइये।

.....

.....

.....

.....

आख्या 4 : Mathematics for Engineers

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Mathematics for Engineers

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Mathematics Basically meant for the study of Engineering

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Mathematics, biased to Engineers (Engineering)

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Mathematics (M.C.), biased to (Biased Relationship), Engineers (M.C.)

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Mathematics (M.C.), Bias Phase Relation, Engineers (M.C.)

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Mathematics (M.C.), Bias Phase Relation, Engineering (M.C.)

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या : B (M.C.) 0b (Bias Phase Relation) D (M.C.)

सोपान 7 : वर्ग संख्या : B0bD

6. सार-संक्षेप

इस इकाई में आपको कार्य के तीन धरातलों में सम्पन्न की जाने वाली वर्गीकरण की प्रक्रिया से अवगत कराया गया है। वर्गीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया मुख्यतया अष्ट सोपानों या चरणों में पूरी की जाती है। कार्य के तीन धरातल हैं : वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल तथा अंकन धरातल। इन कार्य के तीन धरातलों के गहन विभाजन द्वारा वर्गीकरण के कार्य को अष्ट-सोपानों या चरणों में पूरा किया जाता है। डॉक्टर रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित अष्ट-सोपान हैं : अपरिष्कृत आख्या, अभिव्यंजक आख्या, सारभूत आख्या, विश्लेषित आख्या, परिवर्तित आख्या, मानकपदीय आख्या, संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या तथा अंत में वर्ग संख्या। इन आठ सोपानों का अनुसरण कर प्रत्येक प्रकार के, सरल से जटिल, विषयों का वर्गीकरण सुनियोजित ढंग से किया जा सकता है।

7. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

NOTES

1. रंगनाथन के अनुसार पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली तीन कार्य धरातलों पर आधारित है। तीन धरातल हैं : वैचारिक धरातल, शाब्दिक धरातल। विषय विश्लेषण का कार्य वैचारिक धरातल पर प्रारम्भ होता है। दूसरा कार्य विषय के शब्द समूहों को पुनर्व्यस्थित कर विषय के नाम को परिवर्तित करना है तथा शब्द समूहों को एकल पदों में पुनर्स्थापित करना है। इस श्रत पर सम्पन्न कार्य शाब्दिक धरातल के कार्य हैं। अंत में शाब्दिक धरातल पर अभिज्ञात मूल विषय एवं समस्त एकल पदों को अंकन में परिवर्तित कर दिया जाता है। तत्पश्चात् इन अंकनों को योजक चिन्हों की सहायता से मूल वर्ग में संश्लेषित किया जाता है। एकल विचार एवं अंकन का संश्लेषण कर वर्ग संख्या का निर्माण करना अंकन कहलाता है। अतएव, कोलन क्लैसिफिकेशन में वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रक्रिया तीन स्तरों पर की जाती है-

   (1) वैचारिक धरातल (Idea Plane) ⟶ विषय का विश्लेषण।

   (2) शाब्दिक धरातल (Verbal Plane) ⟶ मूल विषय एवं एकल पदों का अभिज्ञान एवं उनकी पुनर्व्यस्था, तथा

   (3) अंकन धरातल (Notationl Plane) ⟶ मूल विषय एवं एकल पदों का अंकन में अनुवाद तथा अंततः अंकनों का संश्लेषण।

2. वर्गीकरण की दूसरी प्रक्रिया शाब्दिक धरातल पर सम्पन्न की जाती है। मूल वर्ग एवं एकल विचारों के विश्लेषण एवं संश्लेषण के पश्चात् दूसरे सोपान में इनको वर्गीकरण की अनुसूचियों में उपलब्ध प्राकृतिक भाषा के मानक पदों अथवा तकनीकी पदावली में परिवर्तित किया जाता है। शाब्दिक धरातल में निम्नलिखित कारणों से कुछ समस्याएँ हैं—

   (1) साधारण शब्दों के अर्थ की अस्पष्टता,

   (2) समनार्थी एवं पर्यायवाची शब्दों की आवृत्ति; तथा

   (3) नवीन पदों के सतत विनिर्माण के कारण नवीनता बनाये रखने में कठिनाई।

   उदाहरण : Library Science (BC), Research Libraries [P], Newspapers [M], Circulation [E], India [S], 1995 [T]

3. वर्गीकरण की अन्तिम प्रक्रिया अंकन धरातल पर की जाती है। शाब्दिक धरातल में प्राप्त परिणामों को, इस धरातल में, वर्गीकरण की भाषा में परिवर्तित किया जाता है। विभिन्न विषयों एवं एकल विचारों के निरूपण हेतु क्रमबोधक संख्याओं का प्रयोग किया जाता है। एक वर्गीकरण पद्धति में वर्गों के निरूपण के लिए प्रयुक्त क्रमबोधक संख्या की प्रणाली को अंकन प्रणाली कहा जाता है। इस धरातल में वर्गीकरण की प्रक्रिया को अंकन धरातल कहा जाता है।

   अंकन धरातल के वर्गों तथा एकल विचारों की सहायक व्यवस्था उपलब्ध होती है। तथापि, यह आवश्यक है कि तीव्रगति से अवतरित हो रहे नवीन वर्गों के समायोजन के लिए वर्गीकरण प्रणाली में लचीलापन होना चाहिए। इस धरातल का प्रथम सोपान है, मूल वर्ग एवं एकल विचारों का प्रतिनिधित्व अंकन में करना। विषय के लिए प्रयुक्त अंकन को वर्ग संख्या तथा एकल विचारों के लिए प्रयुक्त अंकन को एकल अंक कहा जाता है। अंकन धरातल में दो सोपानों का प्रावधान है। प्रथम सोपान में मूल वर्ग तथा एकल अंकों का अनुवाद वर्गीकरण प्रणाली में से प्राप्त उपर्युक्त संख्याओं में करना है। द्वितीय सोपानमें संख्याओं का संश्लेषण अनुसूची में उपलब्ध पक्ष-परिसूत्र के अनुसार उचित योजन चिन्हों की सहायता से किया जाता है।

4. निम्न उदाहरण की सहायता से वर्गीकरण की अष्ट-सोपान विधि को समझा जा सकता है।

सोपान 0 : अपरिष्कृत आख्या : Documentation of Newspaper Clipping in Research Libraries in India during 1989

NOTES

सोपान 1 : अभिव्यंजक आख्या : Documentaion of Newspaper Clippings in Research Libraries (in Library Science) in India during 1989

सोपान 2 : सारभूत आख्या : Documentation, Newspaper Clippings, Research Libraries, Library Science, India 1989

सोपान 3 : विश्लेषित आख्या : Documentation [E], Newspaper Clippings [M], Research Libraries [P], Library Science (MC), India [S], 1989 [T]

सोपान 4 : परिवर्तित आख्या : Library Science (MC), Research Libraries [P], Newspaper Clipping [M], Documentation [E], India [S], 1989, [T]

सोपान 5 : मानकपदीय आख्या : Library Science (MC), Research [P], Newspaper [M] (मुख्य वर्ग Library Science की अनुसूची में दिये गये निर्देशानुसार Generalia Bibiography मुख्य वर्ग के [P] से लिया गया है।), Documentation [E], India [S], 1989 [T]

सोपान 6 : संकेन्द्रित संख्याओं में आख्या 2 (MC), 36 [P], 44 [M], 97 [E], 44 [S], N 89 [T]

सोपान 7 : वर्ग संख्या 236; 44 : 97.44 'N89

8. मुख्य शब्द

सारभूत आख्या (Kernel Title) : संयोजक शब्दों, उपसर्गों एवं उपपदों इत्यादि से रहित आख्या।

संकेन्द्रित संख्या (Focal Title) : किसी मुख्यवर्ग अथवा एकल विचार का प्रतिनिधित्व करने वाला अंकन।

9. अभ्यास-प्रश्न

(1) पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली के वैचारिक धरातल का वर्णन कीजिए।

(2) वर्गीकरण प्रणाली की अष्ट सोपान विधि की विवेचना कीजिए।

(3) आठ सोपानों में सम्मिलित विभिन्न आख्याओं का वर्णन कीजिए।

(4) अष्ट सोपान विधि का उपयोग करते हुए निम्नांकित आख्याओं के लिए वर्ग संख्या निर्मित करें—

(i) Treatment of Lung Tuberculosis.

(ii) Curing of Viral Diseases of Tulip.

10. ग्रन्थ-सूची

- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Ranganathan, S.R. (1989). Elements of Library Classification. 2nd ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Ranganathan, S.R. (1989). Prolegomena to Library Classification. 3rd ed. Reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Satija, M.P. (1989). Manual of Pratical Colon Classification. 2nd rev. ed. New Delhi : Sterling Publishers.
- Sharma, Pandey S.K. (2000). Colon Classification Made Easy. New Delhi : Ess Ess.
- शर्मा, पाण्डेय एस.के. (1998)। सरलीकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण। दिल्ली : सत्साहित्य प्रकाशन।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. साहित्य
4. इतिहास एवं राजनीति विज्ञान
5. मनोविज्ञान एवं शिक्षा
6. धर्म एवं दर्शनशास्त्र
7. अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र
8. विधि
9. भाषा विज्ञान
10. सार-संक्षेप
11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
12. मुख्य शब्द
13. अभ्यास-प्रश्न
14. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

कोलन क्लैसिफिकेशन एस.आर. रंगनाथन द्वारा विकसित पूर्ण रूप से पक्षात्मक (Faceted) वर्गीकरण प्रणाली है जो उनके द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण की अभिधारणाओं एवं सिद्धान्तों पर आधारित है।

इस अध्याय में हम आपको कोलन क्लैसिफिकेशन की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के कुछ मुख्य वर्गों की अनुसूचियों से परिचित करा रहे हैं।

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप—

- वर्णित मुख्य वर्गों में से प्रत्येक के पक्ष-परिसूत्र की व्याख्या करने में; तथा
- इन मुख्य वर्गों के अन्तर्गत आने वाले विषयों की पुस्तकों की वर्ग संख्या बनाने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

इस अध्याय में हम आपको मूलभूत श्रेणियों तथा आवर्तनों एवं स्तरों की अभिधारणाओं के अनुप्रयोग से परिचित करा रहे हैं। इन तकनीकों के उपयोग को स्पष्ट करने के लिए मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के कुछ मुख्य वर्गों से उदाहरणों का चयन किया गया है। इस अध्याय में कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति एवं विषय युक्ति के उपयोग का स्पष्टीकरण भी किया जाता है।

हम इस अध्याय में वर्णित प्रत्येक मुख्य वर्ग के पक्ष-परिसूत्र को समझने का भी प्रयत्न करेंगे। पक्ष-परिसूत्र का उपयोग सीखने के स्तर पर किया जाता है। ये मार्गदर्शक बिन्दुओं के सेट के रूप में उपयोगी हैं।

3. साहित्य

साहित्य का अर्थ है, कलात्मक मूल्यों से परिपूरित लिखित कृतियाँ। ऐसी कृतियाँ सामान्य रूप से तीन रूपों या विधाओं में प्रस्तुत की जाती हैं : गद्य, पद्य या नाटक।

मुख्य वर्ग साहित्य का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है :

O[P], [P2] [P3], [P4]

जहाँ, [P] = भाषा (Language)

[P2] = रूप (Form)

[P3] = लेखक (Author)

[P4] = कृति (Work)

उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र में आप देखेंगे कि व्यक्तित्व पक्ष [P] की अभिव्यक्ति चार स्तरों में हुई है जो इस प्रकार है-

[P], [P2], [P3], [P3], [P4]।

व्यक्तित्व का प्रथम स्तर भाषा पक्ष है जो साहित्यिक कृति की भाषा का बोध कराता है। यह आवश्यक नहीं है कि कृति की भाषा पुस्तक की भाषा ही हो। उदाहरण के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीताजंली' बंगला भाषा के साहित्य की कृति है। यदि इस कृति की आलोचना अंग्रेजी में है तब भी अंग्रेजी भाषा के स्थान पर बंगला भाषा की संख्या ही दी जनी चाहिए। [P] पक्ष में भाषा एकल के लिए संख्याएँ कोलन क्लैसिफिकेशन, षष्ठम् संस्करण (पुनर्मुद्रित) के अध्याय 5 (पृष्ठ संख्या 2.26) से ली जाती है।

व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर [P2] रूप या विधा पक्ष है जिसके एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। व्यक्तित्व का तृतीय स्तर [P3] लेखक पक्ष है जिसके एकलों को कालक्रम युक्ति से निर्मित किया जाना है,

NOTES

अर्थात् लेखक के जन्म वर्ष के लिए अंकन को कोलन क्लैसिफिकेशन षष्ठम् संस्करण के अध्याय 3 (पृष्ठ संख्या 2.7) से लिया जाना है। आगे बढ़ने से पहले हम कालक्रम युक्ति को समझने का प्रयत्न करते हैं।

इस युक्ति में कालक्रम संख्या का उपयोग एकल संख्या के रूप में या मूल एकल संख्या जोड़ने में किया जाता है। कोलन क्लैसिफिकेशन में कालक्रम युक्ति का विस्तृत रूप में अधिकता से उपयोग किया जाता है। इस युक्ति का उपयोग विशेष रूप से साहित्य में लेखक एकल, धार्मिक सम्प्रदायों, मूल वर्गों जैसे भौतिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान, मनोविज्ञान, शिक्षा एवं अर्थशास्त्र में विभिन्न प्रणालियों, मुख्य वर्ग ललित कला में शैलियों एवं ऐसे ही कई अन्य एकलों को निर्मित करने एवं स्पष्टीकरण प्रदान करने में किया गया है। कालक्रम युक्ति के लिए, समय एकल सारणी के एकलों का उपयोग किया जाता है।

व्यक्तित्व पक्ष का चतुर्थ स्तर [P4] स्वयं कृति पक्ष है। इसे साहित्य की अनुसूची में परिगणित नहीं किया गया है। अत: इसे निर्मित करना होता है। इसके लिए कुछ व्याख्या की आवश्यकता है।

जब किसी लेखक की एक से अधिक कृतियाँ हों तो प्रत्येक कृति को स्पष्टीकरण प्रदान करने के लिए कृति संख्या बनाने की तीन पद्धतियाँ हैं—

(i) जब लेखक की कृतियों की संख्या 8 से अधिक न हो। ऐसी स्थिति में कृतियों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कर कृतियों को 1 से 8 की संख्या दी जाती है।

(ii) कृतियों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करते हुए उन्हें 8 के समूहों में विभाजित करें। प्रत्येक समूह में 8 कृतियाँ होंगी।

1 से 8	=	पहला समूह
9 से 16	=	दूसरा समूह
17 से 24	=	तीसरा समूह
25 से 32	=	चौथा समूह
33 से 40	=	पाँचवाँ समूह
41 से 48	=	छठा समूह
49 से 56	=	सातवाँ समूह
57 से 64	=	आठवाँ समूह

इस विधि से निर्मित कृति संख्या में दो अंक होंगे जिनमें पहला अंक उस समूह को दर्शाता है जिसमें वह कृति आती है और दूसरा अंक उस समूह में उस कृति की क्रम संख्या दर्शाता है। उदाहरण के लिए किसी लेखक की 11वीं कृति के लिए कृति संख्या 23 होगी जिसमें 2 दूसरे समूह को दर्शाता है एवं 3 दूसरे समूह में 11वीं कृति की क्रम संख्या दर्शाता है।

(iii) जब कृतियों की संख्या 64 से अधिक हो एवं 512 से अधिक न हो।

कृतियों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करके उन्हें 8 बड़े समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक समूह में 64 कृतियाँ होगी–

1 से 64	=	पहला समूह
65 से 128	=	दूसरा समूह
129 से 192	=	तीसरा समूह
193 से 256	=	चौथा समूह
257 से 320	=	पाँचवाँ समूह

NOTES

321 से 384	=	छठा समूह
385 से 448	=	सातवाँ समूह
449 से 512	=	आठवाँ समूह

प्रत्येक बड़े समूह को 8 उप-समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक उपसमूह में 8 कृतियाँ होती हैं।

इस विधि से निर्मित कृति संख्या में 3 अंक होंगे जिसमें से पहला अंक उस बड़े समूह को दर्शाता है जिसमें वह कृति आती है। द्वितीय अंक बड़े समूह के उपसमूह को दर्शाता है एवं तृतीय अंक उपसमूह में कृति की क्रम संख्या दर्शाता है। उदाहरण के लिए एक लेखक की 65वीं कृति की कृति संख्या 211 होगी जिसमें से 2 दूसरे बड़े समूह को दर्शाता है, द्वितीय अंक 1 बड़े समूह के पहले उपसमूह को, तथा तृतीय अंक 1, 65वीं कृति की क्रम संख्या को दर्शाता है जो द्वितीय बड़े समूह के प्रथम उपसमूह में है।

उदाहरण—

आख्या : Abhigyanam Shankuntalam of Kalidas (Kalidas was born in A.D. 40 and this was his first work)

वर्ग संख्या : O15, 2D40, 1

यहाँ, O	=	Literature (M.C.)
O15	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
O15, 2	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P], Drama [P2]
O15, 2D40	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P], Drama [P2], Author Number [P3] (Got by Chronological Device)
O15, 2D40, 1	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P], Drama [P2], Author Number [P3], Work Number [P4]

आख्या : Hamlet (Written by Shakespeare, Author born in 1564, This is his 37th work)

वर्ग संख्या : O111, 2J64, 55

यहाँ, O	=	Literature (M.C.)
O111	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
O15, 2	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P], Drama [P2]
O15, 2D40	=	Literature (M.C.), Sankrit [P], Drama [P2], Author Number [P3] (Got by Chronological Device)
O15, 2D40, I	=	Literature (M.C.), Sanskrit [P], Drama [P2], Author Number [P3], Work Number [P4]

आख्या : Hamlet (Written by Shakespeare, Author born in 1564, This is his 37th work)

वर्ग संख्या : O111, 2J64, 55

यहाँ, O	=	Literature (M.C.)
O111	=	Literature (M.C.), English [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
O111, 2	=	Literature (M.C.), English [P], Drama [P2]
O1111, 2J64	=	Literature (M.C.), English [P], Drama [P2], Author Number [P3] (Got by Chronological Device)

O111, 2J64, 55 = Literature (M.C.), English [P], Drama [P2], Author Number [P3], Work Number [P4]
(where the 1st digit represents the group number and the 2nd digit represents the serial number in the group)

4. इतिहास एवं राजनीति विज्ञान

इतिहास अतीत की घटनाओं का अध्ययन है जैसे किसी राष्ट्र की अतीत की घटनाएँ, विशेष रूप से शासकों एवं देश की सरकार से सम्बन्धित घटनाएँ, सामाजिक एवं व्यापारिक स्थितियाँ इत्यादि।

मुख्य वर्ग इतिहास का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

V[P], [P2] : [E] [2P] '[T]

जहाँ, [P] = समुदाय (Community)

[P2] = भाग (Part)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष [P] दो स्तरों में है—[P] व [P2]।

ऊर्जा पक्ष के प्रथम आवर्तन [E] के पश्चात् व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय आवर्तन [2P] भी है।

[P] के एकल को भौगोलिक युक्ति से निर्मित करना है।

भौगोलिक युक्ति के द्वारा एकलों को प्राप्त करने के लिए स्थान एकल अनुसूची (सी सी की पृष्ठ संख्या 2.8) का उपयोग करना है।

[P2] एवं [E] cum [2P] के एकल अनुसूची में परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Functions of the President of India

वर्ग संख्या : V44.1 : 3

यहाँ, V = History (M.C.)

V44 = History (M.C.), India [P] (Got by Space Isolate Schedule)

V44, 1 = History (M.C.), India [P], Head [P2] (This represents President)

V44, 1 : 3 = History (M.C.), India [P], Head [P2], Function [E]

पक्ष [E] cum [2P] के एकल '19 Foreign Policy' में कुछ संशोधन एवं परिवर्तन किये गये हैं जिन्हें परिशिष्ट (पृष्ठ संख्या 28) में दर्शाया गया है, जिसके अनुसार '191 Diplomacy' से '1954 Disarmament' की प्रविष्टियों को हटा दिया गया है और प्रावधान किया गया है कि 'V : 19' Foreign Policy के लिए ग्राह्यता (Host) वर्ग होगा। इस ग्राह्यता वर्ग 'V : 19 Foreign Policy' से सम्बन्धित नियम परिशिष्ट की पृष्ठ संख्या 25 पर दिये गये हैं। ग्राह्यता वर्ग 'Foreign Policy' का पक्ष-परिसूत्र परिशिष्ट की पृष्ठ संख्या 25 पर दिया गया है। ग्राह्यता वर्ग 'Foreign Policy' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

V : 19[P], [P2]

NOTES

यहाँ; P = समुदाय (Community)

[P2] = विषय (Subject)

पक्ष [P] के एकलों को भौगोलिक युक्ति से एवं पक्ष [P2] के एकलों को विषय युक्ति से प्राप्त करना है।

विषय युक्ति में एक एकल को बनाने या उपविभाजित करने के लिए वर्ग अभिलक्षण का उपयोग किया जाता है।

इस युक्ति का अनुप्रयोग जहाँ किया जा सकता है वहाँ अनुसूची में या नियमों में इसे दर्शाया गया है। विषम युक्ति (SD : Subject Device) से प्राप्त एकल संख्या के भाग को विषय युक्ति संख्या (SDN : Subject Device Number) कहते हैं। इसे वर्तुल या लघु कोष्ठकों में रखा जाना चाहिए।

पक्ष [P2] के कुछ अतिरिक्त एकलों को परिशिष्ट (पृष्ठ संख्या 28) में दिया गया है। पक्ष [P] के एकल न होने पर पक्ष [P2] के एकल पक्ष [P] में लिए जाते हैं। इसकी व्याख्या निम्नलिखित दो उदाहरणों द्वारा की जा सकती है—

उदाहरण—

आख्या : India's Economic Relations with Great Britain from 1960 onwords

वर्ग संख्या : V44 : 1956, (X) 'N60 ⟶

यहाँ, V	=	History (M.C.)
V44	=	History (M.C.), India [P] (Taken from Space Isolate Schedule)
V44 : 19	=	History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class)
V44 : 1956	=	History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class), Great Britain [P] (Taken from Space Isolate Schedule)
V44 : 1956, (X)	=	History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class), Great Britain [P], Economics [P2] (Got by Subject Device)
V44 : 1956, (X) 'N60 →=		History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class), Great Britain [P], Economics [P2], 1960 onwards [T] (Taken from Time Isolate Schedule)

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरण में दो देशों का प्रतिनिधित्व करने वाली संख्याओं का उपयोग किया गया है। भारत (India) के लिए प्रयुक्त पहली देश-संख्या मुख्य वर्ग 'V History' में पक्ष [P] के एकल का प्रतिनिधित्व करती है। द्वितीय देश, 'Great Britain' के लिए प्रयुक्त देश-संख्या वर्ग ग्राह्यता (Host Class) 'V : 19' में पक्ष [P] के एकल का प्रतिनिधित्व करती है।

आख्या : India's Defence Policy from 1947 onwards

वर्ग संख्या : V44 : 19(zP) 'N47 ⟶

यहाँ, V	=	Histoy (M.C.)
V44	=	History (M.C.), India [P] (Taken from Space Isolate Schedule)
V44 : 19	=	History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class)
V44 : 19(zP)	=	History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class), Defence [P] (Taken from Annexure, Page 28)

V44 : 19(zP) 'N47 → = History (M.C.), India [P], Foreign Policy (Host Class), Defence [P] (Taken from Annexure, Page 28), 1947 onwards [T] (Taken from Time Isolate Schedule)

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरण में वर्ग 'V : 19 Foreign Policy' में समुदाय पक्ष [P] नहीं है इसलिए विषय युक्ति प्राप्त एकल पक्ष [P2] को पक्ष [P] के रूप में उपयोग में लाया गया है इसलिए '(zP) Defence' को पहले अल्पविराम (,) नहीं लगाया गया है।

राजनीति विज्ञान राजनीति एवं शासन का वैज्ञानिक अध्ययन है। मुख्य वर्ग राजनीति विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

W[P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = राज्य के प्रकार (Type of State)

[P2] = भाग (Part)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है, पक्ष [P2] एवं पक्ष [E] cum [2P] के एकल मुख्य वर्ग 'V' History' के इन पक्षों के एकलों के समान हैं।

उदाहरण—

आख्या : Functions of Prime Minister in a Democratic Country

वर्ग संख्या : W6, 21 : 3

यहाँ, W = Political Science (M.C.)

W6 = Political Science (M.C.), Democracy [P]

W6, 21 = Political Science (M.C.), Democracy [P], First Minister [P2] (Taken from Main Class 'V History')

W6, 21 : 3 = Political Science (M.C.), Democracy [P], First Minister [P2] (Taken from Main Class 'V History')

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. मुख्य वर्ग साहित्य का पक्ष-परिसूत्र बताइये।

.....

.....

.....

.....

5. मनोविज्ञान एवं शिक्षा

मनोविज्ञान मस्तिष्क के विज्ञान का, इसके कार्य करने के तरीके का तथा मस्तिष्क की अभिव्यक्ति के रूप में व्यवहार का अध्ययन है।

मुख्य वर्ग मनोविज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है :

S[P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = सत्ता (Entity)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

NOTES

पक्ष [P] एवं पक्ष [E] cum [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। पक्ष [P] के अन्तर्गत विभाजन '7 Race' के उप-विभाजन भौगोलिक युक्ति (GD : Geographical Device) के द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं।

उदाहरण—

आख्या : Psychology of Japanese

वर्ग संख्या : S742

यहाँ, S	=	Psychology (M.C.)
S7	=	Psychology (M.C.) Race [P]
S742	=	Psychology (M.C.) Race [P], Japanese (Taken from the Space Isolate Schedule)

भौगोलिक युक्ति के अतिरिक्त इस एकल के उप-विभाजनों को मुख्य वर्ग समाजशास्त्र के 'Y7' के विभाजनों के उपयोग से भी प्राप्त करना सम्भव है।

उदाहरण—

आख्या : Psychology of Muslims

वर्ग संख्या : S73(Q7)

यहाँ, S	=	Psychology (M.C.)
S7	=	Psychology (M.C.) Race [P]
S73(Q7)	=	Psychology (M.C.) Race [P], Muslim (Taken from the Main Class 'Y Sociology')

पक्ष [E] cum [2P] के एकलों में विभाजन '1 Nervous Reaction' को मुख्य वर्ग 'L Medicine' के व्यक्तित्व पक्ष [P] के '7' विभाजन के समान विभाजित किया जाना चाहिए।

आपको ध्यान देना चाहिए कि पक्ष [2E] cum [3P] के एकल, जो पक्ष [E] के विभाजनों '2' तथा '3' के लिए ही उपर्युक्त हैं, को भी उदधृत किया गया है यद्यपि इसे पक्ष-परिसूत्र में नहीं दिया गया है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. व्यक्तित्व की तीन स्तरों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

अनुसूची के अंत में मनोविज्ञान की कुछ प्रणालियाँ (System) जैसे Exprimental : SM, Psycho-analytic : SM9, Gestalt : SN इत्यादि भी परिगणित की गई हैं।

उदाहरण—

आख्या : Psychometry of Character of Consciousness of the Insane

वर्ग संख्या : S63 : 3 : 6

यहाँ, 6	=	Psychology (M.C.)
S63	=	Psychology (M.C.), Insane [P]

NOTES

S63 : 3	=	Psychology (M.C.), Insane [P], Characters of Consciousness [E]
S63 : 3 : 6	=	Psychology (M.C.), Insane [P], Characters of Consciousness [E], Psychometry [2E]

उदाहरण—

आख्या : Psychoanalysis of Joy of Children

वर्ग संख्या : SM9, 1 : 523

यहाँ, SM9	=	Psychoanalysis (System Facet)
SM9, 1	=	Psychoanalysis (System Facet), Child [P]
SM9, 1 : 523	=	Psychoanalysis (System Facet), Child [P], Joy [E]

शिक्षा ज्ञान का वह क्षेत्र है, जो प्रभावी शिक्षण कैसे किया जाये, से सम्बन्धित है। मुख वर्ग शिक्षा का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

T[P] : [E] [2P], [2P2]

यहाँ, [P]	=	शिक्षार्थी (Educand)
[E]	=	समस्या (Problem)
[2P]	=	पक्ष [E] 3 Teaching Techniques, 4 Curriculum, and 5 Educational Measurement एकलों के लिए विषय
[2P2]	=	विधि (Method)

पक्ष [P] तथा पक्ष [E] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। पक्ष [2P2] के एकलों को, जो विषय हैं, को विषय युक्ति से प्राप्त करना है लेकिन विषय के न होने पर पक्ष [2P2] के एकलों, जो विधि पक्ष हैं, को [2P] पक्ष में लिया जाता है। इसे निम्नलिखित दो उदाहरणों की सहायता से समझा जा सकता है-

उदाहरण—

आख्या : Play Method of Teaching Pre-School Children

वर्ग संख्या : T13 : 396

यहाँ, T	=	Education (M.C.)
T13	=	Education (M.C.), Pre-School Child [P]
T13 : 3	=	Education (M.C.), Pre-School Child [P], Teaching Technique [E]
T13 : 396	=	Education (M.C.), Pre-School Child [P], Teaching Technique [E], Play Method [2P]

उपर्युक्त उदाहरण में, आप देखेंगे कि अध्ययन का एक निश्चित विषय नहीं है इसलिए पक्ष [2P2] के एकल 'विधि' (Method) को पक्ष [2P] में स्थान दिया गया है। इसलिए विधि पक्ष के पहले अल्पविराम (,) नहीं लगाया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Experiment Method of Teaching Physics to Post-graduate Students

वर्ग संख्या : T45 : 3(C), 8

यहाँ, T	=	Education (M.C.)

T45	=	Education (M.C.), Post-graduate [P]
T45 : 3	=	Education (M.C.), Post-graduate [P], Teaching Technique [E]
T45 : 3 (C)	=	Education (M.C.), Post-graduate [P], Teaching Technique [E], Physics [2P] (Subject Facet got by Subject Device)
T45 : 3 (C), 8	=	Education (M.C.), Post-graduate [P], Teaching Technique [E], Physics [2P], Experiment Method [2P2]

उपर्युक्त उदाहरण में अध्ययन का एक निश्चित विषय है इसलिए विधि पक्ष को पक्ष [2P2] में स्थान दिया गया है। विषय युक्ति (SD : Subject Device) का [2P] के रूप में अनुप्रयोग करते समय अनुसूची के अन्त में दिये गये "P Linguistics" के संशोधनों को ध्यान में रखना चाहिए।

शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों को अनुसूची के अन्त में स्थान दिया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Mathematics Curriculum for Basic Secondary Schools in India

वर्ग संख्या : TN3, 2 : 2(B) : 44

यहाँ, TN3	=	Basic Education (System Facet)
TN3, 2	=	Basic Education (System Facet), Secondary Schools [P]
TN3, 2 : 2	=	Basic Education (System Facet), Secondary Schools [P], Curriculum [E]
TN3, 2 : 2 (B)	=	Basic Education (System Facet), Secondary Schools [P], Curriculum [E], Mathematics [2P], (Subject Facet got by Subject Device)
TN3, 2 : 2 (B) : 44	=	Basic Education (System Facet), Secondary Schools [P], Curriculum [E], Mathematics [2P] (Taken from Space Isolate Table)

6. धर्म एवं दर्शनशास्त्र

मुख्य वर्ग धर्म का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

Q[P] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	धर्म (Religion)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

किसी प्रमुख धर्म के अन्तर्गत अपने विशिष्ट मत/प्रथाओं/संस्थाओं वाले सम्प्रदायों को उस धर्म के उपविभाजनों के रूप में देखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए वैष्णव धर्म हिन्दू धर्म का एक विशिष्ट सम्प्रदाय है इसलिए यह हिन्दू धर्म का उपविभाजन है।

समस्या पक्ष में '2 Scripture' एकल संख्या के उपविभाजनों के धर्म पक्ष [P] के 'I Hinduism (Vedic)' एवं '2 Hindusim (Post Vedic)' की एकल संख्याओं के लिए अलग-अलग परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Preaching of Buddha

वर्ग संख्या : Q4 : 51

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
Q4	=	Religion (M.C.), Buddhism [P]
Q4 : 51	=	Religion (M.C.), Buddhism [P], Preaching [E]

आख्या : Post-Vedic Upnishads

वर्ग संख्या : Q2 : 24

यहाँ, Q	=	Religion (M.C.)
Q2	=	Religion (M.C.), Hinduism (Post-Vedic) [P]
Q2 : 24	=	Religion (M.C.), Hinduism (Post-Vedic) [P], Upanished [E]

दर्शनशास्त्र अस्तित्व, यथार्थ, ज्ञान, उत्तमता इत्यादि की प्रकृति तथा इनके अर्थ का अध्ययन है। मुख्य वर्ग दर्शनशास्त्र को निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है–

R1	Logic
R2	Epistemology
R3	Metaphysics
R4	Ethics
R5	Aesthetics
R6	Favoured System (1) (जिसमें भारतीय दर्शनशास्त्र सम्मिलित है)
R7	Favoured System (2)
R8	Other Systems (भौगोलिक युक्ति से प्राप्त)

प्रामाणिक वर्गों "R1 Logic" एवं "R2 Epistemology" को पुन: प्रामाणिक विभाजनों में विभाजित किया गया है। प्रामाणिक वर्गों 'R3 Metaphysics', 'R4 Ethics' एवं 'R6 Indian Philosophy' के लिए अलग-अलग पक्ष-परिसूत्र दिये गये हैं। इन पक्ष-परिसूत्रों का अध्ययन एक-एक करके करें—

R3 Metaphysics : प्रामाणिक वर्ग (C.C. : Canonical Class) Metaphysics का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

R3 [P], [P2]

यहाँ,	[P]	=	दृष्टिकोण (View)
	[P2]	=	विषय (Subject)

पक्ष [P] के एकलों को तो परिगणित किया गया है तथा पक्ष [P2] के एकलों को विषय युक्ति (SD) से प्राप्त करना है।

NOTES

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Hindu Materialism

वर्ग संख्या : R33, (Q2)

यहाँ, R	=	Philosophy (M.C.)
R3	=	Philosophy (M.C.), Metaphysics (C.C.)
R33	=	Philosophy (M.C.), Metaphysics (C.C.), Materialism [P]
R33, (Q2)	=	Philosophy (M.C.), Metaphysics (C.C.), Materialism [P], Hinduism [P2] (got by Subject Device)

R4 Ethics : प्रामाणिक वर्ग Ethics का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

R4 [P], [P2]

यहाँ, [P] = विषय (Topic)

[P2] = नियंत्रणकारी सिद्धान्त (Controlling Principle)

दोनों पक्षों को अनुसूची में परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Christian Social Ethics

वर्ग संख्या : R43, (Q6)

यहाँ, R	=	Philosophy (M.C.)
R4	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.)
R43	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.), Hindu Philosophy [P]
R43, (Q6)	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.), Hindu Philosophy [P], Deductive Logic [P2] (Taken from Canonical Class Logic)

R6 Indian Philosophy : प्रामाणिक वर्ग Indian Philosophy का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

R6 [P], [P2]

यहाँ, [P] = प्रणाली (System)

R61 से R64 के अन्तर्गत रखे गये वर्ग प्रामाणिक वर्ग हैं एवं इनके लिए पक्ष [P2] के एकल मुख्य वर्ग 'R Philosophy' में Logic, Epistemology इत्यादि के प्रामाणिक विभाजनों के समान है।

पक्ष [P2] के एकलों के अन्तर्गत विभाजन R65 से R6893 मूल ग्रन्थ (Basic Text) को प्रदर्शित करते हैं जो अनुसूची में परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Deductive Logic and Hindu Philosophy

NOTES

वर्ग संख्या : R61, 12

यहाँ, R	=	Philosophy (M.C.)
R6	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.)
R61	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.), Hindu Philosophy [P]
R61, 12	=	Philosophy (M.C.), Indian Philosophy (C.C.), Hindu Philosophy [P], Deductive Logic [P2] (Taken from Canonical Class Logic)

7. अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र

अर्थशास्त्र वस्तुओं के उत्पादन, वितरण एवं उपभोग एवं देश की भौतिक समृद्धि की स्थितियों का विज्ञान है।

मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

X[P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = व्यवसाय (Business)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

व्यवसाय पक्ष [P] एवं समस्या पक्ष [E] [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। यदि आप सावधानीपूर्वक देखें तो पायेंगे कि एकल विचार 'Transport' को व्यवसाय पक्ष [P] एवं समस्या पक्ष [E] [2P] दोनों में स्थान दिया गया है। पक्ष [P] के अन्तर्गत आने वाली एकल संख्या '4 Transport' का उपयोग उन ग्रन्थों के लिए किया जाना चाहिए जो यातायात के व्यवसाय से सम्बन्धित हैं। दूसरी ओर पक्ष [E] [2P] के अन्तर्गत आने वाली एकल संख्या '4 Transport' का उपयोग केवल उन ग्रन्थों के लिए किया जाना चाहिए जो विशिष्ट उत्पादनों के वास्तविक यातायात की प्रक्रिया से सम्बन्धित हैं।

उदाहरण—

आख्या : Export of Textiles from India

वर्ग संख्या : X8 (M7) : 545.44

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X8	=	Economics (M.C.), Industry [P]
X8 (M7)	=	Economics (M.C.), Industry [P], Textile (Got by Subject Device)
X8 (M7) : 545	=	Economics (M.C.), Industry [P], Export [E]
X8 (M7) : 545.44	=	Economics (M.C.), Industry [P], Export [E], India [S] (Taken Space Isolate Schedule)

व्यक्तित्व पक्ष '61 Money' [P] की स्थिति में पदार्थ पक्ष [M] को अनुसूची में अलग से परिगणित किया गया है।

आख्या : Value of Paper Money

वर्ग संख्या : X61; 4 : 7

NOTES

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X61	=	Economics (M.C.), Money [P]
X61; 4	=	Economics (M.C.), Money [P], Paper [M]
X61; 4 : 7	=	Economics (M.C.), Money [P], Paper [M], Value [E]

पक्ष [P] के एकल '62 Bank' एवं '72 Taxation' एवं समस्या पक्ष [E] [2P] के कुछ विशेष एकलों को अनुसूची के अन्त में पृथक् रूप से परिगणित किया गया है।

आख्या : Rate of Interest in Savings Banks

वर्ग संख्या : X627 : 11

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X627	=	Economics (M.C.), Savings Bank [P]
X627 : 11	=	Economics (M.C.), Savings Bank [P], Rate of Interest [E] (Special Isolate cnumerated separately at the end of the schedule of Main Class 'X Economics')

समस्या पक्ष [E] cum [2P] के अन्तर्गत एकल '9 Personal Management' का सावधानी से अध्ययन करना आवश्यक है। इन एकलों को तीन सेक्टरों (Sectors) में व्यवस्थित किया गया है—

(1) न्यूनतम मूर्त सेक्टर 91 से 97 (Least Concrete Sector 91 to 97)

(2) अधिक मूर्त सेक्टर 99A से 99W (More Concrete Sector 99A to 99W)

(3) सर्वाधिक मूर्त सेक्टर 9A से 9Q (Still More Concrte Sector 9A to 9Q)

यदि कोई प्रलेख एक से अधिक सेक्टरों से सम्बन्धित है तो प्रत्येक सेक्टर के लिए एकल संख्या का उपयोग पक्ष [E] में 9 के पश्चात् पक्ष [2P] के स्तर के रूप में किया जाना चाहिए एवं अधिक मूर्त सेक्टर को पहला स्तर बनाना चाहिए। इसकी व्याख्या निम्नलिखित उदाहरणों की सहायता से अधिक अच्छी तरह से की जा सकती है—

आख्या : Status of Part Time Clerical Workers

वर्ग संख्या : X : 9G4, 9P, 53

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X : 9	=	Economics (M.C.), Personnel Management [E]
X : 9G4	=	Economics (M.C.), Personnel Management [E], Part Timed [2P] (Taken from Still More Concrete Sector of 9)
X : 9G4, 9P	=	Economics (M.C.), Personnel Management [E], Part Timed [2P] (Still More Concrete Sector of 9), Clerical [2P] (More Concrete Sector of 9)
X : 9G4, 9P, 53	=	Economics (M.C.), Personnel Management [E], Part Timed [2P] (Still More Concrete Sector of 9), Clerical [2P] (More Concrete Sector of 9), Status [2P] (Least Concrete Sector of 9)

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरण में तीनों सेक्टर विद्यमान हैं। इसलिए सर्वाधिक मूर्त सेक्टर को पहले रखा गया है, इसके पश्चात् अधिक मूर्त सेक्टर, एवं अन्त में न्यूनतम मूर्त सेक्टर को रखा गया है। सभी सेक्टरों को अल्पविराम या कॉमा से पृथक् किया गया है एवं पहला अंक '9', जो 'Personnel Management' को प्रदर्शित करता है, को केवल एक बार लिखा गया है।

इसी प्रकार '9 Personnel Management' के पहले सेक्टर में '97 Industrial Relation' के अन्तर्गत आने वाले तीनों सेक्टरों को दिखाया गया है। इनका उपयोग '9 Personnel Management' के तीनों सेक्टरों के समान है।

आख्या : Settlement of Disputes by Trade Union

वर्ग संख्या : X : 97D, 9C, 8

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X : 97	=	Economics (M.C.), Industrial Relation [E]
X : 97D	=	Economics (M.C.), Industrial Relation [E], Trade Union [2P] (Still More Concrete Sector of 97)
X : 97D, 9C	=	Economics (M.C.), Industrial Relation [E], Trade Union [2P] (Still More Concrete Sector of 97), Dispute [2P] (More Concrete Sector of 97)
X : 97D, 9C, 8	=	Economics (M.C.), Industrial Relation [E], Trade Union [2P] (Still More Concrete Sector of 97), Dispute [2P] (More Concrete Sector of 97), Settlement [2P] (Least Concrete Sector of 97)

प्रणाली एवं विशिष्ट वर्ग (Systems and Specials)

अर्थशास्त्र की अनुसूची के अन्त में आप प्रणाली (System) एवं विशिष्ट (Special) वर्ग देखेंगे। यदि की संख्या को 'विशिष्ट की संख्या' या 'प्रणाली की संख्या' से जोड़ा जाता है तो इसके पहले कॉमा (,) आना चाहिए एवं यदि 'विशिष्ट की संख्या' को 'प्रणाली की संख्या' से जोड़ा जाता है तो 'विशिष्ट की संख्या' के पहले कॉमा (,) आना चाहिए।

आख्या : Cooperative Paper Industry

वर्ग संख्या : XM, 8(M13)

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
XM	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet)
XM, 8	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet), Industry [P]
XM, 8(M13)	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet), Industry [P], Paper (Derived through Subject Device)

आख्या : Small Scale Iron Industry

वर्ग संख्या : X9B, 8(F182)

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
X9B	=	Economics (M.C.), Small Scale (Special Facet)
X9B, 8(F182)	=	Economics (M.C.), Small Scale (Special Facet), Industry [P], Iron (Derived through Subject Device)

NOTES

आख्या : Cooperative Small Scale Textile Industry

वर्ग संख्या : XM, 9B, 8(M7)

यहाँ, X	=	Economics (M.C.)
XM	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet)
XM, 9B	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet), Small Scale (Special Facet)
XM, 9B, 8	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet), Small Scale (Special Facet), Industry [P]
XM, 9B, 8(M7)	=	Economics (M.C.), Cooperative (System Facet), Small Scale (Special Facet), Industry [P], Textiles (Derived through Subject Device)

समाजशास्त्र समाजों का एवं समूहों में मानव व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।

मुख्य वर्ग समाजशास्त्र का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

Y[P] : [E] [2P] : [2E] [3P]

यहाँ,	[P]	=	समूह (Group)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)
	[2E] [2P]	=	गौण समस्या (Secondary Problem)

पक्ष [P] के अन्तर्गत एकल संख्या 7 और इसके विभाजन मानव शरीर रचना विज्ञान (Anthropology) तथा मानवजाति विज्ञान (Ethnology) वर्गों के लिए है। पक्ष [E] cuni [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। पक्ष [2E] cum [3P] के एकलों को पक्ष [E] के 1, 3, 7 एवं 8 के लिए एक साथ एवं पक्ष [E] के 4 'Social Pathology' एवं 5 'Demography' एकलों के लिए पृथक् रूप से परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Asylum for Mentally Degenerated Women

वर्ग संख्या : Y15 : 423 : 65

यहाँ, Y	=	Sociology (M.C.)
Y15	=	Sociology (M.C.), Women [P]
Y15 : 423	=	Sociology (M.C.), Women [P], Mental Degeneration [E]
Y15 : 423 : 65	=	Sociology (M.C.), Women [P], Mental Degeneration [E], Asylum [2E]

8. विधि

मुख्य वर्ग विधि (Law) का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

Z[P], [P2], [P3], [P4]

यहाँ,	[P]	=	समुदाय (Community)
	[P2]	=	विधि I (Law I)
	[P3]	=	विधि II (Law II)
	[P4]	=	विधि III (Law III)

समुदाय पक्ष [P] के एकलों को, किसी राष्ट्र या किसी स्थानीय समुदाय के लिए भौगोलिक युक्ति से तथा अन्य सांस्कृतिक समूहों के लिए विषय युक्ति से, प्राप्त करना चाहिए।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : French Law

वर्ग संख्या : Z53

यहाँ, Z	=	Law (M.C.)
Z 53	=	Law (M.C.), France [P] (got by Geographical Device)

पक्ष [P2], [P3] एवं [P4] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। पक्ष [P4] में केवल [P3] के '7 Indgement and Decree' के लिए एकलों को परिगणित किया गया है। पक्ष [P2] के एवज 98 Document के लिए पक्ष [E] [2P] में एकलों का प्रावधान है।

उदाहरण—

आख्या : India China

वर्ग संख्या : Z44, Z, P5

यहाँ, Z	=	Law (M.C.)
Z44	=	Law (M.C.), France [P] (got by Geographical Device)
Z44.7	=	Law (M.C.), India [P], Cause of Action [P2]
Z44, 7.14	=	Law (M.C.), India [P], Cause of Action [P2], Criminal [P3]

आख्या : Rectification of the Negotiable Instrument Act

वर्ग संख्या : Z, 985 : 4

यहाँ, Z	=	Law (M.C.)
Z, 985	=	Law (M.C.), Negotiable Instrument [P2]
Z, 985 : 4	=	Law (M.C.), Negotiable Instrument [P2], Rectification [E]

9. भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान भाषाओं का विज्ञान है। मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

P[P], [P2], [P3] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	भाषा (Language
	[P2]	=	भिन्न रूप, अवस्था (Variant, Stage)
	[P3]	=	तत्त्व (Element)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकलों को भाषा एकल अनुसूची (पृष्ठ संख्या 2.26) से लिया जाना है।

उदाहरण के लिए—

आख्या : Bengali Language

वर्ग संख्या : P157

यहाँ, P	=	Linguistics (M.C.)

NOTES

P157	=	Linguistics (M.C.), Bengali [P] (Taken from Language Isolate Schedule)

पक्ष [P2] Variant या Stage का प्रतिनिधित्व करता है। यदि कोई प्रलेख भाषा के भिन्न रूपों जैसे प्रान्तीय भाषा का ग्रामीण भाषा से सम्बन्धित है तो भाषा की संख्या को पक्ष [P2] के अन्तर्गत दिये गये उस भिन्न रूप (Variant) की उपर्युक्त संख्या को जोड़कर विभाजित किया जाना चाहिए। यदि कोई प्रलेख एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र की एक विशिष्ट प्रान्तीय बोली से सम्बन्धित है तो प्रान्तीय भाषा की संख्या को स्थान एकल अनुसूची से ली गई भौगोलिक संख्या को जोड़कर विभाजित किया जाना चाहिए।

उदाहरण—

आख्या : Hindi Dialect Spoken in South India

वर्ग संख्या : P152, 9D442

यहाँ, P	=	Linguistics (M.C.)
P152	=	Linguistics (M.C.), Hindi [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
P152, 9D	=	Linguistics (M.C.), Hindi [P], Dialect [P2]
P152, 9D442	=	Linguistics (M.C.), Hindi [P], Dialect [P2], South India (Taken from Space Isolate Schedule)

पक्ष [P2] के एकलों के अन्तर्गत विशिष्ट शब्दावली (Jargon) की संख्या में आवश्यकतानुसार भौगोलिक संख्या एवं शताब्दी संख्या को जोड़कर इसे विस्तृत किया जा सकता है। भौगोलिक संख्या एवं शताब्दी को अल्पविराम (,) से पृथक् किया जाना चाहिए।

उदाहरण—

आख्या : Anglo-Indian Jargons of 18th Century

वर्ग संख्या : P[1], 9J44, L

यहाँ, P	=	Linguistics (M.C.)
P111	=	Linguistics (M.C.), English [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
P111, 9J	=	Linguistics (M.C.), English [P], Jargon [P2]
P111, 9J44	=	Linguistics (M.C.), English [P], Jargon [P2], India (Taken from Space Isolate Schedule)
P111, 9J44, L	=	Linguistics (M.C.), English [P], Jargon [P2], India (Taken from Space Isolate Schedule), 18th Century (Century Number)

भिन्न रूप की संख्या एवं पक्ष [P3] को कॉमा से पृथक् किया जाना चाहिए।

स्व-प्रगति परीक्षण

3. मुख्य वर्ग इतिहास के पक्ष परिसूत्र का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

NOTES

भाषा की अवस्था को कालक्रम युक्ति से प्राप्त करना चाहिए। मुख्य वर्ग 'P Linguistics' में कुछ भाषाओं की अवस्थाओं को अनुसूची में परिगणित किया गया है।

यदि अवस्था की संख्या एवं भिन्न रूप की संख्या दोनों का उपयोग किया जाना है तो भिन्न रूप की संख्या को अवस्था की संख्या के पश्चात् रखना चाहिए एवं एक अल्पविराम (,) से उन्हें पृथक् किया जाना चाहिए।

उदाहरण—

आख्या : Modern English Dialect

वर्ग संख्या : P111, J, 9D

यहाँ, P	=	Linguisties (M.C.)
P111	=	Linguisties (M.C.), English [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
P111, J	=	Linguisties (M.C.), English [P], Modern [P2] (Stage Facet)
P111, J, PD	=	Linguisties (M.C.), English [P], Modern [P2] (Stage Facet), Dialects [P2] (Variant Facet)

तत्त्व पक्ष [P3] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। एकल 11 एवं 15 एवं उनके उपविभाजनों के लिए सामान्य एकलों को अलग से परिगणित किया गया है।

समस्या पक्ष [E] [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। यदि समस्या की संख्या '4' है या '5' का उपविभाजन है एवं तत्त्व की संख्या '3' है तो तत्त्व संख्या को हटा दिया जाना चाहिए।

एकल संख्या P(1) Calligraphy, P(3) Shorthand एवं P(6) Typewriting को परिशिष्ट (पृष्ठ संख्या 27) में दिये गये निर्देश के अनुसार हटा दिया जाना है।

उदाहरण—

आख्या : Analysis of Compound Sentences in Modern English Language

वर्ग संख्या : P111, J605 : 33

यहाँ, P	=	Linguisties (M.C.)
P111	=	Linguisties (M.C.), English [P] (Taken from Language Isolate Schedule)
P111, J	=	Linguisties (M.C.), English [P], Modern [P2] (Stage Facet)
P111, J605	=	Linguisties (M.C.), English [P], Modern [P2], Compound Sentence [P3]
P111, J605 : 33	=	Linguisties (M.C.), English [P], Modern [P2], Compound Sentence [P3], Analysis [E]

स्व-प्रगति परीक्षण

4. मुख्य वर्ग राजनीति विज्ञान का पक्ष परिसूत्र बताइये।

.....

.....

.....

.....

स्व-प्रगति परीक्षण

3. मुख्य वर्ग इतिहास के पक्ष परिसूत्र का उल्लेख कीजिए।
4. मुख्य वर्ग राजनीति विज्ञान का पक्ष परिसूत्र बताइये।

NOTES

10. सार-संक्षेप

इस इकाई में हमने मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के मुख्य वर्गों की अनुसूचियों की चर्चा की है जिसमें निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा हुई है—

मुख्य वर्ग 'O Literature' के पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष [P] के 4 स्तर हैं, जो इस प्रकार हैं : भाषा [P], रूप या विधा [P2], लेखक [P3] एवं कृति [P4]। कृति संख्या को एक विशेष विधि से निर्मित किया जाता है, जिसका विस्तार से वर्णन किया गया है।

मुख्य वर्ग 'X Economics' की अनुसूची में पक्ष [E] [2P] के अन्तर्गत एकल '9 Personnel Management' को 3 सेक्टरों में विभाजित किया गया है : न्यूनतम मूर्त, अधिक मूर्त एवं सर्वाधिक मूर्त सेक्टर। इन तीनों सेक्टरों के उपयोग की विधि का उदाहरणों सहित विस्तृत विवेचन किया गया है।

मुख्य वर्ग 'Z Law' के पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष [P] के भी चार स्तर है।

मुख्य वर्ग 'P Linguistics' के पक्ष [P2] में भिन्न रूप पक्ष या अवस्था या दोनों हो सकते हैं। भिन्न रूप संख्या एवं अवस्था के उपयोग के विशेष नियम है।

11. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. मुख्य वर्ग साहित्य का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है :

   O[P], [P2] [P3], [P4]

   जहाँ, [P] = भाषा (Language)

   [P2] = रूप (Form)

   [P3] = लेखक (Author)

   [P4] = कृति (Work)

   उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र में आप देखेंगे कि व्यक्तित्व पक्ष [P] की अभिव्यक्ति चार स्तरों में हुई है जो इस प्रकार है-

   [P], [P2], [P3], [P3], [P4]।

2. व्यक्तित्व का प्रथम स्तर भाषा पक्ष है जो साहित्यिक कृति की भाषा का बोध कराता है। यह आवश्यक नहीं है कि कृति की भाषा पुस्तक की भाषा ही हो। उदाहरण के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीताजंली' बंगला भाषा के साहित्य की कृति है। यदि इस कृति की आलोचना अंग्रेजी में है तब भी अंग्रेजी भाषा के स्थान पर बंगला भाषा की संख्या ही दी जनी चाहिए। [P] पक्ष में भाषा एकल के लिए संख्याएँ कोलन क्लैसिफिकेशन, षष्ठम् संस्करण (पुनर्मुद्रित) के अध्याय 5 (पृष्ठ संख्या 2.26) से ली जाती है।

   व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर [P2] रूप या विधा पक्ष है जिसके एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। व्यक्तित्व का तृतीय स्तर [P3] लेखक पक्ष है जिसके एकलों को कालक्रम युक्ति से निर्मित किया जाना है, अर्थात् लेखक के जन्म वर्ष के लिए अंकन को कोलन क्लैसिफिकेशन षष्ठम् संस्करण के अध्याय 3 (पृष्ठ संख्या 2.7) से लिया जाना है। आगे बढ़ने से पहले हम कालक्रम युक्ति को समझने का प्रयत्न करते हैं।

3. मुख्य वर्ग इतिहास का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

   V[P], [P2] : [E] [2P] '[T]

NOTES

जहाँ, [P] = समुदाय (Community)

[P2] = भाग (Part)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र में व्यक्तित्व पक्ष [P] दो स्तरों में है—[P] व [P2]।

ऊर्जा पक्ष के प्रथम आवर्तन [E] के पश्चात् व्यक्तित्व पक्ष का द्वितीय आवर्तन [2P] भी है।

[P] के एकल को भौगोलिक युक्ति से निर्मित करना है।

भौगोलिक युक्ति के द्वारा एकलों को प्राप्त करने के लिए स्थान एकल अनुसूची (सी सी की पृष्ठ संख्या 2.8) का उपयोग करना है।

[P2] एवं [E] cum [2P] के एकल अनुसूची में परिगणित किये गये हैं।

4. राजनीति विज्ञान राजनीति एवं शासन का वैज्ञानिक अध्ययन है। मुख्य वर्ग राजनीति विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

W[P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = राज्य के प्रकार (Type of State)

[P2] = भाग (Part)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है, पक्ष [P2] एवं पक्ष [E] cum [2P] के एकल मुख्य वर्ग 'V' History' के इन पक्षों के एकलों के समान हैं।

12. मुख्य शब्द

कालक्रम युक्ति (Chronological Device) : एक नए एकल को बनाने या एक एकल का विस्तार करने के लिए काल एकलों की अनुसूची से कालक्रम संख्याओं का प्रयोग।

पक्ष-परिसूत्र (Facet Formula) : कोलन क्लासीफिकेशन में प्रत्येक मुख्य वर्ग में विभिन्न पक्षों के क्रम को दर्शाने वाला सूत्र।

प्रणाली (System) : विचारधारा (A School of thought)।

प्रामाणिक वर्ग (Canonical Class) : मुख्य वर्ग का परम्परागत विभाजन।

भौगोलिक युक्ति (Geographical Device) : एक नए एकल को बनाने या एक एकल को आगे बढ़ाने के लिए स्थान एकलों की अनुसूची से भौगोलिक संख्याओं का उपयोग।

विशिष्ट (Special) : अध्ययन का एक विशिष्ट दृष्टिकोण।

विषय युक्ति (Subject Device) : किसी पक्ष का बनाने या इसे आगे बढ़ाने के लिए प्रयुक्त ऐसी विधि जिसमें अनुसूची से कहीं से भी किसी अन्य वर्ग संख्या का संबंधित पक्ष में जोड़ा जाता है। विषय युक्ति से प्राप्त संख्याओं के भाग को लघु कोष्ठकों में रखा जाता है।

NOTES

13. अभ्यास-प्रश्न

(1) मुख्य वर्ग मनोविज्ञान के पक्ष-परिसूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

(2) मुख्य वर्ग शिक्षा के पक्ष-परिसूत्र को उदाहरण सहित समझाइए।

(3) मुख्य वर्ग धर्म के पक्ष-परिसूत्र की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

(4) मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र के पक्ष-परिसूत्र को उपर्युक्त उदाहरण सहायता से स्पष्ट कीजिए।

(5) मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र उदाहरण सहित लिखिए।

14. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- Kaula, P. N. (1985). A Treatise on Colon Classification. New Delhi : Sterling Publishers.
- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. Reprint, Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.
- Sharma, Pandey S.K. (2000). Colon Classification Made Easy. New Delhi : Ess Ess.
- शर्मा, पाण्डेय एस.के. (1998)। सरलीकृत द्विबिन्दु वर्गीकरण। दिल्ली : सत्साहित्य प्रकाशन।

जीव-विज्ञान

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान एवं प्राणि-विज्ञान
4. भूगर्भ-विज्ञान एवं उत्खनन
5. कृषि
6. आयुर्विज्ञान
7. सार-संक्षेप
8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
9. मुख्य शब्द
10. अभ्यास-प्रश्न
11. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

पूर्व अध्याय में आप मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के ग्रन्थों को वर्गीकृत करने के लिए कोलन क्लैसिफिकेशन का उपयोग सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

इस अध्याय में हम आपको जीव-विज्ञान के कुछ मुख्य वर्गों की अनुसूचियों से परिचित करा रहे हैं।

इस अध्याय के अध्ययन के उपरान्त आप—

- इस इकाई में वर्णित मुख्य वर्गों में से प्रत्येक के पक्ष-परिसूत्र की व्याख्या करने में; तथा
- इन मुख्य वर्गों के अन्तर्गत आने वाले विषयों की पुस्तकों की वर्ग संख्या के निर्माणमें समर्थ होंगे।

2. परिचय

इस अध्याय में हम जीव-विज्ञान समूह के अन्तर्गत आने वाले कुछ मुख्य वर्गों की चर्चा करेंगे। इनमें से कुछ मुख्य वर्गों में कुछ समान विशेषताएँ हैं। जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान एवं जन्तु-विज्ञान के समस्या पक्ष एक समान हैं। मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान में परिगणित कई एकलों, विशेष रूप से पक्ष [E] के एकल '4 Disease' एवं पक्ष [2E] के एकल '4 Pathology' के विभाजनों, का वहाँ उपयोग किया जा सकता है जहाँ इनके लिए निर्देश दिये गये हैं।

मुख्य वर्ग कृषि में हमने भिन्नात्मक पक्ष (Differential Facets) की अवधारणा को समझाने का प्रयत्न किया है।

हम मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान में प्रणाली एवं विशेष वर्ग (System and Specials) तथा अध्यारोपण युक्ति (Superimposition Device) के उपयोग को समझाने का भी प्रयत्न करेंगे।

3. जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान एवं प्राणि-विज्ञान

जीव-विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसमें जीवन्त प्राणियों का अध्ययन किया जाता है। यह किसी निश्चित रूप के अध्ययन तक सीमित नहीं है अपितु सामान्य रूप से जीवन का अध्ययन है। जब पौधा, जन्तुओं तथा मानवों का संयुक्त रूप से अध्ययन किया गया हो तब मुख्य वर्ग जीव-विज्ञान का उपयोग किया जाना चाहिए।

मुख्य वर्ग जीव-विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

यहाँ, [P] = अंग एवं विशेष समूह (Organ and Special Grouping)

[E], [2P] = समस्या (Problem)

अंग पक्ष (Organ Facet) में केवल अंग संख्या '1', '91' एवं '95' अनुसूची में परिगणित है। अंग संख्या 'I' जीवन के जैविक घटना के रूप में सामान्य व्याख्या से सम्बन्धित है। अन्य विभाजन मुख्य वर्ग 'L Medicine' एवं 'I Botany', जैसी भी स्थिति हो, के समान होंगे।

उदाहरण—

आख्या : Respiratory System is Living Organisms

वर्ग संख्या : G4

यहाँ, G = Biology (M.C.)

G9555 = Biology (M.C.), Respiratory System [P] (Taken from Main Class 'L Medicine')

आख्या : Studies in Marine Biology

वर्ग संख्या : G9555

यहाँ, G	=	Biology (M.C.)
G9555	=	Biology (M.C.), Marine [P]

NOTES

अनुसूची में परिगणित समस्या पक्ष [E] cum [2P] के अन्तर्गत एकल '4 Pathology' को मुख्य वर्ग 'L Medicine' की तरह उपविभाजित किया गया है। यदि आप मुख्य वर्ग 'L Medicine' की अनुसूची देखेंगे तो पायेंगे कि एकल 'Pathology' के उपविभाजन [2E] cum [3P] के अन्तर्गत दिये गये हैं।

आख्या : Chemical Examination of Cell Membrane

वर्ग संख्या : G111 : 403

यहाँ, G	=	Biology (M.C.)
G111	=	Biology (M.C.), Cell Membrane [P]
G111 : 4	=	Biology (M.C.), Cell Membrane [P], Pathology [E]
G111 : 403	=	Biology (M.C.), Cell Membrane [P], Pathology [E], Chemical Examination (Subdivision of Pathology taken from Main Class 'L Medicine')

पक्ष [E] [2P] के एकलों '33 Metabolism', '341 Inanition', '345 Water Fasting', '346 Fasting' एवं उनके उपविभाजनों के लिए पदार्थ पक्ष [2M] को जोड़ने का प्रावधान हैं पक्ष [2M] के एकल, मुख्य वर्ग 'E Chemistry' के व्यक्तित्व पक्ष [P] के समान होंगे। पदार्थ पक्ष [2M] को विषय युक्ति द्वारा लाना चाहिए (सीसी की पृष्ठ संख्या 1.79 पर नियम G233 एवं G25 देखिये)।

उदाहरण—

आख्या : Chemical Effect of Enzymes

वर्ग संख्या : G : 33E; (E982)

यहाँ, G	=	Biology (M.C.)
G : 33	=	Biology (M.C.), Metabolism [E]
G : 33E	=	Biology (M.C.), Metabolism [E], Chemical Effect [2P]
G : 33 E; (E982)	=	Biology (M.C.), Metabolism [E], Chemical Effect [2P], Enzymes [2M] (Taken from Main Class 'E Chemistry')

पदार्थ पक्ष का और अधिक विस्तार—

(E 982)

यहाँ, E	=	Chemistry (M.C.)
E982	=	Chemistry (M.C.), Enzymes [P]

टिप्पणी : कोष्ठकों का उपयोग विषय युक्ति के लिए किया जाता है।

आख्या : Alkaline Metabolism of Tissues

वर्ग संख्या : G12 : 33; (E92)

यहाँ, G	=	Chemistry (M.C.)
G12	=	Chemistry (M.C.), Tissue [P]
G12 : 33	=	Chemistry (M.C.), Tissue [P], Metabolism [E]
G12 : 33; (E92)	=	Chemistry (M.C.), Tissue [P], Metabolism [E], Alkaloid [2M]

NOTES

पदार्थ पक्ष का और अधिक विस्तार—

(E92)

यहाँ, E	=	Chemistry (M.C.)
E92	=	Chemistry (M.C.), Alkaloid [P]

नियम संख्या G25 (पृष्ठ संख्या 1.79) के अनुसार पक्ष [E] के एकल यदि '12 से 19' हों या '5 Ecology' या इसके किसी उपविभाजन हों तो स्थान पक्ष [S] को जोड़ना आवश्यक हो सकता है।

उदाहरण—

आख्या : Ecology of Living Organism in Mountain Regions in India

वर्ग संख्या : G9518 : 5.44

यहाँ, G	=	Biology (M.C.)
G9518	=	Biology (M.C.), Mountain [P]
G9518 : 5	=	Biology (M.C.), Mountain [P], Ecology [E]
G9518 : 5.44	=	Biology (M.C.), Mountain [P], Ecology [E], India [S], (Taken from Space Isolate Schedule)

वनस्पति-विज्ञान पौधों के वैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित विषय है।

मुख्य वर्ग वनस्पति विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

1[P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, P	=	प्राकृतिक समूह (Natural Group)
[P2]	=	अंग (Organ)
[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

पक्ष [P] एवं [P2] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। प्राकृतिक समूह पक्ष [P] के विभाजन '1 Cryptogamia' के उपविभाजनों के रूप में '2 Thallophyta', '3 Bryophyta' एवं '4 Pteridophyta' को दिया गया है। इसी प्रकार विभाजन '5 Phanerogamia' के उपविभाजनों के रूप में '6 Gymnosperms', '7 Monocotyledons' तथा '8 Dicotyledon' को दिया गया है।

एकल संख्या '95 Ecological Groups' के विभाजन, निम्नलिखित योग के साथ, मुख्य वर्ग 'G Biology' के समान होंगे।

952 Creeper
953 Climber
9597 Isectivorous Plant

पक्ष [P2] के एकलों के अन्तर्गत अंग (Organ) की क्रियाशील प्रणाली (Functional System) के लिए जहाँ तक उपर्युक्त हो, मुख्य वर्ग 'L Medicien' के पक्ष [P] के एकल '2 से 5' का उपयोग किया जाना है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. मुख्य वर्ग जीवविज्ञान का पक्ष-परिसूत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

पक्ष [E] cum [2P] के एकल '8 Palcobotany' के योग के साथ, मुख्य वर्ग 'G Biology' के पक्ष [E] cum [2P] के एकलों के समान हैं।

मुख्य वर्ग 'I Botany' की अनुसूची के अन्त में प्राकृतिक समूहों के लिए एक अनुक्रमणिका दी गई है जो अनुसूची में किसी निश्चित प्राकृतिक समूह एकल को खोजने में सहायता कर सकती है।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Physiology of Fern Leaves

वर्ग संख्या : I42, 15 : 3

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
I42	=	Botany (M.C.), Filicineae (Ferm) [P]
I42, 15	=	Botany (M.C.), Filicineae (Ferm) [P], Leaf [P2]
I42, 15 : 3	=	Botany (M.C.), Filicineae (Ferm) [P], Leaf [P2], Physiology [E] (Taken from Main Class 'G Biology')

आख्या : Microscopic Study of Protophyta

वर्ग संख्या : I21 : 19

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
I21	=	Botany (M.C.), Protophyta [P]
I21 : 19	=	Botany (M.C.), Protophyta [P], Icroscopy [E] (Taken from Main Class 'G Biology')

आख्या : Classification of Desert Plants

वर्ग संख्या : I95121 : 11

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
I95121	=	Botany (M.C.), Desert [P] (Taken from Main Class 'G Biology')
I95121 : 11	=	Botany (M.C.), Desert [P], Classification [E] (Taken from Main Class 'G Biology')

आख्या : Fossils of Mountain Plants

वर्ग संख्या : I9515 : 8

यहाँ, I	=	Botany (M.C.)
I9518	=	B
I9518 : 8	=	B

प्राणि-विज्ञान विभिन्न प्रकार के जन्तुओं, वे कहाँ और कैसे रहते हैं, का वैज्ञानिक अध्ययन है।

मुख्य वर्ग प्राणि-विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र है—

K[P] : [E] [2P]

यहाँ, [P]	=	प्राकृतिक समूह (Natural Group)
[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

[P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। विभाजन '2 से 8' जन्तुओं के प्राकृतिक समूहों के लिए हैं। ये एकल 'I Invertebrates' के उपविभाजन हैं।

NOTES

मुख्य वर्ग 'K Zoology' की अनुसूची के अन्त में प्राकृतिक समूहों के लिए एक अनुक्रमणिका दी गई है जो अनुसूची में परिगणित प्राकृतिक समूह एकलों को खोजने में सहायक हो सकती है।

पक्ष [E] cum [2P] के एकल, निम्नलिखित दो एकलों के अतिरिक्त, मुख्य वर्ग 'G Biology' के पक्ष [E] cum [2P] के एकलों के समान हैं—

591 Relation of young ones

595 Courting

उदाहरण—

आख्या : Physiology of Aves

वर्ग संख्या : K96 : 3

यहाँ, K	=	Zoology (M.C.)
K96	=	Zoology (M.C.), Aves [P]
K96 : 3	=	Zoology (M.C.), Aves [P], Physiology [E] (Taken from Main Class 'G Biology')

आख्या : Natural History of Carnivora Animals

वर्ग संख्या : K9791 : 12

यहाँ, K	=	Zoology (M.C.)
K9791	=	Zoology (M.C.), Carnivora [P]
K9791 : 2	=	Zoology (M.C.), Carnivora [P], Natural History [E] (Taken from Main Class 'G Biology')

आख्या : Genetic Study of the Primates

वर्ग संख्या : K92 : 33; (E9Z2)

यहाँ, K	=	Zoology (M.C.)
K92	=	Zoology (M.C.), Psces [P]
K92 : 33	=	Zoology (M.C.), Psces [P], Metabolism [E] (Taken from Main Class 'G Biology')
K92 : 33; (E92Z2)	=	Zoology (M.C.), Psces [P], Metabolism [E], Protein [2M] (Taken from Main Class 'E Chemistry')

पदार्थ पक्ष का और अधिक विस्तार

(E 92Z2)

E	=	Chemistry (M.C.)
E92Z2	=	Chemistry (M.C.), Protein [P]

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरण में आपने देखा होगा कि पदार्थ पक्ष का उपयोग किया गया है यद्यपि इसे पक्ष-परिसूत्र में नहीं दिया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पक्ष [E] के एकलों को मुख्य वर्ग 'G Biology' से लेने के निद्रेश हैं जहाँ पक्ष [E] के एकल '33 Metabolism' के लिए पदार्थ पक्ष [2M] का उपयोग किये जाने का प्रावधान है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. मुख्य वर्ग प्राणी विज्ञान के पक्ष-परिसूत्र को समझाइये।

.....

.....

.....

.....

भूगर्भ-विज्ञान चट्टानों, मिट्टी इत्यादि जैसे पदार्थों, जिनसे पृथ्वी बनी है, तथा विश्व के इतिहास में इनके परिवर्तनों के अध्ययन का विज्ञान है।

NOTES

मुख्य वर्ग भूगर्भ-विज्ञान को निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है—

H1 Mineralogy
H2 Petrology
H3 Structural Geology
H4 Dynamic Geology
H5 Stratigraphy
H6 Palacontology
H7 Economic Geology
H8 Cosmic Hypothesis

अधिकतर प्रामाणिक वर्गों के लिए उनका अलग पक्ष-परिसूत्र है। प्रामाणिक वर्ग 'H3 Structural Geology', 'H4 Dynamic Geology' एवं 'H5 Stratigraphy' को पुनः प्रामाणिक विभाजनों में विभाजित किया गया है।

इन प्रामाणिक वर्गों का अलग-अलग वर्णन नीचे प्रस्तुत है—

H1 Mineralogy : यह खनिजों का वैज्ञानिक अध्ययन है। प्रामाणिक वर्ग 'H1 Mineralogy' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

H1 [P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)
[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकल मुख्य वर्ग 'E Chemistry' के पक्ष [P] के एकलों के समान हैं परन्तु केवल संयोजकता अंक के द्वारा प्रवर्धन आवश्यक नहीं है। इनके साथ ही प्रामाणिक वर्ग 'H1 Minerology' के पक्ष [P] में कुछ अन्य एकल परिगणित किये गये हैं। पक्ष [E] cum [2P] के एकल '1 Preliminaries' के उपविभाजनों को मुख्य वर्ग 'G Biology' से लिया जाना है। इनके साथ ही प्रामाणिक वर्ग 'H1 Minerology' में कुछ अन्य एकलों को भी परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Crystallography of Topaz

वर्ग संख्या : H195 : 8

यहाँ, H = Geology (M.C.)
H1 = Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.)
H195 = Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.), Topaz [P]
H195 : 8 = Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.), Topaz [P], Crystallography [E]

आख्या : Method of Gold Prospecting

वर्ग संख्या : H1118 : 15

यहाँ, H = Geology (M.C.)
H1 = Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.)

NOTES

H1118	=	Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.), Gold [P]
H1118 : 15	=	Geology (M.C.), Mineralogy (C.C.), Gold [P], Prospecting [E]

H2 Petrology : यह चट्टानों के वैज्ञानिक अध्ययन की शाखा है। प्रामाणिक वर्ग Petrology का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

H2 [P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है एवं पक्ष [E] Cum [2P] के एकल 'H1 Mineralogy' के पक्ष [E] cum [2P] के एकलों के समान हैं जिनमें से '8 Crystallography' एवं इसके उपविभाजनों को छोड़ दिया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Genesis of Metamorphic Rock

वर्ग संख्या : H22 : 16

यहाँ, H	=	Geology (M.C.)
H2	=	Geology (M.C.), Petrology (C.C.)
H22	=	Geology (M.C.), Petrology (C.C.), Metamorphic Rock [P]
H22 : 16	=	Geology (M.C.), Petrology (C.C.), Metamorphic Rock [P], Genesis [E] (Taken from Foci [E] cum [2] of Canonical Class 'H1 Mineralogy')

प्रामाणिक वर्ग 'H3 Structural Geology', 'H4 Dyamic Geology' एवं 'H5 Stratigraphy' को पुनः प्रामाणिक विभाजनों में विभाजित किया गया है।

H6 Palaeontology : यह जीवाश्म के अध्ययन का विज्ञान है। इसे पुनः दो शाखाओं में विभाजित किया गया है—

Palaeobotany—यह पौधों के जीवाश्म का अध्ययन है।

Palacozoology—यह जन्तुओं के जीवाश्म का अध्ययन है।

Palaeobotony को मुख्य वर्ग 'I Botany' में सम्मिलित किया गया है। Palaeozoology के लिए प्रामाणिक वर्ग 'H6 Palaeontology' का उपयोग करें। इसे मुख्य वर्ग 'K Zoology' के प्राकृतिक समूह पक्ष (Natural Group Facet) [P] के द्वारा और आगे बढ़ाना चाहिए। यदि अध्ययन किसी निश्चित समय से सम्बन्धित है तो, समय पक्ष (Time Facet) [T] के लिए कालक्रम सारणी से एकल न लें, बल्कि 'H5 Stratigraphy' के उपविभाजनों में से उपर्युक्त समय (Stratigraphical Age) प्राप्त करें। 'H5' के स्थान पर 'A' का उपयोग किया जाना चाहिए (पृष्ठ संख्या 1.80, नियम संख्या H68u)।

उदाहरण—

आख्या : Mammal Fossils of Mesozoic Age

वर्ग संख्या : H697 'A3

यहाँ, H	=	Geology (M.C.)
H6	=	Geology (M.C.), Palaeontology (C.C.)

NOTES

H697	=	Geology (M.C.), Palaeontology (C.C.), Mammalia [P] (Taken from Natural Group Facet [P] of Main Class 'K Zoology')
H697 'A3	=	Geology (M.C.), Palaeontology (C.C.), Mammalia [P], Mesozoic (Taken from Canonical Class H5 Stratigraphy, 'H5' has been replaced by the Rule Number H68u, p. 1.80 of CC, 6th edition)

H7 Economic Geology : यह प्रामाणिक वर्ग उन पुस्तकों के लिए है जो अयस्क संचय (ore deposits), भूतलीय जल एवं अधातु एवं जैव संचय से सम्बन्धित हैं।

प्रामाणिक वर्ग 'H7 Economic Geology' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

H7 [P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)

[E] [2P] = समस्या (Problem) H1 Mineralogy के समान (पृष्ठ संख्या 1.81 का नियम H72 देखें)

पक्ष [P] एवं [E] [2P] के एकल प्रामाणिक वर्ग 'H1 Mineralogy' के एकलों के समान हैं।

उदाहरण—

आख्या : Prospecting of Zinc Ore Deposits in Bihar

वर्ग संख्या : H7123 : 15.4473

यहाँ, H	=	Geology (M.C.)
H7	=	Geology (M.C.), Economic Geology (C.C.)
H7123	=	Geology (M.C.), Economic Geology (C.C.), Zinc [P] (Taken from [P] of 'E Chemistry')
H7123 : 15	=	Geology (M.C.), Economic Geology (C.C.), Zinc [P], Prospecting [E] (Taken from [E] of H1 Mineralogy')
H7123 : 15.4473	=	Geology (M.C.), Economic Geology (C.C.), Zinc [P], Prospecting [E], Bihar [S] (Taken from Space Isolate Schedule)

प्रामाणिक वर्ग 'H8 Cosmic Hypothesis' को परिगणित नहीं किया गया है। नियम के अनुसार विशिष्ट प्राक्कल्प (hypothesis) का व्यष्टीकरण कालक्रम युक्ति से करना चाहिए।

उत्खनन (Mining) विज्ञान की वह शाखा है जो धरती से अयस्कें और खनिजों के उत्खनन की विधियों से सम्बन्धित है।

मुख्य वर्ग 'HX Mining' का पक्ष-सूत्र इस प्रकार है—

HX [P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)

[P2] = कार्य (Work)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकल प्रामाणिक वर्ग 'H1 Mineralogy' के पक्ष [P] के एकलों के समान हैं जिसका अर्थ है कि मुख्य वर्ग 'E Chemistry' के पदार्थ पक्ष [P] के एकलों का उपयोग किया जाना है। पक्ष [P2] एवं [E] [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Dangers of Underground Transport in the Copper Mines

वर्ग संख्या : HX113, 5 : 4

यहाँ, HX	=	Mining (M.C.)
HX113	=	Mining (M.C.), Copper [P] (Taken from Main Class 'E Chemistry')
HX113, 5	=	Mining (M.C.), Copper [P], Underground Vehicle [P2]
HX113, 5 : 4	=	Mining (M.C.), Copper [P], Underground Vehicle [P2], Danger [E]

आख्या : Lighting Facility in the Tunnels of Coal Mines

वर्ग संख्या : H551, 3 : 55

यहाँ, HX	=	Mining (M.C.)
HX551	=	Mining (M.C.), Coal [P] (Taken from Main Class 'F Technology')
HX551, 3	=	Mining (M.C.), Coal [P], Tunnels [P2]
HX551, 3 : 55	=	Mining (M.C.), Coal [P], Tunnels [P2], Lighting [E]

5. कृषि

कृषि खेती की कला या खेती का कार्य है जो विशेष रूप से फसलों को उपजाने से सम्बन्धित है। यह खाद्यपयोगी पौधों (Economic Plants), उनकी खेती, फसल काटने इत्यादि के अध्ययन से सम्बन्धित है।

मुख्य वर्ग 'J Agriculture' का पक्ष-परिसूत्र है—

J[P] : [E] [2P] : [2E]

यहाँ,	[P]	=	पौधा (Plant)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)
	[2E]	=	कार्य (Operation)

अंक उपयोगिता संख्या (Utility Number) है, द्वितीय अंक भाग संख्या (Part Number) है तथा, तृतीय अंक जाति-विशेष संख्या (Genus Number or Species Number) है। यदि तृतीय अंक जाति संख्या का प्रतिनिधित्व करती है तो चतुर्थ संख्या प्रजाति (Species) का प्रतिनिधित्व करेगी। पौध संख्या के बाकी अंक वनस्पति विशेष (Cultiver) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उदाहरण—

Tomato	=	37943
यहाँ, 3	=	खाद्य पदार्थ के लिए उपयोगिता संख्या (Utility Number for Food)
7	=	फल के लिए भाग संख्या (Part Number for Fruit)
9	=	जाति संख्या (Genus Number)
43	=	प्रजाति संख्या (Species Number)

वनस्पति विशेष संख्या (Cultiver Number) को आनुवार्णिक युक्ति से प्राप्त किया जाता है।

Parmal Rice	=	381P

NOTES

यहाँ, 3	=	खाद्य पदार्थ के लिए उपयोगिता संख्या (Utility Number for Food)
8	=	बीज के लिए भाग संख्या (Part Number for Seed)
1	=	चावल के लिए जाति एवं प्रजाति संख्या (Genus and Species Number for Rice)
P	=	परमल चावल के लिए वनस्पति विशेष संख्या, (आनुवर्णिक युक्ति से प्राप्त) (Cultiver Number for Parmal Varity got by Alphabetical Device)

पक्ष [E] के एकल अनुसूची में परिगणित हैं।

पक्ष [E] के कुछ एकलों के लिए पक्ष [2P] व [2E] के एकल पृथक् रूप से परिगणित किये गये हैं। इसे 'भिन्नात्मक पक्ष' (Differential Facets) के नाम से जाना जाता है।

एकल '1 Soil' के लिए पक्ष [2E] के एकल परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Tillage of Soil for Wheat Cultivation

वर्ग संख्या : J382 : 1: 2

यहाँ, J	=	Agriculture (M.C.)
J382	=	Agriculture (M.C.), Wheat [P]
J382 : 1	=	Agriculture (M.C.), Wheat [P], Soil [E]
J382 : 1 : 2	=	Agriculture (M.C.), Wheat [P], Soil [E], Tillage [2E]

पक्ष [E] के एकल '2 Manure' के लिए पक्ष [2P] एवं [2E] के एकल परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Application of Municipal Refuse for Carrot Cultivation

वर्ग संख्या : J333 : 23 : 3

यहाँ, J	=	Agriculture (M.C.)
J333	=	Agriculture (M.C.), Carrot [P]
J333 : 2	=	Agriculture (M.C.), Carrot [P], Manure [E]
J333 : 23	=	Agriculture (M.C.), Carrot [P], Manure [E], Municipal Refuse [2P]
J333 : 23 : 3	=	Agriculture (M.C.), Carrot [P], Manure [E], Municipal Refuse [2P], Application [2E]

पक्ष [E] के एकल '3 Propagation' के लिए पक्ष [2P] के एकलों का प्रावधान है जो पक्ष [P] की भाग पंक्ति के एकलों के समान हैं। पक्ष [2E] के एकल परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Sowing of Bulb for Lily Propagation

वर्ग संख्या : J16911 : 32 : 3

यहाँ, J	=	Agriculture (M.C.)
J16911	=	Agriculture (M.C.), Lily [P]
J16911 : 3	=	Agriculture (M.C.), Lily [P], Propagation [E]

NOTES

J16911 : 32 = Agriculture (M.C.), Lily [P], Propagation [E], Bulb [2P]

J16911 : 32 : 3 = Agriculture (M.C.), Lily [P], Propagation [E], Bulb [2P], Sowing [2E]

पक्ष [E] के एकल '4 Disease' के लिए पक्ष [2P] एवं [2E] के एकल मुख्य वर्ग 'L Medicine' के इन्हीं पक्षों के एकलों के समान हैं।

उदाहरण—

आख्या : Prevention of Bacterial Disease of Grape Plants

वर्ग संख्या : J374 : 424 : 5

यहाँ, J = Agriculture (M.C.)

J374 = Agriculture (M.C.), Grape Plant [P]

J374 : 4 = Agriculture (M.C.), Grape Plánt [P], Disease [E]

J374 : 424 = Agriculture (M.C.), Grape Plant [P], Disease [E], Bacterial [2P] (Taken from Main Class 'L Medicine')

J374 : 424 : 5 = Agriculture (M.C.), Grape Plant [P], Disease [E], Bacterial [2P], Preventive Step [2E] (Taken from Main Class 'L Medicine')

पक्ष [E] के एकल '7 Harvesting' के लिए पक्ष [2P] के एकल पक्ष [P] की भाग पंक्ति (Part Array of [P]) के एकलों के समान हैं। पक्ष [2E] cum [3P] के एकल परिगणित किये गये हैं।

उदाहरण—

आख्या : Threshing of Corn Seed

वर्ग संख्या : J385 : 78 : 4

यहाँ, J = Agriculture (M.C.)

J385 = Agriculture (M.C.), Corn [P]

J385 : 7 = Agriculture (M.C.), Corn [P], Harvesting [E]

J385 : 78 = Agriculture (M.C.), Corn [P], Harvesting [E], Seed [2P]

J385 : 78 : 4 = Agriculture (M.C.), Corn [P], Harvesting [E], Seed [2P], Threshing [2E]

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. मुख्य वर्ग भूगर्भ विज्ञान को किन प्रमाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है?

.....

.....

.....

.....

6. आयुर्विज्ञान

आयुर्विज्ञान मानव रोगों को समझने एवं उनकी चिकित्सा का विज्ञान है।

मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार हैं—

L[P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = अंग (Organ)

[E] = समस्या (Problem)

[2P] = कारण (Cause) (पक्ष [E] के एकल '4 Disease' के लिए)

पक्ष [E] के एकल '4 Disease' के लिए पक्ष [2E] [3P] का भी प्रावधान है।

NOTES

अंग पक्ष (Organ Facet) की एकल संख्या '1' मानव शरीर के भागों या क्षेत्रों के अनुसार विभाजित है। अंग संख्याएँ '2 से 8' कार्यकारी विभाजनों से सम्बन्धित हैं। एक क्षेत्रीय अंग (Regional Organ) के अन्तर्गत क्रियाशील अंग (Functional Organ) के भागों को क्षेत्रीय अंग, अंग के साथ अध्यारोपण युक्ति द्वारा जोड़कर दर्शाया जाता है। अध्यारोपण युक्ति के अन्तर्गत एक ही पक्ष के दो एकल अंकों को हाइफन '-' से जोड़ा जाता है।

उदाहरण—

Shoulder Bone = 82-161

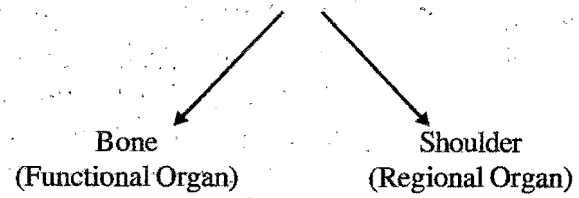

Toe Nail = 883-131

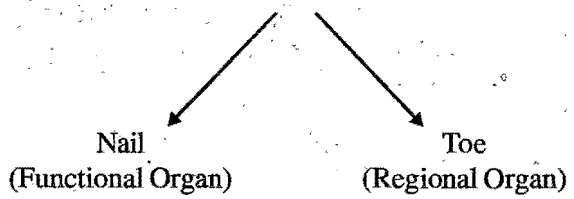

टिप्पणी : उपर्युक्त उदाहरणों में 'हाईफन' का उपयोग अध्यारोपण विधि के लिए एक संयोजक चिन्ह के रूप में किया गया है।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. मुख्य वर्ग श्भ उपदपदहश का पक्ष-परिसूत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

समस्या पक्ष [E] की परिगणित किया गया है। एकल '3 Physiology' के उपविभाजन मुख्य वर्ग 'G Biology' के इसी एकल के समान होंगे। विशेष वर्ग 'L9F Female Medicine' के लिए एकल '3 Physiology' के स्थान पर '3 Obstetries' और उसके उपविभाजनों का उपयोग किया जाना चाहिए।

पक्ष [E] के एकल '4 Disease' के लिए पक्ष [2P] के एकलों को पृथक् रूप से परिगणित किया गया है।

विशिष्ट रोगों की एक सूची उनकी वर्ग संख्याओं के साथ पक्ष [2P] के उपरान्त दी गई है।

उदाहरण—

आख्या : Treatment of Whooping Cough

वर्ग संख्या : L4 : 4242 : 6

यहाँ, L = Medicine (M.C.)

NOTES

L4	=	Medicine (M.C.), Respiratory System [P]
L4 : 4	=	Medicine (M.C.), Respiratory System [P], Disease [E]
L4 : 424	=	Medicine (M.C.), Respiratory System [P], Disease [E], Bacteria [2P]
L4 : 4242	=	Medicine (M.C.), Respiratory System [P], Disease [E], Bacteria [2P], Whooping Cough
L4 : 4242 : 6	=	Medicine (M.C.), Respiratory System [P], Disease [E], Bacteria [2P], Whooping Cough, Treatment [E]

टिप्पणी : Whooping Cough की वर्ग संख्या विशिष्ट रोग की अनुसूची में दी गई है।

पक्ष [2E] [3P] के एकल भी अनुसूची में परिगणित हैं। मुख्य वर्ग 'L Medicine' की अनुसूची के अन्त में विशेष वर्ग पक्ष एवं प्रणाली पक्ष के एकल परिगणित हैं।

उदाहरण—

आख्या : Treatment of Tropical Diseases

वर्ग संख्या : L9H : 4 : 6

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
L9H	=	Medicine (M.C.), Tropical (Special Facet)
L9H : 4	=	Medicine (M.C.), Tropical (Special Facet), Disease [E]
L9H : 4 : 6	=	Medicine (M.C.), Tropical (Special Facet), Disease [E], Treatment [2E]

आख्या : Homoeopathic Treatment of Diabetes in Old Age

वर्ग संख्या : LL, 9E, 293 : 46 : 6

यहाँ, L	=	Medicine (M.C.)
LL	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet)
LL, 9E	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Old Age (Special Facet)
LL, 9E, 293	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Old Age (Special Facet), Old Age (Special Facet), Pancreas [P]
LL, 9E, 293 : 4	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Old Age (Special Facet), Old Age (Special Facet), Pancreas [P], Disease [E]
LL, 9E, 293 : 46	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Old Age (Special Facet), Old Age (Special Facet), Pancreas [P], Disease [E], Nutrition [2P]
LL, 9E, 293 : 46 : 6	=	Medicine (M.C.), Homoeopathy (System Facet), Old Age (Special Facet), Old Age (Special Facet), Pancreas [P], Disease [E], Nutrition [2P], Treatment [2E]

टिप्पणी : (i) 'Diabetes' की वर्ग संख्या L293 : 46 विशिष्ट रोग के अन्तर्गत अनुसूची में परिगणित है।

(ii) इकाई 11 में चर्चा की जा चुकी है कि जब प्रणाली एवं विशेष वर्ग पक्ष दोनों हों तब प्रणाली पक्ष के पश्चात् विशेष वर्ग पक्ष आता है और अन्य पक्ष उनके उपरान्त आते हैं एवं इनको अल्पविराम से पृथक् किया जाता है।

7. सार-संक्षेप

इस अध्याय में जीव-विज्ञानों के अन्तर्गत आने वाले कुछ मुख्य वर्गों की चर्चा हमने की है। यह चर्चा निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं पर केन्द्रित है—

- मुख्य वर्ग 'E Chemistry' के पदार्थ पक्ष [P] का उपयोग जीव-विज्ञान, भूगर्भ-विज्ञान, उत्खनन (Mining), वनस्पति-विज्ञान एवं जन्तु-विज्ञान मुख्य वर्गों में किया जा सकता है।
- मुख्य वर्ग कृषि में पक्ष [P] का उपयोगिता पंक्ति एवं भाग पंक्ति में विभाजन है।
- वनस्पति-विज्ञान एवं जन्तु-विज्ञान मुख्य वर्गों के पक्ष-परिसूत्र एक समान हैं।
- जीव-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान एवं जन्तु-विज्ञान मुख्य वर्गों के लिए समस्या पक्ष एक समान है।
- मुख्य वर्ग 'J Agriculture' में 'भिन्नात्मक पक्ष' की अवधारणा विद्यमान है जिसका विवरण दिया गया है।
- मुख्य वर्ग भूगर्भ-विज्ञान को पुनः प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है।
- मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान में एक क्षेत्रीय अंग के अन्तर्गत क्रियाशील अंगों के भागों को दर्शाने के लिए अध्यारोपण विधि का उपयोग किया जाता है।

NOTES

8. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. मुख्य वर्ग जीव-विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

   यहाँ, [P] = अंग एवं विशेष समूह (Organ and Special Grouping)
   [E], [2P] = समस्या (Problem)

   अंग पक्ष (Organ Facet) में केवल अंग संख्या '1', '91' एवं '95' अनुसूची में परिगणित है। अंग संख्या 'I' जीवन के जैविक घटना के रूप में सामान्य व्याख्या से सम्बन्धित है। अन्य विभाजन मुख्य वर्ग 'L Medicine' एवं 'I Botany', जैसी भी स्थिति हो, के समान होंगे।

2. मुख्य वर्ग प्राणि-विज्ञान का पक्ष-परिसूत्र है—

   K[P] : [E] [2P]

   यहाँ, [P] = प्राकृतिक समूह (Natural Group)
   [E] [2P] = समस्या (Problem)

   [P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। विभाजन '2 से 8' जन्तुओं के प्राकृतिक समूहों के लिए हैं। ये एकल 'I Invertebrates' के उपविभाजन हैं।

   मुख्य वर्ग 'K Zoology' की अनुसूची के अन्त में प्राकृतिक समूहों के लिए एक अनुक्रमणिका दी गई है जो अनुसूची में परिगणित प्राकृतिक समूह एकलों को खोजने में सहायक हो सकती है।

   पक्ष [E] cum [2P] के एकल, निम्नलिखित दो एकलों के अतिरिक्त, मुख्य वर्ग 'G Biology' के पक्ष [E] cum [2P] के एकलों के समान हैं—

   591 Relation of young ones

   595 Courting

3. मुख्य वर्ग भूगर्भ-विज्ञान को निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है—

   H1 Mineralogy
   H2 Petrology
   H3 Structural Geology

NOTES

H4 Dynamic Geology
H5 Stratigraphy
H6 Palacontology
H7 Economic Geology
H8 Cosmic Hypothesis

4. मुख्य वर्ग 'HX Mining' का पक्ष-सूत्र इस प्रकार है—

HX [P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)
[P2] = कार्य (Work)
[E] [2P] = समस्या (Problem)

पक्ष [P] के एकल प्रामाणिक वर्ग 'H1 Mineralogy' के पक्ष [P] के एकलों के समान हैं जिसका अर्थ है कि मुख्य वर्ग 'E Chemistry' के पदार्थ पक्ष [P] के एकलों का उपयोग किया जाना है। पक्ष [P2] एवं [E] [2P] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है।

9. मुख्य शब्द

एकल (Isolate) : किसी एकल अवधारणा या एकल संख्या को द्योतित करने वाला जातीय पद (Generic term)।

पक्ष (Racet) : किसी विषय के घटक-चाहे वह मूलभूत विषय हो या सामान्य एकल हो-को द्योतित करने वाला जातीय पद।

पंक्ति (Array) : एक दूसरे से भिन्न समकक्ष (पारस्परिक रूप से अनन्य) उपवर्गों का समूह।

भिन्नतात्मक पक्ष (Differential Facet) : एक पक्ष के विभिन्न एकल जिन्हें उनके गुण द्वारा विभिन्न पक्षों में रखा गया है।

10. अभ्यास-प्रश्न

(1) आख्या 'Nature History of Living Creatur in Coastal Regions of India' की वर्ग संख्या का निर्माण कीजिए।

(2) प्रामाणिक वर्ग 'H1 Mincralogy' के पक्ष-परिसूत्र की व्याख्या कीजिए।

(3) प्रामाणिक वर्ग 'Petrology' के पक्ष-परिसूत्र को उपर्युक्त उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(4) मुख्य वर्ग 'J-Agriculture' के पक्ष-परिसूत्र को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(5) मुख्य वर्ग आयुर्विज्ञान के पक्ष-परिसूत्र का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

11. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- Kaula, P.N. (1985). A Treatise on Colon Classification. New Delhi : Sterling Publishers.
- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.

भौतिक विज्ञान एवं जेनरेलिया

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन के उद्देश्य
2. परिचय
3. गणित
4. भौतिकी
5. अभियांत्रिकी
6. रसायन विज्ञान
7. जेनरेलिया
8. सार-संक्षेप
9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
10. अभ्यास-प्रश्न
11. सन्दर्भ ग्रंथ सूची

NOTES

1. अध्ययन के उद्देश्य

इस इकाई के पूर्व अध्याय में हम जीव-विज्ञानों के अन्तर्गत आने वाले मुख्य वर्गों की चर्चा कर चुके हैं।

इस अध्याय में हम आपको कोलन क्लैसिफिकेशन में भौतिक विज्ञानों के कुछ मुख्य वर्गों एवं जेनरेलिया मुख्य वर्ग से परिचित करा रहे हैं।

इस अध्याय का अध्ययन के पश्चात् आप—

- इस अध्याय में वर्णित मुख्य वर्गों में से प्रत्येक मुख्य वर्ग के पक्ष-परिसूत्र की व्याख्या करने में; तथा
- इन मुख्य वर्गों के अन्तर्गत आने वाले विषयों की पुस्तकों की वर्ग संख्या बनाने में समर्थ होंगे।

2. परिचय

इस अध्याय में हम भौतिक विज्ञान के अन्तर्गत आने वाले मुख्य वर्गों, जैसे गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं जेनरेलिया मुख्य वर्ग की अनुसूचियों की विस्तार से चर्चा करेंगे। हम इन वर्गों में से प्रत्येक के पक्ष-परिसूत्र, अनुसूचियों की प्रकृति, एवं इनका उपयोग कर वर्ग संख्या से सम्बन्धित नियमों का वर्णन करेंगे।

3. गणित

गणित का सम्बन्ध संरचना, गणना के सिद्धान्तों तथा पदार्थों एवं वस्तुओं के आकार के मापने तथा उनकी गणना करने से है। यह तार्किक विचार-शक्ति एवं गुणात्मक गणना से सम्बन्धित है।

मुख्य वर्ग गणित की अनुसूची अधिक जटिल है और इसका अध्ययन सावधानी से किया जाना चाहिए।

मुख्य वर्ग गणित की निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है—

B1	Arithmetic
B2	Algobra
B3	Analysis
B4	Other Methods
B5	Trigonometry
B6	Geometry
B7	Mechanics
B8	Physio-Mathematics
B9	Astronomy

अब हम इन प्रामाणिक वर्गों में से कुछ को समझने का प्रयत्न करते हैं।

B13 Theory of Numbers : यह पूर्णांकों के गुणों के अध्ययन को समर्पित है। इस प्रामाणिक वर्ग का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

B13 [P], [P2] : [E] [2P]

जहाँ,	[P]	=	अंक (Number)
	[P2]	=	सिद्धान्त (Theory)
	[E] [2P]	=	विधि (Method)

अनुसूची में सभी पक्षों को परिगणित किया गया है। पक्ष [P2] के एकलों में विशेष समीकरणों को कालक्रम युक्ति से विभाजित करने का प्रावधान है। Pell's equation एक उदाहरण के रूप में दिया गया है।

3K Pell's Equation

1600-1690 AD

इसी प्रकार विशिष्ट रूपों एवं विशिष्ट अंकगणितीय कार्यों (Functions) को कालक्रम युक्ति से उपविभाजित किया गया है। पक्ष [E] cum [2P] के अन्तर्गत प्रामाणिक वर्ग B39 के विभाजन एकल संख्या '39' को उपविभाजित कर सकते हैं।

उदाहरण—

आख्या : Analytical Method of Distribution of Prime Number

वर्ग संख्या : B131, 2 : 3

यहाँ, B	=	Mathematics (M.C.)
B1	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.)
B13	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class)
B131	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class), Prime Number [P]
B131, 2	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class), Prime Number [P], Distribution [P2]
B131, 2 : 3	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class), Prime Number [P], Distribution [P2], Analytical Method [E]

आख्या : Elementary Algebraic Method of Primality and Divisibility

वर्ग संख्या : B13, 1 : 21

यहाँ, B	=	Mathematics (M.C.)
B1	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.)
B13	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class)
B13, 1	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class), Primality and Divisibility [P2]
B13, 1 : 21	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Integer (Sub-Canonical Class), Primality and Divisibility [P2], Elementary Algebraic Method [E]

B15 Algebraic Number and Ideal Number एवं **B16 Complex and Hyper Complex Number** के लिए पक्ष-परिसूत्र एवं पक्षों के विभाजन B13 Integer (Theory of Numbers) के समान है।

NOTES

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Method of Rational Approximations of Ideal Number

वर्ग संख्या : B15 : 22

यहाँ,	B	=	Mathematics (M.C.)
	B1	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.)
	B15	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Algebraic Number and Ideal Number (Sub-Canonical Class)
	B15 : 22	=	Mathematics (M.C.), Arithmetic (C.C.), Algebraic Number and Ideal Number (Sub-Canonical Class), Method of Rational Approximations [E] (Taken from Foci in [E] cum [P2] of B13)

B6 Geometry : यह गणित की वह शाखा है जो ठोसों, तलों, रेखाओं के सम्बन्ध से बनने वाली आकृतियों एवं कोणों के अध्ययन से सम्बन्धित है।

प्रामाणिक वर्ग 'B6 Geometry' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

B6 [P] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	स्थान (Space)
	[E] [2P]	=	विधि (Method)

स्थान पक्ष [P] का प्रथम एकल जो '1 line' है, 'Foundations of Geometry' से सम्बन्धित है। अन्य एकलों में से प्रत्येक को पुस्तक में अध्ययन किये गये तल और वक्र की डिग्री (degree) के आधार पर पुनः उपविभाजित किया गया है। विशिष्ट वक्रों एवं विशिष्ट तलों का व्यष्टीकरण कालक्रम विधि से किया जाता है।

उदाहरण—

आख्या : Differential Methods in Three Dimensional Geometry

वर्ग संख्या : B63 : 3

यहाँ,	B	=	Mathematics (M.C.)
	B6	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.)
	B63	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.), Three Dimensions [P]
	B63 : 3	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.), Three Dimensions [P], Differential [E]

आख्या : Practical Hyperbolic Geometry

वर्ग संख्या : B6M5 : 4

यहाँ,	B	=	Mathematics (M.C.)
	B6	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.)

NOTES

B6M5	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.), Hyperbolic (System Facet)
B6M5 : 4	=	Mathematics (M.C.), Geometry (C.C.), Hyperbolic (System Facet), Practical [E]

Geometry की इष्ट पद्धति Euclidean Geometry है एवं अन्य पद्धतियों को Non-Euclidean Geometry के नाम से प्राप्त किया गया है जिनका व्यष्टीकरण कालक्रम युक्ति से किया जाता है।

B9 Astronomy : यह सूर्य, चाँद, तारों एवं अन्य खगोलीय पिण्डों का वैज्ञानिक अध्ययन है। इस प्रामाणिक वर्ग का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

B9[P] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	पिण्ड (Body)
	[E] [2P]	=	समस्या (difficulty)

उदाहरण—

आख्या : Lunar Eclipse

वर्ग संख्या : B92 : 57

यहाँ,	B	=	Mathematics (M.C.)
	B9	=	Mathematics (M.C.), Astronomy (C.C.)
	B92	=	Mathematics (M.C.), Astronomy (C.C.), Moon [P]
	B92 : 57	=	Mathematics (M.C.), Astronomy (C.C.), Moon [P], Eclipse [E]

4. भौतिकी

भौतिकी पदार्थ एवं ऊर्जा और इन दोनों के बीच अन्योन्य क्रिया के अध्ययन का विज्ञान है। इसका अध्ययन परम्परागत क्षेत्रों जैसे—Acoustics, Optics, Mechanics, Thermodynamies व Electro Magnetism एवं आधुनिक विस्तारों Atomic and Nuclear Physics, Cryogenies, Solid State Physics, Particle Physics एवं Plasma Physics में किया जाता है।

रंगनाथन ने मुख्य वर्ग 'C Physics' को निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया है—

C1	Fundamentals
C2	Properties of Matter
C3	Sound
C4	Heat
C5	Light, Radiation
C6	Electricity
C7	Magnetism
C8	Cosmic Hypotheses

NOTES

C1 Fundamentals : इसे पुन: निम्नलिखित प्रामाणिक उपवर्गों में उपविभाजित किया गया है—

C13 Matter
C11 Weight
C18 Gravitation
C14 Energy
C15 Space
C16 Time

C2 Properties of Matter : इस प्रामाणिक वर्ग का पक्ष-परिसत्र इस प्रकार है—

C2 [P] : [E] [2P]

(टिप्पणी : अनुसूची में पक्ष-परिसूत्र C2 [P] [P2] में मुद्रण की त्रुटि है इसके स्थान पर उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र का उपयोग किया जाना चाहिए)

यहाँ, [P] = अवस्था (State)
[E] [2P] = समस्या (Problem)

उदाहरण—

आख्या : Density of Solids

वर्ग संख्या : C21 : 13

यहाँ, C = Physics (M.C.)
C2 = Physics (M.C.), Properties of Matter (C.C.)
C21 = Physics (M.C.), Properties of Matter (C.C.), Solid [P]
C21 : 13 = Physics (M.C.), Properties of Matter (C.C.), Solid [P], Density [E]

C3 Sound : इस प्रामाणिक वर्ग का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

C3 [P] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = तरंग की लम्बाई (Wave Length)
[E] [2P] = समस्या (Problem)

उदाहरण—

आख्या : Analysis of Ultra Sound

वर्ग संख्या : C35 : 38

यहाँ, C = Physics (M.C.)
C3 = Physics (M.C.), Sound (C.C.)
C35 = Physics (M.C.), Sound (C.C.), Ultra Sound [P]
C35 : 38 = Physics (M.C.), Sound (C.C.), Ultra Sound [P], Analysis [E]

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1. मुख्य वर्ग गणित को किन प्रमाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है?

.....
.....
.....
.....

NOTES

C4 Heat : पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

C4 : [E] [2P]

यहाँ, [E] [2P] = समस्या (Problem)

उदाहरण—

आख्या : Notes on Thermodynamics

वर्ग संख्या : C4 : 7

यहाँ,	C	=	Physics (M.C.)
	C4	=	Physics (M.C.), Heat (C.C.)
	C4 : 7	=	Physics (M.C.), Heat (C.C.), Thermodynamics [E]

C5 Radiation : निम्नलिखित पक्ष-परिसूत्र दिया गया है—

C5[P] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	तरंग की लम्बाई (Wave Length)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

पक्ष [E] cum [2P] के अन्तर्गत एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। प्रकाश की प्रकृति के अन्तर्गत विशिष्ट प्रभावों एवं विशिष्ट सिद्धान्तों के व्यष्टीकरण के लिए कालक्रम युक्ति का प्रावधान है।

उदाहरण—

आख्या : Propagation of Infrared Light

वर्ग संख्या : C56 : 2

यहाँ,	C	=	Physics (M.C.)
	C5	=	Physics (M.C.), Rediation (C.C.)
	C56	=	Physics (M.C.), Rediation (C.C.), Infrared Light [P]
	C56 : 2	=	Physics (M.C.), Rediation (C.C.), Infrared Light [P], Propagation [E]

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

2. मुख्य वर्ग श्ब चीलेपबेश को रंगनाथन ने कितने प्रमाणिक वर्गों में विभाजित किया है?

....

....

....

....

C6 Electricity : निम्नलिखित पक्ष-परिसूत्र दिया गया है—

C6 [P] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	विद्युत (Electricity)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

उदाहरण—

आख्या : Conduction of Direct Current

वर्ग संख्या : C623 : 21

यहाँ,	C	=	Physics (M.C.)
	C6	=	Physics (M.C.), Electricity (C.C.)

NOTES

C623 = Physics (M.C.), Electricity (C.C.), Direct Current [P]

C623 : 21 = Physics (M.C.), Electricity (C.C.), Direct Current [P], Conduction [E]

C7 Magnetism : पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

C7 [P] : [E]

यहाँ, [P] = चुम्बक (Magnetism)

[E] = समस्या (Problem)

उदाहरण—

आख्या : Nature of Ferro Magnetism

वर्ग संख्या : C74 : 8

यहाँ, C = Physics (M.C.)

C7 = Physics (M.C.), Magnetism (C.C.)

C74 = Physics (M.C.), Magnetism (C.C.), Ferro [P]

C74 : 8 = Physics (M.C.), Magnetism (C.C.), Ferro [P], Nature [E]

मुख्य वर्ग भौतिकी की अनुसूची के अन्त में कुछ पद्धतियों एवं विशिष्ट वर्गों को परिगणित किया गया है।

विशेष वर्ग Nucleus (Nuclear Physics) में पक्ष [P] एवं [E] cum [2P] को परिगणित किया गया है।

उदाहरण—

आख्या : Scattering of Cosmic Rays

वर्ग संख्या : C9B38 : 58

यहाँ, C = Physics (M.C.)

C9B = Physics (M.C.), Nucleus (Special Facet)

C9B 38 = Physics (M.C.), Nucleus (Special Facet), Cosmic Ray [P]

C9B 38 : 58 = Physics (M.C.), Nucleus (Special Facet), Cosmic Ray [P], Scattering [E] (Taken from Canonical Class '5 Radiation')

कुछ पद्धतियों को परिगणित किया गया है एवं अन्य के लिए कालक्रम युक्ति का प्रावधान है।

5. अभियांत्रिकी

अभियांत्रिकी ज्ञान की वह शाखा है जिसमें मानवता के लाभ के लिए वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग प्राकृतिक संसाधनों की संरचनाओं, मशीनों, उत्पादनों, प्रणालियों एवं प्रक्रियाओं में परिवर्तन करने में किया जाता है। अभियांत्रिकी की मुख्य रूप से चार परम्परागत शाखाएँ हैं—Civil, Mechanical, Electrical तथा Chemical। प्रत्येक शाखा की कई भिन्न विशिष्ट उप-शाखाएँ हैं।

मुख्य वर्ग 'D Engineering' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

D[P], [P2] : [E] [2P]

टिप्पणी : मुख्य वर्ग 'D Engineering' की अनुसूची में दिये गये पक्ष-परिसूत्र में मुद्रण की त्रुटि है। इसके स्थान पर उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र का उपयोग किया जाना चाहिए।

NOTES

यहाँ, [P] = कार्य (Work)

[P2] = भाग (Part) (D6 को छोड़ सभी कार्य पक्षों के लिए), D6 का अनुप्रयोज्यता क्षेत्र

[E] [2P] = समस्या (Problem)

अब हम इन पक्षों में से एक-एक करके प्रत्येक पक्ष को समझने का प्रयत्न करते हैं। 'कार्य पक्ष' [P] के एकलों को 8 विभाजनों में विभाजित किया गया है—

1 Civil Engineering
2 Irrigation and Drainage Work
3 Building
4 Transport-track
5 Transport-vehicle
6 Mechanical Engineering
7 Nuclear Engineering
8 Municipal (Saintary Engineering)

यद्यपि 2 Irrigation, 3 Building, 5 Transport-track, 5 Transport-vehicle, 8 Municipal, ये सभी एकल 1 Civil Engineering के उपविभाजन हैं, लेकिन इन्हें 'Civil Engineering' की समकक्ष पंक्ति में परिगणित किया गया है।

भाग पक्ष [P2] के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए पृथक् रूप से एकल संख्याओं को परिगणित किया गया है। मुख्य वर्ग 'D Engineering' की अनुसूची (पृष्ठ संख्या 2.42) के पक्ष [P2] के एकलों के अन्तर्गत आप निम्नलिखित निद्रेश पायेंगे—

पक्ष [P] के 2 Irrigation और इसके उप विभाजनों के लिए निम्नलिखित उपविभाजन बनाये गये हैं—

1 Source (Catchment)
2 Head Work
3 Surplus Work
4 Distributive Work
5 Cross-drainage Work
6 Flood Protecting and River Training Work

इसी प्रकार कार्य पक्ष [P] में अन्य एकलों के लिए पक्ष [P2] के रूप में पृथक् एकलों को परिगणित किया गया है। इन्हें भिन्नात्मक पक्ष (Differential Facets) कहा जाता है।

'D6 Mechanical Engineering' के लिए पक्ष [P2] के एकल अनुप्रयोग के क्षेत्र (Field of Application) को प्रदर्शित करते हैं।

समस्या पक्ष [E] [2P] में 1 से 8 एकल संख्याओं को परिगणित किया गया है जिनमें एकल संख्या 1, 2, 7 एवं 8 को पुनः उपविभाजित किया गया है। समस्या पक्ष [E] [2P] के एकल '15 Hydraulics' का फोकस सामान्य Hydraulics एवं पानी का बहाव जैसे विषयों पर होना चाहिए। Irrigation से सम्बन्धित पुस्तकों को कार्य विभाजन '2' (नियम संख्या D 5155, पृष्ठ संख्या 1.72) में रखा जाना चाहिए।

NOTES

अनुसूची के अन्त में सामान्य एकल संख्या 'e' (जो Formula के लिए है) के कुछ विभाजनों को दिया गया है। इन उपविभाजनों को कार्य विभाजन 66 के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

अभियांत्रिकी के पक्ष-परिसूत्रों की व्याख्या निम्नलिखित उदाहरणों से की जा सकती है—

उदाहरण—

आख्या : Design of Steel Window Shutters

वर्ग संख्या : D38, 78 : 4

यहाँ,	D	=	Engineering (M.C.)
	D38	=	Engineering (M.C.), Steel [P]
	D38, 78	=	Engineering (M.C.), Steel [P], Window Shutter [P2]
	D38, 78 : 4	=	Engineering (M.C.), Steel [P], Window Shutter [P2], Design [E]

उदाहरण—

आख्या : Repairing of Printing Machine

वर्ग संख्या : D6, 8(M14) : 85

यहाँ,	D	=	Engineering (M.C.)
	D6	=	Engineering (M.C.), Mechanical Engineering [P]
	D6, 8(M14)	=	Engineering (M.C.), Mechanical Engineering [P], Printing Machine [P2], (Got by Main Class 'M Useful Arts')
	D6, 8(M14) : 85	=	Engineering (M.C.), Mechanical Engineering [P], Printing Machine [P2], Repair [E]

आख्या : Nuclear Reactor

वर्ग संख्या : D7, 13

यहाँ,	D	=	Engineering (M.C.)
	D7	=	Engineering (M.C.), Nuclear Engineering [P]
	D7, 13	=	Engineering (M.C.), Nuclear Engineering [P], Reactor [P2]

6. रसायन विज्ञान

रसायन विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जिसमें पदार्थों (तत्त्वों एवं यौगिकों) के गुण-धर्म, संघटन, संरचना, उनके रूपान्तरणों तथा इस प्रक्रिया में निकलने एवं अवशोषित होने वाली ऊर्जा इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

मुख्य वर्ग 'Chemistry' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

E[P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ,	[P]	=	पदार्थ (Substance)
	[P2]	=	योग (Combination)
	[E] [2P]	=	समस्या (Problem)

NOTES

मुख्य वर्ग 'Chemistry' पक्ष [P] के एकलों को अन्य मुख्य वर्गों से भिन्न प्रकार से परिगणित किया गया है।

पदार्थ विभाजन '1' उन एकलों के लिए है जो विशिष्ट तत्त्वों से सम्बन्धित हैं। तत्त्वों का वर्गीकरण आवर्त सारणी (Periodic Table) पर आधारित है। आवर्त सारणी सरल रासायनिक पदार्थों की उनके परमाणु भार (Atomic Weight) के अनुसार व्यवस्थित सूची है। उपविभाजनों की संख्या में द्वितीय अंक उस समूह को प्रदर्शित करता है जिसके अन्तर्गत वह तत्त्व रखा गया है एवं तृतीय अंक उसका आवर्त प्रदर्शित करता है।

उदाहरण—

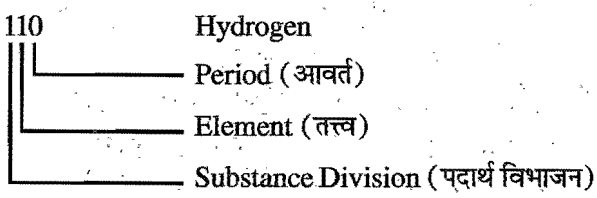

प्रारम्भिक अंक '1' के उपरान्त आने वाला अंकों का समूह तत्त्व अंक है। तत्त्व अंक में दो या तीन अंक होते हैं। यदि तीन अंक हैं तो तृतीय अंक सदा 9 ही होगा।

पक्ष [P] के एकलों की अनुसूची के अन्त में पक्ष [P] में परिगणित नहीं किये गये पदार्थों के अंक प्राप्त करने के लिए विषय युक्ति का उपयोग करने का प्रावधान है।

उदाहरण—

आख्या : Halogen Derivative of Methane

वर्ग संख्या : E611, 1

यहाँ, E = Chemistry (M.C.)

E611 = Chemistry (M.C.), Methane [P]

E611, 1 = Chemistry (M.C.), Methane [P], Halogene Derivative [P2]

अनुसूची में Combination Facet [E] cum [2P] के एकल परिगणित किये गये हैं।

पक्ष [E] cum [2P] की एकल संख्या '3' Analytical Chemistry है। पक्ष [2P2] के एकलों को परिगणित किया गया है यद्यपि पक्ष-परिसूत्र में पक्ष [2P2] नहीं दिया गया है। पक्ष [E] cum [2P] के एकल के उपरान्त 3 को संयोजक अल्पविराम (,) से जोड़ा जाना चाहिए।

उदाहरण—

आख्या : Micro-analysis of Aliphatic Compounds

वर्ग संख्या : E6 : 3, 3

यहाँ, E = Chemistry (M.C.)

E6 = Chemistry (M.C.), Aliphatic Compound [P]

E6 : 3 = Chemistry (M.C.), Aliphatic Compound [P], Analysis [E]

E6 : 3, 3 = Chemistry (M.C.), Aliphatic Compound [P], Analysis [E], Micro [2P2]

आख्या : Chemistry of Thermo-dynamics

वर्ग संख्या : E : 24

NOTES

यहाँ, E = Chemistry (M.C.)

E : 24 = Chemistry (M.C.), Chemical Thermo-Dynamics [E]

7. जेनरेलिया

जो प्रकाशन कई विषयों से सम्बन्धित हैं और जिन्हें किसी एक मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता उन्हें जेनरेलिया (Generalia) मुख्य वर्ग में रखा जाना चाहिए। जेनरेलिया मुख्य वर्ग को द्योतित करने के लिए छोटे 'z' का उपयोग किया जाता है।

जब प्रकाशन किसी एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र की विविध सामग्री से सम्बन्धित हो तो अंक 'z' को पुनः भौगोलिक युक्ति से विभाजित किया जाना चाहिए।

उदाहरण—

Indology = z44 → India (Taken from Space Isolate Schedule)
↓
Generalia
Main Class

Orientology = z4 → Asia (Taken from Space Isolate Schedule)
↓
Generalia
Main Class

Sinology = z41 → China (Taken from Space Isolate Schedule)
↓
Generalia
Main Class

Nipponology = z42 → Japan (Taken from Space Isolate Schedule)
↓
Generalia
Main Class

जब प्रकाशन एक विशिष्ट व्यक्ति पर या उसके द्वारा लिखी गई विविध सामग्री से सम्बन्धित हो तो अंक 'z' को पुनः आनुवर्णिक युक्ति से विभाजित किया जाता है।

NOTES

उदाहरण—

Gandhiana = zG

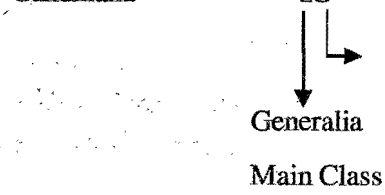

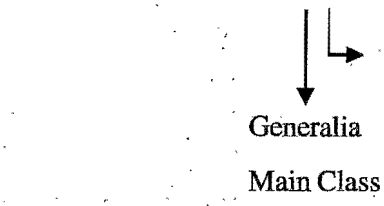

zG → G representing the first letter of Gandhi

↓

Generalia

Main Class

Nehruana = zN

zN → N representing the first letter of Nehru

↓

Generalia

Main Class

यह नियम केवल उनके लिए है जिनकी गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विस्तार एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित न होकर कई विषयों को सम्मिलित करता है।

उपर्युक्त दो प्रकार की जेनरेलिया सामग्री के अतिरिक्त एक अन्य प्रकार भी है जिसकी वर्ग संख्या बनाने के लिए पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का उपयोग करना आवश्यक है।

तीसरे प्रकार की जेनरेलिया सामग्री की चर्चा करने से पहले हम सामान्य एकलों एवं पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को समझने का प्रयत्न करते हैं।

सामान्य एकल वे हैं जो एक समान एकल पद को सूचित करते हैं और जिन्हें एक समान एकल संख्या से उद्योतित किया जाता है। वर्गीकरण प्रणाली में अधिकतर वर्गों में सामान्य एकलों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण के लिए ग्रन्थ-सूची एक एकल विचार है जिसका प्रयोग किसी भी आधार वर्ग के साथ किया जा सकता है। इसलिए इसे सामान्य एकल अनुसूची (पृष्ठ संख्या 2.5 देखें) की सूची के अंतर्गत परिगणित किया गया है। इस सन्दर्भ में समय तथा स्थान एकल भी सामान्य एकल हैं जिन्हें किसी भी आधार वर्ग के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है।

सामान्य एकल के दो प्रकार के होते हैं—

(1) पूर्वस्थापक सामान्य एकल (ACI : Anteriorising Common Isolates)

(2) पश्चस्थापक सामान्य एकल (PCI : Posteriorising Common Isolate)

पूर्वस्थापक सामान्य एकल वे हैं जिन्हें जब किसी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जाता है तो उस वर्ग संख्या वाले प्रलेख को उस ग्राह्यता वर्ग संख्या (Host Class Number) वाले प्रलेख से पहले व्यवस्थित किया जाता है। संक्षेप में, पूर्वस्थापक सामान्य एकल पूर्वस्थापक महत्त्व रखते हैं। ग्रन्थ सूचियाँ, विश्वकोश, सामयिकी इत्यादि अभिगम प्रलेख हैं एवं इसलिए इन्हें फलकों पर मूल या आधार (Core) प्रलेखों से पहले व्यवस्थित किया जाता है। इन्हें पूर्वस्थापक सामान्य एकलों के रूप में (पृष्ठ संख्या 2.5) सूचीबद्ध किया गया है। ग्राह्यता वर्ग संख्या में पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को सीधे जोड़ दिया जाता है। इन्हें जोड़ने के लिए संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं है।

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Encyclopaedia of Physics

Class Number = Ck
- Ck → Anteriorising Common Isolate Number for Encyclopaedia
- Ck → Main Class: Physics

जब हम देखेंगे कि इन पूर्वस्थापक सामान्य एकलों को तीसरे प्रकार की विविध सामग्री को प्रदर्शित करने के लिए कैसे उपयोग में लायेंगे।

नियम संख्या 9z4 (पृष्ठ संख्या 1.62) के अनुसार जब कभी अंक 'z' का विस्तार भौगोलिक युक्ति या आनुवार्णिक युक्ति के द्वारा नहीं किया जाता है तब पूर्वस्थापक सामान्य एकल का उपयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में अंक 'z' को हटाया जा सकता है एवं वर्ग संख्या को पूर्वस्थापक सामान्य एकल अंक से प्रारम्भ करना ही पर्याप्त है। इसका अर्थ है कि जब अंक 'z' को पुनः भौगोलिक युक्ति या आनुवार्णिक युक्ति के द्वारा नहीं विभाजित किया जाता है तब इसे पुनः पूर्वस्थापक सामान्य एकलों से विभाजित किये जाने की आवश्यकता है। जब पूर्वस्थापक सामान्य एकलों का उपयोग किया जाता है तब जेनरेलिया सामग्री को द्योतित करने के लिए अंक 'z' का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थिति में मुख्य वर्ग संख्या पूर्वस्थापक सामान्य एकल से प्रारम्भ होगी। उदाहरण के लिए जेनरेलिया ग्रन्थ-सूची के लिए मुख्य वर्ग संख्या 'za' के स्थान पर 'a' होगा पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की व्याख्या निम्नलिखित उदाहरणों की सहायता से की जा सकती है।

उदाहरण—

आख्या : Encyclopedia Americana, 1903/4

वर्ग संख्या :

k7, N
- k7, N → Represents year of Epoch got by CD
- k7, N → Number for America taken from Space Isolate Schedule
- k7, N → ACI for Cyclopaedia

सी.सी. की पृष्ठ संख्या 1.45 पर आप पूर्वस्थापक सामान्य एकलों के पक्षों के लिए सारणी पायेंगे। प्रत्येक ACI के लिए पक्ष-परिसूत्र पूर्वस्थापक सामान्य एकलों की अनुसूची में उनकी संख्याओं के साथ दिये गये हैं। k Cyclopaedia के लिए पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

k[P], [P2]

यहाँ, [P] = वर्णित भौगोलिक क्षेत्र को प्रदर्शित करता है और इसे भौगोलिक युक्ति से प्राप्त किया जाता है।

[P2] = उद्‌भव का समय प्रदर्शित करता है और इसे कालक्रम युक्ति से प्राप्त किया जाता है।

NOTES

इसलिए उपर्युक्त उदाहरण में—

k	=	पूर्वस्थापक सामान्य एकल Cyclopaedia को प्रदर्शित करता है
7	=	वर्णित भौगोलिक क्षेत्र America को प्रदर्शित करता है
N	=	उद्‌भव की शताब्दी (1903-4) को प्रदर्शित करता है

Generalia Bibliography के लिए पक्ष-परिसूत्र एवं अनुसूची को अध्याय 9a (पृष्ठ संख्या 2.29) में दिया गया है। Generalia Bibliography के लिए पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

a[P], [P2] [P3], [P4]

यहाँ,	[P]	=	सामग्री (Material)
	[P2]	=	ग्रन्थ सूचियों के प्रकार (Kinds of Bibliographies)

अनुसूची के परिगणित पक्ष [P2] के एकल पर पक्ष [P3] व [P4] के एकल निर्भर करते हैं। पक्ष [P3] तथा [P4] के लिए नियमों का अध्याय 9z (पृष्ठ संख्या 1.62 से 1.63) देखिये। नियमों के भाग (पृष्ठ संख्या 1.63) में अपवाद दिये गये हैं।

पक्ष [P] व [P2] के एकलों को अनुसूची में परिगणित किया गया है। पक्ष [P3] एवं [P4] के एकलों के लिए नियमों का अध्याय 9z (पृष्ठ संख्या 1.62 से 1.63) देखें।

पक्ष [P] के एकलों को निम्नलिखित मुख्य विभाजनों में विभाजित किया गया है—

1 By Mode of Production (परिगणित)
2 By Script (अनुसूचियों के अध्याय 5 भाषा एकल अनुसूची से पनाप्त किया जाना है)
3 By Language (भाषा एकल अनुसूची से प्राप्त किया जाना है)
4 By Nature of Publication (परिगणित)
5 By Agency of Production (परिगणित)
6 By Age of Publication (परिगणित)
7 By Edition (परिगणित)
8 By Social Group of Readers (मुख्य वर्ग '7 Sociology' की अनुसूची में पक्ष [P] के एकलों के समान)

95 Translation (पहले मूल भाषा से विभाजित किया जाता है एवं इसके पश्चात् अनुवाद की भाषा को दिया जाना है। भाषा अंकों के मध्य में हाइफन लगाना चाहिए)

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

3. मुख्य वर्ग 'D engineering' का पक्ष-परिसूत्र बताइये।

.....

.....

.....

.....

991 By Size (परिगणित)

पक्ष [P2] के एकलो को निम्नलिखित विभाजनों में विभाजित किया गया है—

1 List of publications in a geographical area
2 Library catalogue
3 Publisher's catalogue

NOTES

4 Bookseller's catalogue
5 Catalogue of exhibition
6 Reading list

अनुसूची में Union Catalogue को परिगणित नहीं किया गया है। परन्तु नियमों के भाग में इसे दिया गया है। Union Catalogue की एकल संख्या 21 है।

अब हम पक्ष [P2] के एकलों में से प्रत्येक के लिए पक्ष [P3] एवं [P4] के एकलों का अध्ययन करते हैं (पृष्ठ संख्या 1.63 देखें)।

जब पक्ष [P2] की एकल संख्या 1 हो तब

[P3] = क्षेत्र, जिसे भौगोलिक युक्ति से प्राप्त करना है।

[P4] = समय, जिसे कालक्रम युक्ति के अन्तर्गत अन्तिम प्रभावी दशक (LED : Last Effective Decade) द्वारा प्राप्त करना है।

उदाहरण—

आख्या : Indian National Bibliography (Record of books published in India, started in 1957)

वर्ग संख्या : a43, 144, N57

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a43	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P]
	a43, 1	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], List of Publications in a Geographical Area [P2]
	a43, 144	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], List of Publications in a Geographical Area [P2], India [P3]
	a43, 144, N5	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], List of Publications in a Geographical Area [P2], India [P3], Started in 1957 [P4]

जब पक्ष [P2] में एकल संख्या 2 हो तब

[P3] = देश, जिसे भौगोलिक युक्ति से प्राप्त करना है।

[P4] = उद्‌भव, जिसे कालक्रम युक्ति से प्राप्त करना है।

उदाहरण—

आख्या : Catalogue of Books in Indira Gandhi National Open University Library System, Started in 1985

वर्ग संख्या : a43, 244, N85

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a43	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P]
	a43, 2	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Library Catalogue [P2]
	a43, 244	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Library Catalogue [P2], India [P3]
	a43, 244, N85	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Library Catalogue [P2], India [P3], Started in 1985 [P4]

जब पक्ष [P2] में एकल 21 Union Catalogue हो तब

[P3] = भौगोलिक क्षेत्र जिसको भौगोलिक युक्ति से प्राप्त किया जाना है।

उदाहरण—

आख्या : Union list of Periodicals in Delhi

वर्ग संख्या : a46, 214481

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a46	=	Generalia Bibliography (M.C.), Periodieal [P]
	a46, 61	=	Generalia Bibliography (M.C.), Periodieal [P], Union Catalogue [P2]
	a46, 214481	=	Generalia Bibliography (M.C.), Periodieal [P], Union Catalogue [P2], Delhi [P3]

जब पक्ष [P2] में एकल 3 या 4 हो तब [P3] = प्रकाशक या पुस्तक विक्रेता जिसे आनुवार्णिक युक्ति से प्राप्त किया जाना है।

उदाहरण—

आख्या : D.K. Newsletter (Bibliography of books published by D.K. Publishers)

वर्ग संख्या : a43, 3D

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a43	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P]
	a43, 3	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Publisher's Catalogue [P2]
	a43, 3D	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Publisher's Catalogue [P2], D.K. Publishers [P3] (got by AD)

आख्या : Indian Book Reporter by Prabhu Book Service

वर्ग संख्या : a43, 4 P

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a43	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P]
	a43, 4	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Book Seller's Catalogue [P2]
	a43, 4P	=	Generalia Bibliography (M.C.), Book [P], Book Seller's Catalogue [P2], Prabhu Book Service [P3] (got by Alphabatical Device)

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

4. मुख्य वर्ग 'chemistry' का पक्ष-परिसूत्र बताइये।

.....

.....

.....

.....

जब पक्ष [P2] में एकल संख्या 5 हो तब

[P3] = देश, जिसे भौगोलिक युक्ति से प्राप्त किया जाना है।

[P4] = उद्‌भव, जिसे कालक्रम युक्ति से प्राप्त किया जाना है।

NOTES

NOTES

उदाहरण—

आख्या : Catalogue of Government Publications Exhibited at National Book Fair (New Delhi), 1986

वर्ग संख्या : a55, 544, N86

यहाँ,	a	=	Generalia Bibliography (M.C.)
	a55	=	Generalia Bibliography (M.C.), Government Publcations [P]
	a55, 5	=	Generalia Bibliography (M.C.), Government Publcations [P], Catalogue of Exhibition [P2]
	a55, 544	=	Generalia Bibliography (M.C.), Government Publcations [P], Catalogue of Exhibition [P2], India [P3]
	a55, 544, N86	=	Generalia Bibliography (M.C.), Government Publcations [P], Catalogue of Exhibition [P2], India [P3], Year of the Exhibition [P4]

8. सार-संक्षेप

इस अध्याय में हम भौतिक विज्ञानों के समूह के अन्तर्गत आने वाले कुछ मुख्य वर्गों का वर्णन कर चुके हैं। इस इकाई में निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की गई है—

गणित एवं भौतिकी मुख्य वर्गों को प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है।

मुख्य वर्ग 'Engineering' में भिन्नात्मक पक्ष की अवधारणा का उपयोग किया गया है।

मुख्य वर्ग 'Chemistry' के पक्ष [P] के एकल अन्य मुख्य वर्गों से भिन्न हैं। तत्त्वों का वर्गीकरण आवर्त तालिका पर आधारित है।

जेनरेलिया मुख्य वर्ग उन प्रलेखों के लिए है जो कई विषयों से सम्बन्धित होते हैं एवं जिन्हें किसी एक मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है।

9. स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1. मुख्य वर्ग गणित की निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया गया है—

B1	Arithmetic
B2	Algobra
B3	Analysis
B4	Other Methods
B5	Trigonometry
B6	Geometry
B7	Mechanics
B8	Physio-Mathematics
B9	Astronomy

NOTES

2. रंगनाथन ने मुख्य वर्ग 'C Physics' को निम्नलिखित प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया है—

C1	Fundamentals
C2	Properties of Matter
C3	Sound
C4	Heat
C5	Light, Radiation
C6	Electricity
C7	Magnetism
C8	Cosmic Hypotheses

3. मुख्य वर्ग 'D Engineering' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

D[P], [P2] : [E] [2P]

टिप्पणी : मुख्य वर्ग 'D Engineering' की अनुसूची में दिये गये पक्ष-परिसूत्र में मुद्रण की त्रुटि है। इसके स्थान पर उपर्युक्त पक्ष-परिसूत्र का उपयोग किया जाना चाहिए।

यहाँ, [P] = कार्य (Work)

[P2] = भाग (Part) (D6 को छोड़ सभी कार्य पक्षों के लिए), D6 का अनुप्रयोज्यता क्षेत्र

[E] [2P] = समस्या (Problem)

4. मुख्य वर्ग 'Chemistry' का पक्ष-परिसूत्र इस प्रकार है—

E[P], [P2] : [E] [2P]

यहाँ, [P] = पदार्थ (Substance)

[P2] = योग (Combination)

[E] [2P] = समस्या (Problem)

मुख्य वर्ग 'Chemistry' पक्ष [P] के एकलों को अन्य मुख्य वर्गों से भिन्न प्रकार से परिगणित किया गया है।

10. अभ्यास-प्रश्न

(1) मुख्य वर्ग गणित के किन्हीं तीन प्रामाणिक वर्गों के पक्ष-परिसूत्र लिखिए।

(2) मुख्य वर्ग भौतिकी के किन्हीं दो प्रामाणिक वर्गों के पक्ष-परिसूत्रों की व्याख्या कीजिए।

(3) मुख्य वर्ग 'D Engineering' के 'कार्य पक्ष' [P] के एकलों का विभाजन समझाइये।

(4) मुख्य वर्ग जेनरेलिया का विशद विवेचना कीजिए।

(5) सामान्य एकल के दोनों प्रकारों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

11. सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

NOTES

- Kaula, P.N. (1985). A Treatise on Colon Classification. New Delhi : Sterling Publishers.
- Ranganathan, S.R. (1990). Colon Classification. 6th ed. reprint. Bangalore : Sarada Ranganathan Endowment for Library Science.